रोमियों

रोमियों को लिखे पौलुस के पत्र पर एक भक्तिपूर्ण विवरण

एफ वॉयन मेक लियोड

HARVEST MISSION PUBLICATIONS
V-82, SECTOR-12, NOIDA (U.P.)

Romans (Hindi)

Romio (Romio ko likhe Paulus ke patra par ek bhaktipurn vivran)

Copyright @ F. Wayne Mac Leod

First Edition : November 2010

All Rights Reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in retrieval system, or transmitted any form or by any means, electronic,mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the publisher.

Published in Hindi by **Harvest Mission Publishers** with permission.

Contact Address:
V – 82 Sector- 12, NOIDA, UP- 201301
Tel : 0120- 2550213, 4264860, 6417828, 9811373357
bijujo@bijujohn.com, bijujohn@roadrunnerworldmission.com
website: www.harvestpublishers.org

Printed at : **New life Printers (P) Ltd,** New Delhi

विषय-सूची

प्रस्तावना 5

परिचय पढ़ें रोमियों 1:1–7 .... **7**

एक वरदान का प्रकटीकरण पढ़ें रोमियों 1:8–12 12

विश्वास द्वारा धार्मिकता पढ़ें रोमियों 1:13–17 16

क्रोध का प्रकाशन पढ़ें रोमियों 1:18–32 20

दूसरों का न्याय करना पढ़ें रोमियों 2:1–4 24

केवल प्रतिफल पढ़ें रोमियों 2:5–10 28

हृदय का खतना पढ़ें रोमियों 2:11–29 31

एक यहूदी होने का महत्व पढ़ें रोमियों 3:1–8 37

व्यवस्था से अलग धार्मिकता पढ़ें रोमियों 3:9–31 41

विश्वास द्वारा इब्राहीम, दाऊद और उद्धार पढ़ें रोमियों 4:1–12 46

विश्वास द्वारा इब्राहीम पढ़ें रोमियों 4:13–25 50

परमेश्वर की महिमा की आशा पढ़ें रोमियों 5:1–5 55

जब हम शक्तिहीन थे पढ़ें रोमियों 5:6–11 59

एक पुरुष पढ़ें रोमियों 5:12–21 62

क्या हम पाप करेंगे? भाग 1 पढ़ें रोमियों 6:1–14 65

क्या हम पाप करेंगे? भाग 2 पढ़ें रोमियों 6: 15–23 70

व्यवस्था के लिये मृत पढ़ें रोमियों 7:1–6 73

क्या व्यवस्था पापपूर्ण है? पढ़ें रोमियों 7:7–13 75

भीतर का युद्ध पढ़ें रोमियों 7:14–25 79

दण्ड नहीं पढ़ें रोमियों 8:1–4 84

आत्मा द्वारा मन नियंत्रण पढ़ें रोमियों 8:5–15 88

वर्तमान युग के दुख पढ़ें रोमियों 8:16–25 93

इन सभी चीजों में पढ़ें रोमियों 8:36–39 97
सच्चा इस्त्राएल पढ़ें रोमियों 9:1–13 102
पौलुस के सिद्धान्तों का विरोध पढ़ें रोमियों 9:14–33 107
विश्वास द्वारा धार्मिकता पढ़ें रोमियों 10:1–11 113
कोई भेद नहीं पढ़ें रोमियों 10:12–21 117
क्या परमेश्वर ने अपने लोगों
को अस्वीकार दिया है? पढ़ें रोमियों 11:1–12 121
घमण्ड के लिये कोई स्थान नहीं? पढ़ें रोमियों 11:13–24 124
इस्त्राएल की आशा पढ़ें रोमियों 11:25–26 129
समर्पित और रूपान्तरित पढ़ें रोमियों 12:1, 2 134
एक देह, कई वरदान पढ़ें रोमियों 12:3–8 138
देह के साथ मेल में रहना पढ़ें रोमियों 12:9–21 142
अधिकार के प्रति समर्पण पढ़ें रोमियों 13:1–7 148
कोई ऋण नहीं परन्तु प्रेम पढ़ें रोमियों 13:8–10 152
जाग उठो! पढ़े रोमियों 13:11–14 154
न्याय को हस्तान्तरित करना पढ़ें रोमियों 14:1–12 157
ठोकर का पत्थर पढ़ें रोमियों 14:13–23 162
एकता में दृढ़ता पढ़ें रोमियों 15:1–7 167
अन्यजातियों के लिये पौलुस की सेवकाई पढ़ें रोमियों 15:8–21 172
मेरे लिये प्रार्थना करो पढ़ें रोमियों 15:23–33 177
अन्तिम अभिवादन पढ़ें रोमियों 16:1–27 181

प्रस्तावना

रोमियों की पुस्तक मसीही जीवन का एक प्रभावशाली विवरण है। प्रेरित पौलुस हमें एक आत्मिक यात्रा पर लेकर जाता है। वह आरम्भ अनन्तता से पहले परमेश्वर की लोगों तक पहुँचने तथा उन्हें स्वयं के लिए बुलाने की योजना के साथ करता है। वह हमें विश्वास द्वारा पाप और कर्मकाण्डवाद की खाई से धार्मिकता के पहाड़ पर लेकर जाता है। वह हमें पाप और व्यवस्था के अन्तर्गत हमारी आशाहीन स्थिति को हमें दिखाता है। वह यहूदीवाद की जड़ से लेकर पृथ्वी की छोर तक इसके विस्तार से परमेश्वर की योजना की ओर हमें संकेत करता है।

पौलुस वहाँ रुक नहीं जाता। उसके बाद वह मसीह में नये जीवन के व्यक्तिगत अनुभव की ओर आगे बढ़ता है। हमें हमारे भीतर पापी देह के कार्यों और आत्मा के होने वाले कार्यों के बीच की पहचान को करना सिखाया गया है। पौलुस हमें स्मरण कराता है कि मसीह में होकर जीवन बिताना संभव है कि हमें संसार के दुखों में लेकर जाएं तथापि वह आगे की ओर हमें क्षमा की अद्‌भुत आशा का संकेत देता है क्योंकि उसकी उपस्थिति में मसीह और अनन्तता दोनों है।

पुस्तक के अन्तिम भाग में, पौलुस हमें प्रभु परमेश्वर के प्रति उसके दासों के रूप में पूर्ण समर्पण करने को प्रेरित करता है। वह हमें विश्वास की इस यात्रा में अकेले यात्रा न करने की चुनौती देता है, क्योंकि हमारे पीछे कई यात्री अपने अपने वरदानों और सेवकाइयों के साथ आ रहे हैं। वह हमें उनके साथ मेल से रहने की चुनौती देता है और एक साथ यात्रा करने के लाभों के बारे में न केवल सिखाता है परन्तु यह भी कि एक पाप से भरे संसार में ऐसा करना कैसे संभव है।

इस पुस्तक में, पौलुस सुन्दरता के साथ मसीही जीवन का इसके संघर्षों के साथ सारांश देता है। हम मसीह के साथ हमारे चलने में विकास और परिपक्वता के इसमें सिद्धान्तों को पाते हैं। इस विवरण का अभिप्राय वेगपूर्वक आगे बढ़ना नही है। प्रेरित की शिक्षाओं पर विचार करने का समय लें। प्रत्येक अध्याय के आरम्भ में दिये गए बाइबल परिच्छेदों को पढ़ें। सीखे गए अध्यायों पर प्रार्थना करें। पवित्र आत्मा से कहें कि आपको मसीह के निकट लाने के लिए यह विवरण एक उपकरण साबित हो।

मुझसे भी श्रेष्ठ बहुत से बाइबल लेखक हैं जो बाइबल की इस महत्वपूर्ण पुस्तक की थियोलोजी को गहराई से जानते हैं। मेरी निष्कपट अभिलाषा यह है कि इस सरल विवरण को पढ़ने वाला प्रत्येक व्यक्ति मसीह के निकट आ सके। ऐसा ही पौलुस भी चाहता होगा। आपके द्वारा रोमियों को लिखे पौलुस के इस पत्र को पढ़ने पर परमेश्वर आपको आशीष दे।

एफ वॉयन मेक. लियोड

परिचय

1

पढ़ें रोमियों 1:1-7

पौलुस ने इस पत्र को मूल रूप से रोम की कलीसिया को लिखा था। यह निश्चित नहीं है कि रोम में सबसे पहले विश्वास कैसे आया, परन्तु जब पौलुस ने इन विश्वासियों और उस क्षेत्र में पवित्र आत्मा के कार्यों के बारे में सुना, तब उसने उन्हें लिखने का फैसला किया। उसका उद्देश्य उन्हें मसीही जीवन के आधार पर कुछ स्पष्ट मार्गदर्शन और शिक्षा देने का था, जिससे वे परमेश्वर के साथ चलने में अपने अजीब संघर्षो का अच्छी तरह से संचालन कर सकें।

ध्यान दें कि पौलुस ने अपने पाठकों को अपना परिचय कैसे दिया है। इस प्रारम्भिक पद में वह अपने बारे में तीन चीज़ों को बताता है। सबसे पहले, वह स्वयं को यीशु मसीह का सेवक कहता है। न्यू अमेरिकन स्टैण्डर्ड बाइबल "गुलाम5" शब्द का प्रयोग करती है और यूनानी शब्द का भी प्रयोग एक सेवक के बारे में बताने के लिये किया जा सकता है। धारणा यह है कि पौलुस का जीवन स्वयं में लम्बा नहीं था। इसे स्वामी के उद्देश्यों के लिये समर्पित किया गया था। उसे प्रभु यीशु द्वारा खरीदा गया था और उसका अब स्वयं से कोई सम्बन्ध नहीं था। उसका हृदय और जीवन प्रभु के लिए था कि उसे प्रसन्न करनेवाले कार्यों को करे। इसी तरह से उसने अब स्वयं को देखा था। उसका सम्पूर्ण परिचय प्रभु यीशु की योजना और उद्देश्य में बाँधा गया था।

दूसरा, ध्यान दें कि पौलुस अपने जीवन के लिए प्रभु के उद्देश्य का कैसे वर्णन करता है। परमेश्वर ने अपने समस्त अनुग्रह में होकर उसे एक प्रेरित होने के लिये बुलाया। एक प्रेरित के रूप में, परमेश्वर का उसके लिये यह उद्देश्य था कि वह कलीसिया की स्थापना करे और उसे सत्य आधारशिला पर रखे। ऐसा होने के लिए, यह जरूरी था कि पौलुस एक बहुत ही विशिष्ट तरह से पवित्र आत्मा के द्वारा तैयार किये जाने के साथ-साथ सम्पन्न हो। पवित्र आत्मा से समर्थ होने पर परमेश्वर उसका प्रयोग कलीसिया का निर्माण करने और एक दृढ़ नींव पर उसे स्थापित करने के लिये करेगा। पौलुस ने अपने जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को स्वीकार कर स्वयं को इसके प्रति पूरी तरह से सौंप दिया।

अन्त में, पौलुस ने अपने पाठकों को बताया कि उसे परमेश्वर के सुसमाचार के लिए अलग किया गया है। सुसमाचार प्रभु यीशु और उसके कार्य के बारे में शुभ सन्देश है। पौलुस के संदेश और सेवकाई का यही केन्द्र था। उसका संदेश

यीशु और उसके बारे में था। उसकी सेवकाई लोगों को यीशु के पास ले जाने के लिए थी।

पद 2 और 6 में, पौलुस यह बताने के लिये समय लेता है कि जिस सुसमाचार का उसने प्रचार किया वह किस बारे में था।

सर्वप्रथम, सुसमाचार पहले से ही प्रतिज्ञात था (पद 2)। समस्त पुराने नियम का केन्द्र हमें केवल यह दिखाता है कि हमें एक उद्धारकर्त्ता की कितनी अधिक आवश्यकता है। पुराने नियम के पृष्ठों को पलटने पर, हम आदम और हव्वा की परमेश्वर और उसके उद्देश्य के साथ मेल में रहने की सफलता को देखते हैं। वे पाप में गिर गए और समस्त मानवजाति पर उस पाप को लेकर आए। परमेश्वर ने मूसा के द्वारा अपनी व्यवस्था को दिया, परन्तु उसके लोग उस व्यवस्था को पूरा करने में असमर्थ थे। उसने उनका नेतृत्व करने के लिए न्यायियों और राजाओं को भेजा, परन्तु वे विद्रोह कर फिर गए। उसके भविष्यद्वक्ताओं ने उन्हें अनाज्ञाकारिता के परिणामों से सावधान किया, परन्तु इस्राएल ने सुनने से इंकार कर दिया।

परमेश्वर के लोग उस मानदण्ड को पूरा न कर सके जो परमेश्वर ने उनके लिए निर्धारित किया था। प्रयास करने पर भी वे अपनी पापी प्रवृत्ति पर विजयी होकर जीवन बिताने में असमर्थ रहे थे। उन्हें एक पवित्र परमेश्वर से अलग किया गया था। पुराने नियम के समस्त पृष्ठों में परमेश्वर ने एक मसीहा की प्रतिज्ञा की, जो अपने लोगों को स्वतंत्र कर एक सही संबन्ध में स्थापित करेगा। पुराने नियम ने लोगों को प्रभु यीशु का संकेत दिया जो हमारे जीवनों में पाप के भयंकर परिणामों और प्रभावों से बचाने के लिए हमारे उद्धारकर्त्ता के रूप में आएगा। सुसमाचार नया नहीं है। जिस सुसमाचार का प्रचार पौलुस ने किया इसकी मसीह में हम पर प्रगट करने से बहुत पहले प्रतिज्ञा की गई थी।

सुसमाचार के संदेश का आरम्भ इस सच्चाई के साथ होता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। सुसमाचार को समझने हेतु यह अनिवार्य है। परमेश्वर का पुत्र होने के कारण, यीशु पापरहित (निर्दोष) था। केवल एक सिद्ध बलिदान ही हमारे पापों की कीमत चुका सकता था। यह सच्चाई कि यीशु परमेश्वर का पुत्र था यह भी दिखाती है कि परमेश्वर हमसे कितना प्रेम करता है। वह पाप की कीमत चुकाने हेतु हमारे लिए अपने पुत्र के मारे जाने को तैयार था ताकि हम उसके साथ एक सही संबंध में आ सकें।

पौलुस आगे यह कहता है कि यीशु मानवस्वरूप धारण कर दाऊद का एक वंशज बना। एक नम्र सेवक बनने के लिए उसने स्वर्ग की महिमा को छोड़ दिया।

एक मानव होने के कारण उसने हमारी कमज़ोरियों को जाना। जो दुख हम उठाते हैं उसने भी वही दुख उठाए। उसने वही अनुभव किया जो हम अनुभव करते हैं। वह इस पृथ्वी पर एक मनुष्य के रूप में रहा और हम पर उस जीवन को प्रगट किया जिसकी मांग परमेश्वर अपने पास आनेवालों से करता है।

पौलुस हमें यह भी बताता है कि यीशु ने पवित्र आत्मा से भरपूर जीवन को जीया। यद्यपि उसे मनुष्य द्वारा क्रूसित किया गया और एक क्रूर क्रूस पर मारा गया, मृतकों में से पुनरूत्थान के द्वारा उसे परमेश्वर के पुत्र के रूप में घोषित किया गया था। उसके पुनरूत्थान ने प्रमाणित किया कि हमारे खातिर परमेश्वर ने उसके बलिदान को ग्रहण किया। वह जीवन के लिए जी उठने के द्वारा मृत्यु पर विजयी हुआ। यीशु ने क्रूस पर हमारे पापों को उठा लिया। वह इन पापों के साथ कभी भी परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश नहीं कर सकता था। यीशु ने उन्हें लेकर उनका नाश कर दिया। उसने उनकी सामर्थ को तोड़ डाला। हमारे पापों से निपटने के पश्चात् वह विजय में होकर पिता के पास लौट गया।

सुसमाचार का अद्भुत संदेश यह है कि हम पाप पर मसीह की विजय को बांट सकते हैं। पौलुस को इस सुसमाचार संदेश का सेवक कहा जाता है जिससे वह संसार को अंधकार व विश्वास के प्रति निराशा से बाहर निकाल सके और प्रभु यीशु के कार्य द्वारा पाप पर विजयी हो सके।

चूँकि यीशु ने पाप पर जय पाई है, हम भी विजयी हो सकते हैं। पाप को अधिक समय तक हमें पवित्र परमेश्वर से दूर रखने की ज़रूरत नहीं है। हम इस भंयकर शत्रु पर एक सही विजय के बारे में जान सकते हैं। प्रभु यीशु में यही आशा और जीवन है।

पद 6 पर ध्यान दें कि जिन्हें पौलुस ने लिखा वे यीशु से संबन्धित होने के लिये बुलाए गए थे। पौलुस के समान उन्हें भी उनके क्रूर शत्रु से बचाया गया था। अब उनका एक नया स्वामी व राजा था। अब वे मसीह के सेवक थे।

पौलुस रोम के संतों को यह पत्र लिखता है। पद 7 में इन संतों के बारे में कहने को उसके पास कई चीज़ें है। वह सर्वप्रथम हमें बताता है कि परमेश्वर उनसे प्रेम करता है। पत्र को आरम्भ करने का उसका तरीका कितना प्रोत्साहनजनक है। इस ब्रह्माण्ड के परमेश्वर ने अपने पुत्र को रोम के इन विश्वासियों के लिये मरने को भेजा ताकि वे पाप के परिणामों से स्वतंत्र होकर उसकी उपस्थिति में अनन्त जीवन को पा सकें।

दूसरा, प्रेरित हमें बताता है कि रोमियों को संत होने के लिये बुलाया गया

था। एक संत वह होता है जिसे परमेश्वर और उसकी सेवा के लिये अलग किया जाता है। न केवल रोमियों को पापों से क्षमा मिली थी, उन्हें परमेश्वर के राज्य में एक विशेष उद्देश्य के लिये अलग भी किया गया था।

रोमियों को अपने परिचय को समाप्त करने पर पौलुस रोम के संतों को परमेश्वर के अनुग्रह (अनर्जित कृपा) और शान्ति से आशीष देता है। परमेश्वर का अनुग्रह ही था जो उन्हें परमेश्वर के राज्य में लेकर आया और उन्हें उसकी संतान बनाया। पौलुस रोम के विश्वासियों को लगातार अनुग्रह में रहते और चलते हुए देखना चाहता था।

प्रभु यीशु के कार्य के कारण रोमियों ने अब परमेश्वर के साथ अद्‌भुत शान्ति को भी अनुभव किया था। पौलुस चाहता था कि वे लगातार परमेश्वर के साथ शांति में रहें जबकि वे पाप पर अपनी विजय में चल रहे थे।

क्या आपने कभी इस अद्‌भुत शान्ति का अनुभव किया जो पापों की क्षमा को जानने से आती है। क्या आपको भी रोमियों के समान परमेश्वर के उद्देश्य के लिये अलग किया गया है? क्या आप प्रतिदिन उस विजय में चल रहे हैं जिसे देने को मसीह आया? काश ऐसा हो कि हम जिन्हें हमारे पापों से बचाया गया है, हमारे नये स्वामी और राजा के समर्पित अनुयायी बनें।

विचार करने के लिये:

- इस परिच्छेद में पौलुस प्रभु यीशु के एक सेवक होने के बारे में बताता है। क्या आप कह सकते हैं कि आप मसीह के सच्चे सेवक हैं? क्या कोई ऐसी चीज़ है जिसकी आज आपको उसे समर्पित करने की आवश्यकता हो?
- आपको इस सच्चाई से कितना आराम मिलता है कि यीशु परमेश्वर के पुत्र के रूप में, एक मनुष्य बना और हमारे साथ जाना गया?
- प्रभु यीशु ने जो आपके खातिर किया, क्या आपने उसे स्वीकार किया है? इसने आपके जीवन में क्या अन्तर उत्पन्न किया है?
- पौलुस का अपनी बुलाहट के प्रति एक स्पष्ट भाव था। आपके जीवन के लिये परमेश्वर की क्या बुलाहट है?
- पौलुस यहाँ हमें सुसमाचार के संदेश के प्रमुख तत्वों के बारे में क्या बताता है?

प्रार्थना के लिए:

- अपने जीवन को प्रभु यीशु के प्रति एक नये रूप में समर्पित करने को कुछ क्षण का समय दें, उससे कहें कि वह आप पर उस चीज़ को प्रगट करे जिसे अब तक आपने सौंपा नहीं है।
- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि आपके जीवन में पाप की सामर्थ को तोड़ने के लिये वह परमेश्वर के पुत्र के रूप में आया।
- परमेश्वर से आपके जीवन की बुलाहट को स्पष्ट करने के लिए कहें।
- परमेश्वर से अवसरों के द्वार खोलने को कहें जिससे सुसमाचार के अद्भुत संदेश को दूसरों के साथ बांटा जा सके।

एक वरदान का प्रकटीकरण

2

पढ़ें रोमियों 1:8-12

रोम की कलीसिया से अपना परिचय कराने और अपनी बुलाहट के भाव को उन्हें बताने के बाद पौलुस अब अपना समय परमेश्वर को धन्यवाद देने तथा उनके पास आने की अपनी इच्छा को व्यक्त करने में बिताता है। पद 8 पर ध्यान दें कि पौलुस ने रोम के विश्वासियों के बारे में क्या कहा। वह परमेश्वर को धन्यवाद देता है कि यीशु मसीह में उनका विश्वास पूरे संसार के द्वारा बोला है। यह इन विश्वासियों के बारें में कुछ बहुत महत्वपूर्ण चीज़ के बारे में बताता है। उनका प्रभु यीशु में अद्‌भुत विश्वास था। उनके विश्वास को पूरे संसार में जाना गया था। लोगों का उनके विश्वास द्वारा इतना अधिक स्पर्श किया गया था कि वे दूसरों को इस बारे में बताते थे। क्या ही सामर्थपूर्ण गवाही है!

हमारे लिये यह समझना महत्वपूर्ण है कि यह कलीसिया एक ऐसे क्षेत्र में स्थित थी जिसे इस समय मसीहियत का बैरी माना जाता था। यीशु का अनुयायी बनना सरल नहीं था। शायद इन परिस्थितियों में यह उनका विश्वास ही था जिसने उन्हें औरों से अलग रखा था। पौलुस उनके विश्वास के लिए उनकी प्रशंसा करता है।

पौलुस ने रोमियों विश्वासियों को उनके लिये की गई अपनी प्रार्थना को स्मरण कराया (पद 9)। उसने उन्हें बताया कि उसने उनके लिये लगातार प्रार्थना की। यह इन लोागों के लिये कितना प्रोत्सहित करनेवाला रहा होगा जो पौलुस से पहले कभी नहीं मिले थे।

यह प्रेरित पौलुस की प्रार्थना और इच्छा थी कि परमेश्वर उसके लिये रोम जाने का द्वार खोलेगा (पद 10)। यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि जबकि उसकी इच्छा उनके पास जाने की थी, उसने इस विषय को परमेश्वर के हाथों में सौंप दिया था। वह उनके पास "परमेश्वर की इच्छा" में होकर जाना चाहता था। वह उनके पास केवल निम्न अवस्थाओं में ही जाना चाहता था- परमेश्वर के समय में और परमेश्वर के उद्देश्य अनुसार और यदि केवल परमेश्वर अनुमति दे। पौलुस ने अपनी इच्छा को परमेश्वर के महान उद्देश्य के प्रति समर्पित कर दिया था। उसने द्वार खोलने के लिए दबाव देने का प्रयास नहीं किया, परन्तु उन अभिलाषाओं के लिए प्रार्थना की जिन्हें परमेश्वर ने उसके हृदय में डाला था।

इस कारण पर ध्यान दें कि पौलुस रोमी विश्वासियों से क्यों मिलना चाहता था (पद 11)। वह उन तक एक आत्मिक वरदान को हस्तांतरित करना चाहता था, जिससे वे मज़बूत बनेंगे।

हम पहले ही देख चुके हैं कि रोमी कलीसिया को उसके विश्वास के लिये जाना जाता था। संसार भर के लोग उनकी चर्चा कर रहे थे। तथापि, पौलुस ने विकास के स्थान को देखा। उसकी इच्छा थी कि विश्वासी अधिक से अधिक अपने विश्वास में बढ़ें। यहाँ "वरदान" शब्द यूनानी का कैरिज़्मा शब्द है। इसका नये नियम में पवित्र आत्मा के वरदानों को बताने में प्रयोग किया गया है। ऐसा लगता है कि पौलुस चाहता था कि रोम के विश्वासी उन सभी वरदानों से सुसज्जित हों जो उनके लिए विश्वास में दृढ़ बने रहने और सामर्थ में होकर सेवकाई करने के लिए आवश्यक थे। उसने उनकी विश्वासयोग्यता में आनन्द मनाया, परन्तु परमेश्वर के सामने दोहाई दी कि वे वैसे ही बनें जैसा परमेश्वर उन्हें बताना चाहता है। परमेश्वर के साथ चलने के इन दो पहलुओं को समझना हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। ऐसे बहुत से हैं जो सुसमाचार के सत्य के प्रति विश्वासयोग्य बने रहते हैं परन्तु सेवकाई के लिए बहुत कम सामर्थ को ही अनुभव कर पाते हैं। अन्य ऐसे भी हैं जिनमें सेवकाई करने की सामर्थ दिखती है परन्तु प्रलोभन या परिश्रम के सामने गिर जाते हैं। परमेश्वर की यही इच्छा है कि हम विश्वासयोग्य होने के साथ-साथ फलवन्त भी बनें।

पौलुस रोम में विश्वासियों की वृद्धि के प्रति धन्यवादी था। उसने इस सच्चाई के लिए परमेश्वर की सराहना की कि उनके विश्वास की चर्चा संसार भर में हो रही थी परन्तु वह इसमें संतुष्ट नहीं था कि जहां वे थे वहीं ठहरे रहें। जिसका अनुभव उन्होंने लिया था, वह उसका केवल एक भाग था जो परमेश्वर उनमें या उनके द्वारा करना चाहता था। वह उन्हें परिपक्व विश्वासियों के रूप में बढ़ते हुए देखना चाहता था। पौलुस ने रोमियों को प्रभु और उसकी सामर्थ को एक बड़े तरीके से जानने के बारे में चुनौती दी।

यह भी रोचक है कि पौलुस ने इस आत्मिक वरदान को विश्वासियों तक हस्तांतरित करने के लिए उनके साथ शारीरिक रूप से उपस्थित रहने की आवश्यकता को अनुभव किया। इसके कुछ कारण हैं। सर्वप्रथम, जब पौलुस ने अपने जीवन में बाद में तीमुथियुस को लिखा, उसने उसे स्मरण कराया कि वरदान की उस ज्योति को चमका दे जो उसे हाथ रखने के द्वारा दिया गया था (देखें 2 तीमु. 1:6)।

नये नियम के संदर्भ में, विश्वासी समझ गए थे कि जब उनके आत्मिक अगुवों ने उन पर हाथ रखे, एक आत्मिक कार्यवाही हुई।

जब यीशु ने अपने हाथ बिमारों पर रखे, वे चंगे हो गए। जब प्रेरितों ने विश्वासियों पर हाथ रखे, परमेश्वर ने उनकी प्रार्थनाओं का जवाब दिया, और लोगों को एक बड़े तरीके से स्वतन्त्र करने के साथ-साथ समर्थ भी किया गया। इसमें कोई जादू नहीं था, न ही यह एकमात्र ऐसा था जिससे परमेश्वर अपने लोगों को समर्थ व चंगा कर सकता था। पौलुस के लिए, तथापि, हाथ रखने की रीति एक खाली रीति ही नहीं थी। इसमें एक अपेक्षा थी कि परमेश्वर इन साधनों से आगे बढ़ेगा। सामर्थ को प्रदान किया गया, चंगाई आई और दृढ़ गढ़ों को तोड़ा गया जबकि विश्वासियों ने एक दूसरे पर हाथ रखकर प्रार्थना की।

इसका एक अन्य कारण भी था कि पौलुस क्यों विश्वासियों को अत्मिक वरदान हस्तांतरित कर उनके साथ रहना चाहता था। पौलुस की अभिलाषा विश्वास के गहन सत्यों में इन विश्वासियों को निर्देशित करने की थी। वह उनके प्रश्नों के जवाब देने और उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं के लिए प्रार्थना करने के योग्य बनना चाहता था ताकि परमेश्वर की आशीष और समर्थ किये जाने के सम्मुख आनेवाली बाधाओं को तोड़ा जा सके।

पौलुस का उद्देश्य रोमी कलीसिया के लिए न केवल व्यक्तिगत रूप से प्रार्थना करने का था परन्तु उन्हें निर्देशित करने का भी। वे एक साथ मिलकर अपने पारस्परिक विश्वास को बांटें। वे एक साथ मिलकर बढ़ें। यह पौलुस के लिये रोम के विश्वासियों हेतु प्रार्थना करने के समान ही महत्वपूर्ण था, उन प्रार्थनाओं को उनके साथ व्यक्तिगत रूप से प्रतिस्थापित कर एक-एक के साथ नहीं बांटा जा सकता था। परमेश्वर उन्हें जो कलीसिया को जो वरदान देगा कलीसिया में उनके बढ़ने पर निस्संदेह कई प्रश्न उठ खड़े होंगे। हमारे दिनों में, हमने कई सुसमाचार प्रचारकों या यात्री प्रचारक सेवकों को देखा है तथा विश्वासियों को अपने लिए चीजों को रूप देने को छोड़ते हुए देखा है। पौलुस ऐसा करना नहीं चाहता था। वह उनके साथ अनुवर्तन करना चाहता था जिन्हें उसकी सेवकाई द्वारा स्पर्श किया गया था।

विचार करने के लिए:

- रोमी विश्वासियों को उनके विश्वास के लिए जाना जाता था। आपको किस सीमा तक परमेश्वर के साथ आपके चलने और उस पर आपके विश्वास के लिए जाना जाता है?
- इस परिच्छेद में सेवकाई के लिए विश्वासयोग्यता और समर्थ किये जाने के महत्व के बारे में हम क्या सीखते हैं? ये दोनों चीज़ें कैसे भिन्न हैं?

- विश्वासयोग्यता और समर्थ किये जाने पर विचार करने के लिए कुछ क्षण का समय निकालें। क्या आप इनमें से किसी एक से चूक रहे हैं?
- सेवा के लिए परमेश्वर ने आपको कौन-सा आत्मिक दान दिया है? आप इसका प्रयोग कैसे कर रहे हैं?
- आत्मिक चलन में आज आप जहां हैं क्या आप उससे संतुष्ट हैं? क्या पौलुस चाहता था कि रोमी आत्मिक रूप से जहां थे, उसमें संतुष्ट हों?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर से उन आत्मिक वरदानों को दिखाने को कहें जो उसने आपको दिये हैं। उससे आपको न केवल विश्वासयोग्य परन्तु फलवन्त बनाने को भी कहें।
- जहां आप रहते हैं उसे समुदाय में गवाही देने की निर्भीकता की मांग परमेश्वर से करें।

विश्वास द्वारा धार्मिकता

3

पढ़ें रोमियों 1:13-17

पौलुस की अभिलाषा रोमी विश्वासियों के साथ रहने की थी। पद 13 में वह, उन्हें बताता है कि उन्हें देखने के उसके प्रयासों के बावजूद एक या अन्य कारण से उसे बाधा का सामना करना पड़ा था। उसने आशा नहीं छोड़ी। वह प्रार्थना कर रहा था कि परमेश्वर अन्ततः उसके रोम जाने के लिए अवसर को खोले (पद 10)।

पौलुस योजनाएं बना रहा था लेकिन परमेश्वर उसकी योजनाओं को बदलते हुए उसके रोम जाने में बाधा उतपन्न कर रहा था इसके बावजूद, पौलुस प्रार्थना करता रहा कि परमेश्वर उसके जाने के लिए द्वार को खोले। उसके हृदय में गहराई से इन विश्वासियों को देखने की इच्छा थी, एक ऐसी इच्छा जो निस्संदेह परमेश्वर की ओर से थी। यह मूसा के समान है, जिसने चालीस वर्ष की आयु में इस्राएल को मिस्त्र की गुलामी से स्वतन्त्र कराना चाहा था। इसके विपरीत, परमेश्वर उसे मिद्यान के मरूस्थल में ले गया। 80 वर्ष की आयु होने तक परमेश्वर ने उसे उसकी इच्छा को पूरा होते नहीं देखने दिया।

पौलुस अपनी योजनाओं की निराशा में कुड़कुड़ाया नहीं, परन्तु उसने प्रार्थना करना भी नहीं छोड़ा। वह लगातार अपना निवेदन परमेश्वर तक लाता रहा।

जबकि हमारा योजना बनाना महत्वपूर्ण है, तौभी हमारी सभी योजनाओं को परमेश्वर के समय और स्वीकृति के लिए उसे सौंप देना चाहिए। हमारा समय परमेश्वर के समय के समान नहीं है। बुड़बुड़ाना और शिकायत करना बहुत आसान है क्योंकि जिस समय हम सोचते हैं कि परमेश्वर हमारी योजनाओं के पूरा होने की अनुमति दे, वह ऐसा करता प्रतीत नहीं होता। पौलुस ने अपनी योजनाओं को परमेश्वर को सौंप दिया और सही समय पर द्वार खोलने के लिए उस पर भरोसा किया।

क्योंकि परमेश्वर उसी समय जवाब नहीं देता, तो इसका अर्थ यह नहीं है कि वह जवाब नहीं देगा। यदि परमेश्वर ने हमारे हृदय में एक विशिष्ट बोझ को डाला है, तो हमें लगातार प्रार्थना करते हुए उस समय भी उसकी इच्छा को खोजना है जबकि हमें अपने मार्ग में बाधा प्रतीत हो। हमें लगातार प्रार्थना करते हुए धीरज के साथ परमेश्वर की प्रतीक्षा करनी है।

उस कारण पर ध्यान दें कि पौलुस रोमी विश्वासियों से क्यों मिलना चाहता था।

वह उनमें एक फसल को पाना चाहता था, जैसा कि उसके पास अन्यजातियों में थी। पौलुस का रोमियों के पास जाने की योजना बनाना अपने किसी स्वार्थी उद्देश्य को पूरा करना नहीं था। वह रोम की कलीसिया में परमेश्वर की सामर्थ को गतिशील होते देखना चाहता था।

ध्यान दें कि पौलुस ने परमेश्वर के सम्मुख यूनानियों और गैर-यूनानियों दोनों के ही लिये, बुद्धिमानों के साथ-साथ मूर्खों के लिये भी एक अनुबन्ध का अनुभव किया। नये अंतर्राष्ट्रीय संस्करण में अनुबन्ध का अर्थ कर्त्तव्य या एक रूप में बन्धे रहने से है। पौलुस इस कारण से अनुबन्ध में था क्योंकि परमेश्वर ने उसे बचाने और सत्य को दिखाने के लिए कार्य किया था। वह परमेश्वर की उसके जीवन के लिए अन्यजातियों का प्रेरित होने की बुलाहट के प्रति भी अनुबंध में था। हमारे वरदान और बुलाहट अनुबन्ध से ही आते हैं। एक विश्वासी के रूप में परमेश्वर ने आपको कौन सा वरदान दिया है? उसने आपको क्या करने के लिये बुलाया है? आप भी परमेश्वर के सम्मुख अनुबन्ध में हैं।

पौलुस ने अपनी बुलाहट और वरदानों को गंभीरता से लिया। उसकी अभिलाषा फलवन्त होने की थी। पौलुस एक उमंग से भरा मनुष्य था, जो परमेश्वर के प्रति प्रेम और कर्त्तव्य व अनुबन्ध के भाव में होकर कार्य करता था। उसकी अभिलाषा रोम में परमेश्वर के राज्य की फसल को देखने की थी।

पौलुस उस सुसमाचार से नहीं लजाता था जो उसे सौंपा गया था (पद 16)। वह हर उस व्यक्ति तक उद्धारकर्त्ता यीशु के शुभ समाचार को फैलाना चाहता था जो उसकी सुनने को आते थे। जिस समय सुसमाचार को अस्वीकार दिया जाता या हमारा ठट्टा किया जाता और हमारे विश्वास के कारण हमें मूर्ख माना जाता है, उस समय पीछे हो जाना कितना सरल होता है।

पौलुस सुसमाचार से इसलिये नहीं लजाता था क्योंकि यह यहूदियों और अन्यजातियों दोनों ही के उद्धार के लिये परमेश्वर की सामर्थ थी। यह सरल संदेश शत्रु के दृढ़ गढ़ों को तोड़ने में सक्षम था। शैतान-झूठ के पिता, को इस संदेश की सामर्थ द्वारा परास्त किया गया था। झूठ और धोखे की उसकी कैद को तोड़कर इस सत्य के द्वारा बंधकों को छुड़ा लिया गया है।

यीशु और उसके कार्य के बारे में शुभ समाचार वह सत्य है जिसकी आज हमारे संसार को सुनने की आवश्यकता है। शत्रु सुसमाचार के संदेश से घृणा करता है। वह चाहता कि लोग यह न जानें कि उन्हें उनके जीवनों में पाई जानेवाली बुराई और पाप की सामर्थ से छुड़ाया जा सकता है।

जब एक व्यक्ति शत्रु के झूठ से घिरकर सुसमाचार के सत्य को ग्रहण करता है, तो कुछ अद्‌भुत घटित होता है। उसका जीवन बदल जाता है। सुसमाचार केवल शब्द ही नहीं है। सुसमाचार सामर्थ है: परिवर्तित करने की सामर्थ, नया बनाने और नया जीवन देने के लिए चंगा करने की सामर्थ। पौलुस ने सुसमाचार

की सामर्थ द्वारा जीवनों को परिवर्तित होते देखा था। वह ऐसी चीज़ से कैसे शर्मा सकता था, जो इतनी अद्‌भुत व सामर्थी हो?

पौलुस रोमियों को पद 1:7 में सुसमाचार के बारे में जो बताता है, उसे सुनें। सुसमाचार ने विश्वास द्वारा आई परमेश्वर की धार्मिकता को प्रगट किया। हमें पौलुस के इस महत्वपूर्ण कथन पर ध्यान देने की ज़रूरत है।

कलीसिया के पूरे इतिहास में ऐसे बहुत से रहे हैं जिन्होंने अपने स्वयं के प्रयासों द्वारा परमेश्वर के समर्थन को प्राप्त करने का प्रयास किया। पौलुस ने रोमियों को बताया कि सुसमाचार में बताई गई धार्मिकता मानव प्रयास से नहीं आई थी। वह सुसमाचार में बताई गई धार्मिकता के बारे में दो चीज़ें कहता है।

सर्वप्रथम, यह धार्मिकता परमेश्वर की ओर से हैं। इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर को प्रसन्न करने हेतु मानव प्रयास या मानव उद्‌भव नहीं है। सुसमाचार में बताई गई धार्मिकता परमेश्वर की धार्मिकता है।

पौलुस द्वारा बनाया गया दूसरा बिन्दु यह है कि धार्मिकता को विश्वास द्वारा प्राप्त किया जाता है। अन्य शब्दों में, परमेश्वर की धार्मिकता को उन्हें दिया जाता है जो विश्वास द्वारा भरोसा करते हैं। हम अपने स्वयं के प्रयासों से कभी भी धर्मी नहीं बन सकते हैं। यशायाह 64:6 में यशायाह हमारे धार्मिकता के कार्यों को "मैले चिथड़े" बताता है। यदि हमें परमेश्वर के सामने धर्मी होना है तो ऐसा केवल तब ही होगा जब हम इसे परमेश्वर की ओर से एक दान (उपहार) के रूप में प्राप्त करेंगे। सुसमाचार की धार्मिकता को इस संबन्ध में कुछ नहीं करना होता है कि हम कैसे रहते या परमेश्वर की सेवा करते हैं। यह हमारे साथ भी कुछ कार्य नहीं करती है। यह परमेश्वर की ओर से एक घोषणा है कि हम उसके साथ सही स्थिति में हैं। यह उसके पुत्र के कार्य में विश्वास द्वारा परमेश्वर की ओर से प्राप्त किया गया एक उपहार है।

जिसका आरम्भ विश्वास से होता है व यह विश्वास में ही पोषित व परिपक्व होता है। पौलुस ने रोमियों को बताया कि जिन्हें परमेश्वर की ओर से धर्मी घोषित किया गया है। वे विश्वास में बने रहेंगे। अन्य शब्दों में, जिस क्षण से हम अपने हृदयों को धार्मिकता के उपहार को प्राप्त करने के लिए खोलते हैं, हमारी मृत्यु तक; हमें अपने जीवन उस पर विश्वास करते हुए जो परमेश्वर कर रहा है, व्यतीत करना चाहिए।

हमारा पूरा भरोसा उसमें होना चाहिए। जिसका आरम्भ विश्वास से हुआ उसका अन्त भी विश्वास से होना चाहिए। हमें स्वर्ग जाने के लिए अपने स्वयं के प्रयासों पर भरोसा करने का साहस नहीं करना है। परमेश्वर के लिये जीवन

व्यतीत करने हेतु हमें अपने स्वयं के प्रयासों पर भरोसा करने का साहस नहीं करना चाहिए। यहाँ पौलुस जिस धार्मिकता के बारे में बताता है वह परमेश्वर द्वारा दिया गया नि:शुल्क उपहार है। अच्छा जीवन जो अब हम उसमें जीते हैं पवित्र आत्मा का हममें होनेवाला कार्य है। आरम्भ से लेकर समापन तक यह हममें परमेश्वर के कार्य के बारे में है।

विचार करने के लिए:

- यह परिच्छेद हमें अपनी योजनाओं को परमेश्वर के प्रति समर्पित करने के विषय में क्या सिखाता है?
- हमारे जीवन में परमेश्वर ने किस बुलाहट व उपहार (वरदान) को रखा है? उस बुलाहट व वरदान के लिए आप उसके प्रति किस अनुबन्ध को अनुभव करते हैं?
- क्या सुसमाचार के कारण आपने कभी लज्जा को अनुभव किया है? पौलुस इसके बारे में हमें यहाँ क्या बताता है?
- धार्मिकता क्या है? इसे कैसे प्राप्त किया जाता है?
- जब पौलुस हमसे यह कहता है कि पहले से लेकर अन्त तक हमें विश्वास द्वारा रहना है तो इससे उसका क्या अभिप्राय है? यीशु को विश्वास द्वारा स्वीकार करना और अपने मसीही जीवन को अपने स्वयं के प्रयासों द्वारा जीना कितना सरल है?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि पिता के साथ एक सही स्थान रखने को उसने एक साधन दिया।
- परमेश्वर से अपनी सारी योजनाओं को उसे समर्पित करने का अनुग्रह मांगें।
- परमेश्वर से कहें कि आपके जीवन में पवित्र आत्मा के निर्देशन और नेतृत्व के प्रति आपको और अधिक भावुक बनाए।
- परमेश्वर को सुसमाचार के संदेश की सामर्थ द्वारा आपके जीवन को परिवर्तित करने के लिए धन्यवाद दें।
- परमेश्वर ने जिस तरह से आपको धार्मिकता का दान दिया उसके लिए उसे धन्यवाद दें।

क्रोध का प्रकाशन

4

पढ़ें *रोमियों 1:18-32*

हर कोई सुसमाचार के अद्‌भुत सत्य को ग्रहण करने के लिए तैयार नहीं है। प्रभु यीशु पृथ्वी पर हमारे लिए स्वर्ग का द्वार खोलने आए कि हम पिता की उपस्थिति में प्रवेश कर सकें। अधिकांश लोग तथापि पाप के मार्ग पर अग्रसर रहते हुए परमेश्वर के उद्धार को अस्वीकृत करने का चुनाव करते हैं।

चूँकि परमेश्वर पवित्र है, अतः पाप उसके हृदय को दुखी करता है। परमेश्वर पाप को सहन नहीं कर सकता। इसका प्रमाण इसमें देखने को मिलता है कि जब उसके पुत्र ने हमारे पापों को अपने ऊपर ले लिया था तो वह उससे मुँह फेर लेने को विवश हो गया था। वह इसका तथा इससे जुड़े रहने वाले सभी लोगों का न्याय करेगा। यहां इस परिच्छेद में पौलुस विस्तार से बताता है कि परमेश्वर का क्रोध स्वर्ग से उन सब की बुराई पर पड़ेगा जो सत्य को अस्वीकार कर देते हैं।

इस कथन के बारे में महत्वपूर्ण चीज़ यह है कि प्रेरित पौलुस हमें बताता है कि परमेश्वर का क्रोध *पहले से ही* बुराई के विरुद्ध प्रगट हो चुका है। जबकि यह सत्य है कि पाप और बुराई का एक बड़ा व अन्तिम न्याय होगा परमेश्वर पहले से ही पाप का न्याय कर रहा है। जिस तरह से आज हम अपने हृदयों में स्वर्गीय आनन्द और शान्ति का अनुभव कर सकते हैं, उसी तरह से पाप और विद्रोह में बने रहने पर हम नरक के भय और अधंकार का भी अनुभव कर सकते हैं। बहुत से लोग अपने जीवनों में अंधकार की इस वास्तविकता के साथ रहते हैं। टूटे संबंध, क्रोध, कड़्वाहट तथा इस तरह की ही अन्य चीज़ें हमें नर्क का अनुभव देती हैं। हमारे समुदाय टूटे हुए तथा परमेश्वर की दण्डाज्ञा के अधीन हैं। पाप का परिणाम हमारे अस्पतालों और जेलों में देखने को मिलता है। बीमारी, रोग तथा सभी तरह के अपराध इस संसार में पाप के भयंकर प्रभावों के परिणाम हैं। हम पाप के विरुद्ध परमेश्वर के क्रोध का अनुभव ले रहे हैं। यह हमारे लिए इस बात की एक चेतावनी होनी चाहिए कि बड़े क्रोध को अभी प्रगट होना है।

पौलुस हमें यह स्मरण कराने में तीव्रता दिखाता है कि किसी के लिये भी कोई बहाना नहीं है। परमेश्वर प्रकृति द्वारा स्वयं को तथा अपने उद्देश्य को एक सामान्य तरीके से रखता है। परमेश्वर के अदृश्य गुण सृष्टि में प्रमाण हैं (पद 20)। कोई भी जिसने गरजवाले तूफान के कोप या थपेड़ो की शाक्तिशाली तेज़

हवा को न देखा हो परमेश्वर की सामर्थ पर संदेह कर सकता है। कोई भी जिसने संसार के प्राकृतिक क्रम को गंभीरता से नहीं देखा है, इसके सृष्टिकर्त्ता की बुद्धि पर संदेह कर सकता है। सबसे छोटे फूल की सुन्दरता हमें उसकी कोमल देख-रेख के विषय में बताती है। प्रकृति परमेश्वर के क्रोध, बुद्धि व प्रेम को प्रगट करती है। जब हम इस विस्मयकारी परमेश्वर के क्रोध को प्रकृति में देखते हैं, तो क्या इससे हमें उसका और उसकी सामर्थ का आदर नहीं करना चाहिए? जब हम अपने चारों ओर की सुदंरता और छोटे से छोटे फूल में भी विविध रंगो को देखते हैं, तो क्या हमें उस स्वर्गीय कलाकार की सराहना करनेवाला नहीं होना चाहिए जिसने इनमें रंग भरा कौन अपने सही मन में उस परमेश्वर का अनादर करने को तैयार होगा जो स्वयं को तूफान के कोप या किनारे पर प्रहार करनेवाली लहरों के रोष में स्वयं को प्रगट करता है।

पौलुस ने रोमियों को स्मरण कराया, तथापि, कि बहुत से लोग हैं जो प्रकृति में उस सब को देखने के बावजूद इसके रचयिता की महिमा से इंकार कर देते हैं। पौलुस के अनुसार ऐसा करनेवाले मूर्ख हैं (पद 21)।

व्यंगपूर्वक कहा जाए तो ये व्यक्ति जो परमेश्वर की उपेक्षा करते व पाप में रहते हैं स्वयं को बुद्धिमान बताते हैं। लौकिक, सांसारिक मन परमेश्वर की बुद्धि को नहीं समझता है। संसार भर के महान विश्वविद्यालय "प्रतिभाशाली" लोगों से भरे हुए हैं जो परमेश्वर के अस्तित्व के विचार का उपहास उड़ाते हैं। वे पवित्रशास्त्र की शिक्षा को तुच्छ रूप में देखते हैं। वे परमेश्वर के तरीकों को मूर्खतापूर्ण बताते हैं। परमेश्वर की महिमा का निरादर करते हुए इन लोगों ने अपनी निराधार कल्पना की आराधना की (पद 23)। उन्होंने ब्रह्माण्ड के परमेश्वर को अस्वीकृत करते हुए अपने स्वयं के देवता की रचना की। पौलुस के दिनों में ये देवता मूर्तियों के रूप में आए थे जिन्होंने मनुष्यों, पक्षियों और रेंगनेवाले जीवधारियों की समानता में रचा जाता था। लोग इन मूर्तियों के सामने झुकते हुए इनकी आराधना करते थे। बुद्धि ने दिखाया कि ये चीज़ें आराधना करने के योग्य नहीं थी। बुद्धि ने दिखाया कि ये शाक्तिहीन थीं। परन्तु शैतान ने इन लोगों के मनों को उसी तरह से अंधा कर दिया जैसा वह आज भी करता है।

आज हमारे बनाए हुए देवता भिन्न हो सकते हैं। पुरुष और स्त्री धन, समझदारी और भोग विलास के देवताओं की आराधना करने लगे। ये देवता उसी तरह से शक्तिहीन हैं जैसे पौलुस के दिनों में पत्थर और लकड़ी के देवता हुआ करते थे। वे पाप की समस्या का समाधान नहीं कर सकते।

क्योंकि इन लोगों ने परमेश्वर से पीठ फेर ली है, परमेश्वर ने उन्हें उनकी

पापपूर्ण इच्छाओं पर ही छोड़ दिया है (पद 24)। उन्हें छोड़ते हुए परमेश्वर ने अपने नियंत्रण को हटा दिया। हम इस सत्य के प्रमाणों को हमारे दिनों में स्त्री पुरुषों को अपने मनों में पापी इच्छाओं को रखते हुए उन पर कार्य करते हुए देखते हैं। हत्या, अनैतिकता, लालच और लालसा पापी मन और हृदय के फल हैं। हमारी जेलें उनसे भरी हुई हैं जिन्हें उनकी पापी अभिलाषाओं पर छोड़ दिया गया है। यदि परमेश्वर हमें हमारी पापपूर्ण अभिलाषाओं से न बचाए तो हमें हमारा क्या होगा? हम सभी अपने मनों के बुरे विचारों और इच्छाओं को जानते हैं। हमें हमारी बुरी अभिलाषाओं पर छोड़ दिया जाना कितना भयानक होगा।

जब लोगों को उनकी बुरी अभिलाषाओं पर छोड़ दिया जाता है तो क्या परिणाम होता है? जब परमेश्वर हमें पीछे से थामना छोड़ देता है तो क्या होता है, पौलुस हमें बताता है कि उसके दिनों में इन लोगों को यौन अशुद्धता पर छोड़ दिया गया था। उन्होंने अपनी स्वयं की देहों का तिरस्कार व अनादर किया। उन्होंने स्वयं को अपनी लालसाओं को दे दिया (पद 26)। जिसका परिणाम समलैंगिकता और अन्य यौन दुराचार थे। पुरुष पुरुषों के लिए और स्त्रियां स्त्रियों के लिए कामातुर होने लगे। वे एक दूसरे के साथ अनुचित कार्य करने लगे।

यौन अनैतिकता उस भयंकर पाप का केवल एक भाग था जो परमेश्वर का उसकी नियंत्रण करनेवाली शक्ति से दूर हो जाना था। पुरूष और स्त्री अन्य कई तरह की बुराइयों से भर गए थे। लालच, बैर, हत्या, झगड़ा, धोखा, द्वेष, गपशप और निन्दा परमेश्वर की नियंत्रण करनेवाली शक्ति के उठ जाने का प्रमाण थे।

अन्ततः, जब उन्हें उन्हीं की स्वतंत्रता पर छोड़ दिया गया, वे परमेश्वर से घृणा करनेवाले बन गए। वे अक्खड़, ढीठ और घमण्डी हो गए। बच्चों ने अपने माता-पिता की आज्ञा का उल्लंघन किया और अधिकारियों के प्रति कोई आदर वहां नहीं था। विश्वासरहित, हृदयरहित, भावनारहित और निष्ठुर पीढ़ी का जन्म हुआ। पौलुस हमें बताता है कि उन्होंने बुराई करने के नये तरीकों की खोज की।

जिस संसार के बारे में पौलुस हमसे बोला वह एक भयंकर बुराई का संसार था। यह अनैतिकता, हत्या और धोखे से भरा था। इसके वासी स्वार्थी, लालची और कड़वाहट से भरे थे। उन्होंने अपने मनों को परमेश्वर से फेर लिया था जिसका परिणाम विनाश था। उन्होंने न केवल स्वयं बुराई की परन्तु ऐसा करनेवालों को उन्होंने प्रोत्साहित करने के साथ-साथ उन्हें सही भी ठहराया। परमेश्वर का न्याय उन पर पहले से ही आ गया था कि उनके समुदाय बुरे मार्गों के परिणामों से दुख उठा रहे थे। वे पृथ्वी पर रहते हुए भी नर्क में रहे और एक पवित्र परमेश्वर का भयंकर न्याय व आग की झील उनकी प्रतीक्षा में थी।

हमने पौलुस के दिनों के इन पापी लोगों को देखा। उसी तरह के मन के हम में भी बहुत से प्रमाण मिलते हैं। हम यह भी जानते हैं कि हम किस तरह की बुराई को करने में समर्थ हैं। क्या यह हममें मसीह का कार्य नहीं है, हमें भी उसके न्याय के अधीन रहना होगा। हमें कितना अधिक धन्यवादी रहने की ज़रूरत है कि यीशु हमें जीवन का एक नया मार्ग देने को आया।

विचार करने के लिए:

- इस बात का क्या प्रमाण है कि परमेश्वर ब्रह्माण्ड में है? उसकी सृष्टि के द्वारा हम उसके बारे में क्या सीखते हैं?
- आपके पास इस बात के क्या प्रमाण हैं कि परमेश्वर ने आपके समुदाय को उसके मार्गों पर छोड़ दिया है? परिणाम क्या है?
- क्या आप अपने पापी स्वभाव का कोई प्रमाण देखते हैं? वे परिणाम क्या हैं? प्रभु यीशु ने आपको कैसे बदला है?
- पौलुस हमें परमेश्वर के क्रोध के बारे में क्या सिखाता है? पुरुषों और स्त्रियों के लिये क्रोध के परमेश्वर को ग्रहण करना कठिन क्यों है?

प्रार्थना के लिए:

- प्रकृति में स्वयं के बारे में जो परमेश्वर आप पर प्रगट करता है उसके लिये उसे धन्यवाद दें।
- परमेश्वर से कहें कि आपके आस-पास रहनेवालों के मन व हृदय को खोले कि वह इस वास्तविकता को जानें कि वह कौन है।
- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि वह पाप और बुराई का न्याय करेगा।
- क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जिसने कभी भी प्रभु यीशु और उसके कार्य को ग्रहण नहीं किया है? परमेश्वर से उसे क्षमा करने के साथ-साथ उसके मन को उद्धार हेतु खोलने के लिए भी कहें।
- परमेश्वर को उस नये हृदय के लिए धन्यवाद दें जो उसने आपको दिया है।

दूसरों का न्याय करना 5
पढ़ें *रोमियों 2:1-4*

पिछले अध्याय में पौलुस कहता है कि किसी के पास भी अपने जीवनों में परमेश्वर को आदर न देने का कोई बहाना नहीं है। प्रकृति स्वयं परमेश्वर तथा उसकी ज़रूरतों के बारे में इतने सामर्थी तरीके से बोली कि किसी के पास कोई बहाना नहीं था।

पौलुस अब अपना ध्यान 'धर्मी' व्यक्ति की ओर लगता है जो परमेश्वर को आदर देने का दावा करता है। धर्मी व्यक्ति के लिये उन लोगों का न्याय करना बहुत सरल है जो परमेश्वर के विरुद्ध एक विद्रोही जीवन बिता रहे हैं। जिस संसार में हम रहते हैं उसे अपनी जीवन प्रणाली में परमेश्वर को आदर देने की आवश्यकता दिखाई नहीं देती। हम कितनी ही बार उनकी अनैतिकता की अधर्मी घमण्ड भरी बातों को सुनते हैं। कितनी ही बार व्यवसाय समुदाय की बेईमानी को सामान्य रूप में ग्रहण कर लिया जाता है। टेलीविज़न, फिल्में और मनोरंजन के साधन एक अनैतिक जीवन प्रणाली को प्रोत्साहित करते हैं। संसार न केवल अपनी बुराई पर घमण्ड करता है, परन्तु वह इसे प्रोत्साहित भी करता है।

एक कलीसिया के रूप में हम इन रीतियों का खण्डन करते हैं। अपने मंच पर से हम संसार की प्रणाली और इसकी मानसिकता की बुराई को अस्वीकृत करते हैं। अब पौलुस "आत्मिकता" के बारे में बोलता है। जिन लोगों के बारे में पौलुस बोला है उन पर जल्द ही न्याय आनेवाला था जो परमेश्वर और उसके उद्देश्यों के विरुद्ध खुले विद्रोह में रहे। पौलुस तथापि हमें स्मरण कराता है कि जिस तरह से हम दूसरों का न्याय करते हैं, उसी तरह से हमें अपना भी न्याय करना होगा। अपने ऐसे पड़ोसी पर दोष लगाना कितना सरल है जो विवाहित होने के बावजूद किसी अन्य स्त्री के साथ रह रहा हो या जिसे व्यभिचार में पकड़ा गया हो, तौभी क्या हमने अपने हृदयों में देखा है। यीशु ने सिखाया कि एक व्यक्ति को अनैतिकता का पाप करने के लिए एक स्त्री को छूने की आवश्यकता नहीं है। उसने सिखाया कि मनों में व्यभिचार करना संभव है। आपको हत्या के दोषी पुरुष या स्त्री को मारना नहीं है; अपने मनों में उनकी मृत्यु की चाह करते हुए आप भी ऐसा ही कर सकते हैं।

कुछ समय पहले अपने मित्र से हुई बातचीत मुझे याद आती है जो कि मुझे एक रात देखे गए अपने स्वप्न के बारे में बता रहा था। स्वप्न में उसने स्वयं को

किसी दूसरी स्त्री के साथ पाया। उठकर पश्चात्ताप करने के पश्चात् वह परमेश्वर से क्षमा मांगने लगा। मुझे इससे बड़ी हैरानी हुई। अपने विचारों और स्वप्नों को न्यायोचित्त ठहराना कितना सरल है। यीशु हमें बताता है कि यदि हम उन्हें अपने मनों और हृदयों में स्थान दें तो हम दोषी बन जाते हैं। हम टेलीविज़न देखने के द्वारा हममें अनैतिकता, लालच और बदले की भावना को आने का अवसर देते हैं। हम क्रोधित होते और लालसा का अनुभव करते हैं परन्तु हम इसे इस कारण न्यायोचित ठहराते हैं क्योंकि हम कहते है कि ये वास्तविक नहीं है। यीशु हमें बताते हैं कि हमें अपने हृदयों और मनों को इन भयंकर विचारों से धोने की आवश्यकता है। हमारी देह और मन पवित्र आत्मा का मन्दिर हैं। अपने मनों में व्यभिचार को स्थान देने पर हम इसे दूषित करते हैं। जब हम क्रोध और हत्या को अपने हृदयों व मनों में आने देते हैं तो हम पवित्र आत्मा को शोकित करते हैं।

उस बारे में दूसरों का न्याय करना कितना सरल है क्योंकि वे उसे कर रहे होते हैं, जिसे हम करना चाहते हैं। पौलुस ने रोमियों को बताया कि जिस क्षण वे दूसरों का न्याय करते हैं वे उसी क्षेत्र में परमेश्वर द्वारा अपना न्याय किये जाने के द्वार खोलते हैं। परमेश्वर हमारे हृदयों की सामंजस्यहीनता को देखता है। दूसरों का न्याय करने पर हमें सही तरह से आश्वस्त होना चाहिए कि हम भी उसी पाप के दोषी नहीं हैं।

यीशु इसका उदाहरण उस कहानी से देता है जिस राजा को एक बड़ी रकम चुकानी थी (देखें मत्ती 18:23-35)। जिस व्यक्ति ने राजा से धन लिया था वह उससे ऋण को क्षमा करने की विनती करता है। राजा ने उस पर दया करते हुए उसका ऋण माफ कर दिया। जब यह व्यक्ति बाहर निकला तो उसे एक सेवक मिला जिसने उससे थोड़ा सा ही धन ऋण पर लिया था। जब सेवक भुगतान नहीं कर सका, तो इस व्यक्ति ने उसे कारावास में डाल दिय। जब राजा ने यह सुना, तो उसने क्षमा किए गए इस व्यक्ति को उस समय तक के लिए कारावास में डाल दिया जब तक कि वह अपने ऋण का भुगतान न कर दे? जब उस व्यक्ति ने अपने सेवक का न्याय किया जिसका ऋण क्षमा कर दिया गया था, ऐसा करके उसने स्वयं को परमेश्वर के न्याय के लिए खोल दिया।

हमें किसी का भी उस किसी चीज़ के लिये न्याय करने का कोई अधिकार नहीं है जिसके दोषी हम स्वयं होते हैं। यीशु फरीसियों पर दोष लगाने के लिए आए क्योंकि वे अपने भाइयों और बहनों के विरुद्ध न्याय करने को खड़े थे, जबकि वे स्वयं श्रेष्ठ न थे। हमें न्याय करते समय यह स्मरण करने की आवश्यकता है कि हमारा भी न्याय होगा। जब तक कि हम परमेश्वर द्वारा न्याय

किये जाने को तैयार न हों, हमें किसी और के विरुद्ध न्याय नहीं करना चाहिए। स्मरण रखें कि परमेश्वर हमारे हृदय के भीतर देखता है।

पद 2 में पौलुस ने स्मरण कराया कि परमेश्वर का न्याय सत्य पर आधारित था। वह सभी तरह के पाखण्ड व उन नकाबों को देखता है जिन्हें हम पहनते हैं। संभव है कि हम दूसरों से अपने पापों को छिपा लें परन्तु परमेश्वर को धोखा नहीं दिया जा सकता, वह सच्चाई को जानता है। वह हमारे सत्य स्वभाव को प्रगट करेगा।

जब हम स्वयं को न्यायी तथा अपने भाई व बहन को दोषी बनाते हैं, पौलुस हमें स्मरण कराता है कि हम ऐसा करके परमेश्वर की दया, उदारता और धैर्य के प्रति घृणा दिखाते हैं। क्या ये परमेश्वर की विशेषताएं नहीं थीं, आज हम कहां होंगे? क्या हम सभी उसके सम्मुख दोषी नहीं हैं। क्या हम सभी उसके मानदण्ड से गिर नहीं गए हैं? परमेश्वर अपनी दया, उदारता और धैर्य को हम पर प्रगट करता है। जब हम अपने भाई या बहन का उस क्षेत्र में न्याय करने को कदम बढ़ाते हैं जिसमें परमेश्वर हमारे प्रति, दया व उदारता को प्रगट कर रहा होता है, तो ऐसा करके हम परमेश्वर का स्थान ले लेते हैं। हम परमेश्वर के धैर्य के प्रति घृणा दिखाते हैं। हम परमेश्वर की उदारता पर प्रश्न करते तथा स्वयं अपने भाई का न्याय करने का अधिकार ले लेते हैं। वास्तव में, हम कह रहे होते हैं कि इस व्यक्ति के प्रति परमेश्वर का दया दिखाना गलत है। हम न्यायी तथा दोष लगाने वाले बन जाते हैं; एक ऐसी पदवी जो केवल परमेश्वर की ही है।

जब हम हमें दी गई दया को ग्रहण कर बदले में दूसरों को कड़वाहट देते हुए न्याय करते हैं तो ऐसा करने के द्वारा हम परमेश्वर की दया का ठट्टा उड़ाते हैं। कल्पना करें कि आपने किसी को उपहार दिया और उसका प्रयोग वह आपके विरुद्ध ही करता है। ऐसा ही हम दूसरों का न्याय करते समय करते हैं। क्षमा किया गया पापी अब अपने भाई व बहन पर दोष लगता है। वह, जिस पर दया दिखाई गई, अपने भाई के प्रति दया नहीं दिखाता है। यह एक गंभीर विषय है जो शीघ्रता से परमेश्वर के क्रोध को हम पर लाता है।

हमारे लिये यहां एक महत्वपूर्ण शिक्षा है। मसीह की देह में दूसरों का न्याय करने के विपरित हमें एक दूसरे को आशीष देने व प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। दूसरों का खण्डन करने से पहले, हमें अपने हृदयों व जीवनों में देखने की आवश्यकता है। हमें परमेश्वर के न्याय से बचाया गया है, अतः हमें उनके प्रति धैर्य, दया और करूणा को प्रगट करना सीखना है जो हमारे समान ही गिर गए थे।

विचार करने के लिए:

- क्या आपने कभी दूसरों का न्याय किया? पौलुस इस परिच्छेद में इस बारे में क्या सिखाता है?
- दूसरों का न्याय करने और उन्हें उस मार्ग के खतरों से सावधान करने के बीच क्या अन्तर है, जिन पर वे चलना चाहते हैं?
- दूसरों का न्याय करने से पूर्व अपने हृदय में देखने के महत्व के बारे में यह परिच्छेद हमें क्या सिखाता है?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर से उसकी दया की वास्तविकता को आपके हृदय पर खोलने के लिए कहें।
- धन्यवाद दें कि वह आपको क्षमा करने के लिए तैयार है। उसे धन्यवाद दें कि आपके पाप और विद्रोह में वह आपके प्रति बड़ी दया और उदारता को दिखाता है।
- परमेश्वर से अपने उस भाई या बहन के लिए धैर्य व उदारता को मांगे जो गिर गया है।

केवल प्रतिफल

6

पढ़ें रोमियों 2:5–10

अंतिम विभाग में पौलुस ने रोमियों को स्मरण कराया कि दूसरों का न्याय करने पर वे स्वयं को परमेश्वर के न्याय के लिए खोलेंगे। पौलुस अध्याय के अगले विभाग में इस न्याय के विषय पर बना रहता है। सुसमाचार का एक अनिवार्य भाग जिसका पौलुस ने प्रचार किया वह न्याय के साथ होना था। यह अनिवार्य था कि रोमी इस संदेश को समझ जाएं। जब तक कि वे पाप और बुराई के लिए परमेश्वर के न्याय को नहीं समझ लेते, वे कभी भी परमेश्वर के उद्धार और अनुग्रह को नहीं समझ सकते।

प्रेरित उनके बारे में बोलते हुए आरम्भ करता है जो ठोकर खाए हुए व हृदय में अपश्चात्तापी हैं। वे परमेश्वर तथा उसके उद्देश्यों का सामना कर रहे थे। वह इन व्यक्तियों को स्मरण कराता है कि वे अपने विरुद्ध परमेश्वर के क्रोध को एकत्रित कर रहे हैं। यद्यपि वे वर्तमान समय में परमेश्वर के न्याय को देख रहे थे, उन्हें इससे मूर्ख नहीं बनना था। न्याय का दिन उनके लिए आ रहा था।

अधिकांश लोग ऐसे हैं जो विद्रोह और पाप का जीवन बिताते हैं। क्योकि परमेश्वर उसी समय उनका न्याय नहीं करता, वे अपने विद्रोह में और भी निर्भीक हो जाते हैं। उन्हें लगता है कि वे अपने पाप से बच गए हैं। ऐसा नहीं है। स्वर्ग में उनके विरुद्ध न्याय होता है। प्रत्येक पाप के साथ वे अपने दोष को भी जोड़ देते हैं। एक दिन आएगा जब अपने जीवन का ब्यौरा देने के लिए वे परमेश्वर के सामने खड़े होंगे।

इस बारे में यीशु मत्ती के सुसमाचार में जो कहते हैं उसे सुनें: और मैं तुम से कहता हूँ, कि जो जो निकम्मी बातें मनुष्य कहेंगे, न्याय के दिन हर एक बात का लेखा देंगे। क्योंकि तू अपनी बातों के कारण निर्दोष और अपनी बातों ही के कारण दोषी ठहराया जाएगा (मत्ती 12:36–37)

हमारे द्वारा लापरवाही से बोले गए प्रत्येक शब्द का हमें न्याय के दिन पर लेखा देना होगा। पौलुस ठोकर और अपश्चात्ताप को स्मरण कराता है कि प्रत्येक कार्य, शब्द या विद्रोह के कार्य से उन्होंने अपने विरुद्ध अधिक क्रोध को अर्जित किया है। जिस तरह से हम स्वर्ग में धन जमा कर सकते हैं (मत्ती 6:19–20) उसी तरह से हम सत्य को अस्वीकृत करनेवाले क्रोध और न्याय को जमा कर सकते हैं।

पद 6 में पौलुस रोमियों को बताता है कि परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति को उसके द्वारा किये गए कार्य के अनुसार प्रतिफल देगा (पद 6)। विश्वासयोग्यता और अनाज्ञाकारिता के लिए प्रतिफल या दण्ड होते हैं। परमेश्वर हमारे विद्रोह के प्रति अन्धा नहीं है। वह उसके राज्य के लिए हमारे द्वारा किये गए प्रयासों और बलिदानों को जानता है। जो भला करने तथा महिमा, आदर और अमरता की खोज में रहते हैं परमेश्वर की ओर से वे अनन्त जीवन को प्राप्त करेंगे (पद 7)। जो लोग अपनी इच्छा से सत्य को अस्वीकृत कर बुराई का पीछा करते हैं, तथापि, उन्हें उसके क्रोध का सामना करना होगा (पद 8)। कुछ महत्वपूर्ण विवरण हैं जिनकी हमें यहां जांच करने की जरूरत है।

पद 7 में ध्यान दें कि ये वे लोग हैं जो भला करने में दृढ़ बने रहते और महिमा व अमरता की खोज में रहते हैं, वे अनन्त जीवन को प्राप्त करेंगे। यदि हमने पवित्रशास्त्र को उसके बड़े संदर्भ में नहीं लिया है तो इससे हमें यह मान लेना चाहिए कि भले कामों को करने के द्वारा हम अपने स्वर्ग जाने के कार्य को कर सकते हैं। हमें इसे यहां नहीं देखना चाहिए। पौलुस ने रोमियों को पहले से ही बता दिया था कि सभी विश्वास करनेवालों के उद्धार के लिए सुसमाचार एकमात्र परमेश्वर की सामर्थ है (पद 16)।

जब पौलुस हमें यह बताता है कि जो भला करने में दृढ़ बने रहेंगे वे अनन्त जीवन के वारिस होंगे, इससे उसका क्या अभिप्राय है? जबकि उद्धार प्रभु यीशु पर विश्वास करने तथा उसके कार्य पर भरोसा करने से है, सच्चे विश्वास की जांच हमारे कार्यों से होती है। सच्चा विश्वास करनेवाले इसे अपने जीवनों में प्रगट करेंगे।

यीशु ने अपने शिष्यों को बताया कि उसका अनुयायी बनने के लिए उन्हें अपना क्रूस उठाकर उसके पीछे चलना है (मर. 8:34)। प्रेरित याकूब हमें स्मरण कराता है कि विश्वास बिना कार्य मरा हुआ है (याकूब 2:20)। कार्य से उद्धार को नहीं बल्कि उद्धार के फल को अर्जित किया जाता है। परमेश्वर को महिमा व आदर देने हेतु आज्ञाकारिता में रहने के लिए विश्वास करनेवालों का हृदय पुकारता है। उनके हृदय बदल जाते हैं। वे अपने भले कार्यों और परिवर्तित जीवन से यह प्रमाणित करते हैं कि उनका विश्वास वास्तविक है।

पौलुस इसे स्पष्ट करना चाहता है कि विवादी व सत्य को स्वीकार न करनेवालों पर परमेश्वर का कोप पड़ेगा। सभी बुरा करनेवालों पर क्लेश और संकट आएगा (पद 9)। यह क्लेश व न्याय सबसे पहले यहूदियों पर आया। उसे अस्वीकार करनेवाले वे प्रथम थे। अपनी अस्वीकृति के लिए जवाब देनेवाले भी

वे प्रथम ही होंगे। तौभी, अन्यजाति उनसे अच्छे नहीं हैं। उन्होंने भी सुसमाचार से मुँह फेर लिया है। उन्होंने यहूदियों के साथ परमेश्वर के व्यवहार को देखने पर उद्धारकर्त्ता को स्वीकार न किया। अपने कार्यों के लिए उन्हें भी जवाब देना होगा।

सुसमाचार, जिसके बारे में पौलुस ने प्रचार किया पाप और विद्रोह के आनेवाले न्याय के बारे में बताता है। पौलुस ने सुसमाचार के इस पहलू को छिपाया नहीं। यह सुसमाचार का भाग नहीं है जिसे लोग आज सुनना चाहते हैं परन्तु वह जिसका प्रचार अभी भी होना चाहिए।

विचार करने के लिए:

- जब से आपने प्रभु यीशु को अपने उद्धारकर्त्ता के रूप में ग्रहण किया है आपके जीवन में क्या परिवर्तन आया है?
- सच्चा विश्वास कार्यों, विचारों और रवैयों से प्रमाणित होता है। क्या आप इस कथन से सहमत हैं?
- हमारे लिये यह समझना महत्वपूर्ण क्यों है कि परमेश्वर पाप का न्याय करेगा? इस सिद्धान्त पर हमारे दिनों में कम महत्व क्यों दिया जाता है?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर से अपने कार्यों द्वारा उस विश्वास को प्रगट करने में सहायता करने को कहें जो आपके हृदय में है।
- परमेश्वर ने आपके हृदय में जिस मार्ग को दिया है उसके लिए उसे धन्यवाद दें जोकि परमेश्वर को आदर व महिमा देने की खोज में रहा है।
- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि आप पर लागू किया गया समस्त न्याय उस समय प्रभु यीशु के लहू से साफ किया जा सकता है जब आप उसके द्वारा आपके लिए किये गए कार्य को स्वीकार करते हैं।
- क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जो अभी भी पाप में बन्धा हुआ है? परमेश्वर से कहें कि वह उस पर आज ही स्वयं को प्रगट करे।

हृदय का खतना

7

पढ़ें *रोमियों 2:11-29*

रोमियों के पहले दो अध्यायों में पौलुस आने वाले न्याय के बारे में बता रहा है। पौलुस के दिनों में यहूदियों और अन्यजातियों के बीच एक बड़ा विभाजन था। यहूदी परमेश्वर के चुने हुए लोग थे तथापि, परमेश्वर ने अपने लोगों को दिखाया कि उसे अन्यजातियों से भी प्रेम है।

वहां ऐसे भी थे जिनका यह मनाना था कि यहूदी नागरिकता होने के कारण वे परमेश्वर के गंभीर न्याय से मुक्त हैं। यह बात मौलिक लग सकती है परन्तु हमें यह समझने की ज़रूरत है कि यही मानसिकता आज हमारे दिनों में भी पाई जाती है। क्या आप कभी ऐसे लोगों से मिले हैं जिनका यह विचार रहा हो कि यदि उनका संबंध एक कलीसिया से हो और उन्होंने बहुत से अच्छे कार्य किये हों तो उन्हें किसी भी तरह से परमेश्वर के न्याय से बचाकर रखा जाएगा। इन व्यक्तियों ने विश्वास किया कि परमेश्वर बुराई के साथ-साथ भलाई को भी संतुलित करेगा और जिसके जीवन में भलाई बुराई से अधिक होगी वह बच जाएगा। वे अपने भले कार्यों या अपनी कलीसिया पर निर्भर हैं कि न्याय के दिन वे उन्हें सुरक्षा देंगे। पौलुस इन विषयों को यहां संबोधित करता है।

वह रोमियों को यह बताने के द्वारा आरम्भ करता है कि परमेश्वर पक्षपात नहीं करता है। इस संदर्भ में, वह यहूदियों और अन्यजातियों के बारे में बोलता है। पद 12 में पौलुस ने रोमियों को बताया:

इसलिये कि जिन्होंने बिना व्यवस्था पाए पाप किया वे बिना व्यवस्था के नाश भी होंगे और जिन्होंने व्यवस्था पाकर पाप किया, उनका दण्ड व्यवस्था के अनुसार होगा।

यहूदी व्यवस्था के अधीन रहते थे। अन्यजाति परमेश्वर की व्यवस्था से अलग होकर रहते थे। तथापि, अन्यजाति और यहूदी दोनों ही का न्याय होगा। यहां इस परिच्छेद में हमें कुछ महत्वपूर्ण देखने की आवश्यकता है। हो सकता है कि आपका पालन पोषण एक मसीही कलीसिया में न हुआ हो, संभव है कि आपने प्रभु यीशु के बारे में कभी न सुना हो, परन्तु अन्यजातियों के समान आपका भी न्याय होनेवाला है, उन्होंने भी परमेश्वर की व्यवस्था के बारे में कभी नहीं सुना है। पौलुस के अनुसार जो लोग व्यवस्था के बिना पाप करते

हैं वे भी नाश होंगे। यहां तक कि वे भी जिन्होंने इसके लिए परमेश्वर की मांग के बारे में कभी नहीं सुना, नाश होंगे; क्योंकि हम सभी को एक उद्धारकर्त्ता की ज़रूरत है।

पौलुस ने रोमियों को बताया कि सृष्टि स्वयं सृष्टिकर्त्ता की सामर्थ, करूणा और अनुग्रह को प्रमाणित करती है। यह परमेश्वर के अस्तित्व व चरित्र की गवाह है। हमारे देखने से भी बहुत अधिक इस ब्रह्माण्ड में है। हमारे दूरदर्शी वे सूक्ष्मदर्शी इस अद्भुत सृष्टि की गहराई की जांच करते रहे हैं। जटिलता इतनी बड़ी है कि हम कभी भी पूरी तरह से सबसे सरल तत्व को समझने में भी सक्षम नहीं हैं। इस सृष्टि का सावधानीपूर्वक अध्ययन करने वाले को यह निष्कर्ष निकालना चाहिए कि मनुष्य से बड़ा भी कोई और है जिसने प्रत्येक वस्तु को स्थान पर रखा है। सृष्टिकर्त्ता हमारी आराधना और स्तुति के योग्य है। वह चट्टानों, पत्थरों और मनुष्य की मूर्तियों में नहीं मिलता। वह इन सबसे भी महान् है। वह सूर्य, चन्द्रमा और तारों में नहीं मिलता। वह उनका रचयिता है। इस सृष्टि की सुन्दरता और शक्ति इस परमेश्वर के चरित्र की गवाही देते हैं। वह पवित्र व सर्वसामर्थी है और तौभी बहुत ही व्यक्तिगत व भद्र है। ये सच्चाईयां हमें मूर्तिपूजा से दूर रखती हैं और अपने सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर के सामने घुटने टिकाने का कारण बनती हैं। इसके अतिरिक्त हम सभी की रचना उसके स्वरूप में की गई है, कि उसने हमारे हृदय में अपनी व्यवस्था का एक भाव दिया है। यह स्पष्ट है कि परमेश्वर ने हमें उस ज्योति के प्रति उत्तरदायी बनाया है जो उसने हमें दी है। चाहे हमने पहले कभी भी पवित्रशास्त्र के बारे में न सुना हो तौभी हमारे अपने हृदयों व सृष्टि में इसकी गवाही पाई जाती है और उसके पवित्र आत्मा की गवाही में हमारा न्याय करना पर्याप्त है। हमारे पास कोई बहाना नहीं है।

दूसरी ओर, यदि हमने शुभ समाचार को सुना तथा पवित्रशास्त्र के बारे में सीखा है, हमारा उत्तरदायित्व बड़ा हो जाता है। परमेश्वर हमें उसके प्रति आज्ञाकारिता में रहने की लिए उत्तरदायी ठहराएगा जिसे उसने हम पर अपने वचन में प्रगट किया है।

पौलुस पद 13 में हमें स्मरण कराता है कि व्यवस्था के सुननेवालों को धर्मी नहीं ठहराया गया है परन्तु उनको जो इसे काम में लाते हैं। यह कथन उन सब के लिए एक विशिष्ट चुनौती था जिनके पास व्यवस्था हैं। पौलुस के दिनों में यहूदी घमण्ड करते थे कि वे परमेश्वर के चुने हुए लोग थे। वे मूसा की व्यवस्था की शिक्षा के अधीन रहे थे, परन्तु वे परमेश्वर के लोगों के समान नहीं रहे थे। पुनः यह महत्वपूर्ण है कि हम समझते हैं कि यह हमारे दिनों की कलीसिया के

लिए भी सही है। हम प्राय: चीज़ों को उस तरह से नहीं देखते जैसे परमेश्वर उन्हें देखता है। अपने एक अच्छे भाग को आगे रखना तथा मनुष्यों के सम्मुख पवित्र और धर्मी दिखना कितना सरल है।

अनैतिकता, बेईमानी और भौतिकवाद हमारे दिनों की कलीसिया के निचले स्तर पर मिलते हैं। सच्चाई यह है कि हम इस वास्तविकता पर घमण्ड कर सकते हैं कि हम कलीसिया में अगुवे या विश्वासयोग्य सदस्य हैं, परन्तु सच्चाई परमेश्वर जानता है। अन्तत: हम अपने बारे में जो कुछ सोचते या स्वयं को कहलाते हैं वह महत्व नहीं रखता परन्तु यह कि हमें परमेश्वर के सत्य को जानना है।

पद 14 में पौलुस ने रोमियों को स्मरण कराया कि ऐसे लोग भी वहां थे जिन्हें कभी भी परमेश्वर की व्यवस्था को नहीं सिखाया गया था, जो कि उसके सिद्धान्तों के अनुसार रहते हैं। पौलुस के अनुसार इन व्यक्तियों ने दिखाया कि हमें परमेश्वर की व्यवस्था उनके हृदयों पर लिखी गई थी। जो सही था वे उसे जानते थे क्योंकि उन्हें परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया था।

परमेश्वर ने न केवल यह प्रमाणित किया कि वह सृष्टि में विद्यमान है, वह हमारे भीतरी अस्तित्व में भी हमसे बोला है। उसने हमारी रचना एक ऐसी आत्मा के साथ की है जो उसके साथ एक हो जाने की पुकार करती है। उसने हमें विवेक दिया है जो उसकी मांगों को समझता है। पौलुस पद 15 में हमें स्मरण कराता है कि हमारे अपने ही विचार कई बार हम पर दोष लगाते और कई बार हमारी रक्षा करते हैं। अन्य शब्दों में, जब हम कुछ गलत करते हैं तब हमारे हृदयों में कोई चीज़ हमें बताती है कि हमने गलत किया है। जब हम किसी को दुखी करते हैं, तो अपने भीतर गहराई में हमारा विवेक हमें दोषी ठहराता है। पुलिस जांचकर्त्ता झूठ पकड़नेवाली मशीन के द्वारा इस धारणा को समझते हैं। एक व्यक्ति के झूठ बोलने पर उसके शरीर में कुछ होता है। इस बात को झूठ पकड़नेवाली मशीन के द्वारा मापा जाता है। यह प्रमाणित करता है कि अधर्मियों का विवेक भी कुछ गलत करने पर परेशान होता है। हमारे कुछ अच्छा करने पर भी यही चीज़ सत्य होती है। इस तरह के आनन्द और संतुष्टि को उस समय में एक गैर-विश्वासी में देखा जाता है जब वह कुछ दया का कार्य करता/करती है या फिर किसी की सहायता करने को उसकी आवश्यकता को पूरा करना चाहता/चाहती है। जो कुछ पौलुस हमें बता रहा है वह यह है कि परमेश्वर ने अपनी उपस्थिति को हम पर प्रगट किया है। उसने हममें एक विवेक को रखा है। हम उस विवेक की उपेक्षा कर सकते हैं, परन्तु ऐसा करते हुए हम दोष भावना व अपमान में रहेंगे।

वह दिन आ रहा है जब परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति का न्याय उस ज्योति के अनुसार करेगा जो उसे दी गई है। जिनके पास व्यवस्था है उनका न्याय इस तरह से होगा कि उन्होंने व्यवस्था को कैसे प्रतिक्रिया दी। जिनके पास व्यवस्था नहीं है उनका न्याय उस प्रमाण पर होगा जिसे परमेश्वर ने सृष्टि व उनकी आत्माओं में डाला है तथापि सभी का न्याय होगा।

पद 17 से 23 में पौलुस अपना ध्यान यहूदियों की ओर फेरता है (परन्तु हम सभी की ओर भी जिनके पास पवित्रशास्त्र है)। वह हमें स्मरण कराता है कि हम कितने घमण्डी हो सकते हैं। इस सच्चाई पर डींग मारना बहुत सरल है कि हम परमेश्वर के वचन को जानते हैं और हमारा परमेश्वर के साथ संबंध है। हो सकता है कि एक लम्बे समय तक आप वचन के निर्देशन में रहे हों और परमेश्वर के सत्य को जानते हों। यह भी हो सकता है कि आप दूसरों को सिखाने में भी सक्षम हों। आप स्वयं को उन लोगों के एक ऐसे मार्गदर्शक के रूप में देख सकते हैं जो परमेश्वर के वचन के प्रति अंधे हैं। आप अपने शिक्षण और प्रचार द्वारा उन्हें सत्य के प्रकाश में लाने के योग्य हो सकते हैं। जबकि दूसरों को सत्य सिखाना एक अच्छी चीज़ है, यह भी महत्वपूर्ण है कि हम अपने दैनिक जीवनों में उस सत्य पर जीयें।

प्रचार करना सरल है परन्तु जो हम प्रचार करते हैं उसके अनुसार जीवन बिताना बहुत कठिन है। पौलुस के दिनों में ऐसे लोग थे जो चोरी और व्यभिचार के विरोध में बोले परन्तु स्वयं उसी पाप में गिर गए। उन्होंने परमेश्वर के वचन को सही तरह से सिखाया व प्रचार किया परन्तु अपने हृदयों में वे इस सत्य के अनुसार नहीं जीये। परमेश्वर को वे अपने शब्दों से मूर्ख नहीं बना पाए थे। उसने उनके हृदयों में देखा और उनके पाखण्ड के लिए उसने उनका न्याय किया।

पाखण्ड का यह पाप आज हमारे दिनों में दिखाई देता है। परमेश्वर के वचन के शिक्षकों और प्रचारकों के पाप प्रगट हुए हैं। आदरनीय सुसमाचार-प्रचारक और अगुवे पाप में गिरते हैं। उन्होंने अद्भुत संदेशों का प्रचार किया और बहुतों को उन्होंने अपने शब्दों से छुआ परन्तु वे अपने हृदयों में सत्य के अनुसार नहीं जी रहे थे। इन चीज़ों के प्रगट होने पर, वे परमेश्वर के नाम को अपमानित करते हैं। जब लोग सिखाने के अनुसार स्वयं उस पर नहीं चलते हैं तो ऐसा करके वे परमेश्वर के नाम की निन्दा करते हैं।

अपने दिनों के यहूदियों के बारे में बोलते हुए, जिन्होंने अपने खतना किये जाने पर घमण्ड किया, पौलुस स्पष्ट करता है कि उनके खतने का एक सीमित ही महत्व था। खतना इस बात का एक चिन्ह था कि एक व्यक्ति का संबंध

परमेश्वर के परिवार से है। मसीह की देह से संबन्धित होने का महत्व है परन्तु परमेश्वर इन बाहरी चिन्हों की ओर नहीं देखता है। वह हमारे हृदयों के भीतर देखता है और जो वह देखता है उसी के अनुसार वह न्याय करता है।

पौलुस के अनुसार, सच्चा विश्वासी वह नहीं है जिसका खतना किया गया हो या जो किसी एक विशिष्ट कलीसिया से हो, परन्तु वही है जो परमेश्वर के वचन के सिद्धान्तों की आज्ञाकारिता में रहता है।

पद 29 में पौलुस के लिए बाहरी चिन्ह नहीं बल्कि भीतरी चिन्ह महत्वपूर्ण था। देह का खतना नहीं बल्कि हृदय का खतना मान्य है। हृदय का खतना होने पर पुराने दुनियावी तरीके हट जाते हैं। जिस व्यक्ति के हृदय का खतना होता है वह अपने पापों से व्यवहार कर सत्य की रोशनी में चलता है।

पौलुस निष्कपटता के लिये कहता है। वह हृदय के खतने के बारे में कहता है। सभी सांसारिक इच्छाओं को काट देना है। सभी क्रोधी व लालसापूर्ण पूर्ण विचारों को फेंक देना है। यह सत्य है कि परमेश्वर हृदय के खतने के बारे में बोलता है। हृदय के बारे में बोलते हुए परमेश्वर हमारे भीतर की केन्द्रीय चीज़ के बारे में बोलता है जो कि महत्वपूर्ण है। यह उमंग, भावनाओं और रवैयों का स्थान है। हमें अपने केन्द्र में शुद्ध होना है। हृदय का खतना होने पर यह परमेश्वर की चीज़ों के प्रति सौम्य हो जाता है। बाहर से धर्मी होना सरल है, परन्तु परमेश्वर उन्हें खोज रहा है जो हृदय से उसकी सुनें व उसकी आज्ञा को मानें। सच्चा विश्वासी अपने हृदय से विश्वास करता और परमेश्वर के वचन के प्रति विश्वासयोग्य आज्ञाकारिता के द्वारा अपने विश्वास की उदारता को प्रगट करता है।

विचार करने के लिए:

- हमारे दिनों में लोग परमेश्वर के न्याय से बचने के लिए किस तरह की चीज़ों पर निर्भर रहते हैं।
- हमारे एक दूसरे को देखने तथा परमेश्वर के हमें देखने के बीच क्या अन्तर है?
- क्या स्वयं को इस विचार से धोखा देना संभव है कि हमारे और परमेश्वर के बीच सब कुछ सही है जबकि वास्तव में ऐसा नहीं है?
- इस विभाग में हमने इस बारे में क्या सीखा कि परमेश्वर ने सृष्टि में स्वयं को हम पर कैसे प्रगट किया और विवेक पर भी?
- हमारे हृदयों का खतना होने से क्या अर्थ है? क्या यह आपके जीवन में हुआ है?

स्तुति के लिए:

- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि उसने स्वयं को प्रकृति, हमारे विवेक और अपने वचन के द्वारा प्रगट किया है।
- प्रभु से अपने हृदय को खोलने के लिए तथा इसमें किसी भी छिपे पाप को प्रगट करने के लिए कहें।
- कुछ क्षण प्रार्थना करने के लिए लें कि जिस पर आप विश्वास करते हैं उसके अनुसार वास्तव में जीवन व्यतीत करने में वह आपकी सहायता करें।

एक यहूदी होने का महत्व

पढ़ें रोमियों 3:1-8

8

पौलुस रोमियों को स्मरण करा रहा है कि परमेश्वर नागरिकता के आधार पर न्याय नहीं करता है। अंतिम विभाग में उसने उन्हें बताया कि एक ऐसा यहूदी होने की अपेक्षा जो सत्य को स्वीकार नहीं करता एक अन्यजाति होना भला है जो उपयुक्त कार्य करता है।

इसे समकालीन शब्दों में रखते हुए हम कह सकते हैं: कलीसियाई सदस्यता और बपतिस्मा हमें परमेश्वर की कृपा को नहीं दिला सकते, यदि हम उसके उद्देश्य के अनुसार जीवन न बिताएं। पदवी, कलीसियाई सदस्यता या सामुदायिक स्तर परमेश्वर के लिए कोई अर्थ नहीं रखते। वह एक ऐसे हृदय की खोज में रहता है जो उसके समक्ष सही हो।

इसी संबंध में, पौलुस अगले विभाग में यह प्रश्न करता है: यदि परमेश्वर की ओर से किसी विशेष क्षमा/कृपा की गारंटी न हो तो एक यहूदी होने से क्या लाभ है? यदि परमेश्वर ने उन्हें बचाया जिन्होंने मूसा की व्यवस्था का पालन नहीं किया तो उनके खतने से क्या लाभ था? पौलुस अगले विभाग में इन्हीं विषयों पर बोलता है।

प्रेरित पौलुस के लिए, यहूदी होने से बड़ा लाभ था। सर्वप्रथम पद 2 में उसने अपने पाठकों को बताया कि परमेश्वर ने अपनी सृष्टि के लिए उद्देश्य को प्रगट किया। उनके द्वारा उसने अपना परिचय संसार को दिया। पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता एक ऐसे मसीही के लिए बोले थे जो उन्हें छुड़ाने के लिए आएगा। परमेश्वर ने नये नियम में यहूदी विश्वासियों का प्रयोग अपने समय के संसार में सुसमाचार को बांटने के लिए किया। पुराने और नये नियम के पवित्रशास्त्र के लिए हम यहूदी जाति के कितने अधिक ऋणी हैं। संसार की किसी भी जाति का प्रयोग यहूदियों के समान परमेश्वर के उद्देश्यों को इतने सामर्थी रूप में प्रगट करने के लिए नहीं किया गया था। इस तरह के उत्तरदायित्व व सुअवसर का दिया जाना कितना अधिक सम्मानजनक है। राजाओं के राजा की ओर से उसकी संसार भर में सेवा हेतु नियुक्त किये जाने और संसार के लिए उसका प्रतिनिधि होने से महान आदर और कोई नहीं हो सकता।

हरेक यहूदी परमेश्वर का सेवक होने के उत्तरदायित्व व विशेषाधिकार की

सराहना नहीं करता। वास्तव में, एक जाति के रूप में वे परमेश्वर के प्रति अविश्वासयोग्य थे और उन्होंने उसके उद्देश्य का विरोध किया। अपने परमेश्वर की सेवा करने के बजाय उन्होंने उसके विरुद्ध विद्रोह किया।

तथापि, पौलुस पद 3 और 4 में स्मरण कराता है कि यहूदियों की अविश्वासयोग्यता परमेश्वर को उसके उद्देश्यों को पूरा करने से रोक न सकी। संसार के उद्धार के लिए अपने उद्देश्य को पूरा करने हेतु उसने इस जाति का प्रयोग किया।

अपने स्वयं के जीवन की जांच करने पर मुझे दुख हुआ कि परमेश्वर जो मुझे सिखाना चाहता था उसे सीखने में मुझे कितना अधिक समय लगा। कितनी ही बार मेरा घमण्ड इसके मार्ग में आया। आज्ञापालन करने में मैं कितना धीमा था। यह कैसे संभव है कि परमेश्वर अपनी सेना में आपके और मेरे जैसे सैनिकों के साथ अपने राज्य को बढ़ाने व विजय दिलाने का आश्वासन दे? पद 4 में पौलुस आश्वासन देता है कि परमेश्वर की विश्वासयोग्यता के कारण ही परमेश्वर के राज्य में वृद्धि हुई है। हमारे असफल हो जाने पर भी परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञाओं के प्रति विश्वासयोग्य रहता है। हमारी कमज़ोरियों और नश्वरता के बावजूद परमेश्वर के उद्देश्य पूरे होते रहेंगे। वह असफल नहीं होगा। अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए वह हमारी कमज़ोरियों का प्रयोग करेगा। हमारी असफलताओं का प्रयोग वह अपने नाम को महिमा देने के लिए करेगा। हमारी नश्वरता का प्रयोग करने के द्वारा वह शत्रु के दृढ़ गढ़ों को तोड़ेगा। यह परमेश्वर के राज्य के बारे में एक अद्वितीय चीज़ है। वह हमें कमज़ोरियों और असफलताओं के बावजूद बढ़ाता है। इस्राएल जाति इसका एक सिद्ध उदाहरण है। पुराना नियम, एक के बाद एक इस्राएल की असफलता के उदाहरणों से भरा है, तौभी इस जाति के द्वारा इस संसार ने उद्धारकर्त्ता को जाना और परमेश्वर के राज्य का विस्तार हुआ।

यह पौलुस और उसके पाठकों के सामने एक प्रश्न लाता है। पौलुस पद 5 में इस प्रश्न को उठाता है:

सो यदि हमारा अधर्म परमेश्वर की धार्मिकता ठहरा देता है, तो हम क्या कहें? क्या यह कि परमेश्वर जो क्रोध करता है अन्यायी है?

पौलुस पूछ रहा है कि क्या यह सही है कि परमप्रधान परमेश्वर जो अपनी महिमा को पूरा करने व अपने राज्य का विस्तार करने के लिए हमारी कमज़ोरियों को प्रयोग कर सकता है–हमारे असफल हो जाने पर हमारा न्याय करे। यदि अन्त में हर चीज़ सही हो जाती है तो क्या परमेश्वर को खुश होकर हमारा न्याय नहीं करना चाहिए?

पौलुस के लिए यह अकाल्पनिक था कि परमेश्वर मानवता का न्याय उनके पापों के लिये न करे। पद 6 में वह हमें बताता है कि यदि परमेश्वर अपने स्वयं के लोगों का न्याय न करे तो वह संसार में पाप का न्याय कैसे कर सकता है? और यदि परमेश्वर संसार के पापों का न्याय न करे तो वह किस तरह का परमेश्वर होगा?

पौलुस जानता था कि परमेश्वर सभी पापों और अविश्वासयोग्यता का न्याय करेगा परन्तु वह यह भी जानता था कि परमेश्वर मनुष्य के बुरे उद्देश्यों का प्रयोग भी भलाई के लिए कर सकता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें दण्ड नहीं दिया जाएगा। कल्पना करें कि आपका बच्चा घर की किसी वस्तु को तोड़ देता है आप उस वस्तु को जोड़ने में सक्षम हैं, तौभी इसका अर्थ यह नहीं है कि बच्चे को उसके इस कार्य के लिए दण्ड न दिया जाए? उस बच्चे ने जो किया है क्या उसके लिए जवाब देने की उसे कोई आवश्यकता नहीं है?

उन चीज़ों को जोड़ने में जिन्हें हम तोड़ते हैं तथा जिन्हें हम चोट पहुँचाते हैं उन्हें चंगा करने में परमेश्वर दया और करूणा में होकर कार्य करता है। तथापि, वह हमारे कार्यों का लेखा लेता है। सच्चाई यह है कि किसी चीज़ को जोड़ने का अर्थ यह नहीं है कि उसे तोड़नेवाले व्यक्ति को कोई दण्ड न मिले। जो हम तोड़ते हैं परमेश्वर उसे जोड़ना चाहता है। हमें जो दुख होता है उसे वह चंगा करना चाहता है परन्तु हमारे पाप और बुराई की उपेक्षा करने के द्वारा वह अन्याय नहीं दिखाएगा।

रोमियों के इस विभाग की जांच करने पर हमें स्मरण कराया गया है कि हमारी कमज़ोरी और अविश्वासयोग्यता के बावजूद परमेश्वर का राज्य बढ़ा है। यह कमज़ोर और नश्वर व्यक्तियों के द्वारा बढ़ा है, इसलिए नहीं कि वे शक्तिशाली और विश्वासयोग्य हैं परन्तु इसलिए क्योंकि परमेश्वर अपनी योजनाओं और उद्देश्यों के प्रति विश्वासयोग्य है। इस तरह के दयालु, करूणामयी और विश्वासयोग्य परमेश्वर के हाथों में एक उपकरण बनना कितना बड़ा विशेषाधिकार है।

विचार करने के लिए:

- परमेश्वर के सेवक होने का जो आपको विशेषाधिकार मिला है कुछ क्षण के लिए उस पर विचार करें। क्या आप इस विशेषाधिकार की पूर्ण रूप से सराहना करते हैं?
- इस सच्चाई से आपको क्या प्रोत्साहन मिलता है कि हमारे अविश्वासयोग्य रहने पर भी परमेश्वर विश्वासयोग्य बना रहता है?

- क्या परमेश्वर ने कुछ अच्छा करने के लिए आपकी असफलताओं का कभी प्रयोग किया है? स्पष्ट करें।
- क्या आपने कभी स्वयं को यह बताते हुए अपने पापी कार्यों को बहाना बनाने का प्रयास किया है कि परमेश्वर इस पर किसी भी तरह से कार्य करेगा? इस तरह की विचारधारा के बारे में हम इस परिच्छेद से क्या सीखते हैं?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर का सेवक होने के लिए विशेषधिकार को समझने हेतु परमेश्वर से सहायता मांगें।
- आपकी कमज़ोरियों और असफलताओं के बावजूद वह जिन तरीकों का प्रयोग करता है उसके लिए परमेश्वर को धन्यवाद दें।
- परमेश्वर से अपने हृदय की उस चीज़ को खोजने के लिए कहें जहां आपने उसे असफल किया था। उसके सम्मुख इन चीज़ों का अंगीकार करने में कुछ समय बिताएं ।
- आपके जीवन में परमेश्वर की विश्वासयोग्यता के लिए उसे धन्यवाद दें।

व्यवस्था से अलग धार्मिकता

9

पढ़ें रोमियों 3:9-31

अन्तिम मनन में पौलुस ने प्रश्न का जवाब दिया: "एक यहूदी होने का क्या महत्व है?" उसने रोमियों को स्मरण कराया कि यहूदियों को परमेश्वर का वचन सौंपा गया था। परमेश्वर ने संसार तक अपने उद्देश्यों को पहुँचाने के लिए उनका प्रयोग किया।

अध्याय 3 के इस अगले विभाग में पौलुस दूसरे महत्वपूर्ण प्रश्न की ओर जाता है: यदि यहूदी वे थे जिन्हें परमेश्वर का वचन सौंपा गया था, तो क्या इसका अर्थ यह है कि वे किसी और से अधिक श्रेष्ठ थे? यह निश्चय ही उन दिनों के यहूदियों की मानसिकता थी। यहूदी परमेश्वर के चुने हुए लोग थे। अन्यजातियों को मन्दिर में आने की अनुमति नहीं थी। अन्यजाति को उद्धार के लिए योग्य नहीं माना गया था।

पौलुस अपने पाठकों को स्मरण कराता है कि यहूदी होना जबकि एक अद्‌भुत विशेषाधिकार था, तौभी यह किसी व्यक्ति को अन्यजाति की तुलना में श्रेष्ठ नहीं बनाता। वास्तव में यहूदी और अन्यजाति दोनों ही पाप और परमेश्वर के न्याय के अधीन थे। इस संबंध में यहूदी और अन्यजाति का स्तर एक समान था।

इस पर बल देने के लिए पौलुस पुराने नियम के परिच्छेदों की एक श्रृंखला को उद्धरित करता है। यहां स्मरण रखें कि उसका केन्द्र यहूदियों को यह दिखाना है कि वह अन्यजाति के समान पाप के अधीन था। पौलुस अपने विषय को प्रमाणित करने के लिए यहूदी पवित्रशास्त्र से उद्धरित करता है। इससे उसके तर्क को बल मिलता है क्योंकि यहूदी पवित्रशास्त्र के प्रति श्रद्धा रखते थे।

पौलुस दो परिच्छेदों के साथ आरम्भ करता है- भजनसंहिता 14:1-3 और भजन संहिता 53:1-3। यहां भजनकार हमें बताता है कि कोई भी धर्मी नहीं है। वास्तव में कोई भी परमेश्वर और उसके मार्गों को नहीं समझा था।

परमेश्वर के बिना यही हमारी दशा है। परमेश्वर की आत्मा के बिना हम परमेश्वर को चीज़ों को समझ नहीं पाएंगे या उसके मार्गों पर नहीं चल पाएंगे। हममें से कोई भी परमेश्वर के सम्मुख शुद्ध नहीं है। यहूदी और अन्यजाति दोनों ही पापी हैं और परमेश्वर से अलग किये गए हैं।

पौलुस इस आरम्भिक कथन से वास्तविक रूप में इसकी भ्रष्टता की अभिव्यक्ति की ओर बढ़ता है। वह मनुष्य की बुराइयों के संबंध में भजन संहिता 5:9 और भजन संहिता 140:3 से उद्धरित करता है। मनुष्य के हृदय की पापपूर्णता हमारे मुंह से बोले गए शब्दों द्वारा प्रगट होती है। पौलुस रोमियों को धोखे, पाप और कड़वाहट को स्मरण कराता है जो मानव मुंह से बाहर निकलते हैं। हमारे द्वारा बोले गए शब्द हमारे हृदय का प्रतिनिधित्व करते हैं। जैसा भजनकार भजन संहिता 10:7 में कहता है, "उसका मुंह शाप और छल और अन्धेर से भरा है।" हम दूसरों को दुख पहुँचानेवाली चीज़ों को बोलते हैं। हम सभी कड़वे व क्रोधी शब्द बोलते हैं। ये शब्द हमारे भीतर से आते हैं और हमें हमारे हृदय की सही अवस्था को दिखाते हैं।

हमारी पापी प्रवृत्ति का प्रमाण न केवल हमारे मुंह में मिलता है बल्कि इसे पांवों में भी देखा गया है। पौलुस यशायाह 59:7,8 को उद्धरित करता है जहां यशायाह अपने लोगों को स्मरण कराता है कि उनके पांव लहू बहाने के लिए तेज़ी से दौड़ते हैं। उजाड़ और विनाश उनके मार्गों में हैं। वे शांति के मार्ग को नहीं जानते (पद 15)। ये भविष्यद्वाणी के शब्द उन यहूदियों से बोले गए जो परमेश्वर की सन्तान होने का दावा करते थे, परन्तु अन्यजाति होने के कारण हमें समझना है कि हममें वही हृदय है।

पौलुस पुराने नियम की अपनी शृखंला को भजनसंहिता 36:1 से पद 18 में उद्धरित करता है जहां भजनकार ने अपने पाठकों को स्मरण कराया कि उनके बीच में परमेश्वर का कोई भय नहीं था। क्या हमें अपने दिनों में इसे दूर तक परमेश्वर के लिए आदर और शृद्धा की कमी के रूप में देखना है?

पौलुस मानव स्वभाव के बारे में हमें कुछ दिखाने को इन पदों में उद्धरित करता है। मैंने प्रायः स्वयं से पूछा है: "यदि मैं लगातार अपनी देह की इच्छाओं को पूरा करने में लगा रहूं तो मैं किस तरह का व्यक्ति हूंगा? यदि मेरे हृदय में परमेश्वर के प्रति कोई भय न हो और अपने पापी कार्यों के परिणामों की मुझे कोई चिन्ता न हो तो मैं किस तरह का व्यक्ति दूंगा।" इस प्रश्न का जवाब भयानक है। बहुत से हिंसक व बुरे जानवरों के समान मेरा भी स्वभाव है। सबसे भयंकर अपराध करने की संभावना मुझमें है। मसीह से अलग होकर मुझे कोई आशा न होगी।

पवित्रशास्त्र इसे स्पष्ट करता है कि हमारी देह पापी है। यहूदी या अन्यजाति, पास्टर या नशीले पदार्थों का अभ्यस्त, हम सभी पाप की स्वाभाविक प्रवृत्ति के भागी हैं।

न केवल पाप को हमारे दैहिक स्वभाव के द्वारा दिखाया गया है, इसे परमेश्वर की व्यवस्था के द्वारा भी हम पर प्रगट किया गया है। परमेश्वर की व्यवस्था हमें परमेश्वर की मांगों के विषय सिखाती है। परमेश्वर की व्यवस्था की मांगों की जांच करने पर कि उसके स्तर/मानदण्ड की कितनी दूरी पर हम गिर गए हैं। हमारे घमण्डी मुंह शांत हो गए हैं। परमेश्वर की व्यवस्था हमें हमारे दोष को दिखाती है। इस पृथ्वी पर कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जो यह कह सकता है कि उसने परमेश्वर के वचन पर आधारित मानदण्ड को पूरा कर लिया है। पद 20 में पौलुस जो बताता है उसे सुनें:

क्योंकि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी उसके सामने धर्मी नहीं ठहरेगा, इसलिये कि व्यवस्था के द्वारा पाप की पहचान होती है।

पौलुस इस परिच्छेद में जो कहता है उस पर ध्यान दें। कोई भी पूरी तरह से व्यवस्था को पूरा नहीं कर सकता। इसका अर्थ यह है कि हम परमेश्वर के सामने दोषी हैं। चाहे हम व्यवस्था को सही तरह से पूरा क्यों न करनेवाले हों, हम पापी ही जन्मे हैं और जो कुछ भी हम करते हैं वह पाप से मैला हो जाता है। मैं अपने पापी स्वभाव की तुलना प्राय: ज़हर से भरे एक गिलास पानी से करता हूँ। ज़हरीला पानी परमेश्वर को ग्रहणीय नहीं है। आप इसमें चीनी या अन्य कोई भी मीठा पदार्थ डालकर इसके स्वाद को तो बदल सकते हैं परन्तु आप उसमें से ज़हर को अलग नहीं कर सकते हैं। इसी कारण किसी को भी व्यवस्था द्वारा धर्मी नहीं ठहराया गया है।

पौलुस यहां हमें बता रहा है कि यहूदी और अन्यजाति दोनों ही एक समान समस्या से पीड़ित हैं। दोनों ही पाप के दोषी हैं। यहूदियों के पास व्यवस्था है परन्तु व्यवस्था उन्हें परमेश्वर के साथ सही नहीं बना सकती। इसी तरह से बहुत से अन्यजाति हैं जो स्वयं को बचाने के लिए भले कार्यों पर भरोसा करते हैं परन्तु वे ज़हरीले पानी में केवल चीनी को मिला रहे होते हैं। यहूदी और अन्यजाति दोनों ही पापी हैं तथा परमेश्वर के न्याय के अधीन हैं।

यह हमारे सामने दूसरा बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न लेकर आता है। यदि हम एक पवित्र परमेश्वर के सामने दोषी हैं और व्यवस्था या अपने किसी प्रयास के द्वारा बचाए नहीं जा सकते, तो हम कैसे बच सकते हैं? पद 21 में पौलुस इस प्रश्न का जवाब देता है। यहां वह एक ऐसी धार्मिकता के बारे में बोलता है जो व्यवस्था से अलग परमेश्वर की ओर से आती है। वह हमें स्मरण कराता है कि यह विचार उसका नहीं है परन्तु ऐसी कोई चीज़ है जिसे भविष्यद्वक्ताओं और व्यवस्था दोनों पर प्रगट किया गया। यह धार्मिकता हमारे किसी प्रयास से नहीं

आती है। यह यीशु मसीह और उसके कार्य पर विश्वास रखने के द्वारा आती है। यह परमेश्वर की ओर से सभी विश्वासियों के लिए एक उपहार है, चाहे वे यहूदी हों या फिर अन्यजाति।

परमेश्वर पिता ने अपने पुत्र को एक बलिदान के रूप में हमारे लिए दे दिया। पौलुस इस बलिदान को प्रायश्चित का बलिदान कहता है (पद 25)। मसीह का लहू स्पष्ट रूप से क्रूस पर मसीह द्वारा किये गए कार्य का उल्लेख करता है।

हम सभी परमेश्वर के सामने दोषी थे। परमेश्वर की व्यवस्था ने यहूदियों को दिखाया कि वे परमेश्वर द्वारा ठहराए गए मानदण्ड को पूरा नहीं कर सकते हैं। हमारे मानव स्वभाव ने भी इस सच्चाई के प्रमाण दिये कि हम परमेश्वर से अलग किये गए पापी हैं।

एक सिद्ध बलिदान के रूप में यीशु क्रूस पर मारा गया, न्याय की उचित मांगों को पूरा करते हुए परमेश्वर के न्याय को संतुष्ट करते हुए व हमारी पूर्ण क्षमा के लिए द्वार को खोलते हुए उसने हमारे दण्ड की कीमत को चुकाया।

पौलुस इस विभाग का परिणाम रोमियों को यह स्मरण कराते हुए देता है कि उद्धार के संबंध में घमण्ड करने के लिए कोई स्थान नहीं है। परमेश्वर के मानदण्ड को पूरा करने में असफल होने पर कौन घमण्ड कर सकता है? सभी तरह का घमण्ड मसीह में तथा उसमें हो, जो कुछ उसने हमारे लिये किया।

संभवतः आपका पालन-पोषण एक मसीही घर में हुआ हो या फिर आप बाइबल स्कूल में गए हों या हो सकता है कि आपने पाप और बुराई से भरा जीवन जीया हो। इनमें कोई भी चीज़ महत्व नहीं रखती है। परमेश्वर तक जाने का केवल एक मार्ग है और उसका नाम है- यीशु मसीह। उसके बिना पापों की कोई क्षमा नहीं है।

पौलुस एक अंतिम प्रश्न के साथ निष्कर्ष निकालता है। यदि यीशु के कार्य द्वारा हमें परमेश्वर के साथ सही बनाया गया है, तो क्या व्यवस्था का कोई लाभ नहीं? पौलुस रोमियों को बताते हुए इसका जवाब देता है कि परमेश्वर की क्षमा को जानने वाले परमेश्वर की व्यवस्था को थामें रहेंगे। हममें से जो कोई प्रभु यीशु की क्षमा के बारे में जानता है अपने जीवनों में एक परिवर्तन का अनुभव करता है। परमेश्वर की आज्ञाकारिता और उसके मार्गों पर चलना आनंदपूर्ण है। हमारी इच्छा उसे प्रसन्न करने व अपने जीवनों से उसे आदर देने की होनी चाहिए।

उद्धार का प्रश्न आने पर हम सभी एक ही मानदण्ड पर होते हैं। एक यहूदी

होना एक अद्‌भुत विशेषाधिकार था परन्तु इसने उद्धार की गारंटी नहीं दी। ऐसा कुछ भी नहीं है जिस पर हम घमण्ड कर सकते हैं। जो परमेश्वर के पुत्र के पास आते और उसके कार्य पर भरोसा करते हैं परमेश्वर उनके धर्मी होने की घोषणा करता है। वह उनके पापों को क्षमा करता तथा अपने साथ उनके संबंध को पुनः स्थापित करता है।

विचार करने के लिए:

- आपके जीवन में पाप होने का क्या प्रमाण है? आपका पापी स्वभाव आप में स्वयं को कैसे प्रगट करता है?
- पौलुस यहां एक ऐसी धार्मिकता को प्रस्तुत करता है जो व्यवस्था से अलग है। उसका इससे क्या अभिप्राय है?
- परमेश्वर की ओर से आनेवाली धार्मिकता क्या है? हम इस धार्मिकता को कैसे प्राप्त करते हैं?
- मसीह के कार्यों के आधार पर धर्मी घोषित किये जाने और उद्धार पाने के लिए अपने ही प्रयास से धर्मी होने के बीच क्या अन्तर है?
- यीशु को क्रूस पर मरने की जरूरत क्यों पड़ी?

प्रार्थना के लिये:

- यदि आपने उस क्षमा और नये जीवन को पाने के लिए अब तक अपने हृदय को नहीं खोला है जिसे मसीह आपको देना चाहता है, तो ऐसा इसी समय करें।
- इस सच्चाई के लिये परमेश्वर को धन्यवाद दें कि क्रूस पर मारे जाने के द्वारा उसने आपके प्रति अपने प्रेम को प्रगट किया।
- परमेश्वर को उस उद्धार के लिए धन्यवाद दें जिसे आपको एक उपहार के रूप में दिया गया है और इसके लिए आपको कुछ भी नहीं करना है।

विश्वास द्वारा इब्राहीम, दाऊद और उद्धार 10

पढ़ें रोमियों 4:1-12

अन्तिम विभाग में पौलुस ने यह दिखाने के लिये पुराने नियम के पृष्ठों को खोला है कि यहूदी और अन्यजाति दोनों ही पाप के अधीन थे और उनके लिये उद्धार ज़रूरी था। पौलुस ने ऐसी धार्मिकता के बारे में बताया जो परमेश्वर की ओर से प्रभु यीशु के कार्यों पर विश्वास करने से आती है (रोमियों 3:22)। बहुत से यहूदियों के लिये यह विचार अजीब था। तथापि, पौलुस अपने पाठकों को यह दिखाना चाहता था कि यह कोई नया सिद्धान्त नहीं था परन्तु इसके विपरित, यहूदी जाति के आरम्भ से ही इसे इसके विश्वास में रोपा गया था।

अगले विभाग में आगे पौलुस रोमियों को यहूदियों के पिता, इब्राहीम, के बारे में निर्देश देता है। पौलुस अपने पाठकों को उस बारे में स्मरण कराता है कि इब्राहीम ने उद्धार के संबंध में किस चीज़ को पाया था। वह पद 2 में उन्हें दिखाता है कि यदि इब्राहीम परमेश्वर के साथ सही बना रहा था तो उसके कार्यों के परिणाम में उसके पास घमण्ड करने के लिये कुछ था। तौभी, पद 3 में पौलुस उत्पति 15:6 से उद्धरित करता है। इब्राहीम की धार्मिकता के बारे में बताते हुए यह परिच्छेद कहता है: "इब्राहीम ने परमेश्वर पर विश्वास किया और यह उसके लिये धार्मिकता गिना गया।"

परिच्छेद बहुत स्पष्ट है। इब्राहीम परमेश्वर के समक्ष अपने अच्छे जीवन या कार्य के आधार पर सही नहीं था बल्कि परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर अपने भरोसे के आधार पर।

पद 4 में पौलुस कार्य और दान के बीच के अन्तर को स्पष्ट करता है। यदि एक व्यक्ति किसी चीज के लिये कार्य करता है, तो उसके स्वामी को उसे मज़दूरी देनी होती है। तथापि, दान भिन्न होता है। एक दान अथवा उपहार को आभारपूर्ति के रूप में नहीं दिया जाता है परन्तु प्राप्तकर्त्ता को आशीष देने के लिए। ऐसा ही उद्धार के साथ है। हम उद्धार के लिए कार्य नहीं करते हैं कि परमेश्वर आभारपूर्ति के लिए हमें इसे देने का प्रबन्ध करे। इसे केवल हमें परमेश्वर के प्रेम के कारण दिया जाता है। हमारा उत्तरदायित्व केवल परमेश्वर पर भरोसा रखने का है (पद 5)। उद्धार एक सिद्ध व पवित्र परमेश्वर को प्रसन्न करने हेतु किये जानेवाला कोई कार्य व प्रयास नहीं है। यह सिद्ध जीवन जीने का प्रयास करने से संबंधित नहीं है जिससे परमेश्वर आभार के रूप में हमें इसे

प्रतिफल के रूप में दे तथा हमें स्वर्ग में प्रवेश करने की अनुमति दे। पौलुस हमें बता रहा है कि उद्धार एक दान है। और यदि उद्धार एक दान है, तो हम इसके लिए कार्य नहीं कर सकते या इसे किसी भी तरह से अर्जित नहीं कर सकते हैं। एक मित्र को दान या उपहार देने की कल्पना करें, जो कि आपको विवश करता है कि वह इसके बदले आपको कुछ अवश्य देगा। जिस क्षण वह आपके दान के बदले में आपको कुछ देता है आपका दान एक दान नहीं रह जाता।

ऐसे बहुत से लोग हैं जो भले कार्यों और किसी भी तरह के प्रयास द्वारा अपने उद्धार की कीमत चुकाने का प्रयास करते हैं, परन्तु पौलुस प्रगट करता है कि उत्पत्ति की पुस्तक में भी इब्राहीम को स्वयं यह दिखाया गया था कि उद्धार को उस आधार पर नहीं दिया गया था जो कुछ उसने किया था, परन्तु इसके विपरीत उस पर भरोसा करने और प्राप्त करने के द्वारा जो परमेश्वर उसे दे रहा था।

इब्राहीम ही एकमात्र नहीं था जिसने इस शिक्षा को सीखा था। दाऊद भी एक ऐसे उद्धार के बारे में बोला जो कार्यों से हट कर होता है। वह परमेश्वर के साथ एक सही संबंध के बारे में बोला जिसे अयोग्य और पापी व्यक्तियों को एक उपहार के रूप में दिया गया था। पौलुस भजन संहिता 32:1–2 से उद्धरित करता है:

क्या ही धन्य है वह जिसका अपराध क्षमा किया गया, और जिसका पाप ढांपा गया हो। क्या ही धन्य है वह मनुष्य जिसके अधर्म का यहोवा लेखा न ले।

दाऊद अपने पाठको को बता रहा है कि परमेश्वर उनके पापों की फिर कभी उनके विरुद्ध न गणना करने के लिए उन्हें क्षमा करने को तैयार है। यह एक अद्भुत प्रतिज्ञा है। दाऊद एक व्यक्ति के चित्र का चित्रित करता है जोकि पाप से मैला हो गया है। वह उस मानदण्ड से गिर गया है जिसे परमेश्वर ने अपने पवित्र वचन के अनुसार निर्धारित किया है। जब हम इस व्यक्ति को पाप और बुराई से मैला हुआ देखते हैं तब हम परमेश्वर के हाथ को उस तक पहुंचते तथा उसे ढांकते हुए देखते हैं। हम परमेश्वर की घोषणा को सुनते हैं कि इस व्यक्ति के पापों को इसके विरुद्ध फिर कभी नहीं रखा जाएगा। दोषी व्यक्ति को क्षमा कर दिया गया है। यह परमेश्वर के अनुग्रह, करूणा और सहानुभूति के कार्य का एक भाग है। अयोग्य पापी को क्षमा कर दिया गया है। दाऊद ने इस बात को जाना कि हम सभी परमेश्वर के मानदण्ड से गिर गए हैं लेकिन परमेश्वर क्षमा करने को तैयार है।

पौलुस पद 9 में क्षमा किये जाने की उन आशीषों के बारे में बताता है जिनका वर्णन दाऊद करता है। क्या परमेश्वर एक खतनारहित अन्यजाति को भी

क्षमा नहीं करता है जो कभी भी परमेश्वर की व्यवस्था की आज्ञाकारिता में नहीं रहा? इसका जवाब देने के लिए पौलुस यहूदियों को स्मरण कराता है कि जब परमेश्वर ने इब्राहीम को बताया कि उसका विश्वास उसके लिए धार्मिकता गिना गया तो उसने ऐसा इब्राहीम के खतना किये जाने से बहुत पहले किया था। यह पौलुस के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण था। इसके अनुसार एक व्यक्ति खतना न किये जाने पर भी परमेश्वर के सम्मुख सही हो सकता है। खतना केवल एक मुहर व धार्मिकता का चिन्ह था जिसे इब्राहीम को पहले से ही दे दिया गया था, धार्मिकता के एक साधन के रूप में नहीं। इसी तरह से, परमेश्वर के द्वारा ग्रहण किये जाने से पूर्व हमें प्रत्येक चीज़ को सही नहीं करना है।

यदि आप स्वयं को उद्धार पाने हेतु बहुत सी अच्छी चीज़ों को करने का प्रयास करते हुए पाते हो, तो आप दान की प्रकृति को नहीं समझते हैं। एक दान को आप अर्जित नहीं कर सकते हैं। आप इसका भुगतान करने के लिए कुछ नहीं कर सकते या इसे प्राप्त करने के लिये स्वयं को तैयार नहीं कर सकते हैं। आपको केवल इसे प्राप्त करना है। जिस चीज़ का दाम प्रभु ने पहले ही पूर्ण रूप से चुका दिया है उसका भुगतान करने का प्रयास करते हुए परमेश्वर को अपमानित न करें। इस भेंट को इस कारण से अस्वीकार न करें कि आप इसका भुगतान करने के लिए पर्याप्त रूप से भले होना चाहते हैं।

इब्राहीम ने परमेश्वर के दान को केवल विश्वास करने के द्वारा ही प्राप्त किया। उसका न तो खतना हुआ और न ही उसने इसके लिए कोई कार्य किया। दाऊद एक ऐसे परमेश्वर के बारे में बोलता है जो हमारे सभी पापों को क्षमा करने के लिए तैयार है। दोनों ही व्यक्तियों ने हमें स्मरण कराया कि परमेश्वर हमारे पापों को क्षमा करना व ढांकना चाहता है। हमें केवल उसे इसे करने देने की ज़रूरत है।

पौलुस हमें बताता है, इब्राहीम, खतनारहित विश्वासियों का पिता है (पद 11)। यहूदियों ने दावा किया कि इब्राहीम उनका पिता था, परन्तु वह विश्वास करनेवाले अन्यजातियों का भी पिता है क्योंकि उसने एक ऐसे उद्धार को प्राप्त किया जो उसके खतना किये जाने से पूर्व व्यवस्था से अलग था। वह यहूदियों और अन्यजातियों को अपने पदचिन्हों पर चलने और उस धार्मिकता की खोज करने के लिए बुलाता है जो विश्वास द्वारा एक दान रूप में आती है।

विचार करने के लिए:

- इब्राहीम कैसे बचाया गया था?
- आज लोग उद्धार अर्जित करने के लिए कैसे प्रयास करते हैं?
- परमेश्वर की क्षमा के बारे में दाऊद की शिक्षा हमें कार्यों से अलग विश्वास द्वारा उद्धार के बारे में क्या सिखाती है?
- इब्राहीम खतनारहितों का पिता कैसे है? इब्राहीम को खतने से पूर्व धार्मिकता का श्रेय दिया गया था, इसका महत्व क्यों है?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर को उस उद्धार को देने हेतु धन्यवाद दें जिसे अर्जित नहीं किया जा सकता।
- क्या आप ऐसे किसी व्यक्ति को जानते हैं जिसके लिए इस सच्चाई को स्वीकार करना कठिन है कि उद्धार एक नि:शुल्क दान है। उस व्यक्ति के लिये प्रार्थना करने हेतु कुछ समय निकालें। परमेश्वर से कहें कि ऐसे लोगों तक उसके सत्यों को बताने के सुअवसर आपको प्रदान करे।

विश्वास द्वारा इब्राहीम

11

पढ़ें *रोमियों 4:13-25*

पौलुस इस सत्य के बारे में बोल रहा है कि उद्धार विश्वास द्वारा है न कि व्यवस्था का पालन करने के द्वारा। अन्तिम मनन में हमने देखा कि वह अपने पाठकों को कैसे पुराने नियम की ओर यह दिखाने के लिए लेकर आया कि इब्राहीम और दाऊद दोनों ने व्यवस्था से अलग विश्वास द्वारा प्राप्त किये जाने वाले उद्धार को सिखाया। इस विभाग में भी वह उसी विषय पर बना रहता है।

पद 13 हमें एक स्मरण पत्र देता है कि व्यवस्था के द्वारा नहीं बल्कि विश्वास के द्वारा इब्राहीम और उसके वंश ने "संसार के वारिस" होने की प्रतिज्ञा को प्राप्त किया।

परमेश्वर ने इब्राहीम से प्रतिज्ञा की कि वह उसे कई जातियों का पिता बनाएगा और यह कि पृथ्वी की सभी जातियां उसके द्वारा आशीषित होंगी (देखें उत्प. 17:3-8)। यह प्रतिज्ञा कुछ ऐसी चीज़ थी जिसे इब्राहीम इसकी परिपूर्णता में नहीं समझ सकता था। यह बताने के लिए कि ऐसा कैसे होगा, इसका कोई मानवीय कारण नहीं था। वास्तव में इब्राहीम अपने मृत्यु से पूर्व इस प्रतिज्ञा की परिपूर्णता को नहीं देख सका था। तौभी इसी एक व्यक्ति के द्वारा इस्राएल का जन्म हुआ था। प्रभु यीशु उसका वंशज होने के कारण न केवल यहूदियों के लिए उद्धार को लेकर आएगा, परन्तु सारे संसार के लिए वह ऐसा ही करेगा। प्रत्येक जाति के लोग परमेश्वर के परिवार के सदस्य बन गए हैं। इस सबका आरम्भ एक प्रतिज्ञा से हुआ जिस पर विश्वास किया गया। परमेश्वर ने व्यवस्था के द्वारा नहीं बल्कि विश्वास के द्वारा अपने उद्देश्यों को पूरा किया। विश्वास ने उस सब को पूरा किया जिसे पुराना नियम कभी पूरा नहीं कर सका था।

पौलुस आगे हमें पद 14 में स्मरण कराता है कि यदि हम व्यवस्था के द्वारा बचाये जा सकते तो उद्धारकर्त्ता की प्रतिज्ञा का कोई अर्थ नहीं होता। यदि व्यवस्था के द्वारा हमें बचाया जा सकता या फिर धर्मी बनाया जा सकता, तो यीशु की मृत्यु की कोई आवश्यकता न थी। यीशु ने परमेश्वर के सम्मुख हमें हमारे पापों और दोषों को दिखाया। व्यवस्था हमें जीवन नहीं दे सकती है। व्यवस्था हमारा मार्गदर्शन कर सकती है परन्तु हमें इसके मानदण्ड को पूरा करने के योग्य नहीं बना सकती। परिणामस्वरूप, यह केवल दण्डाज्ञा को ला सकती है। इसी

कारण दूसरे तरीके की आवश्यकता हो सकती थी। वह मार्ग विश्वास का मार्ग है।

वह विश्वास जिसे इब्राहीम ने परमेश्वर द्वारा उससे की गई प्रतिज्ञा के प्रति प्रगट किया कि उसके पुत्र होगा और वह कई जातियों का पिता बनेगा; ऐसे ही विश्वास की हमें भी ज़रूरत है। प्रतिज्ञा हमारे पास उसी तरह से आती है जैसे यह इब्राहीम के पास आई।

धार्मिकता की प्रतिज्ञा को जोकि विश्वास से आती है उसे विश्वास द्वारा ही ग्रहण किया जाता है, जैसी प्रतिज्ञा इब्राहीम से भी की गई थी। आपको केवल अपने हृदय को खोल कर उस पर विश्वास करना है जो परमेश्वर आप से कहता है। पौलुस हमें स्मरण कराता है कि प्रतिज्ञा विश्वास से आती है। यह परमेश्वर के अनुग्रह और अनर्जित क्षमा की अभिव्यक्ति है।

क्योंकि उद्धारकर्त्ता की प्रतिज्ञा और उसके द्वारा दिये जानेवाला उद्धार व्यवस्था का पालन करने से नहीं आता है। इसकी गांरटी व्यवस्था के अधीन रहनेवालों के लिये ही नहीं है परन्तु उनके लिए भी है जिन्होंने पहले कभी व्यवस्था के बारे में न सुना हो। अन्य शब्दों में, धार्मिकता धर्मी लोगों के साथ-साथ विधर्मी लोगों के लिये भी उपलब्ध है। यह उनके लिए उपलब्ध होने के साथ साथ जो परमेश्वर को आदर देने का सर्वश्रेष्ठ प्रयास करते हैं उनके लिये भी उपलब्ध है जिन्होंने एक विद्रोही जीवन जीया है।

इब्राहीम को जातियों के पिता के रूप में चित्रित किया गया है। वह यहूदियों का पिता है जो व्यवस्था के अधीन थे, परन्तु चूंकि वह विश्वास का जन था और परमेश्वर ने उसके व्यवस्था में रहने से बहुत पहले ही इस विश्वास को उसके लिए धार्मिकता माना वह उसी के साथ साथ अन्य सभी जातियों का भी पिता था।

पद 17 में ध्यान दें कि पौलुस परमेश्वर का वर्णन इस तरह से करता है: "परमेश्वर जो मरे हुओं को जिलाता, और जो बातें है ही नहीं, उनका नाम ऐसा लेता है, कि मानों वे हैं।" इस अध्याय के संदर्भ में, पौलुस इब्राहीम, सारा और उनकी संतान इसहाक का उल्लेख कर रहा है। इसहाक को जन्म देने के समय सारा एक बुढ़ी स्त्री थी। बच्चा उत्पन्न करने का उसका समय बीत गया था। जब स्वर्गदूत ने सारा को बताया कि उसके पुत्र उत्पन्न होगा, वह अविश्वास के कारण हंसी थी। वह यह नहीं समझ सकी थी कि परमेश्वर तो मृतकों को जीवित करनेवाला परमेश्वर है। परमेश्वर ने उसके मृत गर्भ में जीवन को डाला और उसे एक पुत्र दिया।

परमेश्वर "जो बातें हैं ही नहीं उनका नाम ऐसा लेता है, कि मानों वे हैं" (पद 17)। ठीक ऐसा ही इब्राहीम और सारा के जीवन में हुआ था। सारा ने कहा कि अब उसके बच्चा उत्पन्न होना संभव नहीं है। विज्ञान और चिकित्सा भी सारा के साथ सहमत थे। परमेश्वर ने सारा पर प्रमाणित किया कि विज्ञान और चिकित्सा गलत हो सकते हैं। उसने उसे उस समय एक पुत्र दिया जबकि उसके लिए ऐसा होना संभव न था। परमेश्वर ने असंभव को संभव कर दिया।

हम ऐसे परमेश्वर की सेवा करते हैं जो मृतकों को जीवन देनेवाला तथा असंभव चीज़ों को संभव करनेवाला परमेश्वर है। क्या आपका विवाह मरा हुआ है? परन्तु वह इसे फिर से जीवन दे सकता है। क्या आपको लगता है कि एक बच्चा परमेश्वर से इतनी दूर भटक गया है कि उसे वापस मार्ग पर लाना असंभव है। परमेश्वर उस बच्चे को सही मार्ग पर ला सकता है। परमेश्वर अंसभव चीज़ों को करने में समर्थ है।

इब्राहीम विश्वास द्वारा समझ गया था कि परमेश्वर मृत्यु में से भी जीवन को ला सकता है। वह समझ गया था कि परमेश्वर असंभव को संभव करनेवाला है। जबकि जिन चीज़ों का उसके लिए कोई अर्थ नहीं था, इब्राहीम ने विश्वास किया। पद 18 में ध्यान दें कि इब्राहिम ने सारी आशा के विरुद्ध विश्वास किया। अन्य शब्दों में, प्रत्येक चीज़ ने उसे बताया था कि यह अंसभव था तौभी उसने विश्वास किया कि परमेश्वर इसे करने में सक्षम है। पद 19 हमें बताता है कि इब्राहीम को इस सच्चाई का सामना करना पड़ा था कि उसकी देह तथा उसकी पत्नी मृतकों के समान थे तौभी अपने विश्वास में कमज़ोर न होते हुए उसने विश्वास किया कि परमेश्वर असंभव को भी संभव करेगा। उसने विश्वास किया कि यदि परमेश्वर ने उसे पुत्र देने की प्रतिज्ञा की है तो कोई भी चीज़ इसे पूरा होने से रोक नहीं सकती है। कोई भी अर्थ न दिखने पर भी वह जानता था कि परमेश्वर अपने वचन के प्रति विश्वासयोग्य है। उसने पूरी तरह से यह मान लिया था कि परमेश्वर में प्रतिज्ञा के अनुसार करने की शक्ति है (पद 21)। उसका विश्वास स्वयं में नहीं बल्कि परमेश्वर में था जो मृत्यु से जीवन को लेकर आया और जिसने असंभव को संभव किया। परमेश्वर ने इब्राहीम के विश्वास को धार्मिकता गिना (पद 22)।

पौलुस इस वाक्यांश को प्रमुख रूप से दिखाता है,"इसे उसके लिये धार्मिकता गिना गया" (पद 23)। वह स्पष्ट रूप से हमें बताता है कि ये शब्द केवल इब्राहीम के लिये नहीं थे। जब परमेश्वर ने इब्राहीम के विश्वास को उसके लिए धार्मिकता गिना तो उसने ऐसा हम पर यह व्यक्त करने के लिए किया कि

वह हमारे जीवनों में किस तरह से कार्य करना चाहता है। पौलुस इसे स्पष्ट करता है कि परमेश्वर इसी तरह से हमारे लिए इसे धार्मिकता गिनेगा जोकि उसके पुत्र यीशु में विश्वास करते हैं जिसे उसने मृतकों में से जिलाया (पद 24)।

इब्राहीम के लिए इस कारण से इसे धार्मिकता गिना गया क्योंकि उसने इस प्रतिज्ञा पर विश्वास किया कि परमेश्वर उसकी पत्नी की मृत कोख को जीवन दे सकता है। परमेश्वर उनके लिए भी इसे धार्मिकता गिनेगा, जो उसके पुत्र पर विश्वास करते हैं, जो उनके उद्धार के लिये मृतकों में से जी उठा।

पौलुस हमें यहां यह बता रहा है कि उद्धार व धार्मिकता की इस भेंट को यह विश्वास करने के द्वारा प्राप्त किया जाता है कि यीशु हमारे पापों को स्वयं पर लेकर क्रूस पर मारा गया और दण्ड की कीमत चुकाने के पश्चात् विजयी रूप से जी उठा। अब करने के लिए कुछ भी नहीं है। इब्राहीम ने केवल विश्वास ही किया था। उससे तथा उसकी पत्नी में अब संतान होने की कोई संभावना नहीं थी। वह इसे संभव नहीं कर सका था। यदि परमेश्वर की प्रतिज्ञा को पूरा होना था तो यह परमेश्वर की ओर होता जो इसे आरम्भ से लेकर समापन तक करता है। हमारे उद्धार के लिए, हम केवल उस पर विश्वास कर सकते हैं जिसकी परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की जिसे उसने पूरा किया है। उसने अपने पिता की ओर से हमारे लिये क्षमा को सुरक्षित किया है। व्यवस्था को पूरा करने के द्वारा उद्धार को नहीं पाया जा सकता है। इसे उस परमेश्वर में विश्वास रखने के द्वारा एक दान के रूप में प्राप्त किया जाता है जिसने यह सब किया है। पौलुस के अनुसार, इब्राहीम को सिखाई गई जीवन की यह सबसे बड़ी शिक्षा थी।

विचार करने के लिए:

- इब्राहीम के विश्वास के बारे में हम इस परिच्छेद से क्या सीखते हैं?
- क्या आज आपके जीवन में कोई भी "असंभव" चीज़ें हैं? वे क्या हैं? इन असंभव स्थितियों के बारे में यह अध्याय आपको क्या बताता है?
- इब्राहीम को धर्मी कैसे गिना गया था। क्या व्यवस्था को पूरा करना उसे बचा सकता था?
- यदि व्यवस्था को पूरा करने के द्वारा उद्धार नहीं था, तो व्यवस्था को क्यों दिया गया था?
- इब्राहीम का जीवन विश्वास द्वारा उद्धार का कैसे एक उदाहरण था?

प्रार्थना के लिए:

- इस सच्चाई के लिए परमेश्वर को धन्यवाद दें कि हमारे उद्धार के लिए उसने सब कुछ कर दिया है।
- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि वह उन सभी को धर्मी घोषित करने के लिये तैयार है जो पुत्र के समाप्त किये गए कार्य द्वारा विश्वास से उसके पास आते हैं।
- अपने द्वारा सामना की जानेवाली असंभव स्थितियों को परमेश्वर के हाथों में दें। उस पर जो सही है उसे करने के लिए भरोसा करें।
- क्या आप ऐसे लोगों को जानते हैं जो अब भी अपने उद्धार को अर्जित करने का प्रयास कर रहे हैं। कुछ समय प्रार्थना में बिताएं कि परमेश्वर उन पर इस सत्य को प्रगट करे कि उद्धार विश्वास द्वारा प्राप्त किया गया दान है।

परमेश्वर की महिमा की आशा **12**

पढ़ें रोमियों 5:1-5

रोमियों की पुस्तक के प्रथम कुछ अध्यायों पर यीशु मसीह में विश्वास रखने के द्वारा धार्मिकता के दान पर बल दिया गया है। विश्वासी के जीवन में इस धार्मिकता का क्या परिणाम है?

पद 1 में पौलुस हमें बताता है कि चूंकि हमें विश्वास द्वारा दोषमुक्त किया गया है, अब हमारे पास प्रभु यीशु के द्वारा शांति है। दोषमुक्त होना परमेश्वर के साथ खड़े होने की एक सही घोषणा है। प्रभु यीशु के कार्य परमेश्वर और विश्वासी के बीच के अवरोधों को हटाते हैं। मेरे पाप कितने भी भयंकर क्यों न हों या कितनी ही बार मैं असफल हो गया हूँ, यदि मुझे दोषमुक्त किया गया है, तो मेरे साथ, इस तरह से व्यवहार किया जाएगा मानों मैंने कभी पाप ही न किया हो।

यह दोषमुक्ति केवल विश्वास से ही आती है न कि हमारे द्वारा की गई अन्य किसी चीज़ के द्वारा। पौलुस पहले से ही हमें यह दिखाने को इस माप पर चला गया था कि उद्धार कार्यों के द्वारा नहीं बल्कि यह परमेश्वर की ओर से एक दान है। दोषमुक्त ठहराने के बाद परमेश्वर की सेवा व आज्ञापालन करने को हमें कुछ भी कठिन प्रयास नहीं करना है। यह उन सबके लिये परमेश्वर की ओर से एक दान है जो प्रभु यीशु के कार्यों में विश्वास रखने के द्वारा परमशेवर के अनुग्रह व क्षमा को प्राप्त करेंगे।

पौलुस पद 2 में हमें स्मरण कराता है कि यीशु में विश्वास रखने के द्वारा हम अब परमेश्वर के अनुग्रह तक पहुंच पाए हैं। प्रभु यीशु के कार्य से पहले हम सभी परमेश्वर के ईश्वरीय क्रोध के अधीन थे। तथापि, क्रूस पर यीशु के कार्य ने हमारे लिए परमेश्वर के अनुग्रह के खज़ाने को खोला है। पाप उन लोगों को अधिक समय तक अलग नहीं रख सकता जो अद्‌भुत आशीषों के लिए परमेश्वर पर भरोसा करते हैं। जिस क्षण हमने प्रभु यीशु को ग्रहण किया था, उसी क्षण से क्षमा, मेल और शांति के भण्डार को हमारे आनन्द लेने के लिए खोला गया था। राजा की सन्तान होने के कारण यह हमारी मीरास है।

पद 2 में ध्यान दें कि हमें अनुग्रह और आशीषों को प्राप्त करने के लिए स्वर्ग जाने की प्रतीक्षा में नहीं रहना है। पौलुस रोम के विश्वासियों को स्मरण

कराता है कि वे पहले से उस अनुग्रह में खड़े हुए थे। हम अब भी परमेश्वर की आशीषों को अनुभव कर सकते हैं। उसकी शांति, क्षमा, प्रबन्ध और मार्गदर्शन अब हमारे अधिकार हैं।

विश्वास द्वारा दोषमुक्त ठहराए जाने के कारण हम परमेश्वर की महिमा की आशा में आनन्दित हो सकते हैं (पद 2)। हम जानते हैं कि एक दिन आएगा जब मसीह पाप, मृत्यु और शैतान पर जय प्राप्त करेगा। जो लोग स्वयं में उसके जीवन के होने को जानते हैं उसकी उपस्थिति में प्रवेश कर वे सदा तक के लिए उसकी महिमा में रहेंगे। हमारे पास कितनी अद्भुत आशा है। इस आशा के आने का कारण यह है कि परमेश्वर ने अपने पुत्र के कार्यों के द्वारा इसकी घोषणा हमारे लिए कर दी है।

दोषमुक्त घोषित किये जाने और परमेश्वर के सम्मुख सही खड़े होने का अर्थ यह नहीं है कि हमें इस जीवन में कोई दुख नहीं होगा। दुख व परीक्षाएं विश्वासी के लिए सामान्य हैं। तथापि, पद 3 में पौलुस हमें बताता है कि वे जिन्हें दोषमुक्त ठहराया गया है और अब परमेश्वर के साथ संगति में हैं, वे परीक्षाओं व क्लेशों में भी उसके साथ आनन्दित हो सकते हैं। वह ऐसा इसलिए कर सकता है क्योंकि वह जानता है कि क्लेश धैर्य को उत्पन्न करते हैं जो आशा छोड़े बिना दबाव में बने रहने की योग्यता है।

चरित्र को उत्पन्न करने के लिए हममें धैर्य का होना जरूरी है। दुखों और परीक्षाओं का सामना किये बिना चरित्र को विकसित करना अद्भुत होगा, परन्तु परमेश्वर के राज्य में चीज़ें ऐसे कार्य नहीं करती हैं। परमेश्वर चाहता है कि हम अपने चरित्र को विकसित कर प्रभु यीशु की समानता में बनें। कई बार परमेश्वर हमारे द्वारा सामना किये जाने वाले दुखों व परीक्षाओं के द्वारा हममें चरित्र का विकास करता है। मूसा को दीन होने के लिए चालीस वर्ष का समय मिद्यान के मरूस्थल में बिताना पड़ा जिससे परमेश्वर उसका प्रयोग कर सके। अय्यूब को वैसा व्यक्ति बनने के लिए जैसा परमेश्वर उसे बनाना चाहता था– उसे अपनी हर चीज़ को खोना पड़ा था –उसका परिवार, उसकी सम्पत्ति और उसका स्वास्थ्य। धातु को भी शुद्ध करने के लिये आग में तपाया जाता है। रोटी को भी पकाने के लिए समय की ज़रूरत होती है। फलों और सब्ज़ियों को भी वृक्षों पर पकने में समय लगता है। यही सिद्धान्त हमारे आत्मिक जीवन में भी सत्य साबित होता है। परमेश्वर हमारे भीतर इस कारण से धैर्य को उत्पन्न करता है ताकि इससे हमारा चरित्र विकसित हो सके।

संघर्ष और परीक्षाओं के लगातार आने पर हमारी आशा धुंधली होने के

साथ-साथ ये हममें संदेह को उत्पन्न कर सकते हैं। कई बार अधिक समय तक दुखों के बने रहने पर हम गुफा के दूसरी ओर रोशनी देखने की आशा को छोड़ देते हैं। तथापि, पौलुस हमें यह बताता है कि दृढ़ता चरित्र को विकसित करती है और चरित्र आशा का विकास करता है। प्रभु के अनुशासन के अन्तर्गत दृढ़ बने रहने पर हमारा अधिक से अधिक उसके स्वरूप में विकास होता जाता है। हममें मसीह के चरित्र का विकास होने पर आशा का भी विकास होता है। हमारे चरित्र के रूपान्तरित हो जाने पर हम उस पर भरोसा करना सीखते हैं जो पिता कर रहा होता है। उसके स्वरूप में ढाले जाने पर हमारा भरोसा उसके वचन और प्रतिज्ञाओं में बढ़ता जाता है। हम हमारे लिये उसके प्रेम की गहराई को अधिक समझने लगते हैं। हम जानते हैं कि चाहे कुछ भी हो जाए हम उसमें सुरक्षित हैं।

पौलुस हमें पुनः आश्वस्त करता है कि आशा से हमें लज्जा नहीं होगी (पद 5)। परमेश्वर अपना प्रेम उन पर उंडेलता है जिन्हें वह दोषमुक्त ठहराता है। अपने मन में जो इस प्रेम को जानते हैं वे परमेश्वर में भरोसे और आश्वासन के साथ अपनी परीक्षाओं और दुखों का सामना करते हैं।

हमारे जीवनों में परमेश्वर के दोषमुक्त ठहराए जाने वाले कार्य का परिणाम क्या होता है? हम परमेश्वर के साथ शांति में हैं। सभी अवरोधों को हटा दिया गया है। हम उसके अद्भुत अनुग्रह और आशा तक पहुंच सकते हैं जिससे हमें कभी निराशा नहीं होगी। परमेश्वर पवित्र आत्मा के द्वारा हममें अपने प्रेम को उण्डेलता है जिसे वह सभी विश्वास करनेवालों को भी देता है। हमारे लिये इन दानों को समझना बहुत अद्भुत है, परन्तु ये सभी मसीह के कार्य होने के साथ-साथ परमेश्वर के पुत्र के कार्य द्वारा परमेश्वर के सम्मुख सही खड़े होने की उसकी घोषणा है।

विचार करने के लिए:

- दोषमुक्त ठहराए जाने का क्या अर्थ है?
- यीशु मसीह में विश्वास द्वारा दोषमुक्त ठहराए जानेवालों को दिये गए लाभ कौन से हैं?
- हमारे जीवनों में परमेश्वर के अनुशासन के अन्तर्गत दृढ़ बने रहना ज़रूरी क्यों है? यह दृढ़ता हममें किस चीज़ को उत्पन्न करती है?
- परमेश्वर हमारे हृदय में प्रेम को कैसे उण्डेलता है?

प्रार्थना के लिये:

- परमेश्वर को इस बात के लिए धन्यवाद दें कि हम इस समय भी स्वर्ग की आशीषों को अनुभव कर सकते हैं।
- परमेश्वर से दृढ़ बने रहने का अनुग्रह मांगें, जिससे वह आप में मसीह के चरित्र को उत्पन्न कर सके।
- जिस समय परमेश्वर आपमें यीशु के चरित्र का उत्पादन कर रहा था उन समयों में कुड़कुड़ाने व शिकायत करने के लिए परमेश्वर से क्षमा मांगें।
- अपने जीवन में परमेश्वर के कार्य के परिणाम में आप इस समय जिस अद्‌भुत आशा का अनुभव कर रहे हैं उसके लिए परमेश्वर को धन्यवाद दें।

जब हम शक्तिहीन थे

13

पढ़ें रोमियों 5:6–11

रोमियों 5:6–11 में पौलुस उद्धार के लिए दूसरा शक्तिशाली तर्क देता है जो एक दान के रूप में आता है जिसे परमेश्वर के अनर्जित पक्ष से पाया जाता है। वह हमें स्मरण कराता है कि जिस समय हम शक्तिहीन और परमेश्वर के शत्रु थे, यीशु हमें बचाने के लिये आया। यह महत्वपूर्ण है कि हमें इसे विस्तार से देखना है।

पौलुस पद 6 में हमें स्मरण कराता है कि यीशु सही समय पर आया। जब हम शक्तिहीन थे, वह आया। यहां पौलुस जो कह रहा है उसे देखना महत्वपूर्ण है। वह हमें बता रहा है कि स्वयं को बचाने के लिए हम शक्तिहीन थे। वर्षों पहले व्यवस्था को दिया गया था, परन्तु उस व्यवस्था को मानने के द्वारा कोई बच नहीं सका था। व्यवस्था हमें दोषी ठहराती है। हम परमेश्वर के सामने दोषी और मृत्यु के योग्य थे। हम उस समय पाप के समुद्र में डूब रहे थे जब प्रभु यीशु हमें अपना उद्धार देने के लिए आया। हमारे दण्ड को अपने पर लेने के लिए वह आया।

हमारे लिये यह देखना भी महत्वपूर्ण है कि जब हम पापी थे मसीह हमारे लिए मारा गया। हम ज़रूरतमंद थे, इसी कारण वह मारा गया। वह उन लोगों के लिए नहीं मारा गया था जो स्वयं को बचा सकते थे। उसका यह कार्य उनके प्रति अनुग्रह और करूणा का एक कार्य था जो परमेश्वर के शत्रु थे और वह उन सभी के लिये खड़ा हुआ।

मानवजाति के इतिहास में ऐसे बहुत से रहे हैं जो अपने मित्र या किसी भी प्रियजन के लिए मरने तक को तैयार रहे हैं। तौभी, ऐसा हमारे संसार में बहुत कम होता है। लेकिन एक शत्रु या कठोर अपराधी के लिए कौन मरेगा? ऐसे व्यक्ति की कल्पना करें जो अपने पुत्र की हत्या करनेवाले के लिए मरने को तैयार हो? एक ऐसी स्त्री की कल्पना करें जो उसके साथ व्यभिचार करनेवाले के लिए मरने को तैयार हो। यही यीशु ने किया। ऐसा ही यीशु ने उस समय किया जब हम उसके शत्रु थे। उसने परमेश्वर की चीज़ों का सामना किया। हमारा दैहिक स्वभाव आत्मा के स्वभाव का पूर्णतया विरोधी था। इस दैहिक स्वभाव की गहराई में प्रत्येक तरह के पाप और बुराई के बीज़ थे। यह भले लोगों के लिये नहीं था, जिनके लिये यीशु मारा गया।

परमेश्वर के प्रेम की महान अभिव्यक्ति उनके प्रति प्रगट हुई जोकि उसके शत्रु थे। परमेश्वर धर्मियों तक नहीं परन्तु पापियों तक पहुंचा ताकि उन्हें अपने निकट ला सके। हमारे लिये मरने के द्वारा जबकि हम पापी ही थे, मसीह ने हमें दिखाया कि हम उसके द्वारा किये जानेवाले उद्धार को अर्जित नहीं कर सकते हैं। उसने हमें दिखाया कि हमारे विद्रोही व पापी होने पर भी उसने हमसे इतना अधिक प्रेम किया कि हमारे लिये मारा जाए और परमेश्वर के सम्मुख हमें सही ठहराए।

यीशु का लहू हमें परमेश्वर के सम्मुख खड़े होने के योग्य बनाता है। हमें अपने पाप का दण्ड चुकाना था परन्तु परमेश्वर ने अपनी करूणा में होकर अपने पुत्र के द्वारा हमारे लिये इसकी कीमत को चुकाया।

पौलुस पद 9 में हमें स्मरण कराता है कि जिसने हमारे पापों के दण्ड का भुगतान किया वह हमें प्रगट होने वाले क्रोध से बचाकर हमें भी रखेगा। यदि उसके शत्रु होने के कारण, यीशु की मृत्यु द्वारा हमारा परमेश्वर से मेल हुआ है, तो क्या हमें यह आश्वासन नहीं हो सकता कि उसकी संतान होने के कारण क्या अब वह हमें बचाकर नहीं रखेगा? यदि शत्रु और विद्रोही होने के कारण उसने हमें बचाया है, तो क्या उसके परिवार का एक भाग होने के कारण अब वह हमारी चिन्ता नहीं करेगा? उस पर संदेह करने का अब हमारे पास कोई कारण नहीं है। इसमें हम आनन्दित होने के साथ-साथ आश्वस्त भी हो सकते हैं।

इस सत्य से हमें बहुत सी चीज़ों को सीखने की ज़रूरत है। सर्वप्रथम हममें से कोई भी अपने उद्धार को अर्जित नहीं कर सकता है। यीशु उन पापियों के लिये मरने को आया जो परमेश्वर द्वारा निर्धारित मानदण्ड को पूरा नहीं कर सके थे। वह इसलिए मारा गया क्योंकि हम अपने उद्धार को और किसी तरह से प्राप्त नहीं कर सकते थे। वह हमारी अयोग्यता में हमारे लिये मारा गया। उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि उसने हमारे पापी होने पर भी हमसे प्रेम किया। हमें केवल उसके पास वैसे ही आना है जैसे हम हैं। उसने प्रमाणित किया कि हमारे दण्ड को लेने के द्वारा उसने हमसे प्रेम किया। हम पर्याप्त रूप से कभी भी भले नहीं हो पाएंगे। हमें केवल यह स्वीकार करते हुए उसके पास आना है कि हम कभी भी माप नहीं सकते, यह जानते हुए कि जब तक वह क्षमा नहीं करता और हमारे साथ मेल नहीं कर लेता, हमारे पास कोई आशा नहीं होती।

दूसरी चीज़ जिसे हमें सीखने की ज़रूरत है वह यह है कि जो इस क्षमा को जानते हैं वे आश्वस्त होकर रह सकते हैं। यदि उसने हम से उस समय प्रेम किया जब हम उसके विरुद्ध पाप में रहते थे, तो निश्चय ही इस समय भी अपनी

संतान के रूप में ग्रहण किये जाने पर भी वह निश्चय ही हमें नहीं छोड़ेगा। हम सभी अपनी मसीही चाल में असफल हो गए थे। हम सभी देह के साथ कुश्ती करते हैं। हम सभी ठोकर खाते और गिर जाते हैं। शत्रु प्रायः हमें यह बताने के लिए आता है कि ठोकर खाने के कारण हम परमेश्वर के प्रेम के योग्य नहीं हैं। वह हमें इस पर विश्वास दिलाने का प्रयास करता है कि यदि हम सही तरह से कार्य नहीं करते हैं तो परमेश्वर हमसे पीठ फेर लेता है। विषय की सच्चाई यह है कि यीशु हमारे लिए मारा जाए इसके लिए हमें सिद्ध होने की जरूरत नहीं थी और उसकी संतान के रूप में हमसे प्रेम करने के लिए हमें सिद्ध होने की कोई ज़रूरत नहीं है। हमें उसकी देखरेख और प्रबन्ध में निश्चित होना चाहिए। अब जबकि हम उसके हैं वह हमें नहीं छोड़ेगा। इसमें हमारे लिए आनन्द करने का एक बड़ा कारण हो सकता है।

विचार करने के लिए:

- क्रूस पर मसीह की देह यह कैसे प्रमाणित करती है कि उद्धार एक दान है जिसे अर्जित नहीं किया जा सकता?
- परमेश्वर के सम्मुख खड़े होने के लिए दोषमुक्ति हमें क्या आश्वासन देती है?
- विश्वासी होने के कारण यह जानते हुए हमें किस तरह का भरोसा होना चाहिए कि जिस समय हम पापी थे यीशु हमारे लिये मरने को तैयार था अब जबकि हम उसकी संतान हैं तो क्या वह हमारी देखभाल करेगा?

प्रार्थना के लिये:

- विद्रोही पापी होने पर भी परमेश्वर ने हमसे प्रेम किया इसके लिए उसे धन्यवाद दें।
- विश्वासी होने पर भी जब हम असफल हो जाते हैं तब भी परमेश्वर हमसे प्रेम करता है इसके लिए उसे धन्यवाद दें।
- यदि आपने कभी भी परमेश्वर की क्षमा को अनुभव नहीं किया है, तो इसी समय उसके निकट आकर अपने पापों का अंगीकार करें। उससे स्वयं को क्षमा करने और उसके सामने सही तरह से खड़े होने की मांग करें।

एक पुरुष
पढ़ें *रोमियों 5:12-21*

14

इस विभाग में पौलुस हमें दिखाता है कि पाप ने संसार में कैसे प्रवेश किया और हमारे लिए यह एक बड़ी समस्या कैसे बन गया। वह हमें यह भी दिखाता है कि इस समस्या का समाधान करने और हमें अनन्त जीवन देने के लिए प्रभु यीशु कैसे पृथ्वी पर आया।

पौलुस इस अनुस्मारक के साथ आरम्भ करता है कि पाप ने इस संसार में एक व्यक्ति के द्वारा प्रवेश किया। परमेश्वर ने आदम और हव्वा को बनाकर उन्हें अदन की वाटिका में इसकी देख-रेख करने को रखा। परमेश्वर ने वाटिका में एक वृक्ष को रखा और आदम हव्वा को इस वृक्ष के फल को खाने से मना कर दिया। उसने उन्हें बताया कि यदि वे इस वृक्ष के फल को खाएंगे तो मर जाएंगे।

परमेश्वर ने आदम और हव्वा के समक्ष एक परीक्षा को रखा। ऐसा करते हुए उसने उन्हें एक स्वतंत्र इच्छा देने के साथ-साथ उन्हें उससे (परमेश्वर से) प्रेम करने या उसकी आज्ञा का उल्लंघन करने की योग्यता दी। परमेश्वर चाहता था कि वे अपने मन से किसी निर्णय को लें।

आदम और हव्वा ने उस वर्जित वृक्ष से खाने का चयन किया। उस पहले पाप का प्रभाव तात्कालिक रूप से प्रमाणित हुआ। आदम और हव्वा की एक दूसरे के साथ तथा परमेश्वर के साथ संगति टूट गई। तथापि इस पाप के अन्य तात्पर्य भी थे।

पद 12 में हमने पढ़ा कि मृत्यु पाप के एक परिणाम के रूप में आई। यहां हम जिस मृत्यु के बारे में बोल रहे हैं वह आत्मिक व शारीरिक मृत्यु है। जिस मिट्टी से आदम को बनाया गया था, वह उसी में लौट जाएगा। तथापि, इससे भी बुरा यह है कि उसके पाप ने उसे अब परमेश्वर से अलग कर दिया है।

इस पद में यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि आदम और हव्वा के पाप का प्रभाव केवल उन पर ही नहीं पड़ा था। पद 12 हमें बताता है कि चूंकि मानवजाति ने पाप किया है इसी कारण मृत्यु सभी पर आई। यहां इस पर ध्यान दें कि उनके वंशजों के जन्म से बहुत पहले ही उन्हें पापी घोषित कर दिया गया था। आदम की वंशावली का हर मानव पाप में जन्म लेगा। आदम के पाप का प्रभाव उसके पश्चात् उसके प्रत्येक वंशज पर पड़ा।

पौलुस पद 13 में हमें स्मरण कराता है कि परमेश्वर के व्यवस्था दिये जाने से बहुत पहले ही पाप इस संसार में था। जबकि मूसा को व्यवस्था दिये जाने

से पहले ही पाप मौजूद था, लोग वास्तव में इसके बिना अपने पाप के विस्तार को नहीं समझ पाए थे। तथापि, व्यवस्था ने परमेश्वर की अपेक्षा को प्रगट किया। लोगों के पास अब अपनी तुलना करने को एक मानदण्ड था। परिणाम सराहनीय नहीं था। व्यवस्था परमेश्वर की ओर से मानवता को गिरने का प्रगट करनेवाला एक दर्पण बन गई थी।

यहां तक कि जो परमेश्वर के व्यवस्था दिये जाने से पहले रहते थे, वे भी मृत्यु के दण्ड के अधीन थे (पद 14)। किसी भी लिखित व्यवस्था के न टूटने पर भी मृत्यु और पाप से अलगाव वहां था। हो सकता है कि हमने कभी भी परमेश्वर की मांगों के बारे में न सुना हो, तौभी हम पापी हैं। पाप हमें परमेश्वर से अलग कर अपने साथ न्याय के अधीन रखता है। एक पुरुष या स्त्री की यह कहते हुए कल्पना करें: "मुझे कभी भी कैंसर नहीं हो सकता क्योंकि मैने कभी भी किसी ऐसी चीज़ के बारे में नहीं सुना है।" ऐसा ही पाप और मृत्यु के साथ है। हो सकता है कि हम अपनी स्थिति को न समझें या फिर हम इससे अनजान हो सकते हैं, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि यह हमारा नाश नहीं करेगा।

आदम से मूसा तक के लोगों को व्यवस्था से आनेवाले ज्ञान की कोई जानकारी नहीं थी परन्तु तौभी वे पाप के श्राप के अधीन थे।

इस पूरे संसार में ऐसे पुरुष और स्त्रियां हैं जो इस बारे में नहीं समझते कि परमेश्वर पाप के बारे में क्या कहता है परन्तु तौभी वे परमेश्वर और उसके न्याय के अधीन हैं।

पौलुस ने पद 14 में रोमियों को बताया कि आदम किसी एक आनेवाले का नमूना था। वह इस तरह से तुलना किये जाने के अर्थ को बताता है आदम के पाप करने से मानवजाति के साथ क्या हुआ तथा प्रभु यीशु के द्वारा क्या होता है। पद 15 में उसने रोमियों को बताया कि प्रभु यीशु उस पाप से निपटने के लिए आया जो आदम की ओर से आया था। सभी आदम में आए पाप के परिणामस्वरूप मारे गए। तथापि, प्रभु यीशु का अनुग्रह बहुतों तक जाता है। आदम मृत्यु को लेकर आया, यीशु अनुग्रह को। आदम के पाप के कारण सारा संसार परमेश्वर के न्याय के अधीन आ गया। दूसरी ओर, प्रभु यीशु की मृत्यु के द्वारा हमें परमेश्वर के साथ दोषमुक्त ठहराया जा सकता है (पद 16)।

जबकि आदम हम सभी के लिए मृत्यु को लेकर आया, तब प्रभु यीशु के द्वारा परमेश्वर के प्रबन्ध को प्राप्त करनेवाले धार्मिकता के दान को प्राप्त करेंगे (पद 17)। आदम के पाप का परिणाम सारे संसार पर दण्ड को लेकर आया, परन्तु मसीह का कार्य उन सभी के लिए दोषमोचन और जीवन को लेकर आता है जो उसके पास आते हैं। एक की अनाज्ञाकारिता के द्वारा बहुतों को पापी बनाया गया; यीशु की आज्ञाकारिता के द्वारा बहुतों को परमेश्वर के साथ सही बनाया जा सकता है।

पाप और परमेश्वर से अलगाव का एक उपचार है। प्रभु यीशु पाप की कीमत चुकाने के लिए आया जिससे उस पर विश्वास करनेवालों को धर्मी घोषित किया जा सके।

दुखद सच्चाई यह है कि बहुत से लोग यह नहीं समझते हैं कि वे पाप और न्याय के अधीन हैं। मैं ऐसे लोगों से मिला हूँ जिन्होंने मुझे यह स्मरण कराया कि वे चोरी नहीं करते, झूठ नहीं बोलते, छल या व्यभिचार नहीं करते। वे अपने पड़ोसियों से प्रेम करते, चर्च जाते हैं तथा अपने देश के अच्छे नागरिक हैं। ये लोग यह नहीं सोचते कि वे पापी हैं। इसी कारण परमेश्वर ने अपनी व्यवस्था को मूसा के द्वारा दिया। पद 20 में पौलुस हमें स्मरण कराता है कि व्यवस्था को इसलिए दिया गया कि अपराध बहुत हैं। उसका इससे यह अभिप्राय है कि परमेश्वर ने हमें व्यवस्था केवल यह दिखाने के लिए दिया कि हम उसके मानदण्ड से कितने दूर हैं। व्यवस्था एक दर्पण के समान कार्य करते हुए हमें दिखाती है कि वास्तव में हम कौन हैं। यह एक पापी स्वभाव का प्रमाण देती है।

पद 20 और 21 में हमें यह बताते हुए पौलुस निष्कर्ष निकालता है कि पाप के बढ़ने पर परमेश्वर के अनुग्रह में भी वृद्धि होती है। परमेश्वर उन सभी को अपना अनुग्रह और क्षमा देता है जो अपने पाप को पहचानते हुए उसके पास आते हैं। आदम ने द्वार को खोल दिया और पाप ने एक बाढ़ के समान प्रवेश किया। पाप ने संपूर्ण ग्रह को बरबाद कर दिया। ऐसा कोई नहीं था जिस पर इसका प्रभाव न पड़ा हो। पाप हमें मृत्यु और परमेश्वर से अनन्त अलगाव की ओर लेकर जा रहा था। परन्तु एक आशा है। हमारी क्षमा के लिये प्रभु यीशु मारा गया। पाप एक व्यक्ति के द्वारा आया, यीशु के द्वारा इसका नाश कर दिया गया।

विचार करने के लिए:

- आदम के पाप के लिए द्वार खोलने का क्या परिणाम रहा था? आज के संसार में हमारे पापी स्वभाव का क्या प्रमाण है?
- क्या आप कभी ऐसे लोगों से मिले हैं जिन्होंने यह विश्वास नहीं किया कि वे पापी थे? इस बारे में यह परिच्छेद क्या कहता है?
- व्यवस्था की भूमिका क्या है?
- यीशु पाप की समस्या का समाधान कैसे करता है?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर को पाप की समस्या का समाधान देने के लिए धन्यवाद दें।
- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि आपको पाप के दण्ड से स्वतंत्र किया गया है।
- एक ऐसे मित्र के लिए प्रार्थना करने को कुछ समय निकालें जो अभी तक यह नहीं समझा या समझी है कि वह परमेश्वर के दण्ड के अधीन है।

क्या हम पाप करेंगे? भाग 1 **15**

पढ़ें रोमियों 6:1–14

पौलुस यह दिखा रहा है कि उद्धार प्रभु यीशु के कार्यों में विश्वास रखने से अनुग्रह के द्वारा है। न कि यह व्यवस्था के प्रति आज्ञाकारी रहने का परिणाम है। वह हमें यह भी अनुस्मारक देता है कि प्रभु हमारे पाप से बड़ा है। अध्याय 3 में वह इसे दिखाने के द्वारा प्रगट करता है परमेश्वर ने अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए किस तरह से इस्राएल की पापी जाति का प्रयोग किया।

यह शिक्षा प्रश्नों के दो समूहों को लेकर आती है जिसके बारे में पौलुस इस परिच्छेद में बताता है। पहले समूह का संबंध हमारे व्यवहार से है, यदि हम व्यवस्था के अधीन नहीं हैं, तो क्या पाप के लिये हमारे पास कोई बहाना है? यदि हमारे पाप की क्षमा प्रगट करती है कि परमेश्वर कितना अनुग्रहकारी प्रेमी है, तो हम अधिक पाप क्यों न करें जिससे संसार देख सके कि हमारा परमेश्वर कितना प्रेम व अनुग्रह करनेवाला परमेश्वर है?

प्रश्नों के दूसरे समूह का संबंध व्यवस्था के प्रति हमारे उत्तरदायित्व से है। यदि हम व्यवस्था के अधीन नहीं हैं, तो क्या इसका अर्थ यह है कि हमें इसे नहीं मानना है? किसी भी व्यवस्था के अधीन न होने पर क्या हम जैसा चाहे वैसा रह सकते हैं?

पद 1 में पौलुस पहले प्रश्न को संबोधित करता है,“सो हम क्या कहें? क्या हम पाप करते रहें कि अनुग्रह बहुत हो?” आइये विस्तार से इस प्रश्न पर विचार करें। जब हम पापी ही थे, परमेश्वर ने अपने प्रेम को हम पर प्रगट किया। हम तक पहुंचकर उसने हमारे पापों को क्षमा किया। अपने अद्‌भुत अनुग्रह और क्षमा को प्रमाणित करने के लिये उसने अपने इकलौते पुत्र को क्रूस पर मरने के लिए भेजा। यदि परमेश्वर के अनुग्रह को हमारे पाप की क्षमा में देखा गया तो क्या इसका अर्थ यह नहीं होगा कि हम पाप करते रहें और परमेश्वर के बारे में यह प्रदर्शित करते रहे कि वास्तव में उसके पास हमारे लिए कितना अनुग्रह है?

पद 2 में पौलुस इस प्रश्न का जवाब बहुत सुस्पष्टता के साथ देता है “नहीं”! उसने रोमियों को बताया कि विश्वासी होने के कारण वे पाप के लिए मारे गए हैं और उन्हें अब इसमें अधिक समय तक नहीं रहना है। उसने उन्हें स्मरण कराया कि वे सभी जिनका बपतिस्मा उसकी मृत्यु में भी हुआ था;

बपतिस्मे के द्वारा उन्हें उसमें गाड़ा गया था ताकि जिस तरह से यीशु मृतकों में से जी उठा उसी तरह से वे भी जी उठें।

इन पदों में हमें दो चीज़ों पर ध्यान देने की ज़रूरत है। सर्वप्रथम, पौलुस विश्वासी होने के कारण हमें बताता है कि हम सभी पाप के लिए मारे गए हैं। यीशु ने क्रूस के निकट जाकर हमारे पापों को स्वयं पर ले लिया। हमारे लिए प्रभु यीशु के कार्य को ग्रहण करने के द्वारा हमने उसके साथ क्रूस पर हमारे पापों की मृत्यु को भी स्वीकार किया है। वे पाप और जीवन के पुराने तरीके उन सभी के लिए अब मृत हैं जो मसीह के कार्य को स्वीकार करते हैं।

जिस दूसरी चीज़ को हमें देखने की जरूरत है वह यह कि हमारा बपतिस्मा पाप के लिए इसकी मृत्यु का एक चिन्ह है। पौलुस ने रोमी विश्वासियों को बताया कि उनका मसीह की मृत्यु में बपतिस्मा हुआ था। भिन्न संप्रदाय के विश्वासी बपतिस्में के भिन्न रूपों के अनुसार कार्य करते हैं। उनके लिए जोकि डुबकी पर कार्य करते हैं, प्रतीक बहुत स्पष्ट है। इसमें व्यक्ति को पानी में ले जाकर डुबोया या गाड़ा जाता है। यह इस बात को स्मरण कराता है कि बपतिस्मा हो जाने के पश्चात् उसे मसीह की मृत्यु के साथ जाना गया है। तौभी, बपतिस्मा हो जाने के बाद व्यक्ति पानी के अन्दर गड़ा नहीं रहता है। उसे मसीह में एक नये जीवन के प्रतीक के रूप में पानी से ऊपर लाया जाता है।

बपतिस्में में हम मसीह की मृत्यु में उसके साथ एक हो जाते हैं और उस नये स्थान के साथ जाने जाते हैं जो उसने हमें पिता के साथ दिया है। पुराने नियम में जब एक व्यक्ति अपनी पत्नी को तलाक देता था तो उसे फिर अपना नहीं सकता था। ऐसा ही पाप के साथ है। जो लोग मसीह के साथ समझौता करते हुए वाचा बांधते हुए पाप को तलाक देते या उसके लिए मर जाते हैं उनके पास इसकी ओर लौटने का कोई अधिकार नहीं होता।

दूसरे उदाहरण पर ध्यान दें। एक ऐसे दम्पत्ति की कल्पना करें जो अपने घर को बेचने का निर्णय लेता है। एक ऐसा दिन आता है जब उन्हें इसका खरीददार मिल जाता है और कानूनी कार्यवाही की जाती है। उस दिन के बाद से उनका उस घर पर कोई अधिकार नहीं रह जाता। घर अभी भी वैसा ही है परन्तु अब इसका उनके साथ कोई संबंध नहीं है। बिना किसी निमत्रंण के उस घर में प्रवेश करना एक अपराध होगा।

ऐसा ही अब मसीह के साथ हमारे संबंध में होता है। हमने प्रभु यीशु के साथ सन्धि पर हस्ताक्षर कर दिये हैं। अब अपने पुराने तरीकों पर लौटने का हमारा कोई अधिकार नहीं है।

पौलुस हमें स्मरण कराता है कि हमारा पुराना मनुष्यत्व क्रूस पर चढ़ाया गया (पद 6), इसलिये अब हम अधिक समय तक उसके पास नहीं होंगे। पाप और पुराने मनुष्यत्व के साथ हमारा अनुबन्ध किया गया है। जिस तरह से विवाह का अन्त मृत्यु पर होता है उसी तरह से मसीह के साथ हमारी मृत्यु पाप के साथ हमारे अनुबन्ध को समापन पर लाती है। और यह हमारे नये स्वामी के रूप में हमें मसीह के प्रति आभारी बनाता है। विश्वासी की वचनबद्धता अब उसके प्रभु के प्रति है।

पद 8-10 में पौलुस ने रोमियों को स्मरण कराया कि यदि वे मसीह के साथ मारे गए हैं तो वे उसके साथ जीवन में भी उठाए जाएंगे। जब मसीह मारा गया और मृतकों में से जी उठा तो ऐसा करने के द्वारा उसने यह प्रमाणित किया कि उसने मृत्यु की शक्ति अथवा सामर्थ पर जय पा ली है। उसने प्रमाणित किया कि वह इस का स्वामी है। यदि उसने मृत्यु पर जय पाई, तो हम जो कि उसके हैं उसके नाम में, इस पर भी जय पाएंगे। विश्वासी और परमेश्वर की सन्तान होने के कारण, हमारे पास भी मृत्यु पर विजयी होने और अपने प्रभु के साथ सदाकाल तक रहने के लिए पुनरूत्थान की आशा है।

ध्यान दें कि पौलुस हमें बताता है कि मसीह पाप के लिए "सभी के लिये" मारा गया। अन्य शब्दों में, वह एक ही बार में सभी के पापों के लिये तथा उन सभी के लिये मारा गया जो उसके पास आते हैं। उसकी मृत्यु ने पाप पर हमेशा के लिए विजय प्राप्त कर ली है। यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न को लाता है। यदि यीशु पाप पर विजयी होने के लिए मारा गया तो आज भी हम पाप के प्रमाण को क्यों देखते हैं?

यह सत्य है कि यीशु पाप को पराजित करने के लिए मारा गया। यह भी सत्य है कि हम आज अपने दिनों में भी पाप को देखेंगे। इन दो प्रतिकूल दिखनेवाले कथनों का हम कैसे मेल करते हैं? जब प्रभु यीशु मारा गया, तो हम पर से पाप के हर तरह के नियंत्रण को तोड़ दिया गया। हमें इसके दण्ड से स्वतन्त्र किया गया था। जबकि हम इस संसार के पाप में हैं, मसीह की क्रूस उन पापों को ढांपती है ताकि वे हमें परमेश्वर से अलग न रख सकें।

ऐसी बहुत सी बीमारियां हैं जिन्हें एक समय में घातक माना जाता था। आज हमने उन बिमारियों के उपचार को खोज लिया है जिससे लोगों को उनके कारण मरना न पड़े। एक साधारण सी सूई या गोली उस घातक बिमारी को सही कर सकते हैं। जबकि हमने बहुत सी घातक बिमारियों पर जय पा ली है, तौभी इस तरह की बिमारियां अब भी होती हैं। अन्तर केवल इतना है कि यदि अब हमें

वह रोग हो जाए तो उसका उपचार उपलब्ध है। बिमारी की सामर्थ को तोड़ दिया गया है।

ऐसा ही पाप के साथ है। प्रभु यीशु ने हमें पाप के उपचार को दिया है। उसकी मृत्यु ने पाप की शक्ति पर जय पा ली है। अब हमें अपने पाप के कारण परमेश्वर के बिना इस का सामना नहीं करना है। पाप अभी भी हमारे चारों ओर है, परन्तु इसकी सामर्थ को क्रूस पर तोड़ दिया गया है।

यदि पाप का कोई उपचार है, तो एक व्यक्ति उसमें क्यों बना रहता है? जीवन को प्राप्त करनेवाला व्यक्ति मृत्यु की ओर क्यों लौटना चाहेगा? ज्योति को देखने के पश्चात् हम अंधकार की ओर क्यों लौटना चाहेंगे? यदि हम स्वस्थ हैं तो हम फिर से बिमार होना क्यों चाहेंगे बल्कि इस पर ध्यान देना भी हमारे लिए मूर्खतापूर्ण होगा।

पौलुस हमें इस बात की चेतावनी देता है कि हमारी देहों पर अब पाप का कोई अधिकार न रहे। अब हमें पाप को स्वयं पर शासन नहीं करने देना है। हमें अपने पुराने शारीरिक स्वभाव की बुरी इच्छा को सुनना नहीं है। अब हम पाप के दास नही हैं। तथापि, ध्यान दें कि हमें एक चुनाव करने की ज़रूरत है। हमें मसीह के जीवन का चुनाव करने और पापी मार्गों से फिरने की ज़रूरत है। हमें ऐसा एक निर्णय लेना है कि पाप हमारे शरीरों पर शासन न करने पाए। पाप के आने पर हमें इस पर विजयी होकर इसे निकाल देना है। हमें अपने शरीरों को पाप और दुष्टता के उपकरण के रूप में प्रयोग किये जाने को नहीं सौंपना है। इसके विपरित, हमें स्वयं को पूरी तरह से प्रभु यीशु को सौंपना है।

मसीह के कार्य को ग्रहण करनेवालों को पाप की ओर से अपनी पीठ को फेर लेना चाहिए। जिस तरह से एक पति स्वयं को अपनी पत्नी के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने को सौंप देता है उसी तरह से विश्वासी को अब परमेश्वर के प्रति अपने समर्पण को समझना है। मार्ग में परीक्षाएं तो होंगी, परन्तु उन परीक्षाओं का सामना करना होगा। हमें स्वयं को पाप के प्रति मृतक परन्तु परमेश्वर के प्रति जीवित समझना है। जो यह कहते हैं, "पाप अधिक हो ताकि अनुग्रह का अधिक प्रमाण मिले", केवल यह प्रमाणित करता है कि वे उसे नहीं समझते जिसे परमेश्वर के अनुग्रह ने पूरा कर दिया है।

विचार करने के लिए:

- पाप के लिये मरने का क्या अर्थ है? क्या इसका अर्थ यह है कि हम अब पाप में नहीं हैं?

- बपतिस्मा उस बात का प्रतीक कैसे है जो प्रभु यीशु के पास आने पर हमारे जीवन में होती है?
- यदि मसीह पाप को पराजित करने के लिए आया, तो आज भी अपने समय में हम इसका प्रमाण क्यों देखते हैं?
- अब मसीह के साथ हमारा अनुबन्ध क्या है कि "हम उसके साथ मारे गए हैं?"
- क्या आप उस व्यक्ति के समान जी रहे हैं जिसका प्रभु यीशु के साथ समझौता हुआ है?

प्रार्थना के लिए

- पाप के उपचार के रूप में परमेश्वर द्वारा किये जानेवाले मार्ग के रूप में धन्यवाद दें।
- परमेश्वर के तथा उसके उद्देश्यों के प्रति विश्वास योग्य बने रहने के लिए परमेश्वर से सहायता मांगें।
- परमेश्वर से अपने जीवन के किसी भी ऐसे क्षेत्र को दिखाने के लिये कहें जिसमें उसके प्रति पूर्ण रूप से समर्पण किये जाने की आवश्यकता है?

क्या हम पाप करेंगे? भाग 2 **16**
पढ़ें *रोमियों 6: 15-23*

पौलुस प्रभु यीशु में विश्वास रखने के द्वारा अनुग्रह से उद्धार पर दी गई अपनी शिक्षा के कुछ विरोधों से निपट रहा है। अन्तिम चिन्तन में हमने इन विरोधों में से एक को देखा था, कि यदि हमारे पाप परमेश्वर की क्षमा और अनुग्रह को दिखाते हैं तो यह पाप के लिए एक बहाना नहीं होगा कि संसार यह देखने पाए कि बदले में परमेश्वर का अनुग्रह उससे कितना अधिक होगा।

पौलुस की शिक्षा पर दूसरा विरोध पद 15 में मिलता है जो कि इस अध्याय का प्रमुख केन्द्र होगा। पौलुस यह सिखा रहा है कि अब हम व्यवस्था के अधीन नहीं बल्कि अनुग्रह के अधीन हैं। बहुतों ने पौलुस की शिक्षा का यह कहते हुए विरोध किया कि यदि हम व्यवस्था से अलग होकर कार्य करते हैं तो लोग जैसा चाहे वैसा रहेंगे।

पौलुस पद 16 में अपने पाठकों को यह बताते हुए इसका जवाब देता है कि जब वे स्वयं को किसी चीज़ का दास होने के लिए सौंप देते हैं तो उन्हें उसी की आज्ञानुसार कार्य करना होता है, अन्य शब्दों में, वे उसके दास हो जाते हैं। पौलुस उन्हें स्मरण कराता है कि उन्हें पाप के दास होने के कारण परमेश्वर से अलग होना था। तौभी, अब उन्होंने प्राप्त की शिक्षा के आधार पर “पूरे मन” से एक नये जीवन को लेने का चयन किया है। (पद 17)। इस शिक्षा के बारे में पौलुस उन्हें बता रहा था-विश्वास द्वारा धार्मिकता का मार्ग।

पद 18 में ध्यान दें कि इस शिक्षा ने उन्हें पाप की सामर्थ से आज़ाद किया था। जब वे समझ गए कि यीशु क्यों आया था और उसने उन्हें क्या दिया था, उन्होंने पूरे मन से इस शिक्षा को ग्रहण किया। उन्होंने यीशु के पास आकर स्वयं को धार्मिकता के दास होने के लिए उसे सौंपा था।

पौलुस अपने पाठकों को यह स्मरण कराते हुए मानवीय शब्दों में इसका उदाहरण देता है कि उन्होंने किस तरह से अपने शरीरों को कुकर्म के लिये अशुद्धता और कुकर्म के दास करके सौंपा था। अनैतिकता और बड़ी बुराई में रहते हुए, वे उसे समझ गए थे जो पौलुस बता रहा था। शरीर के अंगों को विलास और पापी इच्छाओं के लिए सौंप दिया गया था। पौलुस उन्हें बताता है कि जिस तरह से उन्होंने अपने शरीरों को पाप और बुराई के लिए सौंपा था उसी

तरह से उन्हें अब स्वयं को परमेश्वर और धार्मिकता के लिये सौंपना था। पाप के दास होने के कारण वे मसीह की धार्मिकता के बारे में कुछ नहीं जानते थे। उन पर परमेश्वर के वचन या पवित्र आत्मा के नेतृत्व का कोई प्रभुत्व नहीं था (पद 20)। तथापि, यीशु ने उन्हें अपने जीवन की कीमत चुकाने के द्वारा उन्हें उनके पाप के पुराने स्वामित्व से कानूनी रूप से खरीदा है। उसने उन्हें स्वयं के लिये खरीदा है। अब वे उसके दास हैं।

पौलुस रोमियों को उस लाभ पर विचार करने के लिए कहता है जो पाप से अलग होने पर उन्हें मिला है (पद 21)। जब वे पीछे मुड़कर अपने जीवनों को क्रूर पाप की आधीनता में देखते हैं तो इससे वे लज्जित होते होंगे। उन्होंने अपने जीवनों को अनैतिकता और विलास से भरा था लेकिन वे अपने जीवनों में रिक्त, सूखे और लज्जित हुए थे। पाप और बुराई के जीवन में कोई आशा नहीं थी।

अब वे मसीह के सेवक होने के कारण एक भिन्नता का अनुभव कर रहे थे। मसीह और उसके प्रभुत्व में रहने के लाभों की तुलना उससे नहीं की जा सकती जिसे उन्होंने पाप की गुलामी और अधीनता के अन्तर्गत अनुभव किया था। अब उनके पास मसीह की उपस्थिति में अनन्त जीवन का आश्वासन था। वे अपने कार्यों और विचारों में अधिक से अधिक प्रभु यीशु के समान बनते जा रहे हैं। वे अपने पूर्व के स्वामी की ओर लौटने की इच्छा भला क्यों करेंगे?

जो प्रभु के पास आकर उसके दास बने, उन्होंने पाप के दास होने और मसीह के लिए जीवन जीने के बीच के अन्तर को देखा है। वे पाप में रहने के बन्धन को समझ गए हैं। उन्होंने मसीह के दास होने के आनन्द को भी देखा है। इनमें कोई तुलना नहीं की जा सकती है।

पौलुस पद 23 में पाप और बुराई से फिरने के अन्तिम कारण को देते हुए अपने तर्क का निष्कर्ष निकालता है, "क्योंकि पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।" यहां तर्क यह है: यदि हम व्यवस्था के अधीन नहीं हैं तो क्या इसका अर्थ यह हुआ कि हम और पाप करें? पौलुस इसे स्पष्ट करता है कि पाप मृत्यु की ओर लेकर जाता है। जबकि प्रभु यीशु का मार्ग अनन्त जीवन की ओर लेकर जाता है। पाप और बुराई के बन्धन से स्वतंत्र होनेवाला उस क्रूस स्वामी की ओर क्यों लौटना चाहेगा जिसका प्रतिफल केवल मृत्यु और परमेश्वर से अनन्त अलगाव था।

प्रभु यीशु के पास आने पर हम पाप की दासता से स्वतंत्र होकर धार्मिकता की संतान बन गए हैं। हम मसीह के सेवक हैं। पाप की ओर लौटना उस मसीह के प्रति समर्पण करने से इंकार करना होगा जिसने हमें स्वतंत्र किया है। पाप के

प्रभुत्व के अधीन स्वयं को रखना उस चीज़ के बारे में गलत समझना होगा जो प्रभु यीशु में हमारे पास है। हमारे लिये महान् कार्य को करने के कारण, हमें मसीह की आज्ञा का पालन प्रसन्नता से करते हुए उसके प्रति आज्ञाकारी बने रहते हुए अद्‌भुत आशीषों में आनन्दित होना चाहिए। जो यह कहते हैं कि उद्धार का सिद्धान्त अनुग्रह द्वारा पाप की ओर लेकर जाएगा वे अनुग्रह द्वारा उद्धार के अद्‌भुत आनन्द का अनुभव वास्तव में कभी नहीं कर पाते।

विचार करने के लिये:

- किस तरह से यह कहा जा सकता है कि आप पाप के दास थे?
- क्या आपको वह दिन याद है जब आपने प्रभु यीशु को अपने उद्धारकर्त्ता के रूप में ग्रहण किया था? क्या आपने उस दिन स्वयं को उसकी सेवा करने के लिए सौंपा था? प्रतिदिन के जीवन में इसका क्या अर्थ निकलता है?
- मसीह के दास हो जाने के बाद आपको अपने जीवन में क्या भिन्नता दिखाई दी?
- यदि आप अब व्यवस्था के अधीन नहीं हैं तो इसका अर्थ क्या यह है कि आप जो चाहे कर सकते हैं? स्पष्ट करें।
- मसीह के प्रति आज्ञाकारी बने रहने के प्रतिफल क्या हैं?

प्रार्थना के लिये:

- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि उसने आपको पाप की गुलामी से आज़ाद किया है?
- परमेश्वर से कहें कि धार्मिकता के दास होने के अर्थ को समझने के लिए वह अपने हृदयों को खोले।
- उसे धन्यवाद दें कि हमारे पूर्व के स्वामी के विपरीत वह भला और विश्वासयोग्य है।
- परमेश्वर से कहें कि आपमें धार्मिकता के सेवक होने की चाह उत्पन्न करे।
- परमेश्वर से उन समयों के लिए आपको क्षमा करने के लिये कहें जब आप विश्वासयोग्यता के साथ उसकी सेवा नहीं कर पाए थे।

व्यवस्था के लिये मृत

17

पढ़ें *रोमियों 7:1-6*

रोमियों को लिखे अपने पत्र के इस अगले विभाग में पौलुस उन लोगों के बारे में बोलता है जो मसीह में जीवित हैं कि उन्हें व्यवस्था से कैसे स्वतंत्र किया गया है। अपने विषय पर बल देने के लिये, पौलुस ने रोमियों को स्मरण कराया कि केवल एक जीवित व्यक्ति पर ही व्यवस्था का अधिकार था। पौलुस विवाह के उदाहरण का प्रयोग करते हुए इस बारे में बोलता है।

यहूदी व्यवस्था एक स्त्री को अपने पति के साथ जीवनभर के लिये बांध देती थी। पति की मृत्यु हो जाने के पश्चात् वह उससे मुक्त होकर किसी भी अन्य व्यक्ति से विवाह करने को स्वतंत्र थी। मृत्यु एक दूसरे को प्रति उनके आबन्ध से उन्हें मुक्त कर देती थी।

पौलुस पद 3 में विस्तार से बताता है कि यदि एक स्त्री अपने पति के जीवित रहते हुए किसी दूसरे व्यक्ति से विवाह करती है तो ऐसा करके वह व्यभिचार करती है। तथापि, उसके पति की मृत्यु को जाने पर अपने पहतो पति से बिना किसी अनुबन्ध के दूसरे व्यक्ति से विवाह कर सकती है। मृत्यु ने पति-पत्नी दोनों को ही अनुबंध से मुक्त कर दिया।

यहां पौलुस जिस विषय को स्पष्ट कर रहा है वह यह है कि: यीशु के क्रूस पर माने जाने पर, हम उसके साथ व्यवस्था के लिए भी मर जाते हैं। मसीह के साथ मारे जाने वालों का अब व्यवस्था के साथ कोई अनुबन्ध नहीं है। यीशु ने हमारे पापों की कीमत को चुकाया और उसने हमें हमारे अनुबन्ध और व्यवस्था के ऋण से आज़ाद किया। अब हम दूसरे मार्ग का अनुसरण करने को स्वतन्त्र हैं, व्यस्था से अलग मसीह में विश्वास रखने के द्वारा धार्मिकता का मार्ग। पौलुस ने रोमियों को स्मरण कराया कि वे अपने पापी स्वभाव के नियंत्रण में थे। हर तरह की बुराई उसी पापी स्वभाव से उत्पन्न होती थी। हम लगातार उनके साथ एक युद्ध में हैं। पुराना स्वभाव क्रोध, लालसा, लालच और आत्मिक व शारीरिक मृत्यु दोनों ही में दुष्टता के परिणाम में फैलता है।

पद 5 में ध्यान दें कि पौलुस ने रोमियों को बताया कि उनका पापी मनोभाव व्यवस्था से उत्पन्न हुआ था। अन्य शब्दों में, परमेश्वर की व्यवस्था ने उसके लोगों को दिखाया कि क्या चीज़ पापपूर्ण थी और उस बुराई को प्रगट किया

जिसका नियंत्रण उनके मनों पर था, परन्तु यह बुराई को पालतू न बना सकी।

पौलुस पद 6 में रोमियों को बताता है कि व्यवस्था के लिये मरने के द्वारा उन्हें एक नये मार्ग का अनुसरण करने के लिये स्वतन्त्र किया गया जोकि आत्मा का मार्ग है। पौलुस अपने पत्र में बाद में इस नये मार्ग का वर्णन करेगा।

इस परिच्छेद में हमारे समझने के लिये जो सबसे महत्वपूर्ण चीज़ है वह यह है कि यीशु के मारे जाने पर कुछ हुआ था। हमारे पापों का दण्ड मृत्यु थी। यीशु हमारे लिये मारा गया था। इसका अर्थ यह है कि मैं कानूनी रूप से उसके साथ मारा गया था। अपनी मृत्यु के द्वारा मैं व्यवस्था के साथ किये गए अपने आबन्ध से स्वतंत्र हुआ था। अब मैं एक नये मार्ग में बन्ध गया हूँ। उस मार्ग का वर्णन पौलुस इस तरह से करता है,"आत्मा की नई रीति" (रोमियों 7:6)। इस टीका-टिप्पणी के बाद हम "आत्मा की इस नई रीति" की जांच अधिक विस्तार से करेंगे।

विचार करने के लिए:

- व्यवस्था के लिये मारे जाने का क्या अर्थ है?
- पौलुस यह दिखाने के लिये विवाह के उदाहरण का प्रयोग कैसे करता है कि हम व्यवस्था की पुरानी रीति (मार्ग) से स्वतन्त्र हैं?
- यीशु के साथ क्रूस पर हम कैसे मारे गए थे? मसीह के साथ हमारी मृत्यु का आशय क्या है?

प्रार्थना के लिये:

- प्रभु को धन्यवाद दें कि क्रूस पर मारे जाने के द्वारा उसने हमारे दण्ड को स्वयं पर उठा लिया।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि हम क्रूस पर उसके साथ मारे गए।
- प्रभु से इसे समझने में आपकी सहायता करने को कहें कि "आत्मा की नई रीति" में रहने का अब क्या अर्थ है?

क्या व्यवस्था पापपूर्ण है? 18

पढ़ें रोमियों 7:7-13

अन्तिम मनन में हमने देखा कि हम व्यवस्था की पुरानी रीति के लिये मर चुके हैं। उस व्यवस्था से किसी को भी धर्मी घोषित नहीं किया गया था। मसीह के द्वारा एक नया मार्ग (रीति) है। उसकी मृत्यु ने पापों की क्षमा और पवित्र आत्मा की सेवकाई के लिए मार्ग को तैयार किया है। जिन्होंने प्रभु यीशु को अपने उद्धारकर्त्ता के रूप में ग्रहण करने के साथ-साथ पवित्र आत्मा को प्राप्त किया है वे अपने में इस नये स्वभाव से अवगत हैं। अब हमें और अधिक व्यवस्था के अधीन नहीं रहना है, बल्कि मसीह की आत्मा के निर्देशन और सेवकाई के अधीन, जो हमें मसीह के स्वरूप के अनुसार बनाता है। हम उन दिनों के यहूदियों के लिये इस तरह की शिक्षा की कठिनाई की केवल कल्पना ही कर सकते हैं। वे व्यवस्था के लिए और व्यवस्था के द्वारा ही रहे थे। व्यवस्था से अलग कोई भी शिक्षा उनके लिये विधर्म थी।

हमारे लिये यह समझना महत्वपूर्ण है कि व्यवस्था को मिटाया नहीं गया है। जबकि हम अब इसके अधीन नहीं हैं, यदि हम मसीह की आत्मा और उसके वचन के नेतृत्व के प्रति भावुक हैं तो हम न केवल स्वयं को व्यवस्था के अनुसार रहता पाएंगे बल्कि इसे एक उचित स्तर पर करते हुए हमारे बाहरी कार्यों और व्यवहार को बदलने में हमारे सहायता करने हेतु व्यवस्था अच्छी है। तथापि, परमेश्वर का आत्मा, हमारे मनों को बदलने के लिये भीतर से कार्य करता है।

पौलुस की इस शिक्षा में नेतृत्व करने की संभावना है कि कुछ लोग यह मान लेते हैं कि व्यवस्था पापपूर्ण है। ऐसा कहा जाता है कि व्यवस्था उद्धार और पवित्रता में परमेश्वर के उद्देश्य के प्रतिकूल है। पौलुस पद 7 में आरम्भ करते हुए इस विषय से निपटता है।

प्रश्न यह उठता है कि क्या व्यवस्था पापपूर्ण है? जिसका एक बहुत ही निश्चित जवाब है "नहीं"। पद 7 में पौलुस हमें स्मरण कराता है कि व्यवस्था का अपना एक उद्देश्य था। इसने हमें पाप के बारे में बताया। यदि व्यवस्था न होती तो हम कभी भी पाप के बारे में जान न पाते। पौलुस इस बारे में बताने के लिए लालच के उदाहरण का प्रयोग करता है। जो दूसरों के पास है हम सब उसे चाहते हैं। अधिकांश लोगों का मानना है कि हमारा इस तरह से सोचना स्वाभाविक है। तथापि, जब व्यवस्था हमें सिखाती है कि हमें लालच नहीं करना

है तो हम जान पाते हैं कि दूसरों के पास जो है उसे पाने की इच्छा करना वास्तव में परमेश्वर की इच्छा और उद्देश्य के प्रतिकूल है। यह पाप है। यदि व्यवस्था हमें इस बारे में न बताती तो हम कैसे जान पाते कि यह पाप है? इसलिये, व्यवस्था पापपूर्ण नहीं है।

आगे, पद 8 में पौलुस हमे बताता है कि व्यवस्था के बिना पाप मुर्दा है। इस पर कुछ मनन किया जाता है। यदि लालच के लिये कोई व्यवस्था नहीं है तो कोई भी कैसे लालच का दोषी हो सकता है? यदि हत्या के विरुद्ध कोई व्यवस्था नहीं है तो हम हत्या के दोषी कैसे हो सकते हैं? यदि तोड़े जाने के लिये कोई व्यवस्था नहीं है तो हम लोगों को उनके कार्यों के प्रति जिम्मेदार बनाते हुए कैसे सज़ा दे सकते हैं? यदि कोई व्यवस्था नहीं है तो कोई दण्ड भी नहीं हो सकता।

तौभी, पौलुस हमें बताता है कि पाप ने हमारे भीतर लालच की इच्छा को उत्पन्न करने के लिए व्यवस्था द्वारा दिये गए अवसर का लाभ उठाया। हमें इससे यह समझने की ज़रूरत है कि पाप का पोषण विद्रोह और घमण्ड से होता है। पाप व्यवस्था को देखने पर इसका विरोध करता है। पाप परमेश्वर की व्यवस्था और उद्देश्य के प्रति समर्पण नहीं करता। अपनी ही चीज़ों को करने के लिए यह विद्रोह का कदम उठाता है। पाप कभी भी यह नहीं बताएगा कि क्या करना है। यह अधिकार के प्रति समर्पण नहीं करेगा। व्यवस्था को देखने पर पाप विद्रोह करता तथा हर उस तरह की बुरी इच्छा को उत्पन्न करता है जिसकी देह में कल्पना की जा सकती है। इसका आरम्भ अदन की वाटिका में हुआ था। वहां पाप ने परमेश्वर की व्यवस्था का सामना किया था। परमेश्वर ने वाटिका के बीच के वृक्ष के फल को खाने से सावधान किया था, परन्तु पाप ने आदम और हव्वा को परमेश्वर की इस व्यवस्था के प्रति विरोध करने को प्रेरित किया और उन्होंने इसके सामने समर्पण कर दिया। परिणाम मृत्यु था। जिस तरह से हमें पाप लगातार परीक्षा में डालता और हमें महाप्रतापी और पवित्र परमेश्वर के उद्देश्यों के विरुद्ध लेकर जाता है। हम सभी अपने भीतर विद्रोह करने के दवाब को अनुभव करते हैं।

पौलुस हमें बताता है कि व्यवस्था के आने से पहले मैं जीवित था (पद 9)। इस कथन को समझने का सबसे अच्छा तरीका यह देखना है कि लोग स्वयं को कैसे देखते हैं। अधिकांश का मानना है कि वे भ्रष्ट पापी न होकर अच्छे लोग हैं। वे बिना किसी प्रतिबन्ध के जैसा चाहे वैसा करते हैं। व्यवस्था को न जानने पर वे अपनी भ्रष्ट स्वतन्त्रता में रहते हैं। तब एक दिन ऐसा आता है जब परमेश्वर का आत्मा उन पर नियत्रंण कर उन्हें अपने वचन के द्वारा अपनी आवश्यकता को दिखाता है। स्वयं को वचन के दर्पण में देखने पर वे जान जाते हैं कि वे परमेश्वर

द्वारा निर्धारित किये गए मानदण्ड से गिर गए हैं। परमेश्वर के वचन और उसकी मांगों का सामना करने पर वे जान पाते हैं कि वे अभी भी कितनी गुलामी में हैं। अचानक ही उन्हें पता चलता है कि उन्हें परमेश्वर से अलग किया गया है, वे उसके न्याय के अधीन हैं और उनके लिए कोई आशा नहीं है। इसी कारण पौलुस हमें बताता है कि आज्ञाएं वास्तव में हमें जीवन देने की अपेक्षा, हमारे लिए मृत्यु को लेकर आती हैं। वे हमारी शोचनीय अवस्था को स्पष्ट करती हैं। एक बार ऐसा हो जाने पर, हम पाते हैं कि हमारी एकमात्र आशा परमेश्वर के अनुग्रह में है।

पौलुस बताता है कि पाप व्यवस्था द्वारा दी जानेवाली उपलब्धियों को हमें नाश करने के लिए रोक देता है। हमारे पाप को प्रगट करने पर यह हमारी भ्रष्टता को प्रगट करती है। ऐसा लगता है कि यहां, पौलुस ने अपने मन में पाप की सामर्थ को जाना था। वह स्वयं को पाप करने से रोक नहीं सका था। आज्ञाएं स्पष्ट थीं परन्तु उसका परिवर्तन होने से पूर्व उसमें उनकी आज्ञा का पालन करने की योग्यता नहीं थी। पाप का उस पर नियत्रंण होने के कारण इसने उसका अनाज्ञाकारिता और विद्रोह की ओर नेतृत्व किया। मसीह के बिना उसमें व्यवस्था को पूरा करने की कोई संभावित आशा न थी।

मैंने इसी चीज़ को अपने जीवन में भी सत्य होता पाया है। व्यवस्था निश्चय ही पवित्र और भली है, तथापि इसने मुझमें मृत्यु को उत्पन्न किया। इसने मुझे पूर्णतया असहाय छोड़ दिया। इसने मुझमें इस भाव से मृत्यु को उत्पन्न किया कि इसने मुझे यह अहसास कराया कि मैं परमेश्वर के मानदण्ड तक पहुंचने में असमर्थ था। इसने मुझे पर यह जानने का दबाव दिया कि अपने पाप से बचाए जाने पर मेरे लिए अवश्य ही एक दूसरा मार्ग भी होगा। व्यवस्था ने मेरा ध्यान मेरी ओर से और मेरे प्रयासों की ओर से हटा दिया क्योंकि इसने मुझ पर प्रगट किया कि यदि यह मुझ पर निर्भर होती तो मैं कभी भी स्वर्ग नहीं जाता। व्यवस्था ने मेरा सामना मेरी कमियों से कराया जिससे मैं मसीह की ओर अपनी एकमात्र आशा के रूप में फिर सकूं।

विषय की वास्तविकता यह है कि यदि व्यवस्था में यह नहीं होता तो मैं यह कभी नहीं जान पाता कि मैं पापी हूँ और मुझे एक उद्धारकर्त्ता की आवश्यकता है। व्यवस्था ने मुझे दिखाया कि मैं वास्तव में कौन था। इसने मेरी गन्दगी को दिखाने के लिए एक दर्पण के रूप में कार्य किया। परन्तु यह केवल एक दर्पण ही था। हम सभी जानते हैं कि एक दर्पण हमें केवल हमारे चेहरे की गन्दगी को दिखा सकता है परन्तु, यह गन्दगी को साफ नहीं कर सकता था। धोने के लिये साबुन और पानी की ज़रूरत होती है। यही चीज़ें मसीह हमें देता है। व्यवस्था ने हमें

हमारी गन्दगी को दिखाया, मसीह साबुन के रूप में आया कि हमारी गन्दगी को साफ कर सके। यदि हम व्यवस्था के दर्पण पर ही रुक जाते हैं तो हम शुद्ध होने से भी रुक जाते हैं। केवल यीशु ही हमारे गन्दे प्राणों को धोने में सक्षम है।

हम प्रायः उद्धार के एक ऐसे संदेश का प्रचार करते हैं जो पाप को जाने देता है। इसके साथ समस्या यह है कि जब तक हम उद्धारकर्त्ता के लिए अपनी जरूरत को नहीं देखते हैं तब तक हम से उद्धार की पूरी तरह से सराहना नहीं कर पाएंगे। ऐसे बहुत से लोग हैं जो प्रभु यीशु द्वारा दी जानेवाली चीज़ों को प्राप्त करना चाहते हैं, परन्तु वे इस सच्चाई को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं होते हैं कि वे पापी हैं। ऐसा कैसे हो सकता है? यदि वे गन्दे नहीं है तो वे क्यों नहाएंगे? अपने पाप और अपनी ज़रूरत को पहचानते हुए उसके निकट आने के अलावा और कोई दूसरा मार्ग नहीं है। परमेश्वर की स्तुति करें कि व्यवस्था हमें हमारे पापों को दिखाती है जिससे हम उद्धारकर्त्ता के निकट आ सकें।

विचार करने के लिये:

- पौलुस के अनुसार व्यवस्था का उद्देश्य क्या था?
- व्यवस्था हमें बचा क्यों नहीं सकती है?
- हमें बचाए जाने के लिए प्रभु यीशु की आवश्कता क्यों है?
- मसीह के पास आने से पहले हमारे लिये अपने पाप को समझना महत्वपूर्ण क्यों है?

प्रार्थना के लिये:

- परमेश्वर के आप पर यह प्रगट करने के लिए धन्यवाद दें कि आपके पापी होने के बावजूद उसने प्रभु यीशु के द्वारा आपके लिए बचने के एक मार्ग को उपलब्ध कराया है।
- परमेश्वर से कहें कि वह इस बारे में अधिक से अधिक आपके मस्तिष्क को खोले कि आप अपनी शक्ति से मसीही जीवन को नहीं जी सकते हैं।

  परमेश्वर को धन्यवाद दें कि उसने आपमें अपने पवित्र आत्मा को इसलिये डाला कि आपको उस जीवन को जीने के योग्य कर सके जिसकी मांग वह आपसे करता है।

भीतर का युद्ध

19

पढ़ें रोमियों 7:14-25

हमें उद्धारकर्त्ता के लिए हमारी आवश्यकता को दिखाने के लिये व्यवस्था को दिया गया था। यह एक ऐसे दर्पण के समान थी जिसने हमें दिखाया कि हम वास्तव में कौन थे लेकिन यह हमारे पापों की गन्दगी को धोने में असमर्थ थी। इसके लिए हमें एक उद्धारकर्त्ता की ज़रूरत थी।

पौलुस बताता है कि व्यवस्था अच्छी थी जिसे चीज़ को पूरा करने के लिए इसे तैयार किया गया था इसने उसे पूरा किया। इसने पाप को प्रगट किया। व्यवस्था के द्वारा पौलुस स्वयं को समझ गया था। उसने स्वयं को एक पापी के रूप में देखा जो कि वह वास्तव में था। वास्तव में पद 14 में उसने रोमियों को बताया कि उसका शरीर पाप के लिए बेचा गया था। अन्य शब्दों में, उसकी देह पर पाप का नियंत्रण था। वह इसका गुलाम था।

यह कल्पना करना कठिन है कि महान प्रेरित पौलुस दैहिक पाप के साथ द्वन्द्व कर रहा है परन्तु वह यहां हमारे साथ बहुत ईमानदार है। वह हमें बताता है कि उसने उन चीज़ों को नहीं किया जिन्हें वह करना चाहता था और स्वयं को उसने उन कार्यों को करते पाया जिन्हें वह करना नहीं चाहता था। पौलुस के जीवन में दो प्रतिरोधी चीज़ें होती प्रतीत होती हैं। वह सही चीज़ों को करना चाहता था परन्तु उसने स्वयं को गलत चीज़ करते पाया। उसमें दो विरोधी स्वभाव थे। देह परमेश्वर को प्रसन्न करने में असमर्थ थी, दूसरी ओर आत्मा परमेश्वर में आनन्दित होकर प्रत्येक चीज़ में परमेश्वर को आदर देना चाहती थी।

हममें से कितनों ने स्वयं को पौलुस के समान संघर्ष में नहीं पाया? हम उन चीज़ों को बोलते हैं जिनके बारे में हम जानते हैं कि हमें नहीं बोलना चाहिए। हमें अप्रिय परिस्थितियों के प्रति इस तरह से प्रतिक्रिया देते है जो कि उपयुक्त नहीं है। हम जानते हैं कि ये चीज़ें गलत हैं परन्तु हम स्वयं को उन्हीं चीज़ों को किसी भी तरह से करता हुआ पाते हैं। इसी के साथ-साथ हममें एक ऐसा अंश भी होता है जो पाप से घृणा और परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहता है।

पौलुस ने पद 16 में रोमियों को स्मरण कराया कि उनकी सही चीज़ों को करने की इच्छा करना इस बात का प्रमाण था कि व्यवस्था भली थी। अन्य शब्दों में, उन्होंने स्वयं में जान लिया था कि परमेश्वर का मानदण्ड(जैसा व्यवस्था के

द्वारा निर्धारित किया गया था) सही और पवित्र था। इसने उन्हें शोकित किया कि वे उस मानदण्ड को पूरा करने में समर्थ नहीं थे, क्योंकि वे जानते थे कि यह सही थी।

हममें एक ऐसा भाग है जो परमेश्वर से प्रेम करता और उसकी व्यवस्था का पालन करना चाहता है। दूसरी ओर, हममें कुछ ऐसी चीज़ है जो विरोध करते हुए देह को प्रसन्न करना चाहती है। प्रेरित पौलुस ने अपने जीवन में इस संघर्ष को अनुभव किया।

पौलुस पद 17 में इस द्वन्द्व के बारे में बताता है। वह हमें बताता है कि इस दशा में देह को संतुष्ट करनेवाला वह नहीं बल्कि पाप है। कुछ क्षण के लिए हमारा उस पर विचार करना महत्वपूर्ण है जो पौलुस यहां बता रहा है।

यीशु क्रूस पर मारे जाने पर न केवल हमें क्षमा किया बल्कि उसने हमें बदलते हुए हमें एक नया हृदय दिया। 1 कुरिन्थियों 5:17 में कुरिन्थियो को लिखते हुए पौलुस ने इसे इस तरह से रखा।

सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गईं।

यीशु न केवल हमें क्षमा करने के लिए आया परन्तु उसने हममें एक नये जीवन को भी रोपा। प्रभु यीशु से संबंध रखनेवाले इस जीवन का अनुभव इसकी नई अभिलाषाओं और उद्देश्यों के साथ करते हैं। तथापि, मसीह के पास आने और इस नये जीवन का अनुभव प्राप्त करने का अर्थ यह नहीं है कि हम फिर कभी पाप नहीं करेंगे। वास्तव में नया जीवन विश्वासी के जीवन में एक द्वन्द्व को लेकर आता है। देह अब भी सुंतष्टि पाने के लिए पुकारती रहती है परन्तु नया जीवन मसीह के लिए जीवित रहने और उसके उद्देश्यों में चलने की इच्छा करता है। पौलुस ने अपने जीवन में इस तनाव का अनुभव किया था। इस तनाव का अनुभव प्रत्येक विश्वासी अवश्य करेगा। इस परिच्छेद में पौलुस जो कुछ हमें बताता है उस पर ध्यान दें।

सबसे पहले, उसने भीतर संघर्षरत दो स्वभावों के विषय जाना। यदि हम अपनी आत्मिक चाल में विजय का अनुभव लेना चाहते हैं तो हमें आत्मा के नेतृत्व में देह की लालसा की पहचान करने के योग्य होना होगा। मैंने विश्वासियों को अपने पापपूर्ण कार्यों को इस आधार पर न्यायोचित ठहराते हुए सुना है कि यह उनकी देह के लिए उन्हें स्वाभाविक व अच्छा प्रतीत हुआ। पौलुस हमें यहां बता रहा है कि हमारे भीतर देह और आत्मा संघर्षरत् हैं। यदि हम मसीह का

अनुसरण करना और विजय में चलना चाहते हैं तो हमें इस बारे में पहचान करने की ज़रूरत है कि क्या चीज़ देह की ओर से है और क्या चीज़ आत्मा की ओर से हैं।

दूसरा, पद 18 में ध्यान दें कि पौलुस ने रोमियों को बताया कि उसके पापी स्वभाव में कोई भी अच्छी चीज़ नहीं है। ऐसा कहते हुए पौलुस हमें दिखाता है कि पापी स्वभाव के बारे में उसका क्या विचार है। उससे भी अधिक वह इस बात की घोषणा कर रहा है कि पापी स्वभाव एक बुराई है। हमें इससे फिरने और इसकी अभिलाषाओं के प्रति समर्पण करने से इन्कार करने की ज़रूरत है।

पद 20 में इस पर भी ध्यान दें कि पौलुस अपने दैहिक स्वभाव और मसीह में अपने नये व्यक्तित्व के बीच एक स्पष्ट अन्तर को बनाता है।

परन्तु यदि मैं वही करता हूँ, जिस की इच्छा नहीं करता, तो उसका करनेवाला मैं न रहा, परन्तु पाप जो मुझ में बसा हुआ है (7:20)

पौलुस ने स्वयं को एक नये समझौते के साथ एक नये व्यक्ति के रूप में देखा। वह अपने स्वभाव के प्रति उसकी अभिलाषाओं का गुलाम नहीं रह गया था। अब मसीह जो कुछ उसमें पवित्र आत्मा के द्वारा कर रहा था, वह उसे जान गया था। उसके नये परिचय का संबंध अब उसके पुराने पापी स्वभाव से नहीं रह गया था, बल्कि मसीह के व्यक्तित्व और उससे था जो कुछ मसीह कर रहा था।

पौलुस का पुराना स्वभाव अभी भी जीवित था लेकिन अब वह इसके शिकंजे में नहीं था। अब जबकि प्रभु यीशु ने उसे क्षमा करते हुए बदल दिया था, वह इस नये स्वभाव के साथ जाना गया और उसने इसमें ही चलने का चयन किया।

अपनी देह में पौलुस ने स्वयं को उन चीज़ों को करते पाया जिन्हें वह करना नहीं चाहता था। उसकी देह उन चीज़ों को करने में बाधा बनी थी जिनके बारे में वह जानता था कि उसे उन्हें करने की जरूरत है। उसने सीखा कि उसे अपनी देह पर भरोसा नहीं करना है। वह परमेश्वर को आदर देने के लिए इसकी गणना नहीं कर सकता था। यह पूर्णतया भ्रष्ट थी। इसकी फिर से मरम्मत नहीं की जा सकती, सुधारा नहीं जा सकता व छुड़ाया नहीं जा सकता है। इसे क्रूसित होना और मरना था।

पौलुस अपनी भीतरी बुराई से अवगत था। यद्यपि वह उसे करना चाहता था जो सही था तौभी पापी दैहिक स्वभाव ने उसकी परमेश्वर को प्रसन्न करने की इच्छा के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया था। क्या हम सभी इस भीतरी संघर्ष का अनुभव

नहीं करते हैं? हम अपने विचारों और व्यवहारों के साथ मल्लयुद्ध करते हैं। हम सभी के लिए, पौलुस द्वारा बताया गया युद्ध बहुत स्पष्ट है। हम उसके संघर्ष से परिचित हो सकते हैं।

पद 24 में हम देखते हैं कि पौलुस ने अपने भीतर चलने वाले इस युद्ध में अक्सर स्वयं को पराजित अनुभव किया। वह पुकारकर कहता है,"मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा?" उसका हृदय विजय पाना चाहता था। वह देह को पराजित देखना चाहता था। वह इन पापपूर्ण आवेगों पर परमेश्वर की विजय को देखना चाहता था, परन्तु यह विजय कैसे संभव थी? पौलुस हमें यह स्मरण कराते हुए इस प्रश्न का जवाब देता है कि उसकी आशा प्रभु यीशु में थी (पद 25)। प्रभु जिसने उसे क्षमा किया और उसमें अपने जीवन को डाला, उसे पापी देह पर विजयी बनाने में भी समर्थ था।

वह दिन आ रहा है जब हम पाप और पापी स्वभाव से पूर्णतया स्वतंत्र होंगे। एक दिन पापी स्वभाव नष्ट हो जाएगा और युद्ध का अन्त होगा। तथापि, हमें यह समझने की ज़रूरत है कि प्रभु यीशु के द्वारा अभी भी मौजूदा विजय की संभावना है। हमारे लिये उसकी शक्ति में होकर विजयी होना संभव है। जबकि क्रोध बढ़ाने के लिए युद्ध लगातार हो रहा है, तौभी प्रभु यीशु में शक्ति और समर्थन भी मौजूद है। कुरिन्थ के विश्वासियों को लिखते हुए पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 10:13 में कहा:

"तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य के सहने से बाहर है और परमेश्वर सच्चा है: वह तुम्हें सामर्थ से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, वरन् परीक्षा के साथ निकास भी करेगा; कि तुम सह सको।"

विश्वासी होने के कारण हम एक भीतरी युद्ध का अनुभव करते हैं। देह-आत्मा और परमेश्वर द्वारा दिये गए नये हृदय से लगातार युद्ध करती रहती है। यदि हमें अपनी आत्मिक चाल में विजय प्राप्त करनी है तो हमें देह और आत्मा के बीच में अन्तर को पहचानना सीखना होगा। हमें देह से संबंध तोड़कर विजय में चलने हेतु परमेश्वर की समर्थ करनेवाली शक्ति पर भरोसा करना होगा।

विचार करने के लिए:

- इस विभाग में पौलुस जिस युद्ध के बारे में बताता है क्या आपने अपने भीतर उसे अनुभव किया है? अपने जीवन में इस तरह के युद्ध के प्रमाण का एक उदाहरण दें।

- देह और आत्मा की ओर से आनेवाली चीज़ों की पहचान हम कैसे कर सकते हैं?
- पापी स्वभाव की क्या विशेषताएं हैं?
- विश्वासी अभी भी पाप और परीक्षाओं के साथ क्यों संघर्षरत् है?
- पापी स्वभाव के लिए मरने का क्या अर्थ है?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर से देह और आत्मा के बीच अन्तर की पहचान करने हेतु सहायता करने को कहें।
- परमेश्वर से उस विशिष्ट पाप पर विजयी होने को आपकी सहायता करने के लिए कहें जिस के साथ आप आज संघर्षरत् हैं।

  परमेश्वर से आप वह यह अधिक से अधिक प्रगट करने को कहें कि पापी स्वभाव के लिए मरने का क्या अर्थ है?
- परमेश्वर को आपको नया हृदय देने के लिए धन्यवाद दें कि आप उसका अनुसरण करने के साथ-साथ उसे आदर दे सकें।

दण्ड नहीं

20

पढ़ें रोमियों 8:1-4

हमने अध्याय 7 में देखा कि व्यवस्था को हमें यह दिखाने के लिए दिया गया कि हमें एक उद्धारकर्त्ता की ज़रूरत। हमने प्रत्येक विश्वासी के जीवन में होने वाले युद्ध के बारे में सीखा है कि देह कैसे आत्मा और उस सबके विरुद्ध लड़ती है जिसे परमेश्वर हममें पूरा करना चाहता है। पौलुस अपने जीवन में होने वाले इस युद्ध के प्रति बहुत अधिक सचेत था। अध्याय 7 के अन्त में वह कहता है,"मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा" वह यह बताते हुए हमें अपने प्रश्न का जवाब इस तरह से देता है कि केवल प्रभु यीशु ही उसे बचाकर विजय दे सकते हैं।

पौलुस इस घोषणा के साथ अध्याय 8 का आरम्भ करता है कि अब से जो मसीह यीशु में हैं उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं। इस पर ध्यान दें कि दण्ड से स्वतंत्रता केवल उन ही के लिए है जो मसीह "में" हैं। यह महत्वपूर्ण है कि पौलुस जो यहां कह रहा है, उसका क्या अर्थ है?

पाप ही एक ऐसी चीज़ है जो हमें पवित्र परमेश्वर से अलग करती है। प्रभु यीशु इस पृथ्वी पर क्षमा करने और हमें शुद्ध करने को आए जिससे हम पिता के साथ सही हो सकें। मसीह यीशु में होने के लिए अपने पापों की क्षमा द्वारा पिता के साथ एक सही संबंध में होना है।

तथापि, मसीह में होना, क्षमा किये जाने से अधिक है। मसीह में होने का अर्थ यह है कि उसका आत्मा हममें रहता है। हममें उसका हृदय है और उसका जीवन हममें प्रवाहित होता है। हम वैसे लोग नहीं हैं जैसा हम प्राय: होते हैं। हम अब उसके साथ चलना चाहते हैं। हमारी इच्छाएं उसकी इच्छाएं हैं। उसका मन हमारा मन है। वास्तव में, हम आत्मा में उसके साथ एक हो गए हैं। यह कुछ ऐसा है जो मसीह हमारे लिए करता है, परन्तु यह कुछ ऐसा भी है जिसे बनाए रखने की इच्छा हमें पवित्र आत्मा देता है।

पौलुस हमें बता रहा है कि जो मसीह "में" हैं उन पर कोई दण्ड की आज्ञा नहीं। दण्ड की आज्ञा न होने का कारण यह है कि पाप के अवरोध को हटा दिया गया है और हम बदल गए हैं। यह कितना अद्‌भुत विचार है। जो मसीह में हैं वे नरक तथा परमेश्वर से अनन्त अलगाव की वास्तविकता से आज़ाद हैं। सारा दण्ड चला गया है।

अब प्रभु यीशु के द्वारा, आत्मा की व्यवस्था ने हमें पाप और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया है। ध्यान दें कि पौलुस इस पद में दो व्यवस्थाओं के बारे में बोलता है। पहली व्यवस्था पाप और मृत्यु की व्यवस्था है। यह वह व्यवस्था है जो मूसा को दी गई थी। इसका पाप और मृत्यु की व्यवस्था के रूप में इसलिए वर्णन किया गया है क्योंकि इसने हमें दिखाया कि वास्तव में हम कौन थे। हमारी दशा को दिखाने के लिए इसने एक दर्पण के रूप में कार्य किया, परन्तु यह न तो हमारे जीवनों को बदल सकी और न ही यह हमारे पापों को धो सकी। यह व्यवस्था हमें दण्ड की आज्ञा देती है। हममें से कोई भी इसकी मांग को पूरा नहीं कर सकता और इसके परिणामस्वरूप हम परमेश्वर के सामने दोषी होने के कारण उसके दण्ड के अधीन थे।

इस परिच्छेद में पौलुस जिस दूसरी व्यवस्था के बारे में बताता है वह आत्मा की व्यवस्था है। रोमियों की पुस्तक में इस शब्द का पहली बार प्रयोग किया गया है। यह व्यवस्था पवित्र आत्मा के कार्य का उल्लेख मसीह के स्वरूप में हमारी पुष्टि करने के द्वारा करती है। मृत्यु और पाप की व्यवस्था से यह व्यवस्था इसलिए भिन्न है क्योंकि आत्मा हमारे व्यवहार और आदतों में परिवर्तन कर विजय की ओर हमारा नेतृत्व करती है।

जब आपने प्रभु यीशु के लिए अपने हृदय को खोला था तो आपके जीवन में कुछ उग्र रूप से हुआ था। वहां परमेश्वर के वचन के प्रति एक नई इच्छा थी। पुरानी पापी आदतों ने अपने आकर्षण को खो दिया था। परमेश्वर के आत्मा ने आपको भीतर से बदल दिया था। इससे पहले भी आपने उन पापी आदतों को बदलने का प्रयास किया था, परन्तु ऐसा करते हुए आपने स्वयं को एक हानिकारक युद्ध में ही पाया था।

पौलुस पद 3 में इसे स्पष्ट करता है कि हमारे पापी स्वभाव के कारण व्यवस्था हमें बदलने हेतु शक्तिहीन थी (पद 3)। व्यवस्था ने हमें दिखाया कि क्या करना है, परन्तु हम इसकी आज्ञा का पालन न कर सके। हमें एक असंभव मानदण्ड के सामने रखा गया था ताकि हम अन्य समाधान की आवश्यकता को देखें।

जो कुछ व्यवस्था के लिए पूरा करना असंभव था, उसे प्रभु यीशु ने क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा किया। उस की मृत्यु के द्वारा पापों को क्षमा किया गया और मसीह ने पवित्र आत्मा उन लोगों के जीवनों तक पहुँचा जिन्होंने मसीह के दान ग्रहण किया था। पुराने स्वभाव को दण्डित किया गया और विश्वासी में पवित्र आत्मा के वास करने के द्वारा उसे एक नया जीवन दिया गया।

मसीह के इस कार्य के द्वारा पाप और मृत्यु की व्यवस्था की सभी मांगों को पूरा कर दिया गया। हमारे दण्ड की कीमत को चुका दिया गया है। विश्वासी पर इस पुरानी व्यवस्था का अब कोई बन्धन नहीं है। हमें पाप और मृत्यु की पुरानी व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया गया है। इसके विपरीत हमें नई व्यवस्था के अधीन रखा गया है- "जीवन की आत्मा की व्यवस्था"। अब विश्वासी इस व्यवस्था के अधीन हैं।

जीवन की आत्मा की व्यवस्था पुरानी व्यवस्था से भिन्न है। पौलुस पद 4 में इस व्यवस्था के बारे में "आत्मा के अनुसार रहने" के रूप में बोलता है। परमेश्वर के आत्मा को हमारा मार्गदर्शक बन हमें सक्षम बनाने वाले के रूप में दिया गया था। विश्वासी होने के कारण हमें इस बारे में सीखना है कि हम में होनेवाले पवित्र आत्मा के कार्य और सेवकाई के प्रति कैसे समर्पण करें। वह परमेश्वर के वचन के सत्य में हमारी अगुवाई करेगा। वह हमारी देह के पापों पर विजयी होने में हमारी अगुवाई करेगा। वह हमें सेवा करने के योग्य करेगा। वह हमें अधिक से अधिक मसीह के समान बनाएगा।

क्या पाप और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र होने का अर्थ यह है कि मुझे अब पवित्रशास्त्र की शिक्षाओं का पालन नहीं करना है? निश्चय ही ऐसा नहीं है! जो लोग अपने जीवनों में पवित्र आत्मा की सेवकाई से अवगत हैं वे जल्द ही जान जाएंगे कि वह उनकी अगुवाई एक गहन समझ में करने के साथ-साथ परमेश्वर के वचन के सत्य की आज्ञाकारिता में भी करेगा।

विश्वासी को पाप और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया गया है जो केवल दण्डाज्ञा की ओर लेकर जाती है। इसके विपरीत उसे जीवन का एक नया मार्ग, जीवन के आत्मा का मार्ग दिया गया है। जब विश्वासी पवित्र आत्मा के कार्यों के प्रति समर्पण करते हैं तो उनकी अगुवाई एक गहन आज्ञाकारिता के साथ-साथ सत्य की सराहना में की जाती है। हमें पवित्र आत्मा के साथ एक हो जाने की ज़रूरत है।

विचार करने के लिये:

- मसीह यीशु "में" होने का क्या अर्थ है?
- यदि आप मसीह यीशु "में" हैं तो आप इसे कैसे बता सकते हैं?
- पाप और मृत्यु की व्यवस्था तथा जीवन की आत्मा की व्यवस्था के बीच क्या अन्तर है?

- प्रभु यीशु ने हमें पाप और मृत्यु की व्यवस्था के बन्धन से कैसे आज़ाद किया?
- जीवन की आत्मा की व्यवस्था का अनुसरण करने का क्या अभिप्राय है?

प्रार्थना के लिये:

- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि जो मसीह यीशु में हैं उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं है।
- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि उसने आपको एक नई व्यवस्था के अधीन रखा है। उसे धन्यवाद दें कि अब जीवन की आत्मा की व्यवस्था में आपके लिए स्वतंत्रता है।
- अपने जीवन में पवित्र आत्मा की सेवकाई के साथ एक हो जाने के लिए परमेश्वर से सहायता मांगे।

आत्मा द्वारा मन नियंत्रण **21**

पढ़ें रोमियों 8:5-15

पौलुस इस पर बल दे रहा है कि विश्वासी के दो स्वभाव हैं। हम पाप के शारीरिक स्वभाव के साथ उत्पन्न हुए थे। जब हम प्रभु यीशु की क्षमा को प्राप्त कर अपना हृदय उसके लिये खोलते हैं तब वह हमें एक नया स्वभाव देता है। पौलुस इस अगले विभाग में इन दोनों स्वभावों के बीच अन्तर दिखाने को कुछ समय लेता है।

वह हमें यह स्मरण कराते हुए आरम्भ करता है कि जो पापी स्वभाव के अनुसार जीवन बिताते हैं उनके मन उस स्वभाव की इच्छाओं को पूरा करने में लगे रहते हैं, परन्तु आत्मा के अनुसार जीवन व्यतीत करने वाले परमेश्वर के आत्मा की इच्छाओं पर मन लगाते हैं (पद 5)।

हमें यहां यह देखने की ज़रूरत है कि हम या तो शरीर की पापपूर्ण इच्छाओं के अनुसार जीवन व्यतीत कर सकते हैं या हम आत्मा के नेतृत्व व मार्गदर्शन के अनुसार जीवन बिताने का चयन कर सकते हैं। एक दिन में जो कुछ भी हम करते हैं वह या तो शरीर की ओर से होता है या फिर आत्मा की ओर से। जो कुछ हमें करना है उस बारे में निर्णय लेने पर हमें स्वयं से यह प्रश्न करने की ज़रूरत है: मैं किस स्वभाव के अनुसार चल रहा हूँ? विश्वासी होने के कारण अब हमारी निष्ठा आत्मा के प्रति है। यूहन्ना 4:34 में यीशु ने अपने शिष्यों को बताया, "मेरा भोजन यह है, कि अपने भेजनेवाले की इच्छा के अनुसार चलूं और उसका काम पूरा करूं।" यीशु ने हमारे विश्वासी होने के कारण हमारे अनुसरण करने हेतु एक नमूना रखा है। उसने अपने जीवन में परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के साथ उसे पूरा करने का उद्देश्य बनाया जिसे पूरा करने के लिए परमेश्वर ने उसे बुलाया था।

परमेश्वर ने अपनी संतानों को भी वैसा ही हृदय दिया है। अब जिनका संबंध प्रभु यीशु से है उनमें उस इच्छा को रखा गया है कि अपने जीवनों से परमेश्वर को आदर दें। जैसा पौलुस ने पद 5 में कहा, "आध्यात्मिक आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं"। पौलुस पद 6 में बताता है कि पापी मनुष्य का मन मृत्यु है लेकिन आत्मा द्वारा नियंत्रित मन जीवन और शांति है। अन्य शब्दों में, पापी मन और इसकी प्रेरणा व इच्छा केवल परमेश्वर से अलग होने की ओर ही नेतृत्व करेंगे। आत्मा द्वारा नियंत्रित किये जाने पर हम जीवन और शांति की पूर्णता में जाते हैं। हमारे मनों में शांति होने का कारण है कि हम जानते हैं कि हम परमेश्वर के साथ सही हैं।

हम उसकी आशीषों में रह रहे हैं। इसलिए हम जीवन की पूर्णता में हैं।

पद 7 में पौलुस आगे बताता है कि पापी मन परमेश्वर और उसके उद्देश्यों का बैरी है। पौलुस हमें बता रहा है कि पापी मन परमेश्वर की इच्छा और उद्देश्य के प्रति समर्पण नहीं कर सकता। यह परमेश्वर और उसकी इच्छाओं के प्रतिकूल है। वास्तव में, पौलुस यहां परमेश्वर की चीज़ों के साथ पापी मन के संबंध को लेकर एक कठोर शब्द का प्रयोग करता है। वह हमें यह दिखाने के लिए "बैरी" शब्द का प्रयोग करता है कि पापी मन स्पष्ट रूप से परमेश्वर के उद्देश्यों के प्रतिकूल है।

पद 7 में ध्यान दें कि पौलुस ने रोमियों को बताया कि पापी मन न तो परमेश्वर के प्रति समर्पण करता है और न ही वह ऐसा कर सकता है। यह पापी स्वभाव के बारे में हमें कुछ महत्वपूर्ण रूप से बताता है। यह परमेश्वर के प्रति समर्पण इसलिये नहीं करता क्योंकि यह ऐसा नहीं कर सकता। अन्य शब्दों में, पापी स्वभाव परमेश्वर के प्रति समर्पण करने में असमर्थ है। यह पूरी तरह से बुरा तथा परमेश्वर और उसके उद्देश्यों का बैरी है। देह के लिए प्रभु यीशु के सम्मुख घुटने झुकाना असंभव है। उस स्वभाव से आनेवाली हर चीज़ बुरी है। यदि हम परमेश्वर को आदर देना चाहते हैं तो हमें आत्मा के अनुसार जीवन बिताना सीखना होगा। पवित्र आत्मा की सेवकाई के प्रति समर्पण करने पर ही हम परमेश्वर की आराधना उसकी इच्छानुसार करते हुए उसे आदर दे सकते हैं। पद 8 में पौलुस हमें स्पष्ट रूप से बताता है कि पापी स्वभाव द्वारा नियंत्रित किये जानेवाले लोग परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते हैं।

विश्वासी होने के कारण हमें पापी स्वभाव के द्वारा नहीं बल्कि आत्मा के द्वारा नियंत्रित होना चाहिए। प्रत्येक विश्वासी को परमेश्वर का आत्मा दिया गया है। पौलुस इसे स्पष्ट करता है कि यदि परमेश्वर का आत्मा हममें नहीं रहता है तो हमारा प्रभु यीशु से कोई संबंध नहीं है (पद 9)। हो सकता है कि हम सदैव आत्मा के अनुसार जीवन न बिताते हों, लेकिन यदि हम स्वयं को मसीही कहते हैं, तो वह हमारे जीवनों का एक भाग होना चाहिए। हममें यह मसीह के आत्मा का जीवन ही है जो हमें एक अविश्वासी से पृथक करता है।

पद 10 में हममें मसीह के जीवन के पाए जाने की अवस्था पर ध्यान दें। पौलुस ने रोमियों को बताया कि यदि मसीह का जीवन हममें है, तो हमारी देह पाप के कारण मरी हुई है परन्तु हमारी आत्मा धार्मिकता के कारण जीवित है। यहां हमें बहुत सी चीज़ों को समझने की ज़रूरत है।

सर्वप्रथम, पौलुस के अनुसार, विश्वासियों को देह के द्वारा नहीं बल्कि आत्मा के द्वारा नियंत्रित होना चाहिए। इसका अर्थ यह नहीं है कि सभी मसीही

सारे समयों में आत्मा द्वारा नियंत्रित किये जाते है। एक मसीही के लिए पापी स्वभाव के घटकों द्वारा अभी भी नियंत्रित किया जाना संभव है। पौलुस ने कुरिन्थियों को जो बताया उसे सुनें:

"हे भाइयो, मैं तुम से इस रीति से बातें न कर सका, जैसे आत्मिक लोगों से; परन्तु जैसे शारीरिक लोगों से, और उन से जो मसीह में बालक हैं। मैंने तुम्हें दूध पिलाया, अन्न न खिलाया; क्योंकि तुम उस को न खा सकते थे; वरन अब तक भी नहीं खा सकते हो। क्योंकि अब तक शारीरिक हो, इसलिये कि जब तुम में डाह और झगड़ा है, तो क्या शारीरिक नहीं? और मनुष्य की रीति पर नहीं चलते?" (1 कुरि. 3:1-3)।

ध्यान दें कि इन कुरिन्थियों को भाइयों के रूप में संबोधित करते हुए, उसने उन्हें बताया कि वे अभी भी सांसारिक थे। विश्वासी होने पर भी उन्होंने कभी आत्मा में रहना नहीं सीखा था। वे अभी भी अविश्वासियों के समान हैं। वे विश्वास में शिशु हैं। उन्हें परिपक्व होने की ज़रूरत है, और परिपक्वता का निश्चित चिन्ह यह है कि एक व्यक्ति अधिक से अधिक मसीह के आत्मा द्वारा नियंत्रित किया जाए।

परमेश्वर का आत्मा सभी विश्वासियों में पाया जाता है परन्तु सभी विश्वासी अपने जीवनों में उस स्थान पर नहीं आते जहां उनके मन और हृदय पर उसके द्वारा नियंत्रण किया जाता हो। पद 10 में पौलुस के अनुसार विश्वासी को अपनी देह और पापी स्वभाव को मृत मानना है। कहने का अभिप्राय यह है कि उन्हें स्वयं को मृत समझकर जीना है। उन्हें अब अपनी देह की इच्छाओं व, आवेगों को सुनने की कोई ज़रूरत नहीं है। इसके विपरीत, उन्हें परमेश्वर के आत्मा की सुनकर अपना पूरा ध्यान उसके प्रति देना है।

विश्वासी का उद्देश्य है कि उसे अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मसीह के आत्मा से भरे रहना है। इसका अभिप्राय उसे प्रत्येक निर्णय और कार्य में आमंत्रित करते हुए किसी भी चीज़ को उसके मार्गदर्शन और नियंत्रण से रोककर नहीं रखना है। हममें से कोई भी उस स्थान पर पूरी तरह से नहीं पहुँचा है, परन्तु हम सभी को इस दिशा में बढ़ने की ज़रूरत है।

पौलुस जो कुछ हमें यहां बता रहा है उस पर ध्यान दें। पुराना पापी स्वभाव अपने विचारों और इच्छाओं के साथ केवल मृत्यु की ओर ले जाते हुए परमेश्वर से अलग करता है। दूसरी ओर आत्मा द्वारा नियंत्रित किये जानेवाला मन जीवन और शांति की ओर लेकर जाता है। हमें अपने प्रयास और समय का कैसे निवेश करना चाहिए क्या हमें किसी ऐसी चीज़ में निवेश करना चाहिए? क्या हमें कसी ऐसी चीज़ में निवेश करना चाहिए जो नाश होनेवाली है या फिर हमें जीवन और

शांति में निवेश करना चाहिए? अपनी देह को प्रसन्न करना कितना मूर्खतापूर्ण होगा यह जानते हुए कि एक दिन यह नष्ट हो जाएगी और हमें छूछा छोड़ देगी। इसके विपरीत, पौलुस विश्वासी को इस देह को मृत समझने तथा पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन और नेतृत्व में जीवन बिताने की चुनौती देता है।

पद 11 में हम अपनी देह को क्रूसित करने तथा अधिक से अधिक आत्मा के प्रति समर्पित रहने पर अपने में एक महान आशा को देखते हैं। पौलुस रोमियों को बताता है कि आत्मा जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया वही हमारी मरनहार देहों को भी नया जीवन देगा। हमारा शारीरिक स्वभाव के साथ कोई बन्धन नहीं है, क्योंकि वह दिन आ रहा है जब प्रभु यीशु हमें एक नई देह देगा, जो परमेश्वर को प्रसन्न करने के साथ-साथ उसका आदर भी करेगी। इस देह का उसकी सभी इच्छाओं के साथ नाश हो जाएगा, परन्तु हमारे पास परमेश्वर की ओर से एक प्रतिज्ञा है कि वह हमें उससे भी महान् चीज़ को देगा। उस नई देह में पाप और बुराई से स्वतंत्र होकर, हम परमेश्वर के साथ रहते हुए उसकी उपस्थिति में सदा के लिए आनन्दित रहेंगे। हमारे पास एक नई आत्मा और एक नई देह होगी, दोनों पर इस देह का कोई कुप्रभाव न होगा।

पौलुस ने पद 14 में रोमियों को बताया कि जितने लोग आत्मा के चलाए चलते हैं वे परमेश्वर के पुत्र हैं। हमारे परमेश्वर की संतान होने का चिन्ह हमारा आत्मा के चलाए चलना है। यदि हम परमेश्वर की संतान हैं तो हम स्वयं को शारीरिक स्वभाव के प्रति मृत तथा आत्मा के अनुसार जीवन बिताता हुआ पाएंगे। यदि पवित्र आत्मा हममें रहता है तो हमारे जीवनों में एक अद्वितीय अन्तर दिखाई देगा। हममें नई इच्छाओं और आवेगों का एक नया समूह होगा। हम जानेंगे कि हम परमेश्वर की संतान हैं क्योंकि हम स्वर्गीय पिता की विशेषताओं को अपने में ले रहे होते हैं। यह सत्य है कि कुछ विश्वासी अविश्वासियों के समान जीवन बिताते हैं और अपने दैहिक स्वभाव के चलाए चलते हैं, लेकिन वे परमेश्वर के साथ अनाज्ञाकारिता में रहते हुए परमेश्वर के साथ अपने संबंधों में कैसे आश्वस्त हो सकते हैं? पौलुस हमें बता रहा है कि हमारे उद्धार का आश्वासन पवित्र आत्मा की उपस्थिति और उस नये जीवन से आता है जिसे उसने हममें डाला है।

प्रेरित पौलुस पद 15 में यह कहते हुए निष्कर्ष निकालता है कि हमने भयभीत होने को दासत्व की आत्मा को नहीं बल्कि पुत्रत्व की आत्मा को पाया है। पुत्र और पुत्रियां होने के कारण हम पिता को "अब्बा" कहकर पुकारते हैं। इन शब्दों में अंतरंगता पाई जाती है। वह "अब्बा" शब्द का प्रयोग अपने "पिता" को संबोधित करते हुए करता है। जब परमेश्वर का आत्मा हमारे हृदयों में रहने के लिए आता है तब वह हमारे और परमेश्वर के बीच पाए जाने वाले सभी अवरोधों को तोड़ डालता है, अब हम परमेश्वर के सम्मुख उसकी संतान के रूप

में खड़े हैं। परमेश्वर के सम्मुख हम बिना किसी दण्डाज्ञा के खड़े हैं। उसके निकट पहुँचने का भय चला गया है। हम उसकी अनुग्रहीत संतान के रूप में उसके पास आते हैं। हममें पाई जाने वाली पवित्र आत्मा की सेवकाई के द्वारा अब हमारे पास उसके साथ संबंध रखने का एक नया आश्वासन है। हम अपने प्रेमी स्वर्गीय पिता के नेतृत्व पर भरोसा कर सकते हैं। हम इस पर भरोसा कर सकते हैं कि वह हमारी भलाई चाहता है।

हमारे भीतर दो स्वभावों के बीच संघर्ष पाया जाता है। पौलुस विश्वासियों को आत्मा के अनुसार जीवन बिताने और दैहिक स्वभाव के प्रति मृत होने की चुनौती देता है। मसीही जीवन में परिपक्व होने का रहस्य परमेश्वर के आत्मा के प्रति समर्पण करते हुए दैहिक स्वभाव के प्रति मृत होना है।

विचार करने के लिये:

- हम अपने जीवनों में देह और आत्मा के बीच के अन्तर की पहचान कैसे कर सकते हैं?
- आत्मा के चलाए चलने का क्या अर्थ है?
- आपके जीवन में मसीह के आत्मा की उपस्थिति का क्या प्रमाण है? इसने क्या अन्तर उत्पन्न किया है?
- परमेश्वर के आत्मा का यह प्रमाण हमारे परमेश्वर की संतान होने का आश्वासन कैसे देता है?
- क्या एक विश्वासी के लिए पापी स्वभाव की इच्छाओं के अनुसार जीवन बिताना संभव है? क्या आपके जीवन में कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जिन पर पापी स्वभाव का नियंत्रण पाया जाता है?

प्रार्थना के लिये:

- परमेश्वर को आपके जीवन में पवित्र आत्मा को उस तरह से रखने के लिए धन्यवाद दें जिससे वह आपको अधिक से अधिक मसीह के समान बना सके।
- परमेश्वर से इस बारे में आपकी सहायता करने के लिए कहें कि क्या चीज़ देह की ओर से आती है और क्या चीज़ आत्मा की ओर से।
- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि आप उसके पास अपने प्रेमी स्वर्गीय पिता के रूप में आ सकते हैं।
- क्या आपके जीवन में कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जिन पर देह का नियंत्रण पाया जाता है? परमेश्वर के सामने इसका अंगीकार करते हुए उससे इन क्षेत्रों में आपको विजयी करने के लिये कहें।

वर्तमान युग के दुख 22

पढ़ें रोमियों 8:16–25

विश्वासी होने के कारण, हमें आत्मा में रहने और दैहिक स्वभाव को तृप्त न करने के लिए बुलाया गया है। विषय की सच्चाई यह है कि ऐसा करने पर हमें सदा ग्रहण नहीं किया जाएगा। आत्मा के मार्गदर्शन में रहना एक समस्या रहित जीवन का आश्वासन नहीं देता है। वास्तव में, हम दुखों और परीक्षाओं का सामना करने की अपेक्षा कर सकते हैं। कोई भी सिपाही यह अपेक्षा करते हुए सेना में भर्ती नहीं होता कि प्रत्येक चीज़ सरल होगी। न ही हमें यह अपेक्षा करनी चाहिए कि यदि हम परमेश्वर के साथ चलने के प्रति गंभीर होंगे तो हमारे लिए हर चीज़ सरल होगी। इस विभाग में, पौलुस रोमियों से उस संघर्ष और दुख के बारे में बोलता है जिसकी अपेक्षा वे प्रभु यीशु के साथ चलने में कर सकते हैं।

पद 16 में वह रोमियों को यह स्मरण कराते हुए आरम्भ करता है कि आत्मा हमारी आत्मा के साथ यह गवाही देता है कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं। ऐसे समय भी आते हैं जब यह बताना बहुत कठिन हो जाता है कि हम प्रभु यीशु के साथ एक सही संबंध में हैं। प्रभु हमें यह आश्वस्त कराने को अपने प्रेम की अभिव्यक्ति देता है कि उसके साथ हमारा संबंध सुरक्षित है। यह कोई ऐसी चीज़ नहीं हैं जिसे दूसरे सुन सकते हों क्योंकि परमेश्वर और उसकी संतान के बीच एक बेजोड़ संयोजन पाया जाता है। वह हमारे हृदयों से इस तरह से बोलता है कि घनिष्ठ संबंध में रहने वाले ही उसे समझ सकते हैं। इसके लिये यह महत्वपूर्ण है कि हम उसके साथ अपने संबन्धों के प्रति आश्वस्त हों। यदि हम अपने विश्वास के लिए दुख उठाने जा रहे हैं तो यह विशेष रूप से सत्य है।

पौलुस हमें यह स्मरण कराने के लिए आगे बढ़ता है कि यदि हम परमेश्वर की संतान हैं तो हम मसीह के साथ सह–वारिस भी हैं। परमेश्वर हमें बहुतायत की आत्मिक आशीषों से इसलिए आशीषित करता है क्योंकि हमारा संबन्ध उससे है। उसकी संतान होने के कारण हम पापों की क्षमा, उसकी आत्मा की सहभागिता, उसके प्रबन्ध और आराधना के बारे में जानते हैं। हमारे पास स्वर्ग में अनन्तता: और उसकी समर्थ करनेवाली शक्ति की वर्तमान वास्तविकता की आशा है।

यह बहुतायत की मीरास एक कीमत के साथ आती है। जबकि हम अपने प्रभु की संपत्ति के वारिस हैं, तो हम उसके दुखों में भी संगी वारिस हैं। उसके

दुखों में हमारा भी भाग है। इस पृथ्वी पर आत्मा–चालित जीवन व्यतीत करनेवाले उसी तरह से दुख उठाएंगे जिस तरह से उनके प्रभु ने दुख उठाया था। कई बार उन्हें अस्वीकारा जाएगा। वे सताव और गलतफहमी का सामना करेंगे। एक पापी संसार में इन दुखों की अवहेलना नहीं की जा सकती है। यदि हम मसीह के समान बिताए जाने वाले जीवन का चुनाव करते हैं तो हमें उसी के समान दुख उठाने के लिए स्वयं को तैयार करना होगा।

तथापि, पौलुस पद 18 में हमें स्मरण कराता है कि वर्तमान समय के दुख उस महिमा के सामने जो हम पर प्रगट होनेवाली है कुछ भी नहीं हैं। विश्वासियों को अस्वीकारा जाएगा। हममें से कुछ को सताव व दुर्व्यवहार के कारण दुख उठाना होगा। अन्यों को अपने प्रभु के कारण अपने जीवनों को न्यौछावार कर देना पड़ेगा। तौभी, हमारे सामने हमारी महिमामयी मीरास है। वे हमारे जीवन को तो ले सकते हैं, परन्तु वे हमारी मीरास को कभी नहीं ले सकते हैं। वे हमारी देह का नाश कर सकते हैं लेकिन वे हमारी आत्मा का नाश नहीं कर सकते। हम प्रभु यीशु की उपस्थिति में प्रवेश करेंगे जो खुली बांहों के साथ हमारी प्रतीक्षा में है। वहां हम सुरक्षित होंगे। वहां उसकी उपस्थिति में कुछ भी हमारी हानि नहीं पहुंचाएगी; हम उसके आनन्द और शांति को सदा के लिए जानेंगे। इस संसार के दुख मसीह में मिलनेवाले आनन्द और आशीष की तुलना में क्या है? इस समय हम जिन परीक्षाओं का सामना करते हैं वे आने वाले संसार के आनन्द की तुलना में क्या हैं?

पद 19 में ध्यान दें कि पौलुस ने रोमियों को बताया कि वह दिन आ रहा था जब परमेश्वर की संतान सारे संसार पर प्रगट होंगी। पौलुस ने उन्हें बताया कि सारी सृष्टि इस दिन के आने की बाट जोह रही है, इसी दिन परमेश्वर की संतान मृतकों में से जी उठकर अपने प्रभु के साथ जाएगी। संसार उन्हें देखेगा। संसार जानेगा कि वे प्रभु के हैं, क्योंकि वह संसार के सामने उनका आदर करेगा।

पद 20 में पौलुस ने रोमियों को स्मरण कराया कि सारी सृष्टि पर पाप का प्रभाव था। जब आदम और हव्वा ने अदन की वाटिका में पाप के लिए द्वार खोला, सृष्टि पाप के श्राप में डुब गई थी। युगों की प्रक्रिया का आरम्भ हुआ। चीज़ों ने सड़ना आरम्भ कर दिया। रोगों और बिमारियों का प्रवेश हुआ। भुइडोल और भौतिक त्रासदियां सामान्य बात हो गईं। मृत्यु ने संसार में प्रवेश किया।

तौभी, वह दिन आ रहा है जब सृष्टि इस सड़न के बन्धन से छुटकारा प्राप्त करेगी (पद 21)। एक दिन यह भी हमारे परमेश्वर की सन्तान होने के समान स्वतंत्रता को प्राप्त करेगी। उस दिन पाप की सामर्थ को तोड़ा जाएगा और सृष्टि को स्वतंत्र किया जाएगा।

सृष्टि में जो कुछ हो रहा है पौलुस उसकी तुलना बच्चे के जन्म के समय होने वाले दर्द से करता है। सृष्टि उस दिन की प्रतीक्षा करते हुए दर्द और दुख से कराहती है, जब यह एक नये जीवन को जन्म देगी। हमने कभी भी एक ऐसे संसार को नहीं देखा है जहां पाप न हो, परन्तु उस संसार में कोई दुख या रोग नहीं होगा। सारे दुखों और मृत्यु को भुला दिया जाएगा। सृष्टि अपने को श्राप से स्वतंत्र पाकर मेल–मिलाप, आनन्द, शांति और स्तुति से भरपूर हो जाएगी।

हम भी, जोकि परमेश्वर की सन्तान हैं, इसी तरह से कराहते रहते हैं। हमने परमेश्वर की प्रमाणिकता की मुहर के रूप में पवित्र आत्मा को प्राप्त किया है, परन्तु अपनी देहों में हम कराहते और संघर्षरत् रहते हैं। हम उस पाप के साथ मल्लयुद्ध में हैं जिसने हमें चारों ओर से घेरा हुआ है और हमारे शरीरों में पूरी तरह से फैला है। हम बीमारी और रोगों से दुख उठाते हैं। हम थकान का अनुभव करते हैं। हमारी देह सीमित, कमज़ोर और नश्वर हैं। इन नश्वर शरीरों से हम परमेश्वर को आदर देना कठिन पाते हैं। अपने भीतर हम गहराई से उस दिन की इच्छा करते हैं जब यह सब समाप्त हो जाएगा। हम उस दिन की इच्छा करते हैं जब परमेश्वर की संतान के रूप में हमारा ग्रहण किया जाना अन्तिम होगा और हम अपने छुटकारा प्रदान किये गए शरीरों को पाप और इसके प्रभाव से मुक्त पाएंगे। हम उस दिन की प्रतीक्षा में है जब सभी दुख चले जाएंगे। उस दिन और अपने नये शरीरों में हम बिना किसी बाधा के अपने प्रभु, की आराधना और सेवा करेंगे।

विश्वासी होने के कारण हमारे पास यह आशा है। हमारे पास यह आश्वासन है कि एक दिन सारी सृष्टि पाप और उसके प्रभाव से छुटकारा प्राप्त करेगी। हमारा शत्रु–शैतान, पराजित होगा। पाप और मृत्यु की सामर्थ को जीत लिया जाएगा। अपने भौतिक शरीरों में हम भी इस अद्‌भुत छुटकारे को अनुभव करेंगे। इस प्रतीक्षा के पूरा होने की प्रतीक्षा हमें धीरज के साथ करनी है।

यहां पौलुस जिस बात की ओर हमारा ध्यान केन्द्रित कर रहा है वह यह कि इस वर्तमान संसार में परमेश्वर की संतान होने के कारण हमें पाप की वास्तविकता का सामना करना होगा। हमें दुख से प्रतिरिक्षत नहीं होना होगा। हमारी आशा, तथापि, परमेश्वर की इस प्रतिज्ञा में है कि एक दिन पाप पर विजय प्राप्त की जाएगी। हम जानते हैं कि यदि हम यहां नीचे उसके दुखों में सहभागी होते हैं तो हम उसकी महिमा में भी सहभागी होते हैं। यह देह तो अस्थायी है। इस देह में हम जिस दुख का सामना करते हैं वह तो कुछ समय का ही है। आशा न छोड़ें। उसकी प्रतिज्ञा पर भरोसा करें। इस अग्नि से गुज़रने के पश्चात् हम उसके साथ महिमा में होंगे।

विचार करने के लिये:

- इस पृथ्वी पर पाप के प्रभाव का क्या प्रमाण है?
- आप अपनी देह में पाप के प्रभाव के किस प्रमाण को देखते हैं?
- इस परिच्छेद में पौलुस द्वारा दी जानेवाली आशा क्या है?
- इस संसार में आपको किस तरह से दुख उठाना है?
- यहां पौलुस जो कुछ हमें बताता है उससे हमें अपनी परीक्षाओं में दृढ़ बने रहने का साहस कैसे मिलता है?

प्रार्थना के लिये:

- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि वह दिन आ रहा है जब वह अन्ततः पाप और इसके प्रभावों पर विजयी होगा।
- परमेश्वर से अन्त तक दृढ़ बने रहने का साहस मांगें।
- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि विश्वासी होने के कारण, हमारे पास वह आशा है जो उन सभी दर्द व दुखों से बड़ी है जिन्हें हम यहां इस जीवन में देखते हैं।

इन सभी चीजों में

पढ़ें रोमियों 8:36-39

23

अध्याय 8 के पहले भाग में प्रेरित पौलुस ने रोमियों को स्मरण कराया कि परमेश्वर की संतानों को भी इस जीवन में दुख उठाना होगा। सारी सृष्टि कराहते हुए उस दिन की प्रतीक्षा में है जब प्रभु इसे पाप के उत्पीड़न से स्वतंत्र करेगा। परमेश्वर की संतान होने के कारण हमें भी उस दिन की बाट जोहनी है जब हमारे पार्थिव शरीर स्वर्गीय शरीरों में बदल जाएंगे। उस समय तक, हम सभी को इस संसार के पाप और बुराई का सामना करना होगा।

जबकि इस संसार में हमें बहुत सी परीक्षाओं और दुखों का सामना करना होगा, हमें अध्याय 8 के इसे अन्तिम विभाग में कुछ बहुत ही शक्तिशाली प्रोत्साहन दिया गया है। आइये उस प्रोत्साहन पर ध्यान दें जो पौलुस आत्मा द्वारा चालित विश्वासियों को देता है, जो अपने स्वामी के समान दुख उठाते हैं।

आप अपने जीवन में क्या कभी ऐसे स्थान पर आए हैं जहां आपको प्रार्थना करने में कठिनाई हो? व्यक्तिगत रूप से मैंने ऐसे समयों का सामना किया है। मेरे जीवन में ऐसे समय आए जब मेरी भावनाएं धराशायी हो गईं, ऐसे समयों में मैंने कुछ भी अनुभव नहीं किया। प्रभु के साथ चलने और अपने प्रार्थना जीवन में पिछड़ जाने पर मुझे पद 26 में महान प्रोत्साहन मिला। मेरी कमज़ोरी में आत्मा मेरी सहायता करता और मेरे लिए मध्यस्थता करता है। बहुत अधिक बोझ होने पर जब मैं प्रार्थना करने में असमर्थ होता हूँ तब पवित्र आत्मा मेरी सहायता करता और मेरे लिए प्रार्थना भी करता है। यह जानना कितना सांत्वनाजनक है कि जिन दिनों अधिक बोझ हो जाने पर हम प्रार्थना नहीं कर पाते हैं, परमेश्वर का आत्मा हमारे लिए दोहाई देता है। परीक्षा और भय के क्षणों में हम प्रार्थना सहयोग से रहित नहीं होते हैं।

विशिष्ट रूप से इस पर ध्यान दें कि आत्मा हमारे लिए आहें भर-भरकर प्रार्थना करता है जिन्हें शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता है। कुछ लोग इसकी व्याख्या आत्मा की एक विशेष भाषा के रूप में करते हैं। तौभी, इस पर ध्यान दें कि पौलुस हमें बता रहा है कि आत्मा आहें भर रहा है न कि बोल रहा है। जब हमारे दुख बहुत अधिक हो जाते हैं तो हम अपने दर्द को कराहने के साथ व्यक्त करते हैं। मेरा मानना है कि आत्मा के कराहने का घनिष्ठ संबन्ध हमारे द्वारा अनुभव किये जानेवाले दर्द से है। आत्मा हमारे दर्द को जानता और हमारे लिए कराहता है। परमेश्वर एक भावना-रहित परमेश्वर नहीं है। परमेश्वर का

आत्मा हमारे हृदय के दुखों का अनुभव करता है। वह अस्वीकार किये जाने और छोड़ दिये जाने के दुख को जानता है। वह हमारे भारी बोझ में हमारे साथ कराहता है। वह हमारे उस दुख को परमेश्वर के सामने व्यक्त करता है। उसके द्वारा की जानेवाली प्रार्थना एक भावना रहित प्रार्थना नहीं है।

पद 27 में पौलुस बताता है कि जिस समय आत्मा हमारे लिए मध्यस्थता करता है तब मनों को जांचनेवाला जानता है कि आत्मा की मनसा क्या है। यह हमारे लिए भी एक महान सांत्वना होनी चाहिए। हम प्रायः यह नहीं जान पाते कि प्रार्थना कैसे करें। कई बार शब्द आसानी से नहीं निकलते। कई बार हम अपने द्वारा अनुभव किये जाने वाले दर्द के कारण परमेश्वर के सामने कराहते और रोते हैं। परमेश्वर का आत्मा हमारी उस परिस्थिति में आकर हमारे लिए प्रार्थना करता और परमेश्वर पिता हमारे लिए की जानेवाली आत्मा की उस पुकार को सुनकर उस सब को समझता है जिसे हमारे शब्द व्यक्त नहीं कर सकते। हमें इस बात का आश्वासन है कि जब परमेश्वर का आत्मा हमारे लिए प्रार्थना करता है तो वह ऐसा एक मध्यस्थ के रूप में करता है जो हमारी भावनाओं को जानने के साथ हमारे लिए परमेश्वर के उद्देश्य को भी अच्छी तरह से जानता है।

हमारे पास पवित्र आत्मा की प्रार्थनाओं के साथ-साथ पिता की यह प्रतिज्ञा भी है कि "जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिये सब बातें मिलाकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं, अर्थात् उन्हीं के लिये जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए गए हैं (रोमि. 8:28)। "सब बातें" वाक्यांश महत्वपूर्ण है। पौलुस यहां दुख और दर्द का उल्लेख करता है। यदि आप प्रभु परमेश्वर से प्रेम करते और उसकी संतान हैं, तो वह प्रतिज्ञा करता है कि चाहे आप कैसी भी परीक्षाओं से होकर क्यों न गुज़रें वह उनका प्रयोग आपके जीवन में भलाई के लिये करेगा। निराशा का कोई कारण नहीं है। संभव है कि आप आज इसे न देख पाएं लेकिन आप आज जिन चीज़ों का सामना कर रहे हैं परमेश्वर उनका प्रयोग आपकी भलाई के लिए करेगा। कई बार सबसे बड़ी भलाई सबसे कठिन परिस्थिति से होकर आती है। पुनः, हमारे दुख और दर्द में यह एक बड़ी सांत्वना है।

पद 29 में, पौलुस इस विभाग में जो कुछ बता रहा है पौलुस उससे थियोलोजिकल आधार पर चला जाता है। वह हमें स्मरण कराता है कि जिन्हें परमेश्वर पहले से जानता था उसने "उन्हें पहले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों।" हमारे जन्म लेने के बहुत पहले से ही परमेश्वर हमें जानता था। वह उन योजनाओं को जानता था जोकि उसकी संतान के रूप में हमारे लिये थीं और उसने हमारे जीवन की परिस्थितियों को निर्देशित किया और हमारे जीवन में आनेवाली परिस्थितियों का सामना उसके पुत्र, यीशु मसीह के स्वरूप में आकर देने के लिये किया।

पद 30 में ध्यान दें कि परमेश्वर ने उन्हें बुलाया जिन्हें उसने पहले से ठहराया था। परमेश्वर के पास हमारे जीवनों के लिए एक योजना और उद्देश्य है। मैं परमेश्वर की स्तुति करता हूँ कि मेरे जीवन के लिए परमेश्वर का एक उद्देश्य है। मेरे जीवन का एक अर्थ है और इस संसार के लिये परमेश्वर की योजना में मेरी एक भूमिका है जिसे मुझे पूरा करना है।

मैं अपने जीवन के लिये परमेश्वर की योजना को कैसे जान सकता हूँ? पौलुस हमें बताता है कि परमेश्वर ने जिन्हें पहले से ठहराया है उन्हें वह बुलाता है। सही समय पर परमेश्वर अपने उद्देश्य को प्रगट करता है। वह अपने आत्मा की सेवकाई के द्वारा हमारे हृदय से बोलेगा। वह हमारे जीवनों में ऐसी परिस्थितियों को लेकर आएगा जो हमारे जीवनों के लिये उसके उद्देश्य को स्पष्ट रूप से दिखाएंगी।

परमेश्वर के उद्देश्य को जानना एक चीज है परन्तु उस उद्देश्य को हमारे जीवनों में पूरा होते देखना दूसरी बात है। तथापि, इस पर ध्यान दें कि परमेश्वर जब एक व्यक्ति को बुलाता है तो वह उसे धर्मी भी ठहराता है। धर्मी ठहराए जाने का अर्थ परमेश्वर के साथ एक सही संबन्ध स्थापित करना है। मसीह परमेश्वर की उस बुलाहट को पूरा करने के लिये मुझे धर्मी ठहराता है, जिसका आरम्भ मेरे जन्म से बहुत पहले हुआ था। वह मेरे पापों को क्षमा करता, मुझे अपनी संतान के रूप में ग्रहण करता और मुझे सभी स्त्रोतों और आशीषों का वारिस बनाता है। मेरे जीवन के लिये परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने को मैं प्रभु यीशु के धर्मी ठहराए जानेवाले कार्य के द्वारा समर्थ हुआ हूँ।

पद 30 तत्पश्चात् हमें स्मरण कराता है कि जिन्हें परमेश्वर धर्मी ठहराता है उन्हें वह महिमा भी देता है। यद्यपि हम मसीह के धर्मी ठहराए जानेवाले कार्य के द्वारा परमेश्वर के साथ एक सही संबन्ध में हैं, हमें अभी भी पापी स्वभाव के साथ मल्लयुद्ध करना है। तौभी, वह दिन आ रहा है जब यह सब कुछ समाप्त हो जाएगा। वह दिन आ रहा है जब हम इस पुराने स्वभाव को पूरी तरह से छोड़कर स्वर्ग में प्रभु यीशु की उपस्थिति में प्रवेश करेंगे। वह हमें पाप व बुराई से स्वतंत्र कर एक नया और महिमामयी शरीर देगा।

पौलुस हमें यहां बता रहा है कि परमेश्वर– जिसके पास हमारे जीवनों के लिए उद्देश्य है वह उस उद्देश्य को अन्त तक देखेगा। वह हमें बुलाता, पिता के साथ हमें सही करता और अन्ततः पापी देह के बन्धन से हमें आज़ाद करता है। जो कुछ वह हममें कर रहा है उसे वह अवश्य पूरा करेगा। वह अधूरा कार्य नहीं करेगा। वह, हमें शुद्ध करके ऐसे लोगों के रूप में आकार देगा जैसा होने के लिए उसने हमें बुलाया है। हमारे लिये यह उसकी प्रतिज्ञा है। हमारे द्वारा सामना की

जाने वाली सारी परीक्षाएं, समस्याएं और संघर्ष हमें मसीह के समान बनाने में सहायता करती हैं।

पौलुस पद 31 में रोमियों को स्मरण कराता है कि यदि परमेश्वर उनकी ओर है तो कोई भी उनके विरुद्ध नहीं खड़ा हो सकता और उन पर विजयी नहीं हो सकता। संभव है कि बहुत से लोग हमारे विरोध में हों, लेकिन वे हमें परास्त नहीं कर सकते। वे केवल हमारे दर्द का कारण बन सकते हैं। हो सकता है कि वे हमसे जीवन को ले लें, परन्तु जो कुछ परमेश्वर कर रहा है वे न तो उसे नाश कर पाएंगे और न ही उस आशा को जो हमारी उस पर है।

यदि परमेश्वर ने मुझे ग्रहण किया है तो कौन मुझे दोषी ठहरा सकता या मुझ पर दण्ड की आज्ञा दे सकता है (पद 33)? ऐसी कोई भी अदालत नहीं है जो सर्वशक्तिमान परमेश्वर के निर्णय पर शासन कर सके। यदि मैं उसके सामने निर्दोष हूँ तो कोई भी मुझ पर दण्ड की आज्ञा नहीं दे सकता। एकमात्र मानव जिसे मुझ पर दण्डाज्ञा देने का अधिकार है वह प्रभु यीशु है (पद 34)। न्याय करने का अधिकार केवल उसे ही दिया गया है। तथापि, इस पर ध्यान दें, कि यीशु ने दण्डाज्ञा न देने का चयन किया। इस समय भी वह पिता के दाहिने हाथ पर खड़ा हुआ हमारे लिये मध्यस्थता करता व हमारे लिये निवेदन करता है। यदि वह, जो हमें दण्डाज्ञा दे सकता है वही पिता के सामने खड़े हुए हमारे लिए निवेदन करता है तो हमें दण्डाज्ञा का कोई भय नहीं है। हम इस बात से आश्वस्त हो सकते हैं कि जब यीशु हमारी ओर तो हमें चिन्ता करने की कोई ज़रूरत नहीं है।

पद 32 में पौलुस ने रोमियों को स्मरण कराया कि पिता ने उनसे इतना अधिक प्रेम किया कि उसने उन्हें अपने क्रोध से बचाने के लिए अपने पुत्र को भी नहीं रख छोड़ा। उसने अपने पुत्र को उनके लिए दुख उठाने दिया कि वह क्रूस पर उनके लिए मारा जाए ताकि उन पर अनन्त दण्ड की आज्ञा न हो। यदि उसने स्वेच्छा से ऐसा किया, तो क्या वह हमारी परीक्षाओं में हमारी चिन्ता नहीं करेगा? यदि उसने हमसे इतना प्रेम किया कि उसका पुत्र हमारे लिये मारा जाए तो क्या वह हमारी आवश्यकताओं को पूरा न करेगा कि हम उसकी सन्तान हैं?

कोई भी ऐसी चीज़ नहीं है जो हमें मसीह के प्रेम से अलग कर सके (पद 35)। कठिनाई, संकट, सताव और अकाल हमें कभी भी उसके प्रेम से अलग नहीं कर सकते हैं। संभव है कि हम खतरे और दुख का सामना करें। हो सकता है कि मर भी जाएं (पद 36) परन्तु उस मृत्यु में भी हम जयवंतों से बढ़कर होंगे। नरक की कोई भी दुष्ट शक्ति हमारी स्वर्ग की नागरिकता या अनन्त जीवन की हमारी आशा को छीन नहीं सकती। ऐसी कोई भी शक्ति नहीं है जो हमें प्रभु यीशु के प्रेम से दूर कर सकती है। हम उसकी सन्तान होने के कारण उसके

विश्वासयोग्य प्रेम के प्रति आश्वस्त हो सकते हैं। उसने अपने पुत्र की मृत्यु के द्वारा अपने महान् प्रेम को प्रगट किया, इसी कारण हम इससे आश्वस्त हो सकते हैं।

हो सकता है कि इस जीवन में हम सताव और संघर्ष का सामना कर रहे हों, तौभी हमारे पास परमेश्वर के वचन की प्रतिज्ञा है कि जब हम स्वयं के लिए प्रार्थना न कर सकते हों तो परमेश्वर का आत्मा हमारे लिये प्रार्थना करेगा। पिता सभी चीज़ों में हमारे लिये भलाई को उत्पन्न करेगा। प्रभु यीशु उस कार्य को पूरा करने की प्रतिज्ञा करता है जिसका आरम्भ उसने हममें किया है और पिता के सामने वह हमारे लिये निवेदन करता है। त्रिएक परमेश्वर अपनी संतानों के पीछे दृढ़ता से खड़ा है। यदि त्रिएक परमेश्वर, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, दृढ़ता के साथ हमारे पीछे खड़ा है तो हम इस बात से आश्वस्त हो सकते हैं कि कोई भी शत्रु कभी सफल नहीं होगा। संभव है कि हमारे कुछ संघर्ष व परीक्षाएं हों लेकिन हम मसीह में विजयी होंगे।

विचार करने के लिये:

- क्या आपने कभी स्वयं को ऐसी स्थिति में पाया है जहां आपके द्वारा सामना की जानेवाली समस्या इतनी गंभीर थी कि आप प्रार्थना भी न कर सके हों? इस परिच्छेद में आपको क्या सांत्वना मिलती है?
- आज आप किन विशिष्ट परीक्षाओं का सामना कर रहे हैं? आपके दुख में यह परिच्छेद आपसे क्या कहता है?
- इन पदों की रोशनी में क्या आप स्वर्ग में परमेश्वर की उपस्थिति में एक स्थान के लिए आश्वस्त हो सकते हैं? क्या शत्रु आपके उद्धार को छीन सकता है?

प्रार्थना के लिये:

- इस परिच्छेद में पाई जानेवाली अद्वितीय प्रतिज्ञाओं के लिए परमेश्वर को धन्यवाद दें।
- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि वह हमारे संघर्ष में हमें नहीं छोड़ेगा।
- परमेश्वर को उन समयों के लिए आपको क्षमा करने को कहें जब आपने उसकी प्रतिज्ञाओं पर संदेह किया था।
- परमेश्वर से निर्भीकता से उसके नाम में कदम बढ़ाने के लिए अनुग्रह मांगें कि आप उस उद्देश्य को पूरा करें जो आपके जीवन के लिए उसके पास है।

सच्चा इस्राएल

24

पढ़ें रोमियों 9:1-13

रोमियों की पुस्तक के इस अगले विभाग में प्रेरित पौलुस इस्राएलियों के लिए अपने प्रेम के बारे में बताता है। पौलुस को प्रायः अन्यजातियों के प्रेरित के रूप में देखा जाता है, परन्तु इसने उसके अपने लोगों के लिए उसके प्रेम को धुंधला नहीं किया। अपने परिचय कथन में जो कुछ वह बताता है उस पर ध्यान दें।

पद 1 और 2 में वह इस्राएल के लोगों के लिए अपने क्रोध के बारे में बताता है। ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ ऐसे लोग थे जो यहूदियों के प्रति उसके प्रेम पर संदेह करते थे। धार्मिकता पर पौलुस की शिक्षा जो विश्वास और व्यवस्था से स्वतंत्र होने के द्वारा आती है यह उन कारणों में से एक थी कि लोगों ने उसके अपने लोगों के प्रति उसके प्रेम और वचनबद्धता पर क्यों संदेह किया था। पद 1 और 2 में पौलुस जिस तरह से वह स्वयं को व्यक्त करता है उस पर ध्यान दें।

"मैं मसीह में सच कहता हूँ, झूठ नहीं बोलता और मेरा विवेक भी पवित्र आत्मा में गवाही देता है कि मुझे बड़ा शोक है, और मेरा मन सदा दुखता रहता है।"

इस कथन से यह स्पष्ट हो जाता है कि लोग पौलुस के बारे में जो कुछ कह रहे थे उसे वह समझ गया था। जबकि दूसरों ने यहूदी जाति के प्रति उसके समर्पण पर संदेह किया था, पौलुस ने उनके लिए अपने हृदय में 'सदा रहने वाले दुख' को अनुभव किया था। वह इसे सदैव नहीं समझ पाया होगा। इस जीवन में लोग हमारे बारे में बुरा सोच सकते हैं। पौलुस को सांत्वना इस सच्चाई से मिली कि परमेश्वर सत्य को जानता था।

यहूदियों के लिए पौलुस के दुख पर ध्यान दें। उसने रोमियों को बताया कि वह अपने लोगों के लिए उद्धार से अलग हो जाना चाहता है। अन्य शब्दों में, वह अपने लोगों को उनके पाप और विद्रोह से बचाने के लिए उनके लिए नरकदण्ड भोगने को भी तैयार था।

पौलुस जान गया था कि यहूदी जाति एक विशेष जाति थी। वे परमेश्वर की सन्तान थे।

उसने परमेश्वर की महिमा को उन पर तथा उनके द्वारा उस महिमा को संसार पर प्रगट करने का चयन किया। प्रभु परमेश्वर ने यहूदियों के साथ एक

विशेष वाचा के संबन्ध में प्रवेश किया था। उनकी जाति के द्वारा, विश्वास के महान पिताओं इब्राहीम, इसहाक और याकूब तक पहुँचा जा सकता था। प्रभु यीशु का जन्म भी उनके बीच में ही हुआ था। परमेश्वर के हृदय में यहूदियों का एक विशेष स्थान था।

यहूदी एक ऐसा उपकरण थे जिसके द्वारा परमेश्वर की योजना और उद्देश्य का प्रगटीकरण संसार पर हुआ, परन्तु उन्होंने उस उद्देश्य को स्वयं के लिए ग्रहण नहीं किया। वे परमेश्वर के उद्देश्य से दूर भटकते रहे और जिस उद्धार को देने के लिए वह आया उन्होंने उसे ठुकरा दिया। इसी कारण पौलुस का हृदय उनके लिए टूट गया था। अपने लोगों को उद्धार दिलाने के लिए वह स्वयं के जीवन को भी देने को तैयार था। इसके असंभव होने पर भी, यह उसके लोगों के लिए उसके प्रेम की गहराई को दिखाता है।

पौलुस का बोझ बहुत ही वास्तविक था। आपके हृदय में परमेश्वर ने क्या बोझ डाला है? हो सकता है कि आपका बोझ प्रेरित पौलुस के समान न हो, परन्तु निश्चय ही परमेश्वर ने आपको एक उद्देश्य दिया होगा। जहां बोझ नहीं होता वहां लोग सेवा में कमज़ोर पाए जाते हैं। पौलुस के बोझ ने उसे उन चीज़ों को करने व सहन करने को धकेला जिन्हें दूसरे लोग सहन नहीं कर सकते थे। उसके बोझ ने उस समय उसकी दृढ़ बने रहने में सहायता की जब उसके चारों ओर के लोग त्यागने को तैयार थे। सेवा का सबसे बड़ा कार्य उन हृदयों में आता है जिन पर परमेश्वर द्वारा बोझ दिया जाता है। परमेश्वर ने हमें भिन्न-भिन्न तरह से प्रतिभा दी है। कुछ को परमेश्वर ने प्रोत्साहन और शिक्षण के द्वारा देह का निर्माण करने का बोझ दिया है। अन्यों में खोए हुओं के लिए बोझ होने के साथ-साथ उन्हें परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करते हुए देखने की इच्छा पाई जाती है। हो सकता है कि आज आप अपने हृदय में किसी भी बोझ का अनुभव न करते हों। हो सकता है कि यह परमेश्वर की खोज करने और उससे यह पूछने का समय हो कि आपके जीवन और सेवकाई के लिए उसका क्या उद्देश्य है।

पौलुस का आरम्भिक कथन एक महत्वपूर्ण प्रश्न को लाता है। परमेश्वर एक ऐसी जाति का चुनाव क्यों करेगा जो उसको अस्वीकृत कर देगी? एक जाति अपने द्वारा परमेश्वर के कार्य को प्रगट होते हुए देखने के पश्चात् भी प्रभु परमेश्वर को कैसे अस्वीकार कर सकेगी? एक जाति परमेश्वर के वचन को प्राप्त कर उससे कैसे प्रभावित न होगी? क्या परमेश्वर का उद्देश्य अपने लोगों के लिए असफलता का है?

इस प्रश्न का जवाब देने के लिए पौलुस ने रोमियों को स्मरण कराया कि इब्राहीम के सभी वंशज सच्चे इस्राएली नहीं थे (पद 7)। इस कथन को

प्रमाणित करने के लिए पौलुस अपने पाठकों को दिखाता है कि परमेश्वर किस तरह से यह प्रतिज्ञा करता है कि केवल इसहाक के द्वारा ही वह लोगों को ऊपर उठाएगा।

इब्राहीम के बहुत से पुत्र थे। उत्पत्ति 16:15-16 में हम देखते हैं कि उसका हाजिरा से इश्माएल नामक एक पुत्र था। उत्पत्ति 25:1-2 में हम उसकी पत्नी कतूरा के द्वारा उत्पन्न उसके पुत्र के बारे में पढ़ते हैं:

"तब इब्राहीम ने एक और पत्नी ब्याह ली जिसका नाम कतूरा था। और उससे जिम्रान, योक्षान, मदना, मिद्यान, यिशबाक और शूह उत्पन्न हुए।"

यद्यपि इब्राहीम के बहुत से पुत्र थे, तौभी परमेश्वर ने उनमें से एक के द्वारा आशीष देने का चयन किया। इब्राहीम के सभी पुत्र सच्चे इस्राएल का भाग नहीं थे। केवल इसहाक को ही यह आदर मिलना था। इब्राहीम की वंशावली से होकर भी उसकी आशीषों का भागी न होना संभव था।

इसहाक एक ऐसा बच्चा था जिसकी प्रतिज्ञा उसके माता-पिता से की गई थी। उसका जन्म इब्राहीम और सारा से उस समय में एक चमत्कारिक तरीके से हुआ था जब उनके माता-पिता बनने का समय निकल चुका था। उसके जन्म लेने से पूर्व ही परमेश्वर ने उसको आशीष देने का चयन किया था।

यह बात पौलुस के लिए बहुत महत्वपूर्ण थी। इसने उसे दिखाया कि परमेश्वर के सच्चे लोग इब्राहीम के स्वाभाविक वंश से नहीं थे परन्तु वे थे, जिनका चयन परमेश्वर ने किया था। इब्राहीम की संतानों में से केवल एक ही को परमेश्वर ने अपना उपकरण होने के लिए चुना था। इश्माएल के वंशज परमेश्वर तथा उसकी आशीषों से दूर बढ़ेंगे। इसहाक परमेश्वर की संतान इसलिए नहीं था कि उसका जन्म इब्राहीम से हुआ था परन्तु इसलिए क्योंकि परमशेवर ने उसका चयन विशिष्ट रूप से अपने उद्देश्य के लिए किया था।

हम इसी सिद्धान्त के प्रमाण इसहाक के वंशजों के जीवनों में भी पाते हैं। उसकी पत्नी रिबका से उसके जुड़वा पुत्र याकूब और एसाव हुए। पौलुस पद 11 में हमें बताता है कि इन जुड़वां पुत्रों के जन्म लेने से पहले ही परमेश्वर का उनके लिए एक उद्देश्य था। उसने रिबका को बताया कि बड़ा पुत्र एसाव छोटे की सेवा करेगा। अन्य शब्दों में, परमेश्वर की आशीषें छोटे पुत्र याकूब पर आएंगी। वह परमेश्वर के चुने हुए लोगों का पिता होगा।

पद 11 और 12 में ध्यान दें कि पौलुस इसे स्पष्ट करता है कि परमेश्वर की आशीष और चुनाव ने याकूब और एसाव की जीवन प्रणाली के साथ कुछ

नहीं किया था। इन संतानों के समक्ष परमेश्वर का किया गया चुनाव इस बात को भी प्रमाणित कर सका कि वे या तो उसकी सेवा करेंगे या नहीं। पौलुस के लिए इसने यह प्रमाणित किया कि जिन लोगों को परमेश्वर आशीष देगा उनके लिये किये गए चुनाव उनका लोगों के चुनावों और जीवन प्रणाली से कोई संबन्ध नहीं होगा। इसका इस बात से भी कोई लेना देना नहीं था कि एक व्यक्ति कितनी अच्छी तरह से उसकी सेवा करेगा या वह व्यक्ति उसके राज्य के लिए कितना लाभकारी होगा।

पद 13 हमें बताता है कि परमेश्वर ने याकूब से प्रेम और एसाव से घृणा की। अन्य शब्दों में, परमेश्वर ने अपने हृदय और आशीषों को याकूब के लिए खोलने का चुनाव किया, न कि एसाव के लिए। यह कहने के द्वारा कि उसने एसाव से घृणा की, परमेश्वर हमें बता रहा है कि उसने इसके विपरीत अपने अनुग्रह को याकूब पर उण्डेलने का चुनाव किया।

एक पति या पत्नी का चुनाव करने पर आप अन्य सभी को छोड़ने का चुनाव करते हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि आप प्रत्येक दूसरे पुरुष या स्त्री से घृणा करते हैं परन्तु इसके विपरीत आप अपने जीवन साथी के साथ एक विशेष संबन्ध स्थापित करना चाहते हैं। आप उनके प्रति स्वयं को समर्पित करते हुए अपना अनुग्रह और आशीष उन पर उण्डेलते हैं। एक व्यक्ति के प्रति स्वयं के समर्पित करने के कारण कोई आप के इस कार्य को अनुचित नहीं कहेगा। ऐसा ही परमेश्वर ने याकूब के साथ किया था। उसने याकूब और उसकी सन्तान के साथ एक वाचा में प्रवेश करने का चयन किया।

हम इस परिच्छेद से देखते हैं कि परमेश्वर लोगों को बढ़ा रहा है। पौलुस इसे स्पष्ट करता है कि परमेश्वर लोगों का यचन उनकी वरीयता के आधार पर नहीं करता है। एक बच्चे को चुना गया था और दूसरे को नहीं। एक बच्चे को आशीष दी गई थी, दूसरे को नहीं। परमेश्वर उन्हें आशीष देता है जिनका चुनाव वह आशीष देने के लिए करता है।

हमें यह भी समझने की ज़रूरत है कि आशीष देने का परमेश्वर का निर्णय इस पर आधारित नहीं था कि एक व्यक्ति उसकी सेवा अच्छी तरह से करता है या नहीं। याकूब के जन्म लेने से पहले से ही उसका चुनाव आशीष देने के लिए कर लिया गया था, इससे पहले कि वह अपने विश्वास या आज्ञाकारिता को प्रगट करता। जब तक परमेश्वर ने उसे स्पर्श नहीं किया था वह उसके प्रति विरोध में रहा था। परमेश्वर ने निश्चय ही पौलुस को इसलिये नहीं चुना था, क्योंकि पौलुस ने उससे प्रेम करने के साथ-साथ उसकी सेवा की थी। पौलुस ने प्रभु यीशु से

घृणा की तथा कलीसिया को सताया था, परन्तु परमेश्वर ने उसका चुनाव किया और उसके हृदय को बदला था।

एक मसीही परिवार में जन्म लेने पर भी आप अभी भी अपने आप में नष्ट हो सकते हैं। हमारा उद्धार पूरी तरह से परमेश्वर के अनुग्रह पर आधारित है, जो हमारे पापी होते हुए भी हम तक पहुंचा है। परमेश्वर एक व्यक्ति के ऊपर दूसरे का चयन क्यों करता है? मैं नहीं सोचता कि हममें से कोई भी इस प्रश्न का वास्तव में जवाब दे सकता है। तथापि, हम एक चीज़ को लेकर आश्वस्त हो सकते हैं कि उसका चुनाव प्रेम में होकर किया जाता है। उसे मुझसे क्यों प्रेम करते हुए अपने अनुग्रह को मुझ पर उण्डेलना चाहिए, यह सदा एक भेद ही रहेगा लेकिन मैंने उसके अनुग्रह और उसकी आशीषों में आनन्दित रहने का चयन किया है।

विचार करने के लिये:

- प्रभु ने आपके हृदय में परमेश्वर के राज्य के लिए किस बोझ को रखा है?
- क्या हर किसी का जन्म सच्चे इस्राएल के एक भाग में यहूदी अभिभावक के रूप में हुआ था? व्याख्या करें। सच्चा इस्राएल कौन है?
- क्या एक व्यक्ति के ऊपर दूसरे व्यक्ति का परमेश्वर का चुनाव हमारी योग्यता या जीवन–प्रणाली पर आधारित है? परमेश्वर एक व्यक्ति के ऊपर दूसरे व्यक्ति का चुनाव क्यों करता है?
- यह परिच्छेद कार्यों द्वारा उद्धार के बारे में हमें क्या सिखाता है? क्या हमें इसीलिये बचाया गया है? क्या हम भले या उसके उद्धार के योग्य हैं या यह उसकी ओर से अनुग्रह का एक कार्य है?

प्रार्थना के लिये:

- परमेश्वर के राज्य के लिए अपने बोझ को बढ़ाने के लिये परमेश्वर को धन्यवाद दें। उसे आप पर यह प्रगट करने को कहें कि आपके लिए उसका विशिष्ट उद्देश्य क्या है।
- इस सच्चाई के लिये परमेश्वर को धन्यवाद दें कि उसने आपको विशिष्ट रूप से चुना और आपको आपके सभी पापों से क्षमा कर दिया।
- उसे धन्यवाद दें कि जबकि आप उसकी क्षमा और आशीषों के योग्य न थे उसने आपको स्पर्श किया।

पौलुस के सिद्धान्तों का विरोध

25

पढ़ें रोमियों 9:14-33

पिछले पाठ में हमने देखा कि इब्राहीम के सभी वंशज परमेश्वर की सन्तान नहीं थे। पौलुस ने दिखाया कि जबकि इब्राहीम की बहुत सी सन्तानें थीं, तौभी परमेश्वर ने उनमें से एक का चुनाव प्रतिज्ञा की सन्तान के रूप में किया। यही बात इसहाक के लिए भी सत्य थी। परमेश्वर ने बच्चों के उत्पन्न होने से पहले ही याकूब का चुनाव अपने लोगों का पिता होने के लिए किया था। और उसने एसाव को अस्वीकृत कर दिया था। परमेश्वर ने याकूब द्वारा अपने विश्वास या किसी भी आशीष को अपनी योग्यता द्वारा पाने से पहले उस का चुनाव किया था। पौलुस के अनुसार, यह इस बात का एक स्पष्ट प्रमाण था कि परमेश्वर की सन्तान होना केवल परमेश्वर के चुनाव पर ही आधारित है, न कि किसी व्यक्तिगत योग्यता पर।

इस सिद्धान्त को सही तरह से प्राप्त नहीं किया गया था। पौलुस की शिक्षा का विरोध किया गया था। इस अध्याय में हम इनमें से तीन पर विचार करेंगे:

क्या परमेश्वर अन्यायी है?

पहला विरोध उन लोगों की ओर से था जिन्होंने कहा कि पौलुस की शिक्षा परमेश्वर को अन्यायी ठहराती है (पद 14)। आइये एक क्षण के लिए इस पर विचार करें। परमेश्वर ने इब्राहीम की अन्य सन्तानों को छोड़ इसहाक का ही चुनाव क्यों किया था? परमेश्वर ने याकूब को क्यों चुना था, एसाव को क्यों नहीं? क्या यह सही है कि परमेश्वर दूसरे व्यक्ति से आशीष को रोककर उसे किसी और को दे?

पौलुस हमें स्मरण कराता है कि जब मूसा ने परमेश्वर को अपनी महिमा दिखाने को कहा, तो प्रभु ने यह कहते हुए जवाब दिया कि वह जिस पर करूणा और दया करना चाहे उसी पर वह उसे प्रगट करेगा (निर्ग. 33:19)। परमेश्वर किसी के भी प्रति करूणा और दया प्रगट करने के लिए बन्धा हुआ नहीं है। यदि परमेश्वर उसे करता जो उचित था तो हम सभी नाश हो गए होते क्योंकि हम सभी उसके मानदण्ड से गिरे हुए हैं। यदि परमेश्वर कुछ के पाप क्षमा करता है और दूसरों के नहीं तो ऐसा करके वह अन्यायी नहीं हो जाता। वह तब भी करूणामयी रहता है।

कुछ समय पूर्व हैती जाने पर मैंने सभी तरह की भौतिक आवश्यकताओं को देखा था। गली से गुज़रने पर लोग हमसे पैसे या कुछ खाने के लिए मांगते थे। कल्पना करें कि अपने हृदय की भलाई में भी मैं इनमें से कुछ व्यक्तियों को भोजन देने का चुनाव करता था। सभी को एक ही मात्रा में भोजन न देने पर क्या मैं अन्यायी हो गया हूँ? ऐसा किसी भी तरह से नहीं है। अपने कार्यों को दयापूर्ण या करूणापूर्ण दिखाने के लिए मुझे सभी को समान मात्रा में भोजन नहीं देना है। मैं एक व्यक्ति के प्रति तो दयालु रहा हूँ। एक के प्रति दया दिखाने का चुनाव करते हुए मैं अन्याय नहीं बल्कि दया दिखाता हूँ। कुछ निश्चित लोगों पर परमेश्वर द्वारा दया किये जाने के आधार पर हम परमेश्वर को अन्यायी नहीं ठहरा सकते हैं।

पौलुस पद 16 में आगे रोमियों को स्मरण कराता है कि उद्धार तथा परमेश्वर की आशीषें मनुष्य की इच्छा या प्रयास पर आधारित नहीं हैं, बल्कि परमेश्वर की करूणा पर। यदि हमारा उद्धार हमारे व्यक्तिगत प्रयासों पर आधारित होता तब यदि हमारे कार्यों की योग्यता के अनुसार हमें वह नहीं देता जिसके हम योग्य है तब वह अन्यायी ठहराता। तब न्याय की मांग यह होती कि हम सभी को हमारे पापों के लिए मरना है। अपने पुत्र के कार्यों द्वारा कुछ को क्षमा करने का परमेश्वर का चुनाव अन्यायपूर्ण नहीं है, यह दयापूर्ण है।

क्या परमेश्वर की इच्छानुसार करने पर वह हमें दण्ड देता है?

पद 17 में पौलुस अपने लोगों के इतिहास से यह दिखाने के लिए एक उदाहरण का प्रयोग करता है कि परमेश्वर ने कुछ लोगों का चुनाव आशीष देने के लिए तथा कुछ पर अपना क्रोध प्रगट करने के लिए किया है। फिरौन इस्राएल जाति पर परमेश्वर की सामर्थ को प्रगट करनेवाला एक उपकरण था। परमेश्वर ने यहूदियों के लिए अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करने तथा उन पर अपनी महिमा को प्रगट करने हेतु फिरौन के हृदय को कठोर कर दिया था। जिन दिनों इस्राएल मिस्र में था, फिरौन ने उन्हें जाने से मना कर दिया था। परमेश्वर ने उससे बात करने मूसा को भेजा लेकिन राजा लगातार उसका विरोध करता रहा। तब परमेश्वर ने मूसा के द्वारा मिस्र राष्ट्र का नाश करना आरम्भ कर दिया। ऐसा करके परमेश्वर ने मिस्र देश पर अपनी सामर्थ को प्रगट किया। परमेश्वर ने फिरौन को नम्र बनाते हुए अपने देश का न्याय किया, अपने लोगों को गुलामी से मुक्त करने के द्वारा। अन्ततः मिस्र देश नष्ट हो गया और वह फिर कभी एक बड़ी शक्ति के रूप में उठ नहीं पाया। परमेश्वर ने फिरौन और उसके देश का चुनाव एक उद्देश्य से किया था। उसने उनका चयन अपने रोष को प्रगट करने

के लिए किया था, जिससे उसके लोग उसकी महिमा और शक्ति को देख सकें। इससे पौलुस के एक अन्य सिद्धान्त का विरोध होता है।

यदि परमेश्वर ने फिरौन का चुनाव अपने क्रोध को प्रगट करने के लिए किया था तो जबकि फिरौन उसी की इच्छा के अनुसार कार्य कर रहा था तब परमेश्वर उसे कैसे दण्डित कर सका? यदि उसने परमेश्वर की इच्छा का विरोध नहीं किया था तो वह फिर पाप का दोषी कैसे हो सकता है?

इसका जवाब देने के लिए पौलुस पद 20 में हमें बताता है कि प्रभु और सृष्टिकर्त्ता होने के कारण वह अपनी सृष्टि के साथ जैसा चाहे वैसा कर सकता है। वह एक कुम्हार के उदाहरण का प्रयोग करता है। कुम्हार अपनी इच्छानुसार मिट्टी से कुछ भी बना सकता है। वह मिट्टी के एक ही बर्तन का प्रयोग एक महत्वपूर्ण और साधारण कार्य में करने का चयन कर सकता है। उसी मिट्टी से कुम्हार कूड़ा रखने का पात्र और संग्रहालय में रखने के लिए पात्र को बना सकता है। मिट्टी को यह कहने का कोई अधिकार नहीं है कि उसे कैसे बनाना है। कलाकार उससे जैसा चाहे वैसा बना सकता है।

परमेश्वर प्राय: उन चीज़ों के प्रति धैर्य दिखाता है जिन्हें उसने क्रोध दिखाने के लिए बनाया है ताकि उनके द्वारा वह अपनी महिमा को दिखा सके। हम इसे फिरौन में पूरा होते देखते हैं। परमेश्वर उसका प्रयोग क्रोध के एक उपकरण के रूप में करनेवाला था। परमेश्वर ने फिरौन के हृदय को कठोर कर दिया था। उसने उसे लोगों को सताने दिया। परमेश्वर उसका शीघ्र ही सर्वनाश कर सकता था, परन्तु उसने ऐसा न करने का चुनाव किया। उसने फिरौन के साथ धीरज दिखाते हुए उसका न्याय शीघ्र ही क्यों नहीं किया? पौलुस हमें बताता है कि उसने परमेश्वर की सन्तान पर अपनी महिमा को प्रगट करने के लिए ऐसा किया था। क्रोध के एक उपकरण के रूप में फिरौन के लिए भी एक उद्देश्य था।

होशे ने इस्राएलियों को बताया कि परमेश्वर उन लोगों को बुलाएगा जो उसके लोग नहीं थे (पद 25)। परमेश्वर अयोग्य पापियों तक पहुँचकर उन्हें आदर के पात्र बनाएगा।

दूसरी ओर, पौलुस ने रोमियों को स्मरण कराया कि यशायाह ने सिखाया कि इस्राएल का केवल कुछ ही भाग बचाया जाएगा।

चाहे इस्राएल की सन्तानों की गिनती समुद्र के बालू के बराबर हो, तौभी उनमें से थोड़े ही बचेंगे (पद 27)।

यशायाह हमें बताता है कि यदि परमेश्वर ने इस्राएल का स्पर्श न किया होता तो उसका भी सदोम और अमोरा के समान नाश हो जाता।

पौलुस यहां क्या कहने का प्रयास कर रहा है? वह रोमियों को बता रहा है कि परमेश्वर को जो अच्छा लगता है वह वही करता है। वह अन्यजातियों को चुनकर उन्हें आशीष के उपकरण बनाता है। वह इस्राएलियों को क्रोध का उपकरण बनाता है। वह जिसे चाहता है उसे आशीष देता है।

मूल प्रश्न की ओर लौटते हुए, पौलुस पूछता है: परमेश्वर हम पर कैसे दोष लगा सकता है? इसका जवाब सरल है- चूँकि हम पाप में हैं इसलिए वह हम पर दोष लगाता है। उसने यशायाह के माध्यम से इस्राएलियों पर इसलिये दोष लगाया क्योंकि उन्होंने अपने प्रभु को अस्वीकार दिया था। परमेश्वर के लोगों पर अत्याचार करने तथा उसकी इच्छा का सामना करने के कारण परमेश्वर ने फिरौन का न्याय किया। यहूदी और अन्यजाति दोनों ही परमेश्वर के सामने दोषी होने के साथ-साथ उसके क्रोध के योग्य हैं।

पाप का न्याय करने के कारण हम परमेश्वर को गलत नहीं ठहरा सकते। मनुष्य इस संसार में बुराई को लेकर आया। परमेश्वर अपने सबसे बड़े उद्देश्य को पूरा करने के लिए एक बुरे व्यक्ति को भी प्रयोग कर सकता है परन्तु तौभी वह पाप का न्याय करता है।

कल्पना करें कि एक पति पाप के व्यभिचार में गिर जाता है। कुछ समय बाद उसे इस बात का अहसास होता है कि वह अपनी पत्नी और परिवार के साथ गलत कर रहा है। पश्चात्ताप कर अपनी जीवन-प्रणाली को बदलने के पश्चात् वह एक प्रेमी पति बन जाता है। अन्त में उसका वैवाहिक संबन्ध मज़बूत बन जाता है। चूंकि यह व्यक्ति अब बदल गया है तो क्या इसके पाप को अनदेखा कर देना चाहिए? यद्यपि परमेश्वर ने इस स्थिति का प्रयोग उसे शिक्षा देने के लिए किया तो क्या वह अभी भी पाप का दोषी नहीं है? हमारे द्वारा की जानेवाली बुराई को परमेश्वर भलाई में बदल सकता है, लेकिन वह हमारे कार्यों का उत्तरदायी तब भी हमें ही ठहराएगा। परमेश्वर पाप का प्रयोग अपनी महिमा को प्रगट करने या हमें शिक्षा देने के लिए कर सकता है, परन्तु न्याय की मांग यह है कि पाप को दण्डित किया जाना चाहिए।

क्या कार्यों की गणना किसी चीज़ के लिए नहीं की जाती?

पौलुस अध्याय 9 के इस अन्तिम विभाग में इस प्रश्न को रखता है। पौलुस ने रोमियों को बताया था कि मूसा की व्यवस्था का पालन करने पर भी इस्राएल के कुछ भाग को ही बचाया जाएगा। इन रीति-रिवाज़ों की विश्वासयोग्य विधियों ने उद्धार का आश्वासन नहीं दिया था। यहूदियों के लिए इसे समझना बहुत कठिन था। अन्यजाति, जिन्होंने परमेश्वर की खोज नहीं की, उन्हें बचाया जाएगा

जबकि यहूदी जिन्होंने व्यवस्था का पालन किया दोषी ठहराए गए थे? क्या उनके कामों की कोई कीमत नहीं थी?

पौलुस इसे स्पष्ट करता है कि यहूदियों को इसलिये नहीं बचाया जाएगा, चूँकि उन्होंने अपनी व्यवस्था और उत्सवों का पालन किया, तौभी उन्होंने ऐसा विश्वास से नहीं किया था। ये सभी रीति-रिवाज़ और व्यवस्था प्रभु यीशु की ओर संकेत करते थे लेकिन यहूदी उसे व्यवस्था के पूरक के रूप में नहीं देख पाए थे। यीशु उनके लिए एक ठोकर का पत्थर था। वह यरूशलेम आकर (सिय्योन , पद 33) उनके बीच में रहा लेकिन उन्होंने उस पर भरोसा नहीं किया। चूंकि यहूदियों ने अपने उद्धार के लिए मसीह की ओर नहीं देखा था, अतः अपने सभी भले कार्यों के बावजूद भी वे भटके रहेंगे। उनके उद्धार के संबन्ध में उनके भले कार्यों की कोई कीमत नहीं होगी।

चूंकि परमेश्वर आपका प्रयोग कर रहा है अतः इस पर विश्वास करते हुए मूर्ख न बनें कि आप उसकी संतान हैं। परमेश्वर ने फिरौन का प्रयोग किया लेकिन फिरौन ने अन्त तक उसका विरोध किया। परमेश्वर ने उसके बुरे कार्यों का प्रयोग भलाई के लिए किया, परन्तु चूंकि वह बुरा था। अतः उसने उसका न्याय भी किया। आपका परमेश्वर के लिए प्रयोग किया गया या नहीं, यह महत्वपूर्ण नहीं है, परन्तु महत्वपूर्ण यह है कि हमें हमारे पापों से क्षमा मिली है, या नहीं। यह ऐसी चीज़ थी जिसे यहूदी समझ नहीं पाए थे। उन्होंने परमेश्वर द्वारा दी गई व्यवस्था का पालन तो किया लेकिन प्रभु यीशु का तिरस्कार कर दिया। व्यवस्था का पालन करना ही पर्याप्त न था। केवल यीशु ही बचा सकता था। इसी कारण अन्यजाति व्यवस्था के न होने पर भी बचाए गए।

कुछ लोगों के आशीष प्राप्त करने के लिए चुनाव करने के द्वारा परमेश्वर अपनी करूणा और दया को दिखा रहा था। यदि उसने न्याय की मांग के अनुसार हमें दिया है तो हम सभी का न्याय होगा और हम दोषी ठहराए जाएंगे। करूणा में होकर वह हम तक पहुंचकर कुछ को बचा कर अपनी दया को प्रगट करता है।

जो कभी भी परमेश्वर के पास नहीं आते, वह उनका भी प्रयोग कर सकता है। वह कुछ समय के लिए उन्हें उनकी बुराई को करने की अनुमति दे सकता है और इसका प्रयोग अपने लोगों को शिक्षा देने के लिए कर सकता है, परन्तु तब भी वह उनके पाप का न्याय करेगा।

हमारा उद्धार पूरी तरह से परमेश्वर और अनुग्रह पर निर्भर करता है। पौलुस इसे स्पष्ट करता है कि हमारे कार्यों की कोई गणना नहीं है। इस्राएल के बहुत से लोग जो कि व्यवस्था का पालन करते थे, समाप्त हो गए; जबकि अन्यजाति

जिन्होंने परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए कुछ भी प्रयास नहीं किया, उन्होंने उसके अनुग्रह को प्राप्त किया।

इस अध्याय में हमें सिखाने के लिए केवल एक चीज़ है, यह परमेश्वर पर हमारी पूरी तरह से निर्भरता और हमारे उद्धार के लिये उसका अनुग्रह है।

विचार करने के लिये:

- चूंकि परमेश्वर कुछ पर दया दिखाता है और कुछ पर नहीं तो क्या इस कारण से वह अन्यायी है?
- परमेश्वर की सृष्टि होने के कारण हम स्वयं पर उसके अधिकार के बारे में क्या सीखते हैं?
- पौलुस इस बारे में हमें क्या बताता है कि परमेश्वर कुछ समय के लिए पाप को क्यों जारी रखता है?
- परमेश्वर द्वारा प्रयोग किये जाने और आपका अपने पापों से बचाए जाने के बीच क्या अन्तर है? आपके अपने पापों से बचाए न जाने पर भी क्या आपका प्रयोग किया जा सकता है?
- उद्धार के संबन्ध में पौलुस हमें यहां 'कार्यों' की भूमिका के बारे में क्या सिखाता है? इस विभाग में पौलुस के अनुसार हमारा उद्धार किस पर निर्भर करता है?

प्रार्थना के लिये:

- परमेश्वर से उन समयों के लिए क्षमा मांगें जब आपने उन चीज़ों के लिए शिकायत की थी जिन्हें वह आपके जीवन में कर रहा था।
- यदि सत्य के लिए उसने आपकी आंखों को खोला है, तो आपके हृदय और जीवन को उसके प्रति खोलने के लिए कुछ समय उसे धन्यवाद देने के लिए निकालें।
- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि जबकि हम हमेशा उसके उद्देश्य को समझते नहीं हैं, वह वही करता है जो सही है।
- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि उसने आप पर स्वयं को प्रगट करने का चयन किया।

विश्वास द्वारा धार्मिकता **26**

पढ़ें रोमियों 10:1-11

इस्राएल की संतान के लिए पौलुस में एक वास्तविक आवेग था। यहां अध्याय 10 में वह हमें स्मरण कराता है कि उसकी बड़ी अभिलाषा यह थी कि वे बचाए जाएं। यद्यपि वे परमेश्वर के चुने हुए लोग थे, तौभी उनमें से सभी अनन्त जीवन के लिए नीयत नहीं किये गए थे। बहुतों ने प्रभु यीशु को मसीहा-प्रतिज्ञात्, के रूप में अस्वीकार दिया था, जो उन्हें उनके पापों से बचाने के लिए आया था। जबकि उनमें परमेश्वर के प्रति बड़ी उमंग थी, तौभी उनकी उमंग सत्य के ज्ञान पर आधारित नहीं थी।

अपने विश्वास के रीति-रिवाज़ों को लेकर यहूदी उमंग से भरे रहते थे। उन्होंने उन बलिदानों और उत्सवों का पालन किया जिन्हें परमेश्वर ने मूसा के द्वारा दिया था। वे दशमांश देने और अपने पूर्वजों की परम्पराओं के प्रति विश्वासयोग्य थे तौभी, इनमें से कोई भी चीज़ उनके उद्धार का आश्वासन नहीं दे सकी थी। उनकी धार्मिक गतिविधि उन्हें परमेश्वर की घनिष्ठता में न ला सकी। यूहन्ना के सुसमाचार में, हम नीकुदेमुस नामक एक फरीसी से मिलते हैं जिसने एक भला जीवन व्यतीत करते हुए परमेश्वर की व्यवस्था का पालन किया था, परन्तु उससे यीशु ने कहा था कि जब तक उसका फिर से जन्म न हो वह स्वर्ग के राज्य को देख नहीं पाएगा। नये नियम के सभी लोगों में, फरीसी सबसे अधिक धार्मिक तथा मूसा की व्यवस्था का पालन करनेवाले थे तथापि, व्यवस्था का सावधानीपूर्वक पालन करने के बावजूद, यीशु अपने दिनों के किसी भी अन्य समूह की तुलना में उनसे सबसे अधिक कठोरता से बोला था।

पौलुस हमें बताता है कि यद्यपि अपने विश्वास के कारण यहूदी उमंग से भरे थे, तौभी उनकी उमंग ज्ञान पर आधारित नहीं थी। जिस ज्ञान की उनमें कमी थी क्या उसने उन्हें परमेश्वर के उद्धार से दूर रखा था? पौलुस पद 3 में हमें बताता है कि यहूदियों ने उस धार्मिकता को नहीं जाना था जो मसीह के द्वारा परमेश्वर की ओर से आई थी, तब भी वे अपनी धार्मिकता को स्थापित करना चाहते थे। ऐसा करते हुए उन्होंने परमेश्वर और उस धार्मिकता के प्रति समर्पण नहीं किया था जिसे वह उन्हें देना चाहता था।

यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण कथन है। यहूदियों की असफलता का कारण यह था कि उन्होंने परमेश्वर की उद्धार की प्रतिज्ञा से मुंह मोड़ लिया था। उनका

यह विश्वास था कि यदि वे अपनी परम्पराओं और रीति-रिवाज़ों में बने रहें तो परमेश्वर उन्हें ग्रहण करेगा। यद्यपि मैंने इस उदाहरण का प्रयोग दूसरे मनन के लिए किया था, मुझे इसका प्रयोग फिर से करने दें। अपने सामने ज़हरीले पानी से भरे कप की कल्पना करें। यहूदी इसे देखने में असफल हो गए थे। यह जानने पर कि यह ज़हरीला पानी है क्या आप इसे पीयेंगे? बेशक, आप ऐसा नहीं करेंगे। कल्पना करें कि आप किसी को पानी में चीनी डालते हुए देखते हैं। क्या अब आप इसे पीयेंगे? निश्चय ही आप ऐसा नहीं करेंगे। पानी का स्वाद चाहे कुछ अच्छा क्यों न हो जाए तौभी यह रहेगा तो ज़हरीला ही। चीनी पानी में से ज़हर को समाप्त नहीं कर पाई थी। यहूदी इसी चीज़ को देख नहीं पाए थे। उनके जीवन, हमारे ही समान, पाप से ज़हरीले हो गए थे। उन्होंने भले कार्य किये थे और वे बहुत धार्मिक भी थे, तौभी वे परमेश्वर के सम्मुख पापी ही थे। धार्मिक रीति-रिवाजों की चीनी उस पापी स्वभाव को दूर नहीं कर सकती जो हमें परमेश्वर के सामने दोषी ठहराता है।

पौलुस के दिनों के यहूदियों को क्षमा और परमेश्वर के साथ सही समझे जाने की ज़रूत थी। इसी चीज़ को वे समझ नहीं पाए थे। पौलुस ने पद 3 में रोमियों को बताया कि यहूदी 'परमेश्वर की धार्मिकता' से अनजान थे और इसके विपरीत वे अपनी धार्मिकता को स्थापित करने का प्रयास कर रहे थे। वे अपने विश्वास की विधियों के प्रति उमंग से भरे थे, लेकिन उनकी उमंग उन्हें परमेश्वर की घनिष्ठता में नहीं ला पाई थी।

पौलुस ने पद 4 में इसे स्पष्ट किया कि मसीह उन सबके लिए व्यवस्था का अन्त है, जो विश्वास करेंगे। व्यवस्था किसी को भी बचा नहीं सकी थी। केवल यीशु ही इसे कर सका। इसी कारण अन्यजाति विश्वासी यहूदियों के साथ इब्राहीम की प्रतिज्ञा के भागी हुए थे। यहूदियों ने मूसा की व्यवस्था पर उन्हें स्वर्ग ले जाने के लिए भरोसा किया, परन्तु ऐसा नहीं हुआ क्योंकि व्यवस्था का उद्देश्य किसी को भी स्वर्ग ले जाने का नहीं था। इसका उद्देश्य उनका उनके उद्धारकर्त्ता की ओर संकेत करना था।

पद 5 में पौलुस धार्मिकता की तुलना धार्मिकता की व्यवस्था से करता है जोकि विश्वास से आती है। मूसा यह कहते हुए व्यवस्था की धार्मिकता का वर्णन करता है कि इन चीज़ों को करनेवाला व्यक्ति इन्हीं के द्वारा जीयेगा (लैव्यव्यवस्था 18:5)। अन्य शब्दों में, व्यवस्था के अधीन रहनेवाले लोगों को इसके मानदण्ड के अनुसार जीवन बिताना ज़रूरी है। इसमें किसी भी बिन्दु पर

असफल होना पाप का दोषी होना है। पाप का दण्ड मृत्यु थी (देखें रोमियों 6:23)। कौन इस मानदण्ड को पूरा कर सकता है? व्यवस्था से आनेवाली धार्मिकता के विपरित, विश्वास से आने वाली धार्मिकता कहती है। स्वर्ग पर कौन चढ़ेगा? (अर्थात् मसीह को उतार लाने के लिए) या गहिराव में कौन उतरेगा? (अर्थात् मसीह को मरे हुओं में से जिलाकर ऊपर लाने के लिये!) (रोमियों 10:7)।

व्यवस्था ने यहूदियों को एक असंभव मानदण्ड के अधीन रखा था। यहां पौलुस जिस चित्र को चित्रित करता है वह एक व्यक्ति की अपनी भटकी दशा में सहायता के लिए पुकारना है। इस पुकार पर ध्यान दें: मसीह को नीचे लाने के लिए कौन स्वर्ग पर चढ़ सकता है? एक आवश्यकता को पहचानते हुए यह एक आत्मा/प्राण की बुलाहट है। यह एक दोषी आत्मा की पुकार है यह जानते हुए कि यह परमेश्वर के मानदण्ड से गिर गया है और उसे किसी के द्वारा बचाए जाने की जरूरत है। कौन हमें मसीह के निकट ला सकता है, चूंकि वह हमारी एकमात्र सहायता है इसलिये यह पुकारता है।

पौलुस अपने पाठकों को स्मरण कराता है कि मसीह दूर नहीं है या उस तक पहुंचाना असंभव नहीं है। वह वास्तव में, उनके बहुत निकट था, उन की सहायता के लिए उनके पास आते हुए। पौलुस के अनुसार, वह धार्मिकता जोकि विश्वास से है उसके अनुसार,"वचन तेरे निकट है, तेरे मुंह में और तेरे मन में है" (रोमि. 10:8)। उसका कहना है कि प्रभु यीशु बहुत निकट है। वह हमारे हृदय के द्वार पर खटखटाता है। हम स्वर्ग पर उसे ढूंढने के लिए नहीं जाते हैं, क्योंकि वह हमें ढूंढ़ने के लिए पृथ्वी पर आता है।

पद 9 में पौलुस रोमियों को बताता है कि उन सभी को यीशु को अपने प्रभु के रूप में जानने और अंगीकार करने के साथ-साथ अपने हृदय में यह विश्वास करने की आवश्यकता है कि वह मृतकों में से जिलाया गया और वे बचाए जाएंगे।

पौलुस यहां रोमियों को दो चीज़ें बताता है। सर्वप्रथम, वह उन्हें बताता है कि उद्धार के लिए यीशु का प्रभु के रूप में अंगीकार करना ज़रूरी है। इसका अर्थ निष्ठा में परिवर्तन से है। यदि यीशु प्रभु है, तो हमें हमारे जीवनों में उसकी प्रभुता के प्रति समर्पण करना ज़रूरी है।

दूसरा, उद्धार के लिए अपने हृदयों में यह विश्वास करने की ज़रूरत है कि यीशु मृतकों में से जी उठा था। यहां पौलुस जो कुछ कह रहा है उसे समझने के लिए हमें यह समझना ज़रूरी है कि यीशु क्यों मारा गया। वह हमारे पापों के

लिए मारा गया। वह इसलिए मारा गया ताकि हमारे पापों की कीमत को पूरी तरह से चुकाया जा सके। वह इसलिए मारा गया ताकि हम क्षमा किये जा सकें। वह कब्र में पड़ा नहीं रहा। प्रभु यीशु हमारे पाप पर विजयी होकर जी उठा।

पौलुस पद 10 में जो कुछ सीखा रहा है उसका वह सारांश देता है। हमारे हृदय के विश्वास के द्वारा हमें धर्मी ठहराया गया है। यह विश्वास एक ऐसा विश्वास है कि प्रभु ने हमारे लिए क्या किया है। केवल उसका कार्य ही हमें परमेश्वर के साथ सही तरह से खड़ा करता है। मसीह के पास आनेवालों को यह विश्वास करना है कि वह उनके पापों के लिए मारा गया और उन पर विजयी होते हुए जी उठा था। तथापि, उन्हें अपने मुंह से उसको प्रभु के रूप में अंगीकार करना है। यह अंगीकार परमेश्वर तथा उसके उद्देश्यों के प्रति उनके समर्पण की घोषणा है।

व्यवस्था से आनेवाली धार्मिकता ने सिद्ध आज्ञाकारिता की मांग की। वे सभी जो परमेश्वर की दृष्टि से गिर गऐ हैं, वे दोषी हैं और मृत्यु के योग्य होने के कारण परमेश्वर से अनन्त अलगाव के योग्य हैं। विश्वास से आनेवाली धार्मिकता सिद्ध उद्धारकर्त्ता में विश्वास और उसका प्रभु के रूप में अंगीकार करने की मांग करती है।

विचार करने के लिये:

- मानव प्रयास द्वारा उद्धार के योग्य होने की संभावना के बारे में यह परिच्छेद हमें क्या सिखाता है?
- विश्वास से आनेवाली धार्मिकता क्या है?
- हम विश्वास से आनेवाले उद्धार को कैसे प्राप्त करते हैं?
- हमारा प्रभु के लिए उमंग से भरे होने पर भी क्या यह संभव है कि हम अभी तक बचाए न गए हों?

प्रार्थना के लिए:

- क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जो अपने कार्यों के द्वारा उद्धार को प्राप्त करने का प्रयास कर रहा है? प्रार्थना करने में कुछ समय बिताएं कि उसे यह जानना चाहिए कि उद्धार एक नि:शुल्क उपहार है।
- परमेश्वर से उसे अपने प्रभु और उद्धारकर्त्ता के रूप में घोषित करने के लिए साहस मांगें।
- परमेश्वर से अपने जीवनों में उसके प्रभुत्व के प्रति समर्पण करने को सहायता मांगें।

कोई भेद नहीं

27

पढ़ें रोमियों 10:12-21

पौलुस के दिनों के यहूदियों की दृष्टि में अन्यजाति उद्धार के योग्य न थे। यहूदियों ने स्वयं को परमेश्वर के चुने हुए लोगों के रूप में इसलिए देखा क्योंकि उसने उन्हें व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं को दिया था। इसने उनके लिए इस पर विश्वास करना बहुत कठिन बना दिया था कि एक अन्यजाति परमेश्वर के सम्मुख एक सही संबन्ध में खड़ा हो सकता है।

पौलुस रोमियों के इस विभाग में पाठकों को बताता है कि उद्धार के संबन्ध में यहूदियों और अन्यजातियों के बीच कोई अन्तर नहीं। प्रभु परमेश्वर हर उस व्यक्ति को ग्रहण करने के लिए तैयार है, चाहे वह किसी भी जाति, संस्कृति और सामाजिक स्तर का क्यों न हो। प्रभु के नाम में आनेवाला प्रत्येक व्यक्ति बच सकता है (पद 13)।

ऐसे बहुत से लोग हैं जो प्रभु के नाम का प्रयोग करते हैं। कलीसियाएं ऐसे लोगों से भरी हुई हैं जो एक या दूसरे तरीके से प्रभु का नाम लेती हैं। बहुत से लोग संकट में उसका नाम लेते हैं। हमारे लिये यह समझना महत्वपूर्ण है कि पौलुस का “नाम लेनेवालों” के संबन्ध में क्या अर्थ है।

इस संदर्भ में, पौलुस उद्धार के बारे में बता रहा है। तथापि, परमेश्वर का नाम लेने के साथ साथ उसके उद्धार की खोज भी आती है। यदि हम वास्तव में इस भाव में प्रभु का नाम लेने जा रहे हैं तो हमें सबसे पहले उसके प्रति अपनी ज़रूरत को समझना है। हम उस चीज़ का नाम नहीं लेते जिसकी हमें ज़रूरत नहीं होती। पौलुस हमें यहां उन व्यक्तियों के बारे में बता रहा है जो यह समझते हैं कि वे पापी हैं जिनके पास प्रभु यीशु के कार्यों को छोड़ उद्धार की कोई आशा नहीं है। इसलिए वे प्रभु का नाम लेते हैं। वे उसका नाम इसलिए लेते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि उनके पास एकमात्र आशा यही है। प्रभु का नाम लेने वाले अपनी आवश्यकता को समझने के साथ-साथ प्रभु की ओर से उस जवाब को प्राप्त करने के लिए तैयार हैं जो परमेश्वर उन्हें देना चाहता है। प्रभु इस तरह की पुकार को सुनता है। पौलुस कहता है कि वह आगे बढ़कर उन्हें बचाता है।

यह जानना भी महत्वपूर्ण है कि प्रभु का नाम लेने से पूर्व उन्हें उस पर विश्वास करने की भी ज़रूरत है (पद 14)। इस तरह की पुकार एक विश्वास

की दोहाई है। वास्तव में नाम लेने के लिए, एक व्यक्ति को प्रभु यीशु के कार्य पर तथा इस पर विश्वास करना ज़रूरी है कि वह क्यों आया। वह इसलिए आया क्योंकि हमारे बचने का कोई और मार्ग नहीं था। वह इसलिये आया क्योंकि हम पवित्र परमेश्वर से अलग किये गए पापी थे। यदि हम इस उद्धार के लिए परमेश्वर का नाम लेने जा रहे हैं, तो हमें इस पर विश्वास करने की आवश्यकता है कि एकमात्र वही हमारी ज़रूरत को पूरा कर सकता है। यदि कोई इस पर विश्वास न कर पाए कि वह सहायता कर सकता है तो वह क्योंकर उसका नाम लेगा?

पौलुस ने पद 14 में रोमियों को स्मरण कराया कि परमेश्वर को पुकारने अथवा उसका नाम लेने के लिए जिस विश्वास की आवश्यकता है, वह वचन के प्रचार से आता है। कोई भी किसी ऐसी चीज़ पर विश्वास नहीं कर सकता जिसके बारे में उसने कभी न सुना हो। यदि लोग उद्धार के लिए परमेश्वर को पुकारने जा रहे हैं तो उन्हें सबसे पहले उसके सेवकों से सुसमाचार के संदेश का सीखना ज़रूरी है। परमेश्वर के वचन को सुनने पर ही लोग विश्वास की प्रतिक्रिया देने के साथ-साथ परमेश्वर को पुकार सकते हैं।

प्रेरित पद 15 में रोमियों को स्मरण कराता है कि जिन्हें भेजा गया है केवल वे ही प्रचार कर सकते हैं। हमें पौलुस के इस कथन के बारे में बहुत सी चीज़ों को समझने की ज़रूरत है।

सर्वप्रथम, उद्धार के संदेश का प्रचार करनेवाले को परमेश्वर का उपकरण होने, प्रतिभा सम्पन्न होने और इस उद्देश्य के लिए उसके द्वारा भेजे जाने की ज़रूरत है। बहुत से ऐसे हैं जो मंच (पुलपिट) पर खड़े होते तथा एक द्वार से दूसरे द्वार पर जाते हैं, जिन्हें परमेश्वर की ओर से नहीं भेजा गया होता है। पौलुस के दिनों में बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता थे, जिन्होंने अन्य सुसमाचार का प्रचार किया। प्रचार करनेवालों को परमेश्वर के लोग होने के साथ-साथ सत्य को जाननेवाले और परमेश्वर के अभिषेक, अगुवाई और बुलाहट के अधीन होना ज़रूरी है।

दूसरा, पूर्ण समय की सेवकाई में जानेवालों को न केवल परमेश्वर की आशीषों के साथ परन्तु उसके लोगों के साथ भेजे जाने की आवश्यकता है। उन्हें अपने समर्थन के लिए कलीसिया की आवश्यकता होती है, अत: वे जा सकते हैं। उन्हें अपने जीवनों में परमेश्वर की बुलाहट की पहचान कराने के लिए दूसरों की ज़रूरत होती है।

पौलुस पद 15 में यह कहते हुए यशायाह को उदधृत करता है, "उनके पांव क्या ही सोहावने हैं, जो अच्छी बातों को सुसमाचार सुनाते हैं!" यहां उस व्यक्ति के बारे में कुछ चीज़ बहुत ही सोहावनी है जिनके हृदय में इतना प्रेम और करूणा है कि प्रभु यीशु के प्रेम को उनमें बांटने के लिए हर चीज़ को पीछे छोड़ दें, जिन्होंने इसके बारे में कभी न सुना हो। इस तरह का कदम उठाने वाले परमेश्वर की दृष्टि में कीमती हैं। उनका हमारी दृष्टि में भी कीमती होना ज़रूरी है। इसका अर्थ यह होगा कि उसके लोग अपने समय और साधनों का निवेश उनमें तथा उनकी बुलाहट में करने को तैयार रहें।

परमेश्वर के वचन को बांटना सदैव सरल कार्य नहीं होता है। यशायाह इस सेवकाई की कठिनाई को समझ गया था। भविष्यद्वक्ता के संदेश को सदा अच्छी तरह से स्वीकारा नहीं गया था। बहुत से भविष्यद्वक्ताओं की हत्या इस कारण कर दी गई थी, क्योंकि उन्हें भेजनेवाले को अस्वीकार करने के साथ-साथ उसके संदेश को भी अस्वीकृत कर दिया गया था। अपनी सेवकाई में एक स्थान पर पहुंचकर यशायाह पुकार उठा, "प्रभु, किसने हमारे संदेश पर विश्वास किया?" वह अस्वीकार किये जाने का समय आ गया था। हमें यह स्मरण रखने की आवश्यकता है कि लोग परमेश्वर के वचन के प्रति नकारात्मक प्रतिक्रिया दे सकते हैं। कई बार उस संदेश के कारण जिसे हम सुनाते हैं हमें सताया भी जाएगा। तौभी, विषय की वास्तविकता यह है कि, "विश्वास परमेश्वर के संदेश को सुनने से आता है" (पद 17)। जिस बारे में व्यक्ति ने कभी सुना न हो वह उस पर विश्वास नहीं कर सकता। केवल एक ही तरीके से परमेश्वर के संदेश को सुना जा सकता है, कि कोई उसे उनके लिए लेकर जाए।

पौलुस पद 18 में हमें स्मरण कराता है कि जिस समय परमेश्वर के वचन को इस्राएल में भेजा गया तब इसे ग्रहण नहीं किया गया था। संदेश को उनके द्वारा अस्वीकृत किये जाने का अर्थ यह नहीं था कि परमेश्वर अपने लोगों के साथ समाप्त हो गया था। पौलुस हमें बताता है कि यद्यपि मूसा यह जानता था कि परमेश्वर इस्राएल के कारण अन्य देशों के मन में जलन उत्पन्न करेगा (पद 19)। वह दिन आएगा जब इस्राएल परमेश्वर की उन आशीषों को पाने की इच्छा करेगा जिन्हें उसने अन्यजातियों पर उण्डेला था।

परमेश्वर ने स्वयं को उन पर प्रगट किया जो उसे खोजते भी न थे (पद 20)। परमेश्वर ने अपने आत्मा को अन्यजातियों पर उण्डेला। वह उन तक पहुंचा और उन्हें आशीष देते हुए वह उन्हें अपने राज्य में लेकर आया। जबकि अन्यजातियों ने परमेश्वर की चीज़ों के लिए अपने हृदय को खोला था, तब

उसके अपने ही लोगों ने उसे अस्वीकार कर दिया था। परमेश्वर अपने हाथ उनकी ओर पसारे रहा था, लेकिन उन्होंने सुसमाचार के शुभ संदेश को स्वीकार करने से इंकार कर दिया था। तौभी, परमेश्वर ने अपने लोगों को पूरी तरह से अस्वीकारा नहीं था।

उद्धार किसी भी तरह के लोगों के लिए सीमित नहीं है। जो लोग विश्वास में होकर परमेश्वर को पुकारते हैं वह उन्हें आशीष देता है। लोगों को विश्वास करने से पहले सुनना ज़रूरी है। यदि लोग सुनने के लिए तैयार हैं तो हमें अपने घरों के आराम को छोड़कर उन तक जाने की ज़रूरत है। हमारे द्वारा लाए जानेवाले संदेश को हर कोई स्वीकार नहीं करेगा। परन्तु इसे ग्रहण कर इस पर विश्वास करनेवाले ही प्रभु यीशु को पुकारने के द्वारा बचाए जाएंगे।

विचार करने के लिए:

- प्रभु का नाम लेने अथवा पुकारने का क्या अर्थ है?
- परमेश्वर के वचन को बांटने के महत्व के बारे में हम यहां क्या सीखते हैं?
- यह परिच्छेद हमें उन लोगों की ज़रूरतों के बारे में क्या सिखाता है जिन्होंने पहले कभी सुसमाचार को नहीं सुना था?
- इस परिच्छेद में सुसमाचार को बांटने के साथ जुड़ी कठिनाईयों के बारे में हम क्या सीखते हैं?
- इस संदेश को बांटने में आपकी भूमिका क्या है?

प्रार्थना के लिए:

- परमेश्वर को आप तक अपने उद्धार के साथ पहुंचने के लिए धन्यवाद दें।
- परमेश्वर से आप पर अधिक स्पष्ट रूप से यह प्रगट करने को कहें कि वह आपसे कितना अधिक यह चाहता है कि आप उन लोगों तक पहुंचने चाहते हैं जिन्होंने वचन को पहले कभी नहीं सुना है।
- परमेश्वर से कहें कि आज वह किसी व्यक्ति के साथ सुसमाचार को बांटने हेतु आपके लिए द्वार खोले।
- परमेश्वर से परीक्षाओं और अस्वीकार किये जाने का सामना करने के लिए बल मांगें, जो कि वचन को बांटते समय निश्चय ही आएंगे।

क्या परमेश्वर ने अपने लोगों को अस्वीकार दिया है? 28

पढ़ें रोमियों 11:1-12

पौलुस अपने पाठकों को स्मरण करा रहा है कि मसीह में यहूदी और अन्यजाति के बीच कोई अन्तर नहीं है। परमेश्वर का नाम लेनेवाले बचाए जा सकते हैं। अध्याय 10 के अन्तिम विभाग में उसने हमें बताया कि उद्धार जबकि सबसे पहले यहूदियों को दिया गया था, उन्होंने इसकी ओर से मुंह फेर लिया था। मसीहा की अस्वीकृति कुछ महत्वपूर्ण प्रश्नों को लेकर आई। क्या परमेश्वर अब अपने लोगों के साथ समाप्त हो गया था? क्या उसने अब अपना पूरा ध्यान अन्यजातियों की ओर कर लिया था?

पौलुस इस प्रश्न का जवाब एक बहुत ही निश्चित "नहीं" के साथ देता है। वह अपने विषय बिन्दु का उदाहरण देने के लिए अपनी स्थिति का प्रयोग करता है। पौलुस बिन्यामीन के गोत्र से इब्राहीम का एक वंशज होने के कारण, एक यहूदी था। एक इस्राएली होने के कारण उसने यहूदी परम्परा की सम्पन्नता का अनुभव किया था, लेकिन परमेश्वर ने प्रभु यीशु के द्वारा उसे भी उसके पास से बचाया था। वह इस बात का एक जीवित प्रमाण था कि परमेश्वर ने अपने लोगों को पूरी तरह से अस्वीकार नहीं दिया था।

यद्यपि इस्राएल ने अपने भविष्यद्वक्ताओं को मार डाला था, तौभी परमेश्वर ने उन्हें पूरी तरह से अस्वीकारा नहीं था। पौलुस पद 3 में अपने पाठकों को भविष्द्वक्ता एलिय्याह को स्मरण कराता है। अपनी सेवकाई में एक समय पर भविष्यद्वक्ता परमेश्वर से पुकार उठा था,"हे प्रभु, उन्होंने तेरे भविष्यद्वक्ताओं को घात किया, और तेरी वेदियों को ढा दिया है; और मैं ही अकेला बच रहा हूँ, और वे मेरे प्राण के भी खोजी हैं।"

परमेश्वर ने एलिय्याह को यह बताते हुए सांत्वना दी कि उसने सात हज़ार ऐसे पुरुषों को बचा रखा है जिन्होंने अन्यजाति देवताओं के आगे कभी घुटने नहीं टेके थे। परमेश्वर ने एक निराशाजनक और बुरे समय में सात हज़ार यहूदियों को बचाकर सुरक्षित रखा था। उसने उन्हें चारों ओर फैली बुराइयों से बचाकर रखा था। पुनः यह पौलुस के लिए इस बात का प्रमाण था कि परमेश्वर का हाथ

अपने लोगों की कुछ संख्या पर था। परमेश्वर के पास अभी भी चुने हुए और अनुग्रह से बचाए गए यहूदी बाकी हैं (पद 5)।

पौलुस पद 7 में बताता है कि इस्राएली जिसकी खोज में थे वह उन्हें नहीं मिला (पद 7)। उन्होंने मसीहा की खोज की, परन्तु उनमें से बहुत ही कम ही उसे पा सके थे। उन्होंने उसे खोजा तो सही परन्तु जब वह आया तो वे उसे पहचान नहीं पाए। उन्होंने उसकी एक बहुत ही भिन्न तरीके से आने की अपेक्षा की थी।

पौलुस हमें बताता है कि इस्राएली कठोर थे और उन्हें उदासीनता की आत्मा दी गई थी, जिससे वे देख न सके। दाऊद अपने लोगों के विरुद्ध बोलते हुए परमेश्वर से कहता है: उनका भोजन उनके लिए जाल और फन्दा और ठोकर और दण्ड का कारण हो जाए। उनकी आंखों पर अंधेरा छा जाए ताकि न देखें, और तू सदा उनकी पीठ को झुकाए रख।

ये कठिन शब्द है, लेकिन यह हमारे लिए एक चेतावनी के रूप में होने चाहिए। यहूदियों ने परमेश्वर के लोग होने के कारण स्वयं पर घमण्ड किया लेकिन उन्होंने मसीहा को अस्वीकार दिया। उन्होंने भविष्यद्वक्ताओं का इन्कार कर उन्हें अस्वीकार दिया, इसी कारण परमेश्वर ने उन्हें उनके पापी हृदयों के अनुसार छोड़ दिया।

क्या सुधार होने के बाद भी उन्होंने ठोकर खाई? पौलुस इस पर बल देते हुए कहता है "नहीं!" इसके विपरीत वह हमें बताता है कि परमेश्वर के लोगों के लिए अभी भी आशा है। वास्तव में, उनके पाप और अस्वीकार किये जाने के कारण, उद्धार अन्यजातियों तक आया। उनके पाप और अस्वीकार किये जाने का अर्थ यदि यह था कि परमेश्वर अपना ध्यान संसार की ओर करते हुए अनगिनत लोगों को उद्धार में लाया था, तो कल्पना करें कि उस समय क्या होगा जब परमेश्वर उन्हें अपने पास लेकर आएगा। यदि परमेश्वर यहूदी जाति के पापी होने पर भी उसका प्रयोग संसार तक अपने उद्धार को लाने के लिए कर सकता है तो यदि वे उस की ओर फिर जाते हैं तो वह उनके लिए क्या करेगा, इसकी कल्पना करें। परमेश्वर ने अपने लोगों को अस्वीकारा नहीं है। उसके पास अभी भी उनके लिए एक योजना है।

परमेश्वर अपने आपको नहीं छोड़ता है। वह अपने हाथ हम पर रखकर हमारी देखभाल करता है। क्या यह उसकी ओर से निर्धारित नहीं था कि आज हम कहां होंगे? हम प्रत्येक चीज़ को उससे प्राप्त करते हैं। यदि परमेश्वर ने

यहूदी जाति को छोड़ दिया है तो ऐसी दशा में हमारे लिए क्या आशा होगी? हमें इस बात का निश्चय होना चाहिए कि चूंकि परमेश्वर ने यहूदियों को नहीं छोड़ा है, तो वह हमें भी नहीं छोड़ेगा।

विचार करने के लिये:

- यहूदी जाति के लिए परमेश्वर की योजना के बारे में यह परिच्छेद हमे क्या सिखाता है।
- परमेश्वर हमें पाप और बुराई से कैसे बचाता है, इस बारे में हमें यहां क्या सीखते हैं?
- क्या आपने परमेश्वर को आपको किसी पाप से दूर रखते हुए देखा है? व्याख्या करें।
- इस सच्चाई से आपको क्या सांत्वना मिलती है कि परमेश्वर ने यहूदियों को नहीं छोड़ा है? इससे आपको क्या आश्वासन मिलता है?

प्रार्थना के लिये:

- परमेश्वर को उसके उस तरीके के लिए धन्यवाद दें जिसमें उसने आपको बुराई और पाप से बचाकर रखा था।
- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि इस सच्चाई के बावजूद कि आपके सदैव उसके प्रति विश्वासयोग्य न रहने पर भी वह आपका प्रयोग करता है।
- परमेश्वर से उसके तथा उसके उद्देश्यों के लिए अपने हृदय को खोलने को कहें। उससे कहें कि वह आपका प्रयोग एक विस्तृत में करे।

घमण्ड के लिये कोई स्थान नहीं? 29
पढ़ें रोमियों 11:13-24

पौलुस इस सच्चाई के बारे में बोल रहा है कि जहां तक उद्धार का संबन्ध है उसमें यहूदी और अन्यजाति के बीच कोई अन्तर नहीं है। यहूदियों द्वारा यीशु को अपने उद्धारकर्त्ता के रुप में अस्वीकारे जाने के बाद भी परमेश्वर ने उन्हें पूरी तरह से नहीं छोड़ा।

पौलुस के दिनों में यहूदियों के लिए इसे स्वीकार करना बहुत कठिन था कि परमेश्वर अन्यजातियों को भी यहूदियों के समान ही ग्रहण कर सकता है। इस सच्चाई ने कि यहूदियों द्वारा उद्धार को अस्वीकार किये जाने के बाद अन्यजातियों ने इसे स्वीकार किया, कुछ की इस पर विश्वास करने में अगुवाई की है कि वे यहूदियों से अच्छे थे। यही मानसिकता पीढ़ी र पीढ़ी आगे जाती रही है यहूदी जाति के इतिहास ने यह प्रगट किया कि मसीही राष्ट्रों के हाथों उन्हें अद्वितीय रूप से दुख उठाना पड़ा।

पौलुस, जिसने यहूदी जड़ों को दृढ़ता से थामे रखा था, उसे अन्यजातियों के मिशनरी के रूप में जाना जाता है। उसे प्रभु द्वारा दी गई सेवकाई पर गर्व था। यह व्यक्तिगत कीमत के बिना नहीं आई थी। उसके अपने यहूदी बहन भाइयों ने यह अनुभव नहीं किया था कि उसे अन्यजातियों के बीच प्रचार करना चाहिए। उन्हें लगता था कि उनके साथ रहने के कारण उसने स्वयं को अशुद्ध कर लिया था। कई बार उसे अन्यजातियों को सुसमाचार में अपने बराबर के सहभागी ग्रहण करने के कारण पीटा गया व अस्वीकारा गया था। इस अस्वीकारे जाने के बावजूद, पौलुस पद 13 में हमें बताता है कि उसने अपनी सेवकाई में फलों को देखा था। वह अन्यजातियों के लिए अपनी बुलाहट के कारण लजाता नहीं था। वह अन्यजातियों के खातिर यहूदी भाई बहनों से भी अस्वीकृति पाने और दुख उठाने के लिए तैयार था।

अन्यजातियों की सेवा करने के लिए पौलुस द्वारा अपने भाइयों से सताव को ग्रहण करने का एक कारण यह भी था कि इससे यहूदियों में जलन उत्पन्न हो। यद्यपि वह अन्यजातियों का एक प्रेरित था, तौभी वह कभी भी अपने लोगों को भूला नहीं था। वह चाहता था कि यहूदी देखें कि परमेश्वर अन्यजातियों में क्या कर सकता है, ताकि वे भी अपने हृदयों में उसे ग्रहण करने के लिए उत्तेजित हो सकें (पद 14)।

पौलुस की सेवकाई का परिणाम यह था कि परमेश्वर का आत्मा विभिन्न देशों के लोगों पर उण्डेला गया और बहुतों ने परमेश्वर के उद्धार को ग्रहण किया। यहूदियों द्वारा सुसमाचार को अस्वीकार किये जाने के कारण परमेश्वर के आत्मा ने देशों के बीच गतिशील होना आरम्भ किया था। पौलुस अपने पाठकों को इस पर ध्यान देने की चुनौती देता है कि यहूदियों का सुसमाचार को अस्वीकार करना यदि बहुत से अन्यजातियों के परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने का कारण बना तो उस समय परमेश्वर क्या करेगा जब वे यीशु और उसके उद्धार को ग्रहण करेंगे? पद 15 में ध्यान दें कि पौलुस कहता है, "उनका ग्रहण किया जाना मरे हुओं में से जी उठने के बराबर न होगा।" वह यहां 'होगा' शब्द का प्रयोग करता है। पौलुस का एक बहुत स्पष्ट भाव था कि परमेश्वर यहूदी जाति में एक शक्तिशाली कार्य करने जा रहा था। उसने इस पर विश्वास किया कि वह दिन आएगा जब बड़ी संख्या में लोग प्रभु यीशु की ओर फिरेंगे, और उसने अन्त में यहूदियों के मसीह की ओर फिरने पर बड़ी और शक्तिशाली चीज़ों के होने की अपेक्षा की।

पौलुस ने उन अन्यजातियों को संबोधित किया जिनका यह विश्वास था कि प्रभु यीशु को ग्रहण करने के कारण वे यहूदियों से श्रेष्ठ हैं (पद 16)।

वह उनके विश्वास की मूर्खता को उन्हें दिखाने के लिए दो उदाहरणों का प्रयोग करता है। वह सबसे पहले रोटी का उदाहरण देता है। वह उन्हें स्मरण कराता है कि यदि रोटी बनाने के लिए अच्छे आटे का प्रयोग किया जाए तो उससे अच्छी रोटी बनेगी। दूसरी ओर, यदि आटा अच्छा न हो तो रोटी भी अच्छी नहीं बनेगी।

दूसरा उदाहरण पौलुस एक वृक्ष का देता है। यदि पेड़ की जड़ की दशा अच्छी न हो तो उसकी डालियां भी अच्छी न होंगी और वृक्ष में फल नहीं लगेगा।

पौलुस इन उदाहरणों में क्या कह रहा है? वह अन्यजातियों को बता रहा है कि उनकी जड़ें यहूदी विश्वास में थीं। यहूदियों का परमेश्वर उनका परमेश्वर था। प्रभु परमेश्वर ने यहूदी जाति के द्वारा उन्हें मसीहा को देने का चयन किया था। यहूदी जाति के पिता- इब्राहीम, इसहाक और याकूब उनके भी आत्मिक पिता थे। पुराने नियम के लेख यहूदी और मसीही दोनों के ही लेख थे। मसीहियत की जड़ें यहूदीवाद में दृढ़ता से रोपी गई थीं। यदि उद्धार यहूदियों के लिए नहीं था तो यह अन्यजातियों के लिए भी कभी नहीं होता। यहूदियों ने प्रत्येक चीज़ अपने यहूदी भाईयों से ली थी।

पौलुस अन्यजातियों को आगे स्मरण कराते हुए उदाहरण देता है कि उन्हें एक यहूदी वृक्ष में रखा गया है। वे जंगली डालियां थीं जिन्हें यहूदी जड़ों द्वारा जीवन दिया गया। यहूदीवाद के लेखों ने उन्हें आशा दी। यहूदी जाति के भविष्यद्वक्ताओं ने उन्हें चेतावनी और आशीषें दीं। यहूदीवाद के परमेश्वर ने उन्हें ग्रहण कर अपनी सन्तान बनाया। ये जंगली डालियां, यहूदी जड़ों से पोषित होकर यह कैसे सोच सकती हैं कि वे जड़ से श्रेष्ठ हैं? पौलुस के लिए यह अविचारनीय था कि अन्यजाति यहूदियों के साथ तुच्छता का व्यवहार करें।

पौलुस यह जान गया था कि बहुत सी यहूदी डालियों को इस कारण से तोड़ दिया गया था ताकि उनके स्थान पर अन्यजाति डालियों को रखा जा सके। वह जानता था कि परमेश्वर ने कुछ समय के लिए अपने लोगों से उनके द्वारा अपने पुत्र को अस्वीकारे जाने के कारण मुंह फेर लिया था। इससे अन्यजातियों को यहूदियों पर गर्व करने का कोई कारण नहीं था। यदि उन्हें कुछ मिला था तो वह भय का एक बड़ा कारण था।

पौलुस अन्यजातियों को चेतावनी देता है कि परमेश्वर जिसने अपने उन लोगों को स्वयं से अलग कर दिया, जिन्हें उसने सबसे अधिक प्रेम करने के साथ-साथ आशीषित भी किया था; तब वह निश्चय ही विदेशियों के साथ भी वैसा ही करने से न हिचकिचाएगा। गर्व करने के विपरीत, उन्हें यह सीखने की ज़रूरत है कि परमेश्वर उन्हें अपने लोगों के द्वारा सीखा रहा था। उन्हें परमेश्वर के भय और आज्ञाकारिता में रहने की ज़रूरत थी जिससे वह उनकी ओर से फिर न जाए।

पद 22 में, पौलुस ने अन्यजातियों को परमेश्वर की कृपा और कड़ाई पर ध्यान देने की चुनौती दी। जिसने उन्हें अस्वीकार किया उसने उनका न्याय किया। उसने पाप और बुराई को दण्डित किया। तथापि, उसी समय में वह उनके लिए महान करूणामयी व दयालु प्रभु भी है जो विश्वास में बने रहते हैं। परमेश्वर का आत्मा उन्हें राज्य में लाते हुए सामर्थ के साथ अन्यजातियों में गतिशील था। तथापि, हम पर इस बात का प्रभाव है कि यदि उन्होंने यहूदियों के समान अपना मुंह परमेश्वर से फेरते हुए उसके आत्मा को शोकित किया, तो वह भी उन्हें उनकी बुराई और पाप में छोड़ते हुए अपनी आत्मा को उनसे फेर लेगा।

पद 23 में पौलुस ने अपने पाठकों को बताया कि यदि यहूदी अविश्वास में डटे न रहे तो परमेश्वर उन्हें पुनः ग्रहण करेगा। यदि परमेश्वर के परिवार में हमें विदेशी के रूप में ग्रहण किया गया था तो परमेश्वर अपने लोगों को ग्रहण करने में कितना अधिक आनन्दित होगा?

पौलुस हमें यहां यह बता रहा है कि यहूदी भाइयों और बहनों के पास गर्व करने का कोई कारण नहीं है। हमने बहुत कुछ उनसे लिया है। उन्होंने हमें लेख (पवित्रशास्त्र) दिये हैं। परमेश्वर जो शिक्षा हमें उनके द्वारा दे रहा है उसे हमें सीखने की ज़रूरत है। हमें यह भी सीखने की ज़रूरत है कि जंगली डालियां होने के कारण हम आत्मा को इतना दुखी कर सकते हैं कि वह हमसे अपना मुंह फेर ले। पौलुस एक जाति अथवा राष्ट्र के जीवन में आत्मा के कार्य के बारे में बता रहा है। वह यह नहीं कह रहा है कि हम अपने उद्धार को खो सकते हैं। तथापि वह यह कह रहा है कि हम आत्मा को इतना शोकित कर सकते हैं कि वह अपनी उपस्थिति को हटा देता है। एक राष्ट्र व जाति के लिये यह कितनी भयानक चीज़ हो सकती है कि परमेश्वर के आत्मा को शोकित करने पर प्रभु अपने अनुग्रह और आशीष को हटा ले। राष्ट्र अपने पाप के अंधकार में डुबा हुआ है। अपराध और हिंसा में बहुत वृद्धि हुई है। भौतिकवाद और अनैतिकता का संस्कृति पर प्रभुत्व है। भ्रष्टाचार, बेईमानी और घमण्ड का नियंत्रण है। उद्धार बहुत कम है। हृदय कठोर हो गए हैं। परमेश्वर का वचन लोगों के हृदयों व जीवनों में जड़ पकड़ता प्रतीत नहीं होता। एक राष्ट्र के रूप में हमारे लिए उस सब के प्रति अपने हृदय को खुला रखना कितना महत्वपूर्ण है जो कुछ परमेश्वर का आत्मा कह रहा है। ऐसा न हो कि हम अपने देश में उसकी सेवकाई से अलग कर दिये जाएं।

विचार करने के लिये:

- यहूदियों के लिये पौलुस के हृदय के बारे में हम यहां इस परिच्छेद में क्या देखते हैं?
- अपने यहूदी भाइयों और बहनों से हमने क्या प्राप्त किया है?
- यहूदियों को परमेश्वर के आत्मा की सेवकाई से अलग किये जाने से हमें क्या शिक्षा लेने की ज़रूरत है?
- एक राष्ट्र अथवा जाति के रूप में हम आज पवित्र आत्मा को कैसे दुखी करते हैं, पवित्र आत्मा को दुखी करने वाले राष्ट्रों में आप क्या देखने की अपेक्षा करेंगे?
- हम अपने व्यक्तिगत जीवनों में पवित्र आत्मा को कैसे दुखी कर सकते हैं? परिणाम क्या हैं?

प्रार्थना के लिए:

- अपने जीवन में आपने जब जब पवित्र आत्मा को दुखी किया उसके लिये परमेश्वर से क्षमा मांगें।
- परमेश्वर से अपने राष्ट्र में धैर्य रखने और आपके बीच में आपके कार्य को जारी रखने के लिए कहें।
- परमेश्वर से यहूदी जाति को उसके निकट लाने को उनके बीच गति करने को कहें।
- परमेश्वर से आपके जीवन में किसी भी तरह से पवित्र आत्मा को दुखी करनेवाले कार्य को दिखाने के लिए कहें। उससे पश्चात्ताप करने के अनुग्रह को मांगें।

इस्राएल की आशा

30

पढ़ें रोमियों 11:25–26

पौलुस अन्यजातियों को उस ऋण का स्मरण करा रहा है जिसे उन्होंने यहूदियों से लिया है। उन्हीं के द्वारा परमेश्वर संसार के उद्धारकर्त्ता को लेकर आया। उन्हीं के द्वारा उसने पवित्रशास्त्र दिया। उनकी अस्वीकृति के कारण प्रभु का आत्मा उनसे फिर गया था।

पद 25 में पौलुस आगे कहता है कि जब तक अन्यजातियां पूरी तरह से प्रवेश न कर लें, तब तक इस्राएल का एक भाग ऐसा ही कठोर रहेगा। इसने हमारा इस पर विश्वास करने की नेतृत्व किया कि परमेश्वर की योजना और उद्देश्य में, यहूदी जाति के जीवन में अभी भी एक महान् कार्य को पूरा होना था। परमेश्वर उन्हें नहीं भूला है जिन्हें उसने मूल रूप से अपने लोग होने के लिए बुलाया है। कुछ क्षण के लिए, परमेश्वर का आत्मा अन्यजातियों के बीच गतिशील है परन्तु एक दिन आएगा जब परमेश्वर का आत्मा वापस लौटकर यहूदियों के बीच गतिशील होगा। जब परमेश्वर द्वारा बुलाए गए लोगों की गिनती पूरी हो जाएगी तब परमेश्वर अपने लोगों को एकत्रित करेगा। यह स्पष्ट है कि इसे प्रभु यीशु से अलग हटकर नहीं किया जाएगा। परमेश्वर तक जाने का एकमात्र मार्ग प्रभु यीशु है। जब परमेश्वर यहूदियों में गतिशील होगा तब वे मसीहा को जान पाएंगे। वह दिन कितना अद्भुत दिन होगा।

ध्यान दें कि पौलुस ने पद 26 में रोमियों को बताया कि सभी बचाए जाएंगे। हमें इस वाक्यांश की अधिक सभी विस्तार से जांच करने की ज़रूरत है। यशायाह से उद्धृत करते हुए पौलुस ने अपने पाठकों को स्मरण कराया कि यरूशलेम से एक छुड़ानेवाला आएगा जो लोगों को उनके पापों से फिराकर उनके साथ एक विशेष वाचा को बांधेगा। पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता परमेश्वर के लोगों के पाप और विद्रोह पर दुखी थे, इसलिये यह समाचार एक बड़े अंधकार के बीच नई आशा को लेकर आया।

इस परिच्छेद की महत्वपूर्ण चीज़ यह है कि पौलुस हमें बताता है कि "सारा" इस्राएल बचाया जाएगा अथवा उद्धार पाएगा। उसका इस छोटे से शब्द "सारा" से क्या अभिप्राय है? क्या इसका अर्थ यह है कि हरेक यहूदी उद्धार पाएगा? ऐसा किसी भी तरह से संभव नहीं हो सकता, क्योंकि बहुत से यहूदियों ने पहले से ही प्रभु यीशु का इन्कार कर दिया है। इस परिच्छेद को समझने के

लिये यह महत्वपूर्ण है कि पौलुस जिसे हमें अपने पहले के पत्रों में बताता है उसे हम उसी संदर्भ में देखते हैं।

स्मरण रखें कि रोमियों 9:6 में पौलुस ने कहा कि इब्राहीम के सभी वंशज सच्चे इस्राएली नहीं थे। सच्चे इस्राएली वही थे जिन्होंने प्रभु से प्रेम किया और आत्मा व सत्य में होकर उसकी आराधना की। चाहे परिस्थितियां कैसी भी क्यों न हों, परमेश्वर के पास सदा से इस्राएलियों का एक ऐसा भाग बचा रहा है जिनका संबन्ध सच में उसके साथ था। परमेश्वर ने याकूब को तो ग्रहण किया परन्तु एसाव का इन्कार किया। परमेश्वर ने इसहाक को ग्रहण किया परन्तु इश्माएल का इंकार कर दिया। जब पौलुस हमें यह बताता है कि सारा इस्राएल उद्धार पाएगा तो इससे उसका अभिप्राय यह नहीं है कि प्रत्येक पुरुष, स्त्री और यहूदी माता–पिता से जन्मे बच्चे के साथ ऐसा होगा। वह उनका उल्लेख कर रहा है जिनका संबन्ध "सच्चे इस्राएल" से है, अर्थात् परमेश्वर के चुने हुए लोग।

इस वर्तमान समय में परमेश्वर अन्यजातियों को यहूदी जड़ में रोप रहा है (देखें रोमि.11:17)। ये अन्यजाति अब सच्चे इस्राएल का एक भाग हैं। तथापि, यह गिनती तब तक पूरी नहीं होगी जब तक कि इसमें इस्राएल को चुने हुओं को शमिल नहीं कर लिया जाता है। पौलुस हमें बता रहा है कि परमेश्वर उन लोगों की संख्या को पूरा करने के लिए यहूदी जाति के बीच एक अन्तिम कार्य को करेगा जो कि उसकी देह का निर्माण करेंगे। तब परमेश्वर के चुने हुए "सभी" लोग उद्धार पाएंगे।

पौलुस ने पद 28 में रोमियों को बताया कि जहां तक सुसमाचार का संबन्ध है यहूदी मौजूदा समय में उनके शत्रु थे परन्तु वे अभी भी परमेश्वर के प्यारे हैं। परमेश्वर के पास अभी भी उनके लिए एक योजना है। पौलुस के दिनों में बहुत से यहूदियों ने सुसमाचार के संदेश का इन्कार किया। कुछ, जिनमें पौलुस भी शमिल था, खुले रूप से मसीहियों के बैरी थे। कलीसिया के आरम्भिक दिनों में यहूदियों ने कई मसीहियों की हत्या की तथा उन्हें सताया था। तौभी, इस सबके बावजूद, परमेश्वर उन्हें लोगों के रूप में भूला नहीं था। उसके पास अभी भी उनके उद्धार के लिए योजना है। वह अभी भी उनसे प्रेम करता है।

इसका एक कारण यह भी है कि परमेश्वर अपनी बुलाहट से पीछे नहीं हटता (पद 29)। परमेश्वर ने यहूदी जाति को अपने लोग होने के लिए बुलाया था। उसने उनके पूर्वजों से प्रतिज्ञा की थी और वह अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करने से पीछे नहीं हटेगा। यहूदियों ने उसे कई बार क्रोधित कर उकसाया, परन्तु परमेश्वर उनके प्रति महान धैर्य को दिखाते हुए उन से प्रेम करता रहा। वह उन्हें

कभी नहीं छोड़ेगा। वह उनसे एक जाति के रूप में की गई प्रतिज्ञा के प्रति सच्चा रहेगा।

जिस तरह से अन्यजाति एक समय में अंधकार और प्रभु की अनाज्ञाकारिता में रह रहे थे, उसी तरह से आज यहूदी भी उसी अंधकार और अनाज्ञाकारिता में रह रहे हैं। यीशु मसीह के आने तक यहूदियों को मसीहा का इन्कार करने के कारण अंधकार में डाल दिया गया है। पौलुस हमें स्मरण कराता है कि परमेश्वर ने जिस तरह से अन्यजातियों के लिए द्वार को खोला उसी तरह से वह यहूदियों पर करूणा और उद्धार को प्रगट करने हेतु उनके लिए पुनः द्वार को खोलेगा।

परमेश्वर अपने पूरे उद्देश्य में कई बार हमें कुछ समय के लिए अंधकार में बांधकर रखता है जिससे वह हम पर अपनी करूणा और दया को प्रगट कर सके। वास्तव में हम परमेश्वर की करूणा और दया को कभी समझ नहीं पाते यदि वह हमारे पाप और विद्रोह के लिए नहीं होते। यीशु लूका के सुसमाचार में हमें स्मरण कराता है कि उससे सबसे अधिक प्रेम करनेवाले वे हैं जिन्हें सबसे अधिक क्षमा मिली है (लूका 7:47)।

पौलुस हमें यह भी बताता है कि परमेश्वर अपने प्रेम, करूणा और दया की गहराई को हम पर प्रगट करने से पहले हमारे पाप और विद्रोह को हम पर प्रगट करेगा (पद 32)। मेरे जीवन में ऐसे भी समय रहे हैं जब मैं अपने पाप और कमज़ोरियों से पराजित हुआ हूँ। ऐसे समय भी आए हैं जब परमेश्वर दूर होता प्रतीत हुआ है। ऐसा लगता था कि मानों मैं अंधकार में डूब गया था और मुझे ऐसा अनुभव होता था कि परमेश्वर मुझमें होकर अब नहीं चल रहा था। विषय की वास्तविकता यह है कि जब तक हम जंगल का सामना नहीं करेंगे तब तक हम कभी भी प्रतिज्ञात् भूमि की सराहना नहीं कर पाएंगे।

परमेश्वर के मार्ग अगम हैं (पद 33)। हम उसके उद्देश्य और योजना को कभी भी पूरी तरह से प्राप्त नहीं कर पाएंगे। कुछ समय पहले मैं एक व्यक्ति से मिला जिसने मुझसे त्रिएकता के सिद्धान्त पर बोलना आरम्भ कर दिया। वह यह नहीं समझ सका था कि परमेश्वर कैसे परमेश्वर होने पर भी पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के रूप में था। उसे लगा कि वह इस सिद्धान्त को इसलिये नहीं समझ पाया था क्योंकि यह सत्य नहीं था। मैंने उससे यह कहते हुए अपनी प्रतिक्रिया दी: "मुझे इस बात की खुशी है कि परमेश्वर के बारे में बहुत सी चीज़ों को मैं समझ नहीं सकता हूँ, क्योंकि यदि मैं परमेश्वर को समझ पाता और उसे अपने इस छोटे से मस्तिष्क में रख पाता तो निश्चय ही वह बहुत बड़ा नहीं

होता।" कई बार अपने भय के बावजूद हमें केवल परमेश्वर पर विश्वास करना होता है।

कई बार ऐसे समय भी आते हैं जब हम सोचते हैं कि हमें परमेश्वर को यह बताने की ज़रूरत है कि क्या करना है। जब वह हमारी इच्छा के अनुसार चीज़ों को नहीं करता है तो हम उससे नाराज़ हो जाते हैं। हम सोचते हैं कि वह हमें नहीं समझता। पौलुस हमें स्मरण कराता है कि हममें से कोई भी परमेश्वर को सलाह नहीं दे सकता है। जब हमें पूरा चित्र दिखाई नहीं देता हमें तब भी उस पर भरोसा करने की ज़रूरत है।

पौलुस हमें स्मरण कराता है कि प्रभु परमेश्वर सभी चीज़ों का स्त्रोत है। हम उससे ली गई प्रत्येक श्वास के ऋणी हैं। उसके बिना किसी का भी अस्तित्व नहीं है। वह सभी चीज़ों को एक स्थान पर रखकर उन्हें बनाए रखता है। ऐसी कोई भी चीज़ नहीं है जिसे हम परमेश्वर को देते हैं वह पहले परमेश्वर द्वारा हमें न दी गई हो। वह एक अद्‌भुत परमेश्वर है जोकि हमारी स्तुति और आराधना के योग्य है। संभव है कि हम कभी भी उसके उद्देश्यों को समझ न पाएं; परन्तु हम इस पर पूरी तरह से भरोसा कर सकते हैं।

परमेश्वर संसार के इतिहास में अपने उद्देश्यों पर कार्य करेगा। उसके मार्ग भले ही अगम हों लेकिन वे सिद्ध हैं और जो कुछ वह कर रहा है हम उस पर पूरा भरोसा रख सकते हैं। हो सकता है कि आपको ऐसा लगता हो कि आप यहूदी जाति के समान अंधकार में रह रहे हैं। हिम्मत रखें, परमेश्वर ने आपको छोड़ा नहीं है। जिन परीक्षाओं और अंधकार का सामना आप कर रहे हैं उनका प्रयोग वह आपको अपने निकट लाने के लिए करेगा। वह आपको नहीं छोड़ेगा। चाहे आप उसके मार्गों को समझते न हों, तौभी आप उस पर भरोसा कर सकते हैं।

विचार करने के लिये:

- पौलुस यहां हमें यहूदी जाति के लिए परमेश्वर की योजना और उद्देश्य के बारे में क्या सिखाता है?
- परमेश्वर ने आप पर आपके अपने पापों को कैसे प्रगट किया? इसने उसके अनुग्रह को अधिक पूर्णता के साथ जानने में आपकी सहायता कैसे की है?
- परमेश्वर को ग्रहण करने के लिए क्या आप उसे समझना चाहते हैं? क्या आप उसके उद्देश्यों और योजनाओं पर भरोसा रखने से पहले उन्हें समझना चाहते हैं?

- यह परिच्छेद हमारे द्वारा सामना किये जानेवाले अंधकार और परीक्षाओं के बारे में क्या सिखाता है?

प्रार्थना के लिये:

- परमेश्वर से कई बार उसे न समझ पाने के लिए क्षमा मांगें क्योंकि आप उसके उद्देश्यों को समझ नहीं पाए थे।
- परमेश्वर को उस समय में आपको जन्म देने के लिए धन्यवाद दें जब परमेश्वर का आत्मा अन्यजाति राष्ट्रों के बीच गतिशील था। उसे धन्यवाद दें कि उसने उसे व्यक्तिगत रूप से जानने का विशेषाधिकार आपको दिया।
- परमेश्वर से अपने विस्मय के भाव का नवीकरण कराने को कहें कि वह कौन है और इस संसार में क्या कर रहा है।

  परमेश्वर को धन्यवाद दें कि वह अपनी प्रतिज्ञाओं के प्रति सदैव विश्वासयोग्य बना रहेगा और यह कि वह पूरी तरह से विश्वासयोग्य है।

  उसे धन्यवाद दें कि वे अपनों को भूलता नहीं

समर्पित और रूपान्तरित

31

पढ़ें *रोमियों 12:1, 2*

पौलुस ने अपना अधिकांश समय इस पत्र में हमें प्रभु यीशु द्वारा हमारे लिए किये उद्धार के कार्य का वर्णन करने में बिताया है। विदेशी और प्रभु के बैरी होने पर भी, उसने हम तक पहुंचकर हमें हमारे पापों से बचाया। उसने क्रूस पर अपने जीवन को देने के द्वारा हमें दण्ड से स्वतंत्र किया है। उसने अपने आत्मा को हमारा मार्गदर्शक व परामर्शदाता होने के लिए हम में रखा है। पौलुस रोमियों 12:1-2 में अपने जीवनों में मसीह के कार्य को अनुभव करनेवालों के लिए दो चुनौतियों को लेकर आता है।

अपने शरीरों को जीवित बलिदान के रूप में चढ़ाएं ।

पहली चुनौती अपने शरीरों को जीवित बलिदान के रूप में परमेश्वर के सम्मुख चढ़ाने की है। अपने शरीरों को बलिदान के रूप में चढ़ाने का अर्थ क्या है? यदि हम अपने शरीरों को परमेश्वर के प्रति जीवित बलिदान के रूप में चढ़ाने जा रहे हैं, तो हमें अपने भीतर पाई जानेवाली इच्छाओं और विचारों के लिए मरना होगा। जिस क्षण, हम स्वयं को प्रभु के लिए चढ़ाते हैं तभी से हम अपने जीवनों में उसे अधिकार दे देते हैं। अब हम उसे प्रसन्न करने के लिए कार्य करते हैं। वह हमें मिशन क्षेत्र में भी भेज सकता है। हो सकता है कि वह हमें बिमारी के समय से गुज़रने दे ताकि उसमें हमारी जांच होने के साथ-साथ सफाई भी हो सके। जब हम अपने शरीरों को प्रभु के लिए बलिदान चढ़ाते हैं तो उनका संबन्ध हमसे नहीं रहता। हम सारे अधिकार को सौंप देते हैं। अब वह हमारे जीवनों का प्रभु हो जाता है और हम उसके प्रभुत्व के अधीन आ जाते हैं।

प्रेरित पौलुस के अनुसार, हमारे लिए ऐसा करना उचित है। इससे कम कुछ भी करना प्रभु यीशु को अपमान देने का कारण बनेगा जिसने हमारे लिए स्वयं को दे दिया था। पद 1 में ध्यान दें कि पौलुस हमें बताता है कि इस तरह से स्वयं को सौंपना आराधना का एक कार्य है। हर बार हम अपनी रुचियों के लिए मरने और परमेश्वर की मांगों को पूरा करने का चुनाव करते हैं, ऐसा करते हुए हम उसे आदर देते हैं। जब हम अनैतिकता की ओर से इस कारण से मुंह फेर लेते हैं कि इससे परमेश्वर का अनादर होगा, तब ऐसा करके हम स्वयं को उसकी आराधना के लिए चढ़ाते हैं। इन शरीरों के रखवाले होने के कारण हम अपने शरीरों को शुद्ध और पवित्र रखते हुए प्रभु की महिमा करते हैं।

संसार के सदृश्य न बनें

पद 2 में पौलुस जिस दूसरी चुनौती को लेकर आता है वह इस संसार के सदृश्य न बनते हुए "हमारी बुद्धि के नये हो जाने से बदलते जाना" है। पहली चुनौती देह के साथ करने की है; दूसरी हमारे मन के साथ करने की है। हमें अपने शरीरों को परमेश्वर को सौंपते हुए उन्हें शुद्ध और पवित्र रखना है। हमें इसी तरह की चीज़ें अपने मन में भी करनी हैं।

यहां पद 2 में पौलुस ने इस संसार की रीति पर बने न रहने की चुनौती दी है। इससे उसका अभिप्राय इस संसार के दर्शनशास्त्र से है। अन्य शब्दों में, हमें अपने चारों ओर के अविश्वासियों के समान विचार नहीं रखने हैं। इस पर विचार करने के लिए कुछ समय लें कि यह संसार कैसे सोचता है। इस टिप्पणी को लिखते समय मैं स्वयं को प्रायः अपने निकट के कॉफी हाऊस में पाता था। इन, कॉफी हाऊस में लोग अक्सर बात करने और अपने विचारों को बांटने के लिये आते थे। यह महत्व नहीं रखता था कि वहां एकत्रित होनेवाले लोग कितने महत्वपूर्ण हैं। वे वहां आकर अपनी पार्टियों के बारे में और यह बताते थे कि वे कितनी शराब पीते हैं। वे अपने अनैतिक संबन्धों और टूटे परिवारों के बारे में बात करते थे। वे प्रायः उन लोगों से बदला लेने की बात करते थे जिन्होंने उनके प्रति अपराध किया होता था। उन्हें संसार की चीज़ों में मज़ा आता था और वे प्रभु यीशु के साथ कुछ करना नहीं चाहते थे । मुझे एक अवसर की याद है जब मैंने एक व्यक्ति को क्रोधित अवस्था में कॉफी हाऊस की ओर आते देखा था क्योंकि एक पास्टर ने उससे प्रभु यीशु के बारे में बात की थी। उसने वहां उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति को बताया कि प्रभु यीशु के बारे में बताने के कारण उसने उस पास्टर को घूंसा मारा था। संसार इस तरह से सोचता है।

पौलुस हमें बताता है कि संसार का सोचना परमेश्वर की विचारधारा के प्रतिकूल है। हमें संसार को हमारी विचारधारा का नेतृत्व करने की अनुमति नहीं देनी चाहिए। हमें यह जानना है कि हमारी बुद्धि का संबन्ध प्रभु यीशु से है और हमें उसे चारों ओर फैली बुराई से बचाना है। हमें इस संसार की गंदगी को अपने मनों में आने का अवसर नहीं देना है जिसे परमेश्वर के प्रति अर्पित कर दिया गया है। हमारे मन हमारी देहों के समान परमेश्वर का मन्दिर हैं।

मन के पापों को छिपाना बहुत आसान है। आप एक भाई या बहन से क्रोधित होने पर भी हो सकता है कि पर इसे प्रगट न करें। आप अपनी कलीसिया में किसी की लालसा कर सकते हैं और कोई इसे जानता भी न हो। आपमें बुरे विचार हो सकते हैं और कोई उन्हें जानता भी न हो। परन्तु आपको यह जानना है कि

परमेश्वर इसे जानता है। यदि आप देह और मन के रखवाले होने में गंभीर हैं, जिसे आपने परमेश्वर को चढ़ाया है तो आप सताव का सामना करेंगे जिससे कोई भी अशुद्ध चीज़ आपके मन और देह को अशुद्ध न करने पाए।

हमारे लिए अपने आस-पास की चीज़ों से स्वयं को सुरक्षित रखना कैसे संभव है? जबकि यह सत्य है कि हमें अपने अहम् को ऐसे स्थानों और चीज़ों से सुरक्षित रखने की जरूरत है जहां हमारे मन परीक्षा में पड़ सकते हैं, परन्तु यह केवल आंशिक समाधान होगा। हमें अश्लीलता को अपने हृदयों में इसकी कल्पना करने के लिए नहीं देखना है। पापी देह स्वयं ही बुरी चीज़ों की कल्पना करने के योग्य है।

पौलुस हमें बताता है कि यदि हम अपने मनों को इस संसार के सदृश होने से बचाना चाहते हैं तो इसके लिए हमें अनुशासन से अधिक की आवश्यकता होगी। हमें हमारे मनों को नया बनाने के द्वारा बदलने की ज़रूरत है।

हमारे मन कैसे बदलते हैं? वे दो तरीकों से बदलते हैं। सर्वप्रथम, वे अपने विचारों के लिये मरने और पवित्र आत्मा के नेतृत्व के प्रति समर्पित होने के द्वारा बदलते हैं। पवित्र आत्मा ही हमें मसीह का मन देता है। वह हमें बदलने और नया करने के लिए आया है। हमें उसके द्वारा हममें किये जाने वाले कार्य के प्रति समर्पण करना चाहिए। हमें उसकी आवाज़ को सीखना चाहिए। हमें उन चीज़ों से अलग होना है। जिनके लिए वह हमें ऐसा करने को कहता है। वह धार्मिकता में हमें प्रशिक्षित करेगा। वह हमें दिखाएगा कि क्या पवित्र है। अपने मन के नये होने के द्वारा बदलने के लिए पवित्र आत्मा के शुद्ध किये जाने वाले कार्य के प्रति समर्पण करना होता है।

अपने मनों को बदलने के लिए हमें जिस दूसरी चीज़ को करने की जरूरत है वह परमेश्वर के वचन में संतृप्त होना है। यदि हम अपने मनों को बदलना चाहते हैं तो हमे उसे समझने की ज़रूरत है जो परमेश्वर हमसे अपेक्षा करता है, और यह पुराने और नये नियम के लेखों में पाया जाता है।

यदि आपने इस टिप्पणी के द्वारा कार्य करने के लिए समय निकाला है तो आप अपने मन के बदल जाने के मार्ग पर हैं। यदि आप परमेश्वर के वचन को पढ़ रहे हैं तो इस पर विश्वास करें और इसके प्रति समर्पण करें। जब आप ऐसा करते हुए वचन का आज्ञापालन कर इसकी जांच करते हैं तो आप इसे सत्य होता पाएंगे। आप यह देखना आरम्भ करेंगे कि यह संसार कितना उथला और निरर्थक है। आप एक नये तरीके से परमेश्वर के उद्देश्यों की सराहना करना आरम्भ करेंगे।

जिन लोगों ने प्रभु के उद्धार का अनुभव किया है उनके समक्ष अपनी देह और मन दोनों को प्रभु के सम्मुख चढ़ाने की चुनौती है। प्रभु के प्रयोग हेतु स्वयं को शुद्ध रखें और पवित्र आत्मा को अनुमति दें कि वह आपके मनों को बदल कर उन्हें प्रभु के उद्देश्यों के प्रति समर्पित करे। जबकि प्रभु ने हमें क्षमा कर पिता के साथ हमें एक सही स्थान पर रखा है, तौभी हममें बड़े कार्य के किये जाने की ज़रूरत है। जब हम स्वयं को देह और मन सहित परमेश्वर के प्रति समर्पित करते हैं, तो वह हमें बदलता, हमें नया करता और हमें अपने निकट लेकर आता है।

विचार करने के लिए:

- हमारे प्रति परमेश्वर की करूणा की रोशनी में हमारा उचित बलिदान क्या है?
- अपने शरीरों को परमेश्वर को चढ़ाने का क्या अर्थ है? क्या आप ऐसा कर रहे हैं?
- हमारे मन कैसे बदल सकते हैं?
- आप किस पाप से संघर्षरत् हैं? आज आपके लिए इस परिच्छेद से क्या चुनौती है?
- क्या आपका मन प्रभु यीशु के द्वारा नया किया गया है? क्या आपकी विचारधारा में अभी भी सांसारिकता के घटक पाए जाते हैं?

प्रार्थना के लिये:

- परमेश्वर से कहें कि वह आपको उस देह और मन का एक अच्छा रखवाला बनाए जिसे उसने आपको दिया है।
- क्या आपने अपने मन और देह को पूरी तरह से परमेश्वर को सौंपा है? यदि नहीं, तो इसी समय स्वयं को उसके प्रयोग हेतु चढ़ाए जाने का समय लें।
- प्रभु से अपने मन को पूरी तरह से नया करने को कहें। उससे उन सभी विचारों और व्यवहारों को हटाने के लिये कहें जिनसे उसके नाम को महिमा नहीं मिलती है।

एक देह, कई वरदान

32

पढ़ें *रोमियों 12:3-8*

परमेश्वर अन्यजाति और यहूदी दोनों को ग्रहण करता है। चाहे हम किसी भी जाति या संस्कृति के क्यों न हों, मसीह में, हम सभी एक ही देह के अंग हैं। इसे स्पष्ट करने के लिये पौलुस अपने पाठकों को आगे बताता है कि उन्हें स्वयं के बारे में अधिक ऊँचा विचार नहीं करना चाहिए। यहां प्रमुख विचार यह है कि उन्हें स्वयं को लेकर इस बारे में सदा ईमानदार रहना है कि वे वास्तव में कौन हैं? विशिष्ट रूप से पद 3 में ध्यान दें कि हमें इसे उस विश्वास के माप के अनुसार करना है जो हमें परमेश्वर ने दिया है। आइये कुछ समय पौलुस के अभिप्राय को समझने में बिताएं।

पौलुस यहां हमें यह बता रहा है कि हम जैसे हैं उससे अधिक होने के बारे में हमें स्वयं के लिए नहीं सोचना है। अर्थात् हमें यह समझने की ज़रूरत है कि हम सभी पापी हैं जिन्हें एक उद्धारकर्त्ता की आवश्यकता है। हमें यह जानना चाहिए कि परमेश्वर ने हमें इसलिए नहीं चुना क्योंकि हम इसके योग्य थे। यहां तक कि महान् प्रेरित पौलुस स्वयं को सबसे बड़े पापी के रूप में देखता है (1तीमु. 1:15)।

यीशु ने परमेश्वर का सिद्ध पुत्र होने पर भी अपने शिष्यों के पांव धोए (यूहन्ना 13:5)। उसने अपना जीवन उनके लिए दे दिया जो उसके शत्रु थे।

चूंकि मसीही जीवन में बहुत सी समस्याएं अपने भाई बहनों से ऊपर उठने की इच्छा करने के कारण आती हैं, अतः हमारे लिये उसे समझना महत्वपूर्ण है जो पौलुस इस परिच्छेद में बता रहा है। हम उस परमेश्वर के अयोग्य दास हैं जो हमसे प्रेम करता है और जिसने अपने पुत्र को हमारे लिये मरने को भेजा। इसका प्रभाव न केवल इस पर पड़ना चाहिए कि हम स्वयं को कैसे देखते हैं लेकिन इस पर भी कि हम मसीह में अपने भाइयों और बहनों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं।

जबकि यह महत्वपूर्ण है कि हम स्वयं को आवश्यकता से अधिक महत्वपूर्ण न समझें, परन्तु इसके साथ-साथ यह भी महत्वपूर्ण है कि हम अन्य पराकाष्ठा पर न जाएं। कुछ ऐसे भी हैं जो अपनी योग्यता में फंसकर यह नहीं देख पाते कि परमेश्वर किस तरह से उनका प्रयोग कर सकता है। ये व्यक्ति कभी भी विश्वास में होकर कदम नहीं बढ़ाते क्योंकि वे स्वयं को अयोग्य अनुभव करते हैं। ये लोग अपने चारों ओर के लोगों को प्रभावित किये बिना या पिता के प्रेम

को प्राप्त किये बिना ही अपने जीवनों को जीते हैं। पौलुस यहां हमें यह बता रहा है कि हमें स्वयं के बारे में विश्वास के उस माप के अनुसार सोचना है जिसे परमेश्वर ने हमें दिया है। पौलुस इसमें हमें यह बता रहा है कि हमें यह समझने की ज़रूरत है कि परमेश्वर ने हमें क्या होने के लिए बनाया है और उसने हमें क्या करने के लिए बुलाया है।

आपके जीवन के लिए परमेश्वर की बुलाहट क्या है? उसने आपको कौन से आत्मिक दान दिये हैं? उसने आपके हृदय में किस बोझ को रखा है? उस बोझ के लिए कुछ करने हेतु कदम बढ़ाने के लिए परमेश्वर ने आपको कितना विश्वास दिया है? जबकि हमें स्वयं को उससे श्रेष्ठ कभी नहीं सोचना चाहिए जितने हम हैं, हमें यह भी कभी नहीं सोचना चाहिए कि परमेश्वर ने हमें जैसा होने के लिए बनाया है हम उससे कम भी नहीं हैं।

झूठी दीनता परमेश्वर द्वारा दी गई भूमिका को ग्रहण करने से इंकार कर देती है, जबकि जो वास्तव में नम्र है वह स्वयं को वैसे ही देखता है जैसे परमेश्वर उसे देखता है, न कम, न अधिक। जो लोग वास्तव में नम्र हैं वे अपनी बुलाहट को स्वीकार करते और कोई भी चीज़ उन्हें उस किसी चीज़ के प्रति आज्ञाकारी होने तथा वह सब होने से रोक नहीं पाती जैसा होने लिए परमेश्वर ने उन्हें बुलाया है। वे स्वयं को परमेश्वर द्वारा दिये गए विश्वास के माप में देखते हैं। वे स्वयं को वैसे ही देखते है जैसे परमेश्वर उन्हें देखता है, जोकि परमेश्वर के चुने हुए उपकरण हैं, जिन्हें इस संसार में एक विशेष उद्देश्य के लिए बुलाया व तैयार किया गया है।

पौलुस पद में भी इसे स्मरण कराता है कि जिस तरह से देह के बहुत से अंग हैं, उसी तरह से कलीसिया भी है। परमेश्वर के उद्देश्य के लिए हरेक व्यक्ति अनिवार्य है। हाथ-पांव के समान कार्य नहीं करता। आंख का कार्य कुछ और है तथा कान का कुछ और। देह का प्रत्येक भाग एक भिन्न भूमिका को पूरा करता है लेकिन प्रत्येक भाग महत्वपूर्ण है। ऐसा ही मसीह की देह में है। हम सभी एक समान भूमिका को पूरा नहीं करते। हमारे दान (प्रतिभा) और व्यक्तित्व में बहुत भिन्नता है।

हमारे दान (प्रतिभा) की चीज़ें यदि परमेश्वर के उस उद्देश्य को पूरा करना चाहती हैं जिनके लिए परमेश्वर चाहता है कि उन्हें पूरा किया जाए तो इसके लिए उन्हें मिलकर कार्य करना होगा। पांव का संबन्ध देह से है और इसका कार्य देह के चलने में सहायता करना है। पांव का स्वयं से कोई संबन्ध नहीं बल्कि देह से है। कल्पना करें कि देह का प्रत्येक भाग देह से भिन्न दिशा में जाना चाहे

तो इसका परिणाम क्या होगा? ऐसी कल्पना करना हास्यप्रद हो सकता है परन्तु कितनी ही बार मसीह की देह के सदस्य प्रतिकूल दिशाओं में जाना चाहते हैं? परिणामस्वरूप कलीसिया में अव्यवस्था उत्पन्न हो जाती है।

हमें यह जानने की भी ज़रूरत है कि परमेश्वर ने हममें से प्रत्येक को एक विशिष्ट कार्य दिया है। हममें से प्रत्येक देह की भिन्न आवश्यकता में सेवा कर सकता है। हमारे वरदानों का प्रयोग हमारे स्वार्थी उद्देश्यों के लिए न किया जाए बल्कि पूरी देह के लाभ के लिए। हमारे वरदानों का संबन्ध प्रभु यीशु से है, जिनका प्रयोग संपूर्ण देह के मेल और लाभ के लिए किया जाना चाहिए।

पद 6 में पौलुस हमें स्मरण कराता है कि प्रभु परमेश्वर हमारे वरदानों का प्रयोग करने के लिए हमें हमारे विश्वास के परिमाण के अनुसार बुलाता है। उदाहरण के लिए यदि एक व्यक्ति में भविष्यद्वाणी का वरदान पाया जाता है तो उसे विश्वास के उस परिमाण में उस वरदान का प्रयोग करना है जो परमेश्वर ने उसे दिया है। परमेश्वर आपको क्या करने के लिए बुला रहा है? क्या उस कार्य को करने के लिए आप उस पर भरोसा कर सकते हैं जिसे करने के लिए वह आपको बुलाता है? क्या आप इस भरोसे के साथ कदम बढ़ाने के लिए तैयार हैं कि जिसने आपको बुलाया है वह अपने उद्देश्य को आपसे पूरा करवाने के लिए आपको तैयार करने के साथ-साथ आपके लिए पर्याप्त प्रबन्ध भी करेगा?

पौलुस पद 6 में भविष्यद्वक्ता के उदाहरण का प्रयोग करता है। परमेश्वर अपने सेवक के हृदय में किसी भी विशिष्ट संदेश को रख तो सकता है परन्तु वह संदेश उद्देश्य को पूरा करने के लिए तब तक कोई कार्य नहीं करेगा जब तक कि भविष्यद्वक्ता उन वचनों को विश्वास में होकर न बोले।

यही सिद्धान्त अन्य वरदानों पर भी लागू होता है। यदि परमेश्वर ने एक व्यवहारिक तरीके से देह की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने का बोझ आप में डाला है, तो विश्वासयोग्य बने रहें। परमेश्वर ने आपके हृदय में जिस कार्य को करने को बोझ डाला है उससे दूर रखने के लिए लोग चाहे आपको कुछ भी क्यों न कहें, निराश न हों। विश्वास और दृढ़ता के साथ उनके नेतृत्व पर भरोसा करें। यदि परमेश्वर ने आपको एक प्रोत्साहक होने के लिए बुलाया है, तो उसके लोगों के आशीषित होने हेतु उसे नेतृत्व देते हुए विश्वास में आगे कदम बढ़ाएं। यदि आपको सिखाने (शिक्षा देने) के लिए बुलाया गया है तो जिस तरह से परमेश्वर आपके मन को खोलता है वैसे ही अध्ययन और शिक्षण दें। यदि पमेश्वर चाहता है कि आप दें, तो उसके उपलब्धता पर भरोसा करें ताकि आप मसीह की देह की आवश्यकताओं के लिए उदारता से दे सकें। यदि आप एक अगुवा हैं तो

निष्ठापूर्वक उस पर यह भरोसा करते हुए कार्य करें कि वह आपको आवश्यकतानुसार बुद्धि और मार्गदर्शन देगा। यदि आपके पास करूणा के वरदान हैं, तो उसके द्वारा ज़रूरतों के प्रगट किये जाने पर प्रसन्न हृदय के साथ सेवा करें। स्वयं को उस कार्य के प्रति समर्पित करें जिसे करने की प्रतिभा उसने आपको दी है। उसके नेतृत्व पर भरोसा करते हुए देखें कि परमेश्वर क्या करता है।

यहां इस विभाग में पौलुस हमें बताता है कि जैसे हम हैं हमें अपने बारे में उससे अधिक नहीं सोचना चाहिए। परमेश्वर ने हमें जो दान दिये हैं हमें उनमें संतुष्ट रहना चाहिए। यदि आप एक दान प्राप्त प्रचारक नहीं हैं तो इसकी चिन्ता न करें। जो आपका दान है उसके बारे में सीखें और उसे अपने पूरे हृदय से करें। यह ही न सोचें कि चूंकि आपके पास करूणा का दान है अतः आप सिखानेवाले से कुछ कम हैं। परमेश्वर ने जैसा होने के लिए आपको बनाया है उसे ग्रहण करते हुए उसमें आगे बढ़ें।

विचार करने के लिये:

- हमें अपने बारे में कभी ज़रूरत से अधिक नहीं सोचना चाहिए इससे आपका क्या अभिप्राय है?
- क्या आपने कभी इस पर विश्वास किया है कि परमेश्वर आपका प्रयोग नहीं कर सकता है? पौलुस उस रवैये के बारे में हमें यहां क्या सिखाता है?

  परमेश्वर ने आपको कौन सा आत्मिक दान दिया है? आप इसका प्रयोग कैसे कर रहे हैं?
- क्या आपने परमेश्वर द्वारा दिये गए दानों को अपने स्वयं के उद्देश्यों के लिए पूरा करते पाया है? हम यहां दानों के उद्देश्यों से क्या सीखते हैं? इन दानों का संबन्ध किससे है?

प्रार्थना के लिये:

- परमेश्वर ने आपको जो दान दिये है उन्हें प्रयोग करने हेतु उसे नये मार्ग दिखाने को कहें।

  परमेश्वर ने आपको जो दान दिये हैं उन्हें प्रयोग करने हेतु उसे नये मार्ग दिखाने को कहें।
- उन तरीकों के लिए परमेश्वर को धन्यवाद दें जिनमें होकर वह हमारा प्रयोग राज्य की सेवा के लिए करना चाहता है।
- परमेश्वर से आपके विश्वास को बढ़ाने के लिए कहें जिससे आप उसके और उसकी देह के लिए अधिक उपयोगी हो सकें।

देह के साथ मेल में रहना

33

पढ़ें *रोमियों 12:9-21*

अन्तिम विभाग में पौलुस ने हमें स्मरण कराया कि हम सभी मसीह की देह के अंग हैं। हमारे दानों का प्रयोग कलीसिया के लाभ के लिये किया जाना चाहिए। हमारा केवल स्वयं से संबन्ध नहीं है। हम अब मसीह में भाइयों और बहनों के एक बड़े परिवार के सदस्य हैं। प्रत्येक परिवार की तरह वहां भी कठिनाईयां हो सकती हैं। हममें से प्रत्येक भिन्न है। हम भिन्न वरदानों, बोझ और व्यक्तियों के साथ देह में आते हैं। जब ये एक मेल में होते हैं, तब परमेश्वर के राज्य में महान चीज़ें हो सकती हैं। तथापि, विषय की वास्तविकता यह है कि हम सदा मिलकर कार्य नहीं करते हैं। पौलुस इस समस्या को समझ गया था और इस अगले विभाग में वह एक बड़े मेल में उनकी सहायता करने हेतु मसीह की देह के लिए चुनौतियों की एक श्रृंखला को देता है।

कलीसिया के लिये पौलुस की प्रथम चुनौती यह है कि हमारा प्रेम एक दूसरे के प्रति निष्कपट हो (पद 9)। हम बाहर जो करते हैं और भीतर जो सोचते हैं उसमें भी एक बड़ा अन्तर है। अपने भाइयों और बहनों से प्रेम का व्यवहार करते हुए भी अपने हृदयों में उनके प्रति कड़वाहट को रखना संभव है। पौलुस हमारे लिये अपने हृदयों को खोजने की चुनौती देता है कि क्या दूसरों के प्रति हमारा प्रेम निष्कपट है। हमने कलीसिया में देखा है कि प्रत्येक चीज़ बाहर से अच्छी प्रतीत होती है। ये कलीसियाएं ऐसे लोगों और गतिविधियों से भरी होती हैं जो साथ साथ प्रतीत होते हैं। तथापि, दिन के पूरा होने के पश्चात् वे एक दूसरे की आलोचना करते या फिर पास्टर के बारे में शिकायत करते हैं। उनका प्रेम निष्कपट नहीं होता है। पौलुस हमें यह जांच करने की चुनौती देता है कि जो हम बाहर दिखा रहे हैं वह हमारे हृदय से है या नहीं। एक भाई या बहन के प्रति प्रेमपूर्ण व्यवहार करते हुए उसके प्रति अपने मन में कड़वाहट रखना संभव है। हम किसी के प्रति प्रेमपूर्ण व्यवहार करते हुए भी उससे क्षमा प्राप्त करने की अपेक्षा कर सकते हैं। पौलुस हमें निष्कपटता के साथ-साथ अपने हृदय की पूरी ईमानदारी से प्रेम करने की चुनौती देता है।

निष्कपट प्रेम और पद 9 में पौलुस की दूसरी चुनौती के बीच एक संबन्ध है। वह हमें बताता है कि हमें बुराई से घृणा करनी है। यदि हमारा प्रेम एक दूसरे के प्रति उदारतापूर्ण है तो हम उनकी पीठ पीछे उनकी आलोचना नहीं करेंगे। हम

जैसे उनके सामने रहते हैं वैसे ही हम उनके पीछे भी रहेंगे। हमारे एक दूसरे के साथ उदारतापूर्ण प्रेम करने के कारण गपशप, बेईमानी और अनैतिकता धुंधले पड़ जाएंगे। हम दूसरों को आशीष देने के साथ साथ उनकी सराहना भी करेंगे। हम देह के प्रत्येक सदस्य के लिए बुराई से घृणा करते हुए भले की खोज में रहेंगे।

एक दूसरे के प्रति यह निष्कपट प्रेम हमें एक दूसरे के प्रति समर्पित रखने का भी कारण बनता है। उनके प्रति समर्पित रहने का अर्थ है कि कठिन समयों में भी हम उनसे जुड़े रहते हैं। हम उनके प्रति इस तरह से समर्पित होते हुए सेवा करते हैं मानों वे हमारा अपना लहू और देह हो। उनके दुखी होने पर हम उन्हें आराम देने के लिए उनके दुख में उन तक पहुंचते हैं। उनके संघर्ष करने पर, हम उन्हें प्रोत्साहित करते व आशीष देते हैं। हम उन्हें छोड़ते नहीं हैं।

पौलुस रोमियों को यह बताने के लिए पद 10 पर जाता है कि उन्हें बढ़-चढ़कर एक दूसरे का आदर करना है। आदर देने का अर्थ किसी को ऊंचे स्थान पर रखना है। अन्य शब्दों में, उन्हें एक दूसरे को अपने से अधिक ऊंचा स्थान देना है। उन्हें अपने भाई बहनों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए तैयार रहना है। प्रभु यीशु ने हमारे लिये अपने जीवन को देते हुए इस उदाहरण को रखा।

पौलुस ने पद 11 में रोमियों को प्रभु की सेवा करने में उन्माद की कमी न रखने को प्रोत्साहित किया। कठिनाईयों में आत्मिक उन्माद की कमी रखना कितना आसान है। जब हम एक दूसरे की सेवा करने और परमेश्वर के राज्य का विस्तार करने की खोज में रहते हैं तब बहुत सी परीक्षाओं और संघर्षों का हमें सामना करना पड़ता है। हर कोई हमें ग्रहण नहीं करता। कई बार हम आलोचना और अस्वीकृति का सामना करेंगे। आनन्दित बने रहने की चुनौती देता है। अन्य शब्दों में, हमें अपना मन उन बड़ी प्रतिज्ञाओं पर लगाना है जो परमेश्वर ने हमें दी हैं। इन हिंसक परीक्षाओं के बीच में हमें स्वयं को यह स्मरण कराना है कि परमेश्वर ने हमसे अपनी उपस्थिति में सदा के लिए विजयी होने की प्रतिज्ञा की है। वह हमें हमारी विश्वासयोग्य सेवा के लिए प्रतिफल देने की प्रतिज्ञा करता है। हम सदा तक उसके साथ रहेंगे। इन प्रतिज्ञाओं की हममें पूरे आनन्द के साथ पूरा होना है। हमें अपनी वर्तमान परीक्षाओं को मसीह में हमारी आनन्दपूर्ण आशा और उसकी प्रतिज्ञाओं को चुराने की अनुमति नहीं देनी चाहिए। हमारी परीक्षाओं में, हमें मसीह तथा उसके अद्‌भुत उद्देश्यों को स्मरण रखने की आवश्यकता है।

पौलुस ने रोमियों को उनकी परीक्षाओं में धैर्य रखने को प्रोत्साहित किया। धैर्य रखने का अर्थ परेशानियों में भी आशा को बनाए रखना है। प्रेरित रोमियों

को दबाव में रहने की चुनौती देता है। उन्हें अपने दर्द और परीक्षाओं को प्रार्थना में प्रभु के पास लाना है (पद 12)। यहीं से उन्हें निर्देशन और बल मिलेगा। परीक्षा के समय में प्रार्थना करने के द्वारा हम परमेश्वर के आशीषों के भण्डार के ताले को खोलते हैं।

पौलुस ने पद 13 में रोमियों को स्मरण कराया कि उन्हें ज़रूरतमन्द प्रभु के लोगों की आवश्यकता को पूरा करने के साथ-साथ पहुनाई में लगे रहना है। प्रेरितों के काम की पुस्तक में हमें इसका एक अद्‌भुत उदाहरण मिलता है (प्रेरितों 2:42-47)। मसीही समुदाय ने अपनी चीज़ों को एक दूसरे के साथ बांटा। एक ही परिवार के होने के कारण वे एक दूसरे के प्रति समर्पित थे। एक सदस्य के दुख उठाने पर वे सभी दुखी होते थे। उनके पास बहुत कुछ नहीं था परन्तु जो कुछ भी उनके पास था उसे उन्होंने एक दूसरे में बांटा। पौलुस यहां हमें यह स्मरण कराता है कि हमें आवश्यकता को पूरा करते हुए उनके साथ खड़े होना है।

मसीह की सेवा करना सदा सरल नहीं होगा। ऐसे समय भी आएंगे जब हमें अस्वीकारे जाने के साथ-साथ सताया भी जाएगा। पौलुस की चुनौती उन्हें आशीष देने की है जो आपको सताते व श्राप देते हैं। अपने सतानेवालों के विरुद्ध बोलना आसान है। पौलुस इसके प्रतिकूल हमें इस परीक्षा का सामना कर इन व्यक्तियों को आशीष देने की चुनौती देता है।

निष्कपटता से प्रेम करने पर हम एक दूसरे के साथ आनन्द मनाने के योग्य होते हैं। एक भाई या बहन के परमेश्वर द्वारा आशीषित किये जाने पर हम ईर्ष्या करने के विपरीत उनके साथ उदारता सहित आनन्द को बांटते हैं। पौलुस हमें अपने घमण्ड और ईर्ष्या को एक ओर रखकर उस समय में अपने भाई बहनों के साथ आनन्द मनाने की चुनौती देता हूँ जब वे परमेश्वर की आशीषों को प्राप्त करते हैं।

इस पर भी ध्यान दें कि वह हमें विलाप करने वालों के साथ विलाप करने को कहता है (पद 15)। क्या आपने कभी आपको सतानेवाले या आपके जीवन को कठिन बनाने वाले की परीक्षा या संकटों में पड़ने पर आनन्द मनाया है? हमारे लिए अपने हृदयों में इसके लिए गुप्त रूप से आनन्द मनाना कितना आसान है क्योंकि हमें ऐसा लगाता है कि वे इसी के योग्य थे। हमें एक भाई या बहन को दुख में देखकर कभी भी प्रसन्न नहीं होना चाहिए। हमें उनके साथ मिलकर उनके दुख को अनुभव करना चाहिए।

मसीह की देह में सामाजिक स्तर के आधार पर कभी भी कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए। हमें समाज में निम्न स्तर के लोगों के साथ रहने को तैयार रहना चाहिए। संभव है कि ये लोग एक ही पृष्ठभूमि के न हों, परन्तु तौभी ये मसीह की देह का भाग हैं। परमेश्वर ने एक विशेष कारण से उन्हें कलीसिया में रखा है। उन्हें एक भूमिका को पूरा करना है और हमें उनके साथ मेल में होकर तथा जो दान परमेश्वर ने उन्हें दिये हैं उनमें होकर उनके साथ कार्य करने की ज़रूरत है। प्रत्येक विश्वासी के साथ एक महत्वपूर्ण व्यक्ति के रूप में व्यवहार किया जाना चाहिए। यदि हम ऐसा न करें तो पूरी देह दुख उठाएगी।

मसीह की देह में हमारे साथ सदा आदर और सम्मान के साथ व्यवहार नहीं किया जाएगा। ऐसे समय भी होंगे जब लोग हमारे बारे में झूठी बातें कहेंगे और हमें दुखी करने वाले कार्य करेंगे। तथापि, पौलुस हमें बताता है कि हमें बुराई का बदला बुराई से नहीं देना है। इसके विपरीत, हमें वह करना है जो सभी की दृष्टि में सही हो। अन्य शब्दों में, हमें बुराई का जवाब भलाई से देना है। जब कोई आपको दुख पहुंचाता है तो उस समय वही करें जो सही हो। अपने को दुखी करनेवालों को मसीह के प्रेम में होकर जवाब दें। जो लोग आपकी बुराई की खोज में रहते हैं उन्हें क्षमा करने के साथ-साथ आशीष भी दें।

हमें यह स्वीकार करना है कि कलीसिया में कुछ ऐसे लोग हैं जिनके साथ रहना कठिन है। संभव है कि वे हमें सताते न हों परन्तु वे बड़ी निराशा या तनाव का कारण हो सकते हैं। कई बार ये लोग आत्मा के अनुसार नहीं रहते। कई बार वे अपने गलत तरीकों और पापी व्यवहार को बदलने से इन्कार कर देते हैं। कई बार हृदयों की कठोरता या भिन्न विचारधाराओं के कारण मेल करना असंभव हो जाता है। पौलुस बताता है कि जहां तक संभव हो हमें हरेक के साथ शांति स्थापित करने का प्रयास करना चाहिए। पद 18 में ध्यान दें कि वह कहता है,"जहां तक हो सके।" प्रेरित संबन्धों में उत्पन्न होनेवाली कठिनाई को पहचानता है। जबकि हमेशा शांति बनाए रखना संभव न हो, तौभी हमें अन्त तक उसकी खोज में रहना चाहिए।

पौलुस पद 19 में हमें बदला लेने के विरोध में सावधान करता है। इसके विपरीत हमें एक दूसरे से प्रेम करने और आशीष देते हुए न्याय को परमेश्वर पर छोड़ देना है। न्याय परमेश्वर करेगा, और वह वही करेगा जो सही है (पद 19)। हो सकता है कि हम उसी समय न्याय चाहते हों। संभव है कि हम यह चाहते हों कि लोगों ने जो कुछ हमारे साथ किया उसका बदला उन्हें उसी समय मिल जाए। तथापि, पौलुस हमें बताता है कि एक दूसरे को आशीष देने का

उत्तरदायित्व हमारा है। न्याय करने का काम परमेश्वर का है। यदि हमारा शत्रु भूखा हो तो हमें उसे भोजन खिलाना है। यदि वह प्यासा हो तो हमें उसे पीने को देना है। हमारा उत्तरादायित्व प्रेम करने का है। हमें बदला लेने की खोज में नहीं रहना है।

पौलुस पद 20 में हमें बताता है कि ऐसा करते हुए हम शत्रु के सिर पर अंगारों का ढेर लगाते हैं कि यदि हम प्रेम करने, क्षमा करने और बदला न लेने का चयन करते हैं तो ऐसा करके हम शत्रु को उसके द्वारा किये गए कार्य के लिए शर्मिन्दा करते हैं। पौलुस जो कुछ यहां बता रहा है यह उसका एक भाग हो सकता है। तथापि, स्मरण रखें कि बाइबल के दिनों में जब घर में जलाने के लिए आग नहीं होती थी तो उस समय पड़ोस से गर्म कोयलों को लाकर आग को फिर से जलाया जाता था। इसका अर्थ यह है कि आपका वह पड़ोसी जिसने आपके साथ अनुचित व्यवहार किया था आग की ज़रूरत के लिए जब आपके पास आता है तब उस समय उसके कामों के कारण उसे खाली हाथ लौटाना बहुत सरल होता है। पौलुस हमें बताता है कि उसे खाली हाथ लौटाने के विपरीत हमें उसके सिर पर अंगारों का ढेर लगाना है। पौलुस शत्रु के सिर पर अंगारों का ढेर लगाने का प्रयोग आशीष के एक प्रतीक के रूप में करता है। उसे केवल एक ही कोयला न दें। उसे बहुतायत से आशीषित करें। उस पर आशीषों का ढेर लगाएं। उसके प्रति आपके समर्पण और उसकी आवश्यकता में आपके प्रेम के प्रतीक के रूप में उसे उतना कोयला दें जितना वह लेकर जा सके।

पौलुस हमारे शत्रु के सिर पर कोयलों का ढेर लगाने का परिणाम रोमियों को यह स्मरण कराते हुए निकालता है कि उन्हें बुराई से हारना नहीं है बल्कि इसके विपरीत भलाई से बुराई पर विजय पानी है। अन्य शब्दों में, अपने पड़ोसियों को इस कारण से बुरी चीज़ें न करने दें कि आप उन तक आशीषों को लेकर पहुंचते हैं। जब वे आपके साथ कुछ बुरा करें तो उसका जवाब भलाई से दें। जब वे आपको बुरा बोलें तो उनसे अच्छे शब्द बोलें।

समुदाय में रहना सदा आसान नहीं होता है। पौलुस मसीह की देह में मेल से रहने के लिए कुछ मूल मार्गदर्शिकाएं देता है। हमारे लिये चुनौती यह सीखने की है कि हम इन सिद्धान्तों को अपने जीवनों में व्यवहार में कैसे लाते हैं।

विचार करने के लिये:

- मसीह की देह में क्या कभी आपको किसी बुरे मनुष्य के साथ निपटना पड़ा है? आपकी प्रतिक्रिया क्या थी?

- एक दूसरे को महत्व देने के बारे में पौलुस हमें यहां क्या सिखाता है? क्या कुछ ऐसे लोग हैं जिन्हें महत्व देना आपको कठिन जान पड़ता है?
- हमें एक दूसरे की कितनी आवश्यकता है इस बारे में हम इस अध्याय से क्या सीखते हैं?
- क्या आपके आस-पास कोई भाई या बहन ज़रूरतमंद है? आप उनकी सहायता के लिए क्या कर सकते हैं?

प्रार्थना के लिये:

- पौलुस इस परिच्छेद में मसीह की देह में रहने के बारे में जो सिखाता है उसकी जांच करने में कुछ समय लें। आपके अपने जीवन में पाई जानेवाली कमज़ोरियों को प्रगट करने के लिए परमेश्वर से कहें।
- परमेश्वर से उन लोगों को आशीष देने में आपकी सहायता करने को कहें जिन्होंने आपको दुख पहुंचाया है। उससे क्षमा करने में आपकी सहायता करने को कहें।
- परमेश्वर से देह की आवश्यकताओं को देखने के लिए आपकी आखों को खोलने के लिए कहें और आपको ज़रुरतमन्द लोगों तक पहुंचने हेतु तैयार भी करने को कहें।
- क्या ऐसे लोग हैं जिन्होंने आपके लिए चीज़ों को कठिन बना दिया है। परमेश्वर से उन्हें आशीष देने और आप पर यह प्रगट करने को कहें कि क्या वह किसी तरह से उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए आपका प्रयोग कर सकता है।

अधिकार के प्रति समर्पण

34

पढ़ें *रोमियों 13:1–7*

अपने पत्र के अगले भाग में पौलुस अपना ध्यान मसीह की देह से हटाकर विश्वासी और प्रशासनिक अधिकारियों के संबन्ध पर लगाता है। हमें स्मरण रखना चाहिए कि कलीसिया के इतिहास के इस काल में, प्रशासन ने मसीही विश्वास को मान्यता नहीं दी थी। रोमी देवताओं की आराधना करने से इन्कार करने के कारण पूरे रोमी साम्राज्य में मसीहियों को सताया जा रहा था। रोमी अधिकारी प्रायः क्रूर हुआ करते थे। इस तरह के अधिकार के प्रति समर्पण करना एक विश्वासी के लिए बहुत कठिन रहा होगा।

पौलुस अपने पाठकों को यह बताते हुए आरम्भ करता है कि प्रत्येक विश्वासी को प्रशासनिक अधिकारियों के अधीन रहना चाहिए। इसका कारण वह यह बताता है कि कोई राजनैतिक अधिकार ऐसा नहीं जो परमेश्वर की ओर से न ठहराया गया हो। कुछ के लिए इसे समझना बहुत कठिन होगा। तौभी, विषय की वास्तविकता यह है, कि परमेश्वर की मर्ज़ी से ही कोई भी शक्ति या अधिकार पाया जाता है। परमेश्वर निश्चय ही जिसे चाहे उसे हटा सकता है। इस्राएल के इतिहास में ऐसा ही था। परमेश्वर ने उन राजनैतिक और आत्मिक अगुवों को उस समय उनके पद से हटाया जब उन्होंने उसका ओर उसके उद्देश्यों का इन्कार कर दिया था। यह सच्चाई कि परमेश्वर ने उन्हें हटाया इस बात का संकेत देती है कि उनके लिए उसका एक उद्देश्य था।

दूसरी सच्चाई जिसे हमें समझने की आवश्यकता है वह यह है कि ये अधिकारी चाहे कितने ही बुरे या क्रूर क्यों न हो, परमेश्वर पृथ्वी पर अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए उनका प्रयोग कर सकता है। पुराने नियम के कई राजाओं के जीवन में हम इसे देखते हैं। फिरौन परमेश्वर के लोगों के शत्रु के रूप में उठा था। तब परमेश्वर ने उसे अपनी शक्ति तथा इस्राएल पर अपनी करूणा को प्रगट करने के लिए उसे प्रयोग किया था।

दानिय्येल के दिनों में, परमेश्वर ने नबूकदनेस्सर को शक्तिशाली बनाया। इस सच्चाई के बावजूद कि वह एक क्रूर अगुवा था, परमेश्वर ने अपने लोगों को सबक सिखाने के लिए उसका प्रयोग किया। यहूदियों को दण्ड देने उन्हें देश से बाहर निकालने और उन्हें उनके पाप के बारे में शिक्षा देते हुए पौलुस परमेश्वर का उपकरण बना था।

परमेश्वर अपने उद्देश्यों के मार्ग में आनेवाली किसी भी शक्ति को परास्त कर सकता है। अपनी महान महिमा को पूरा करने के लिए वह किसी भी शक्ति का चुनाव कर उसका प्रयोग कर सकता है। वह परमेश्वर के सभी उद्देश्यों को पूरा करने हेतु उन्हें उस स्थान पर रखने के लिए उसके एक उपकरण के रूप में आकर देने को कहता है।

पद 2 में पौलुस कहता है कि अधिकार का सामना करनेवाले परमेश्वर का सामना करते हैं। परमेश्वर उन अधिकारियों के पीछे खड़ा रहता है जिन्हें वह वहां रखता है। उनकी आज्ञा का पालन न करना उस परमेश्वर की आज्ञा का पालन न करना है जिसने उन्हें उनका अधिकारी बनाया है। जब हम स्वयं पर परमेश्वर द्वारा ठहराए गए अधिकारियों की आज्ञा का उल्लंघन करते हैं तो हम दोनों ही अधिकारों की ओर से स्वयं पर न्याय को लेकर आते हैं एक तो जिन्हें परमेश्वर ने हम पर रखा है और दूसरा स्वयं परमेश्वर की ओर से।

देश के नियमों का उल्लंघन करनेवालों को दण्ड देने के लिए परमेश्वर ने अधिकारियों को अधिकार दिया है (पद 3)। यदि हम देश के नियमों के अनुसार रहते हैं तो हमें डरने की ज़रूरत नहीं है। इसके विपरीत, यदि हम उनका आदर नहीं करते तो हम दण्ड के भय में रहते हैं। यदि हम इस भय से स्वतंत्र रहना चाहते हैं तो हमें मौजूदा अधिकारियों को आदर देने व उनका आज्ञापालन करने की ज़रूरत है। ऐसा करने के कारण हमारी एक अच्छे नागरिक के रूप में सराहना की जाएगी।

जिन हाकिमों को परमेश्वर ने हम पर ठहराया है वे उसके सेवक हैं। उन्हें समाज में मेल और न्याय को बनाए रखने के लिए परमेश्वर द्वारा उस स्थान पर रखा गया है। पौलुस हमें बताता है कि शासक परमेश्वर का सेवक और गलत काम करनेवालों को दण्ड देने के लिए उसके क्रोध का अग्रदूत है। उनकी आज्ञा का पालन न करने पर, हमें उनकी तलवार के प्रभाव को सहना होगा। परमेश्वर हमारे देश के अधिकारियों को यह अधिकार देता है।

हमारे लिये इसे समझना महत्वपूर्ण है कि पौलुस यहां जिन अधिकारियों के बारे में बता रहा है ज़रूरी नहीं कि वे विश्वासी हों। परमेश्वर अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए किसी का भी प्रयोग करने का चुनाव कर सकता है। वह अपने को विश्वासियों तक ही सीमित नहीं रखता। इसी कारण हमें इस बारे में सावधान रहने की ज़रूरत है कि हमें अपने पर ठहराए गए अधिकारियों को आदर देना है चाहे वे परमेश्वर से प्रेम न भी करते हों। उनका अपमान करने का अर्थ उन लोगों का इन्कार करना है जिन्हें परमेश्वर ने हमारे देश में अपने उद्देश्यों की पूर्ति हेतु चुना है।

पौलुस हमें बताता है कि हमें दो कारणों से परमेश्वर द्वारा हम पर ठहराए गए अधिकारियों के प्रति समर्पण करने की ज़रूरत है (पद 5)। पहला कारण यह है कि समर्पण न करने के कारण हमें दण्डित किया जाएगा। परमेश्वर ने हमारे देश के हाकिमों को यह अधिकार दिया है कि वे हर उस व्यक्ति को दण्ड दे सकते हैं जो उसकी आज्ञा नहीं मानते और उनका आदर नहीं करते। हमारा परमेश्वर दृढ़ता के साथ उन सभी के पीछे खड़ा रहता है जिन्हें वह अधिकार के स्थान में रखता है। परमेश्वर के हाकिमों के साथ अनुचित व्यवहार करने के कारण उन्हें दण्डित किया जाता है।

दूसरा कारण यह है कि विवेक के कारण हमें समर्पण करने की ज़रूरत है। पौलुस यहां हमें यह बता रहा है कि यदि हम सच में प्रभु यीशु के हैं और उसका पवित्रात्मा हममें रह रहा है तो हम उस समय अपने हृदयों में पवित्रात्मा की कायलता को जान पाएंगे जब हम परमेश्वर की इच्छा और उद्देश्यों के प्रति समर्पण नहीं करेंगे। हमारा विवेक हमें परेशान करेगा क्योंकि कोई भी विश्वासी प्रभु परमेश्वर के प्रति अनाज्ञाकारिता में रहते हुए अपने हृदय में खुश नहीं रह सकता है।

व्यावहारिक रूप से इसका अर्थ यह है कि हमें अपने टैक्स (कर) का भुगतान करने के लिए तैयार रहना चाहिए। यदि परमेश्वर ने इन प्रशासनिक अधिकारियों को देश पर शासन करने के लिए दिया है तो वह उद्देश्य को पूरा करने हेतु उनकी आवश्यकताओं का प्रबन्ध किये जाने की आवश्यकता की भी अपेक्षा करता है। हमें अपने टैक्स (कर) का भुगतान करने के द्वारा अपने शासकों का आदर करना है (पद 6)। पौलुस विश्वासियों को हर उस चीज़ का विश्वासयोग्यता के साथ भुगतान करने की चुनौती देता है जो उन पर ऋण है। यदि हम पर कर का ऋण है तो हमें कर का भुगतान करना चाहिए। यदि हम पर आदर करने का ऋण है तो हमें उसका आदर करना चाहिए जिसका हम पर यह ऋण है।

यह सही है कि ऐसे समय भी आते हैं कि जब प्रभुत्व में रहनेवालों के प्रति हम इस बात से हैरान होते हैं कि क्या वास्तव में वे हमारे आदर के योग्य हैं। ऐसे शासक भी होते हैं जो परमेश्वर द्वारा दिए गए अधिकार का गलत प्रयोग करते हैं, परन्तु यह चीज इस परिच्छेद में पौलुस द्वारा दी गई आज्ञा में परिवर्तन नहीं करती है। परमेश्वर ने जिन्हें हम पर रखा है हमें उनका आदर और सम्मान करना सीखना चाहिए। संभव है कि हम यह न समझ पाएं कि परमशेवर क्या कर रहा है। हम यह न समझ सकते हों कि वह इन व्यक्तियों के द्वारा अपनी महिमा को कैसे पूरा करेगा, परन्तु हमें तब भी उनका आदर इसलिए करना चाहिए कि परमेश्वर ने उन्हें शासन करने का अधिकार दिया है।

हम पुराने नियम में दाऊद के जीवन में इसके एक शक्तिशाली उदाहरण को देखते हैं। दाऊद का कम आयु में ही राजा के रूप में अभिषेक कर दिया गया था परन्तु वह धीरज के साथ अपने सिंहासन के स्थापित किये जाने की प्रतीक्षा कर रहा था। शाऊल परमेश्वर द्वारा दाऊद के लिए निर्धारित उद्देश्य से ईर्ष्या करता था और उसे अपने सिंहासन के छिन जाने का डर भी था, इसलिए उसने दाऊद का पीछा कर उसकी हत्या करने का प्रयास किया। इसके बावजूद दाऊद ने शाऊल का आदर करने का चुनाव किया। अक्सर उसने उसका उल्लेख परमेश्वर के अभिषिक्त के रूप में किया। जो कुछ शाऊल कर रहा था उसने इस बात को प्रगट नहीं किया कि वह परमेश्वर के साथ एक लयबद्धता में था, तौभी दाऊद ने उसके विरुद्ध बोलने और उसके विरोध में तलवार उठाने से इंकार कर दिया था। उसने इस विषय पर निपटने के लिए परमेश्वर पर भरोसा किया। यही चुनौती पौलुस रोमियों को देता है। यही चुनौती पौलुस हमें देता है। हमें उन लोगों को आदर देते हुए जिन्हें परमेश्वर ने हम पर अधिकारी ठहराया है, परमेश्वर को सम्मान देना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने के द्वारा ही हम सम्मानित और आदरनीय नागरिक बन सकते हैं।

विचार करने के लिए:

- हम उस तरह के लोगों के बारे में इस परिच्छेद से क्या सीखते हैं जिनका प्रयोग परमेश्वर कर सकता है?
- क्या आपने कभी स्वयं को अपनी कलीसिया या अपने देश के शासक के विरुद्ध बोलते पाया है? यह परिच्छेद हमें इस बारे में क्या सिखाता है
- अपने अधिकारियों के प्रति अपने रवैये की जांच करने में कुछ समय लें। क्या आपका रवैया परमेश्वर की इच्छानुसार है?
- हमारे देश के अधिकारियों की अनाज्ञाकारिता एक विश्वासी के रूप में हमारी गवाही को कैसे हानि पहुंचाती है?

प्रार्थना के लिये:

- परमेश्वर से उन समयों के लिए स्वयं को क्षमा करने को कहें जब आपने उन लोगों को आदर नहीं दिया जिन्हें उसने आप पर अधिकारी नियुक्त किया था।
- यह प्रार्थना करने में कुछ समय लगाएं कि परमेश्वर आप पर अधिकारियों के प्रति आपके द्वारा कहे गलत व्यवहारों और नकारात्मक शब्दों को प्रगट करे।
- उनके लिए प्रार्थना करें जिन्हें परमेश्वर ने आप पर अधिकारी ठहराया है। परमेश्वर से उन्हें बुद्धि और हृदय की निष्ठा देने को कहें।

कोई ऋण नहीं परन्तु प्रेम **35**

पढ़ें *रोमियों 13:8-10*

अध्याय 13 के अन्तिम भाग में पौलुस प्रशासनिक अधिकारियों को उसका भुगतान करने के महत्व की चुनौती देता है जो उन पर ऋण है। एक दूसरे को प्रेम करने के अलावा और किसी तरह का ऋण नहीं होना चाहिए। यदि हम किसी से कुछ उधार लेते हैं तो हमें उसका भुगतान करना चाहिए। कुछ समुदायों में बैंक से उधार लिए बिना जीवन बिताना असंभव होता है। पौलुस हमें यह नहीं कह रहा है कि हमें धन उधार नहीं लेना चाहिए बल्कि इसके विपरीत हमें अपने अनुबन्धों को पूरा करना चाहिए। जब हमें अपनी आवश्यकता के समय पर किसी से उधार लेने की ज़रूरत पड़ती है, तब हमें निश्चित समय पर उसका भुगतान करना ज़रूरी होता है। हमें अपने नियत समयों के प्रति सही रहने के साथ-साथ अपने सहकर्मियों के साथ व्यवसाय में विश्वासयोग्य बने रहना चाहिए।

इस नियम की एक अवधारणा प्रेम है। प्रेम के मामले में हमें सदा एक दूसरे का कर्ज़दार रहना है। अन्य शब्दों में, हमें सदा एक दूसरे के प्रति प्रेम प्रगट करना है। हमें लगातार प्रेम में होकर पहुंचने के तरीकों के बारे में सीखना चाहिए। प्रभु ने प्रेम में होकर हमारा स्पर्श किया ताकि वैसा ही हम अपने भाई बहनों के साथ भी करें। हमें अपने प्रेम के ऋण को पूर्ण रूप से चुकता किये जाने के रूप में नहीं देखना चाहिए। वास्तव में, जो प्रेम प्रभु ने हम पर दिखाया उसका भुगतान हम किस तरह से कर सकते हैं?

पौलुस पद 8 में हमें स्मरण कराता है कि अपने साथ रहने वाले लोगों को प्रेम करने के द्वारा हम व्यवस्था को पूरा करते हैं। अपने पड़ोसी से प्रेम करने पर हम उसके प्रति ईमानदार रहेंगे। हम उनका भला चाहते हुए उनकी ज़रूरतों को अपने से ऊपर रखेंगे। हम व्यवस्था की मांग को पूरा करेंगे। हमें स्वयं को यह बताने के लिए व्यवस्था की आवश्यकता नहीं होगी कि क्या करना है क्योंकि हम यंत्रवत् रूप से इसे प्रेम में होकर करेंगे।

पौलुस पद 9 में हमें एक उदाहरण देता है। वह हमें व्यभिचार, हत्या, चोरी और लालच के संबन्ध में आज्ञा देता है। इन सभी आज्ञाओं को एक आज्ञा में संक्षिप्त किया जा सकता है,"अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम कर।" यदि आप अपने सहभागी से सच में प्रेम करते हैं तो आप व्यभिचार नहीं करेंगे। आपका हृदय केवल उसके प्रति ही समर्पित रहेगा। यदि आप किसी से प्रेम करते हैं तो

आप न तो उसकी किसी चीज़ को चुराएंगे और न ही उसका लालच करेंगे। इसके विपरीत आपको उनके लिये खुशी होगी। प्रेम करने के द्वारा आप परमेश्वर की व्यवस्था को पूरा करते हैं।

एक कर्ज़ जो सदा हम पर रहेगा वह अपने परमेश्वर और अपने भाइयों व बहनों से प्रेम करने का है। परमेश्वर हमें प्रेम करने का अनुग्रह दे।

विचार करने के लिये:

- प्रेम व्यवस्था का पूरक क्यों है?
- यदि आप कहें कि आप किसी से प्रेम करते हैं लेकिन इसे अपने कार्यों से प्रगट न करें तो क्या आप सच में कह सकते हैं कि आप उससे प्रेम करते हैं।
- अपने आस-पास में रहनेवालों के साथ अपने संबन्धों की जांच करें। क्या आप मसीह में अपने भाई-बहनों से सच में प्रेम करते हैं? इसका प्रमाण आपके कार्यों में कैसे मिलता है?
- परमेश्वर से कहें कि आपको अधिक प्रेम करने वाला बनना सिखाए।

प्रार्थना के लिये:

- परमेश्वर से उनसे प्रेम करने का अनुग्रह मांगें जिन्हें प्रेम करना आपके लिये कठिन है।
- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि क्रूस पर हमारे लिये मरने के द्वारा उसने हमें दिखाया कि सच्चा प्रेम क्या है।
- परमेश्वर से अपने आस-पास के लोगों से अधिक प्रेम करने की सहायता मांगें।

जाग उठो! 36
पढ़े *रोमियों 13:11-14*

पौलुस के दिनों में आत्मिक युद्ध के चिन्ह चारों ओर पाए जाते थे। पाप और बुराई का साम्राज्य था क्योंकि शैतान ने देश को उजाड़ दिया था। यह सब इस सच्चाई की ओर संकेत देते थे कि वह दिन आ रहा है जब प्रभु यीशु पृथ्वी का न्याय करने तथा अपने राज्य की स्थापना करने को फिर से आएंगे। शैतान के प्रयास तीव्र होते जा रहे थे और प्रभु की वापसी प्रत्येक दिन निकट आती जा रही थी। यह जानते हुए, वहां सतर्क रहने का कारण भी था।

विश्वासी होने के कारण, आज हमें भी यह समझने की ज़रूरत है कि हम भी एक युद्ध में हैं, हम अपनी सुरक्षा की अनदेखा नहीं कर सकते हैं। जो कुछ हमारे चारों ओर हो रहा है हमें उस पर ध्यान देना है। शत्रु बहुत ही वास्तविक है। उसके प्रयास प्रामाणिक हैं। परमेश्वर ऐसे लोगों को खोज रहा है जो दृढ़ खड़े रहकर उस का सामना करेंगे। हमें हमारे प्रभु परमेश्वर की महिमा और राज्य के खातिर एक अच्छी लड़ाई को लड़ने की ज़रूरत है। पौलुस हमें इस पर कुछ स्पष्ट निर्देश देता है कि ज्योति में रहना कैसे हमारा बड़ा युद्ध होना चाहिए।

पौलुस अपने पाठकों को यह बताने के द्वारा आरम्भ करता है कि अब नींद से जाग उठने का समय है। पौलुस विश्वासियों को जाग उठाने के लिए बुलाता है इसका एक संकेत यह है कि वे सोए हुए हैं। उन्हें कार्य करने को प्रेरित करने के प्रयास में, वह उन्हें स्मरण कराता है कि उनके द्वारा बिताया गया हर दिन उन्हें प्रभु की वापसी के निकट लाता है। सोते समय हमें हमारे चारों ओर के खतरे का आभास नहीं होता। हम चीज़ों को आत्मिक रूप से फिसलने देते हैं। हम संसार के तरीकों से फिसलना आरम्भ कर देते हैं। हमारा प्रार्थना का जीवन हानि उठाता है। हमें जितना समय परमेश्वर के वचन में बिताना चाहिए हम उतना समय बिता नहीं पाते। हम स्वयं को आत्मिक रूप से आलसी अनुभव करने लगते हैं। हमारे आस-पास की सांसारिक ज़रूरतें हमें प्रभावित करती प्रतीत नहीं होतीं। हम दूसरों की ज़रूरतों को पूरा करने हेतु उन तक पहुंचना बन्द कर देते हैं। हमें परमेश्वर की चेतावनी पर ध्यान देने की ज़रूरत है। हमें जाग उठने, शस्त्र धारण करने और मसीह की वापसी के लिए तैयार रहने की ज़रूरत है।

हमारे लिए सोना कितना सरल है। पौलुस आगे पद में स्मरण कराता है कि रात बहुत बीत गई है और दिन निकलने पर है। रात मानों इस वर्तमान समय के

अंधकार का उल्लेख करती है। वर्तमान समय में, पाप और बुराई चारों ओर व्याप्त हैं। तौभी, जल्दी ही, दिन निकलेगा। यीशु इस अंधकार से हमें आज़ाद करने को लौटेंगे। हमारे उद्धार का दिन प्रतिदिन निकट आता जा रहा है। हम नहीं जानते कि प्रभु यीशु कब आएंगे परन्तु हमें जागते रहने और उसके लिए तैयार रहने की ज़रूरत है।

इस सत्य के प्रकाश में, पौलुस हमें अंधकार के कामों को एक ओर रखने और ज्योति के हथियार धारण करने की चुनौती देता है। प्रभु का आना किसी भी क्षण हो सकता है। देह के बुरे कार्यों को एक ओर कर देना ज़रूरी है। हमारे टूटे संबन्धों की मरम्मत किये जाने की ज़रूरत है। हमारे मनों को परमेश्वर की इच्छा पर सौंपने की ज़रूरत है। पौलुस ने रोमियों को बताया कि जैसा दिन को सोहता है वे वैसा ही काम करें (पद 13)। अन्य शब्दों में, हमें उन लोगों के समान रहने की ज़रूरत है जिनके पास लज्जित होने को कुछ नहीं है।

विशिष्ट रूप में, इसका अर्थ यह है कि हमें नैतिक और शुद्ध जीवन जीना चाहिए। हमें इस संसार के यौन संबन्धी पापों में फंसना नहीं है (जैसे लीलाक्रीड़ा, पियक्कड़पन, व्यभिचार, लुचपन)। हमें विभाजित और नाश करनेवाले पापों में फंसना नहीं है (जैसे- झगड़े और डाह)। यह संसार का तरीका है। तौभी, विश्वासी को भिन्न होना चाहिए। अपने संगी लोगों का आदर और सम्मान करना चाहिए। वह प्रेम के साथ व्यवहार करे। उसे इस तरह से जीना चाहिए कि यदि प्रभु आए तो उसे लज्जित होना न पड़े।

अन्त में, पद 14 में पौलुस अपने पाठक को प्रभु यीशु को धारण करने की चुनौती देता है बजाय इसके कि पापी स्वभाव की इच्छाओं को संतृप्त करने पर विचार करें। हम सभी पापी स्वभाव की इच्छाओं को समझते हैं कि हमारे भीतर एक युद्ध छिड़ा हुआ है। देह संसार की चीज़ों को प्राप्त करने की लालसा रखती है, जबकि आत्मा परमेश्वर की चीज़ों को पाना चाहती है। हमें सोना नहीं है। हमें लगातार इस देह और संसार की अभिलाषाओं से युद्ध करते रहना है।

वह दिन आ रहा है जब युद्ध समाप्त हो जाएगा, परन्तु तब तक, हमें सोने का साहस नहीं करना है। हमें अपने समयों को समझना चाहिए। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि प्रभु वापस आ रहा है। वापस लौटने पर काश वह हमें सावधान, अपनी देह के विरुद्ध लड़ते और क्रूस के शत्रुओं का सामना करता हुआ पाए।

विचार करने के लिये:

- आज आप अपने चारों ओर किस तरह के अंधकार को देखते हैं?
- अपने जीवन में आप किन प्रलोभनों से संघर्षरत् हैं?
- आत्मिक रूप से सावधान रहने का क्या अर्थ है?
- क्या आप किसी तरह से आत्मिक रूप से सो रहे हैं? व्याख्या करें।
- यह जानना कि प्रभु किसी भी क्षण लौटेगा, क्या आपके जीवन जीने में परिवर्तन करता है?
- यदि प्रभु यीशु का लौटना आज ही हो जाए तो क्या आपमें कोई भी चीज़ उसके सम्मुख लज्जित होने की है?

प्रार्थना के लिये:

- प्रभु से आप पर यह प्रगट करने को कहें कि आप किस तरह से आत्मिक रूप से सोए हुए हैं।
- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि उसकी सन्तान होने के कारण उसके पास आपके लिये एक योजना है और यह कि एक दिन आकर वह आपको अपने साथ हमेशा के लिये ले जाएगा।
- अपने आस-पास के लोगों की आवश्यकताओं को देखने हेतु परमेश्वर से आपकी आंखें खोलने को कहें।
- आपके जीवन में प्रलोभन के क्षेत्रों पर विजयी होने के लिए कहें। इन क्षेत्रों में स्वयं को उसके प्रति समर्पित करें।

न्याय को हस्तान्तरित करना

37

पढ़ें *रोमियों 14:1-12*

अध्ययन के इस पाठ्यक्रम में हमने मसीह की देह और मसीह की देह में पाए जाने वाले भिन्न दानों के संबन्ध में पौलुस की शिक्षा की जांच की है। जो काफी समय से विश्वासी रहे हैं उन्होंने यह भी सीखा है कि परमेश्वर के लोगों में भी कई भिन्न व्यक्तित्व पाए जाते हैं। एक को कुछ भी करने की स्वतंत्रता है तो दूसरे के लिए उसे करना अपराध हो सकता है। सैद्धान्तिक विषयों पर हमारी आराधना विधियां या दृष्टिकोण प्राय: समान नहीं होते हैं। मसीह की देह में भिन्नता पाई जाती है, और इस तरह की भिन्नताएं वास्तविक समस्याओं को उत्पन्न करने का कारण बनती हैं। परमेश्वर के राज्य के विस्तार में यह हानिकारक हो सकता है। इस अगले विभाग में पौलुस मसीह की देह में भिन्नताओं से निपटने के लिए कुछ व्यावहारिक सुझाव देता है।

बिना किसी विवाद के निर्बल को अपनी संगति में लें

प्रेरित पौलुस हमें यह स्मरण कराते हुए आरम्भ करता है कि हमें ऐसे व्यक्ति को ग्रहण करने की ज़रूरत है जो विश्वास में निर्बल है, परन्तु ऐसा हमें शंकाओं पर विवाद किये बिना करना है। इस कथन में हमें कई महत्वपूर्ण चीज़ों को देखने की ज़रूरत है।

सर्वप्रथम, हमें उसे ग्रहण करना है जो विश्वास में निर्बल है। एक निर्बल विश्वास वाला व्यक्ति कैसा दिखता है? हो सकता है कि वह अभी भी पाप में जी रहा हो। संभवत: उसका कोई ठोस सिद्धान्त न हो। पुराने विश्वासियों के लिए उसकी भाषा अपमानजनक हो। मसीह की देह के सदस्यों के साथ उसकी समस्या हो। संभव है कि उसमें अधिक उमंग होने पर भी ज्ञान के न होने पर वह यह नहीं जान पाता कि वह भलाई की अपेक्षा अधिक हानि का कारण बन रहा है।

हमें यह समझने की ज़रूरत है कि निर्बल विश्वासवाले और विद्रोह में रहनेवाले के बीच अन्तर है। विद्रोह में रहनेवाला जानता तो अच्छी तरह से है परन्तु बदलना नहीं चाहता। चाहे उसके बारे में कुछ भी क्यों न कहा जाए, वह सुनने और बदलने से इंकार कर देता है। निर्बल विश्वासवाला व्यक्ति इससे भिन्न होता है। वह सत्य को पूरी तरह से नहीं समझता। उसने अभी तक यह भी नहीं

सीखा होता कि परमेश्वर की आत्मा पर कैसे निर्भर हुआ जाता है, परन्तु वह सुनने और सीखने के लिए तैयार रहता है।

यूनानी भाषा में 'ग्रहण करने' का अर्थ किसी को अपना बनाने से है। किसी को संगी के रूप में लेते हुए उस पर अपनी दया को प्रगट करना। निर्बल विश्वासवालों को एक ऐसे मित्र की ज़रूरत है जो उनके साथ धैर्यपूर्वक काम करते हुए उन्हें परमेश्वर के साथ चलने को प्रोत्साहित करे। उनकी सेवा करने और परिपक्वता में उनकी अगुवाई करने का उत्तरदायित्व हमारा है। यदि निर्बल विश्वासवालों को हर कोई छोड़ दे, तो उनका क्या होगा? यहां चुनौती निर्बलों के निकट आने की है। प्रभु के साथ दृढ़ रहने और चलने में उनको प्रोत्साहित करते हुए उनका मित्र बनना है। चाहे प्रभु के साथ अपनी यात्रा में हम कहीं भी हों, हमें दूसरों को प्रोत्साहित और आशीषित करने हेतु अपने निकट लाने की ज़रूरत है।

पद 1 में एक और विषय की हमें जांच करने की ज़रूरत है। पौलुस हमें बताता है कि हमें इन निर्बल भाइयों को *उनकी शंकाओं पर विवाद किये बिना* ग्रहण करना है। कुछ ऐसे विश्वासी हैं जिनका सोचना है कि प्रत्येक को उनके तरीके से चीज़ों को देखने की ज़रूरत है। वे यह नहीं देख सकते कि कुछ विषय ऐसे हैं जो एक व्यक्ति के लिये स्वीकार्य हो सकते हैं, परन्तु विवेक के कारण दूसरे के लिये स्वीकार्य न हों। उनका मानना है कि सभी को एक ही चीज़ों पर विश्वास करना चाहिए और एक ही तरीके से आराधना करते हुए समान चीज़ों पर अभ्यास करना चाहिए। मसीह की देह में विविधता के लिए उनके पास कोई स्थान नहीं हैं। तथापि, पौलुस हमें बताता है कि हमें बिना किसी विवाद के एक दूसरे को ग्रहण करना है। हमें मसीह की देह में पाई जानेवाली विविधताओं को स्वीकार करना है।

पद 1 में ध्यान दें कि यह विविधताएं "विवादी विषयों" पर हैं। निश्चय ही कुछ ऐसे महत्वपूर्ण विषय हैं जिन पर हम समझौता नहीं कर सकते हैं। पौलुस इन विषयों के बारे में नहीं बोल रहा है। पौलुस पद 2 में स्पष्ट करता है कि "विवादी विषयों" से उसका अभिप्राय क्या है।

सर्वप्रथम, वह हमें इस बात का एक उदाहरण देता है कि एक व्यक्ति का विश्वास कैसे उसे हर चीज़ को खाने की अनुमति देता है। दूसरा व्यक्ति, तथापि केवल साग-पात ही खा सकता है। पौलुस बताता है कि जिस व्यक्ति को सब कुछ खाने की आज़ादी है वह साग-पात खाने को तुच्छ न जाने। इसका प्रतिकूल भी सत्य है। साग-पात खानेवाला उस व्यक्ति को तुच्छ न जाने जो सब कुछ

खाता है। इसका कारण यह है कि परमेश्वर ने दोनों को ही उनके निर्णयों के साथ ग्रहण किया है। वे जो कुछ भी खाते हैं यदि इस निर्णय के साथ परमेश्वर ने उन्हें ग्रहण किया है, तो प्रभु के निर्णय अस्वीकृत करनेवाले हम कौन होते हैं?

पौलुस रोमियों को आगे बताता है कि हम दूसरे के सेवक पर दोष नहीं लगा सकते हैं। कल्पना करें कि एक दिन आपका पड़ोसी आकर आपके सेवक को इस कारण पीटे क्योंकि जो काम आपने उससे करने को कहा है उसे वह ठीक तरह से नहीं कर रहा है। क्या आप वैध रूप में उस पड़ोसी से नाराज़ नहीं जो जाएंगे।? विषय की वास्तविकता यह है कि सेवक को केवल अपने स्वामी को जवाब देना है। वह केवल अपने स्वामी के सामने ही गर्व से खड़ा हो सकता है या फिर अपमान से गिर सकता है। पौलुस रोमियों को यह बताता हुआ प्रतीत होता है कि वे सभी परमेश्वर के सेवक होने के कारण केवल उसके प्रति ही उत्तरदायी हैं। यदि मेरा भाई परमेश्वर का एक सेवक है, तो परमेश्वर ने जिस कार्य को उसके हृदय में करने के लिए डाला है, मैं उसे कैसे अनुचित ठहरा सकता हूँ?

हमारे लिए प्रायः इस सच्चाई को ग्रहण करना कठिन होता है कि मसीह की देह में भिन्नता पाई जाती है। हमें यह सोचना अच्छा लगता है कि प्रत्येक हमारे समान कार्य करे या जिन चीज़ों पर हम विश्वास करते हैं वे भी उन पर ही विश्वास करें। सच्चाई इसके विपरीत है। पौलुस पद 5 में हमें स्मरण कराता है कि कोई तो एक दिन को दूसरे दिनों से पवित्र समझता है जबकि दूसरे व्यक्ति के लिए सभी दिन समान जान पड़ते हैं। यह महत्वपूर्ण नहीं कि हम सभी इस पर सहमत हों। महत्वपूर्ण यह है कि हम अपने मन में इसे पूरी तरह से स्वीकार करें और केवल परमेश्वर को ही जवाब देने को तैयार हों।

हम छोटे विषयों पर तो भिन्न हो सकते है, लेकिन हमें इन विविधताओं को स्वीकार करना और एक दूसरे का न्याय न करने के बारे में सीखना चाहिए। हमें यह जानना चाहिए कि मसीह की देह भिन्न है। हमारे भिन्न व्यक्तित्व और भिन्न विधियां हैं, लेकिन हम एक ही परमेश्वर की आराधना करते हैं। मैंने परमेश्वर को कैरिस्मेटिक और गैर-कैरिस्मेटिक दोनों ही कलीसियाओं को आशीषित करते हुए देखा है। मैंने परमश्वेर को विधिवादी कलीसियाओं के साथ-साथ उन कलीसियाओं को आशीष देते हुए देखा है जो अधिक स्वतंत्रता देती हैं। क्या हम वास्तव में ऐसा सोचते हैं कि परमेश्वर हमारे भाइयों और बहनों को इसलिए ग्रहण नहीं करता क्योंकि वे हमारे समान चीज़ों को नहीं करते हैं?

एक दूसरे का न्याय करने के बजाय हमें अपना ध्यान अपने जीवनों में

अधिक परिपक्व होने की ओर देने की ज़रूरत है। पौलुस बहुत स्पष्टता से हमें बताता है कि हममें से किसी को भी केवल अपने लिये ही नहीं जीना चाहिए। हमें अपना जीवन केवल स्वयं को प्रसन्न करने के लिए ही नहीं जीना है बल्कि परमेश्वर की सेवा करने के लिये।

हमें अपने भाई के कार्यों का लेखा नहीं देना होगा, परन्तु न्याय के दिन हम सब के सब परमेश्वर के न्याय सिंहासन के सामने खड़े होंगे (पद 10)। अपने भाई या बहन का न्याय करने का उत्तरदायित्व हमारा नहीं है। वास्तव में जब कभी हम अपने भाई या बहन का न्याय करने का प्रयास करते हैं तो ऐसा करके हम परमेश्वर के स्थान को ले लेते हैं। अतः वास्तव में यह अति महत्वपूर्ण हो जाता है कि हमें एक दूसरे को सभी विविधताओं सहित ग्रहण करना सीखना है।

इन विविधताओं को जानते हुए भी यदि हम एक दूसरे को उस सब के बावजूद ग्रहण करें तो कलीसिया एक भिन्न स्थान बन जाएगी। हम सभी ने अक्सर प्रभु का स्थान लेते हुए अपने भाई बहनों का न्याय किया होगा। अपने घमण्ड में होकर हमने यह विश्वास किया कि हमारे पास सभी जवाब हैं। हम यह नहीं देख पाए कि हम से भिन्न होने पर भी परमेश्वर ने हमारे भाई की भेंट को ग्रहण किया। हम इस सच्चाई से नाराज़ हो जाते हैं कि परमेश्वर ने उन लोगों को आशीष देने का चयन किया जिसका विश्वास हमारी तुलना में सिद्धान्त के एक छोटे से क्षेत्र पर ही था।

विश्वासी होने के कारण यह परिच्छेद वास्तव में हमारे लिये एक चुनौती है। यह हमारे घमण्ड और ईर्ष्या की भर्त्सना करता है। यह हमें हमारे हृदय की गहराई के भीतर यह देखने को बुलाता है कि क्या हमने परमेश्वर का स्थान लेते हुए अपने भाइयों और बहनों का न्याय किया है। यह हमें उन लोगों के लिए अपने हृदयों को खोलने के लिए बुलाता है जो भिन्न हैं कि मसीह की देह में उन्हें अपने भाइयों और बहनों के रूप में ग्रहण करें।

विचार करने के लिये:

- क्या आप "निर्बल" भाई या बहन से मिले हैं? उनके प्रति आपका जवाब क्या रहा है?
- आपकी कलीसिया में विश्वासियों के बीच क्या भिन्नताएं हैं?
- हम एक "विवादी" और एक ऐसे विषय के बीच भिन्नता की पहचान कैसे कर सकते हैं जिनका हम बलिदान नहीं कर सकते?

- क्या परमेश्वर दो भिन्न रीति-रिवाज़ वाले लोगों को ग्रहण कर सकता है? स्पष्ट करें।
- मसीह की देह में एक दूसरे को ग्रहण करने के बारे में हमारे लिए इसका क्या अर्थ है?

प्रार्थना के लिये:

- परमेश्वर से आपको निष्कष्ट भाइयों और बहनों की महान स्वीकृति को देने के लिए कहें जो कि आपसे भिन्न हों।
- आपके शहर में मसीह की देह में एक बड़ी एकता लाने के लिए परमेश्वर से कहें।
- उस भाई या बहन के लिए कुछ समय प्रार्थना में बिताएं जिनके साथ मौजूदा समय में आपको कठिनाई होती है। प्रेम से उन्हें ग्रहण करने हेतु परमेश्वर से आपके हृदय को खोलने के लिये कहें।

ठोकर का पत्थर

38

पढ़ें रोमियों 14:13-23

पौलुस अपने पत्र के इस भाग में मसीह की देह के बारे में बताने के साथ-साथ यह भी बता रहा है कि देह में रहते हुए हमें किस तरह से एक दूसरे से प्रेम करते हुए आदर देना है। विश्वासी होने के कारण जो वरदान हमारे हैं पौलुस ने उन्हें हमें स्मरण कराया है। उसने हमें दिखाया कि हमें एक दूसरे की ज़रूरत है और हमें उन भिन्नताओं के साथ रहना सीखना है जो निश्चय ही उस समय में आएंगी जब हम राज्य के लिए मिलकर कार्य करेंगे। अब पौलुस हमें एक भाई या बहन के सामने ठोकर का पत्थर न रखने के द्वारा एक दूसरे की भिन्नताओं का आदर करने के महत्व को स्मरण कराता है।

पौलुस विश्वासियों को यह बताते हुए आरम्भ करता है कि उन्हें एक दूसरे पर दोष नहीं लगाना है। अपने सह-विश्वासियों के प्रयोजनों और अभिप्रायों का न्याय करने का उत्तरदायित्व हमारा नहीं है। कल्पना करें कि आपको छोटा बच्चा स्कूल से एक कलाचित्र के साथ आता है जिसे उसने आपके लिए बनाया है। भले ही चित्र अच्छा नहीं है परन्तु इसे प्रेम के साथ बनाया गया है। अभिभावक होने के कारण आप इस चित्र के पीछे के व्यवहार के कारण, इसे ग्रहण कर लेती हैं। कल्पना करें कि आपके बच्चे के सामने ही कोई इस चित्र को लेकर उसकी आलोचना करने लगे कि उसके द्वारा बनाया गया चित्र ग्रहण करने योग्य नहीं है। माता-पिता होने के कारण आपको ऐसे में कैसा लगेगा? स्वर्गीय पिता होने के कारण, हमारे भाई या बहन जो कुछ भी उसे प्रेम में होकर देते हैं तब उनका न्याय करने के कारण परमेश्वर हमारी प्रशंसा नहीं करता।

पौलुस पद 13 में कहता है कि न्याय करने या दोष लगाने के विपरीत, हमें अपने मन में यही ठान लेना है कि अपने सह-विश्वासियों के सामने ठोकर का पत्थर न रखें। एक ठोकर का पत्थर एक ऐसी चीज़ होता है जो हमारे भाई और बहनों के मसीह में चलने में निराशा उत्पन्न कर सकता है। हमारे शब्द भी निरूत्साहित करने पर ठोकर का पत्थर हो सकते हैं। यदि हमारे कार्य एक भाई या बहन के सम्मुख विश्वास पर प्रश्न उत्पन्न करते हुए ठोकर का पत्थर बन सकते हैं।

इस पर ध्यान दें कि पौलुस किस तरह से हमें बताता है कि हमें अपने विश्वासी भाई या बहन के परमेश्वर के साथ चलने में कभी ऐसा कुछ न करने के लिए मन में ठान लेना है जिससे उन्हें ठोकर लगे। हमारे द्वारा किये जानेवाला

प्रत्येक कार्य हमारे भाई या बहन के विश्वास को बढ़ाने के अभिप्राय के साथ किया जाए।

हमें कुछ उदाहरण देने के लिए पौलुस समय लेता है। पौलुस का यह मानना था कि कोई भी भोजन अपने में अशुद्ध नहीं है। इसे उन यहूदियों के लिए ग्रहण करना कठिन था जो पुराने नियम के भोजन संबन्धी नियमों का पालन करते थे। पौलुस ने अनुभव किया कि मसीह के आगमन के संबन्ध में इन भोजन संबन्धी नियमों को लागू नहीं किया गया था, लेकिन इसके प्रति भी वह सावधान था कि इससे असहमत लोगों से उसे कैसे निपटना है।

जबकि पौलुस को जो चाहे भोजन खाने की आज़ादी थी, उसने पद 14 में कहा कि यदि एक विश्वासी किसी एक भोजन को अशुद्ध मानता है तो यह उसके लिए अशुद्ध होने के कारण उसका इसे खाना अनुचित है। संक्षिप्त में, पौलुस यह कह रहा है कि इस तरह के नियम भले ही एक व्यक्ति के लिए आवश्यक हो सकते हैं परन्तु दूसरे के लिए नहीं। इस सच्चाई को बड़ी सावधानी से लेना चाहिए। कुछ ऐसे स्पष्ट सिद्धान्त है जिन्हें सभी विश्वासी पुरुषों और स्त्रियों पर लागू किया जाता है। परमेश्वर का नैतिक नियम बदलता नहीं है। व्यभिचार करना, हत्या करना और चोरी करना को सदा से ही गलत माना जाता है। तौभी, मसीह चाल में अन्य विषय भी हैं जो श्वेत और अश्वेत नहीं हैं।

एक विश्वासी को किसी एक भोजन को खाने की आज़ादी है जबकि दूसरे के साथ ऐसा नहीं है। इस भोजन को खाना न तो सही है और न ही गलत। यह मन पर निर्भर करता है।

हमें यह स्मरण रखने की ज़रूरत है कि यदि हमारा भाई हमारे किसी एक तरह के भोजन के खाने से उदास होता है तब यदि हम उसके सामने उसे खाते हैं तो ऐसा करने के द्वारा हम प्रेम में नहीं चलते हैं (पद 15)। कल्पना करें कि आपका भाई पहले एक शराबी था। उसे अपने घर भोजन पर आमंत्रित करने पर यदि आप उसके सामने शराब से भरा एक गिलास रखते हैं तो ऐसा करके क्या आप उसका आदर कर रहे होते हैं? क्या ऐसा करके आप उसके सामने एक ठोकर का पत्थर नहीं रख रहे हैं? क्या आपका यह कार्य उसे फिर से शराब के निकट नहीं ले आएगा? इसलिए अपने भाई का पाप में नेतृत्व करने की तुलना में अपनी स्वतन्त्रता को छोड़ देना ज्यादा श्रेष्ठ है।

पौलुस पद 17 में इसे स्पष्ट करता है कि परमेश्वर का राज्य खाना-पीना नहीं बल्कि धर्म, मिलाप और वह आनन्द है- जो पवित्र आत्मा में होता है। आइये अधिक विस्तृत रूप में इस कथन पर मनन करें।

बहुत से विश्वासी इस तरह से जीवन बिताते हैं मानों परमेश्वर का राज्य नियमों व कानूनों से संबन्धित है। उनका मानना है कि एक मसीही होने के कारण आपको कुछ निर्धारित नियमों का पालन करना चाहिए। संभव है कि आपको प्रति सप्ताह चर्च जाकर अपनी आय का दस प्रतिशत दशमांश के रूप में देने की ज़रूरत हो। वे यह विश्वास कर सकते हैं आपको थियेटर नहीं जाना चाहिए या किसी विशिष्ट तरह के संगीत को नहीं सुनना चाहिए। इन विश्वासियों के लिये विश्वास नियमों और विधियों का एक समूह है। उन्हें इन नियमों का पालन करते हुए लगता है कि वे परमेश्वर को प्रसन्न कर रहे हैं। तथापि, पौलुस हमें बताता है कि यह बात प्रमुख नहीं है कि परमेश्वर का राज्य किस बारे में है।

पौलुस के अनुसार, परमेश्वर को राज्य का संबन्ध सबसे पहले धार्मिकता से है। इसका अर्थ प्रभु यीशु के कार्य द्वारा परमेश्वर के साथ सही रूप से खड़े होना है। प्रभु यीशु इसे ही पूरा करने के लिए आए थे। पौलुस अपने पत्र में इस बारे में विस्तार से बोला।

परमेश्वर का राज्य हममें केवल मसीह की धार्मिकता का होना ही नहीं है, इसका संबन्ध शांति से भी है। जिस शांति का वर्णन किया गया है यह वह परमेश्वर की शांति है जिसे क्षमा के कारण यीशु लेकर आया। क्योंकि हमारे पास हमारा परमेश्वर एक स्वर्गीय पिता के रूप में है, इसलिए यह शांति अब हमारे हृदयों में है। यह शांति हमारे भाई बहनों के बारे में है। परमेश्वर का आत्मा, जो हममें रहता है, हमें दूसरों के साथ मेल और शांति में रहने के योग्य करता है। परमेश्वर के राज्य में संबन्ध महत्वपूर्ण हैं। अपने साथ रहनेवालों के साथ और परमेश्वर के साथ शांति के बिना है हम परमेश्वर के राज्य को उतना आगे नहीं बढ़ा सकते हैं जितना उसे आगे बढ़ाने की ज़रूरत है।

इस पर भी ध्यान दें कि परमेश्वर का राज्य पवित्र आत्मा में आनन्द के बारे में है। हमारी मसीही चाल में आनन्द एक महत्वपूर्ण घटक है। आनन्दित रहने के लिए बहुत कुछ है। यीशु ने हमें बताया कि वह हमें बहुतायत का जीवन देने को आया (यूहन्ना 10:10)। और यह कि पवित्र आत्मा हममें से उमड़ेगा (1 यूह. 4:4)। वह अपने आनन्द को हमारे हृदय में डालने और हमें उसमें पूर्ण संतुष्टि देने के लिए आया। हमें सच्चे आनन्द की खोज करनी है। आनन्द हमारी आराधना में, दूसरों के साथ हमारे संबन्धों में और इसमें दिखाई देना चाहिए कि अपने मार्ग में आनेवाली परीक्षाओं का सामना हमें कैसे करना है।

पौलुस पद 18 में हमें स्मरण कराता है कि जो लोग धार्मिकता, शांति और आनन्द में होकर मसीह की सेवा करते हैं, यह न केवल परमेश्वर को प्रसन्न

करनेवाला होता है बल्कि इसे लोगों के द्वारा प्रमाणित भी किया जाता है। परमेश्वर विश्वासियों को शांति और आनन्द में देखना चाहता है। वह उन विश्वासियों को देखकर प्रसन्न होता है जो उसके साथ एक सही संबन्ध में होकर उसकी सेवा करते हैं। यह न केवल परमेश्वर को प्रसन्न करनेवाला है परन्तु हमारे चारों ओर का संसार हमारी धार्मिकता, शांति और आनन्द के कारण हमारी सराहना करता है। संभव है कि वे हमारी मान्यताओं को स्वीकार न करें, लेकिन वे सहायता नहीं कर सकते बल्कि हमारे जीवनों के बारे में ध्यान देते और पक्ष करते हुए बोलते हैं।

पद 19 में पौलुस विश्वासियों की शांति और सुधार में नेतृत्व करने के लिए हर संभव प्रयास करने की चुनौती देता है। इसका अर्थ यह है कि जो कुछ भी हम करते हैं उसमें हम अपने भाई बहनों का ध्यान रखें। हमारे जीवन अकेलेपन में नहीं रहते। इसके लिए हमें प्रयास करने की ज़रूरत होगी। हमारे लक्ष्य और उद्देश्य मसीह में अपने भाई बहनों के साथ रहने के और वह सब करने के होने चाहिए जो हम उन्हें विश्वास में प्रोत्साहित करने के लिए कर सकते हैं।

हमें अपनी स्वतन्त्रता के खातिर परमेश्वर के कार्य को नष्ट न करने के प्रति सावधान रहना चाहिए। पौलुस के अनुसार, जबकि एक व्यक्ति के लिए सभी तरह का भोजन शुद्ध है तौभी यदि उसके द्वारा किसी भोजन को खाने से उसके भाई बहनों को ठोकर लगती है तो उनके सामने उस भोजन को खाने के कारण वह पाप करता है क्योंकि उसके विश्वास के प्रति उनमें कोई भावना नहीं है।

ऐसे समय भी होते हैं जब हमें अपने से संबन्धित उन गौण विषयों को जिन पर हम विश्वास करते है बुद्धिमानी के साथ रखना चाहिए। किसी कार्य को करने या कुछ ऐसा खाने की अपनी स्वतन्त्रता कर घमण्ड न करें जिसको करने से अन्य विश्वासी के लिए समस्या उत्पन्न होगी? यह पाखण्डी होना नहीं है; यह दूसरों की आवश्यकताओं के प्रति भावुक होना है। पाखण्डी होने का अर्थ यह है कि हमारे बारे में कोई व्यक्ति ऐसा विचार करे जो झूठ हो। भावुक होने का अर्थ परमेश्वर के राज्य के लिए अपनी स्वतन्त्रता को एक ओर रख देना है।

पौलुस इस विभाग का निष्कर्ष हमें यह स्मरण कराते हुए निकालता है कि सभी मामलों में विश्वास एक मार्गदर्शक सिद्धान्त होना चाहिए। जो कुछ आप करते हैं यदि उसके प्रति आप यह प्रश्न करते हैं कि क्या यह सही है या नहीं, तो उसे न करें। केवल उसे ही करें जिसके लिए आपका हृदय आपको बाध्य करता है। केवल वही करें जो परमेश्वर के राज्य के निर्माण की ओर नेतृत्व करता है।

विचार करने के लिये:

- आपकी संस्कृति में किस तरह की चीज़ें विश्वासियों के लिये ठोकर का पत्थर हो सकती है?
- एक दूसरे के प्रति संवेदनशील होने तथा पाखण्डी होने के बीच क्या अन्तर है?
- आपके पास ऐसी किस तरह की स्वतन्त्रता है जो आपके भाई बहनों के पास नहीं है? आपके भाई के पास ऐसी कौन–सी स्वतन्त्रता है जो आपके पास नहीं है?
- जो कुछ हम करते हैं उसमें हम सभी के लिए किन मार्गदर्शक सिद्धान्तों के बारे में पौलुस बताता है?
- क्या आप वास्तव में यह कह सकते हैं कि आपके द्वारा किये जाने वाला प्रत्येक कार्य विश्वास में किया जाता है?
- क्या आपके द्वारा की जानेवाली कोई ऐसी चीज़ है जो मसीह में आपके भाई बहनों के लिए ठोकर का कारण हो सकती है? स्पष्ट करें।

प्रार्थना के लिये:

- परमेश्वर को उस स्वतत्रंता के लिये धन्यवाद दें जो उसने आपको दी है, और उन भिन्नताओं के लिए भी जो मसीह की देह में पाई जाती है।
- परमेश्वर से कहें कि मसीह की देह में पाई जाने वाली विभिन्नताओं को सहने की शक्ति वह आपको दे।
- परमेश्वर से अपने आस–पास के उन लोगों के प्रति आपको अधिक संवेदनशील बनाने को कहें जो चीज़ों को उस तरह से नहीं देखते जैसे आप उन्हें करते हैं।
- परमेश्वर से आपके जीवन, में पाई जानेवाली किसी ऐसी चीज़ को दिखाने के लिए कहें जो किसी और के लिए समस्या का कारण हो। परमेश्वर से उससे निपटने हेतु बद्धि मांगें।

एकता में दृढ़ता

39

पढ़ें रोमियों 15:1-7

रोमियों को लिखे पौलुस के पत्र के इस भाग ने उस उद्धार के बारे में बताया जो हमें मसीह की देह में लेकर आया। पुस्तक के बाद का अधिकांश भाग देह में रहने के विचार से संबन्धित है। परमेश्वर की सन्तान होने के कारण हमें एक दूसरे को प्रोत्साहन देने में प्रयोग करने हेतु भिन्न वरदान दिए गए हैं। हम इस बारे में भी सहमत नहीं हैं कि उन वरदानों और स्वतन्त्रता का प्रयोग किस तरह से किया जाए जिनका हम मसीह में आनन्द लेते हैं। इस सब के बावजूद, पौलुस हमें बताता है कि हमें एक होने का प्रयास करना है।

एकता का अर्थ यह नहीं है कि हम सभी का समान विश्वास हो, न ही इसका अर्थ यह है कि हमें एक समान चीज़ों पर व्यवहार करने की स्वतन्त्रता है। हमारी सेवकाई भिन्न है। हमारा मसीही जीवन जीने का तरीका भिन्न है। इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें केवल उस पर ही विश्वास करना है जो हमें अच्छा लगता है, क्योंकि कुछ ऐसे मूल सिद्धान्त हैं जिनका पालन हम सभी को करना है। हम सभी को प्रभु यीशु पर तथा उसके द्वारा हमारे लिये किये जाने वाले कार्य पर विश्वास करना है। हम सभी को उसके द्वारा दिये जाने वाले उद्धार को ग्रहण करने के साथ-साथ परमेश्वर के परिवार में फिर से जन्म लेना है। हम सभी को उसके प्रभुत्व और उसके वचन के अधिकार के प्रति समर्पण करना है। मसीह में होने पर हममें कई भिन्नताएं हैं, तौभी हमारा मसीह के साथ एक सामान्य संबन्ध होने के साथ-साथ जो कुछ भी हम करते हैं उसमें उसे महिमा और सम्मान देने की सामान्य भावना पाई जाती है। हमारी एकता मसीह में तथा जो कुछ उसने हमारे लिए किया उसमें पाई जाती है।

निर्बलों की निर्बलताओं को सहना (पद 1)

सर्वप्रथम, पौलुस पद 1 में दृढ़ता के साथ निर्बलों की असफलताओं को सहने पर बल देता है। एक नये या निर्बल विश्वासी के पास कार्य का विस्तृत वर्णन होता है। संभव है कि वह सत्य को स्पष्ट रूप से न समझ पाता हो। उसका आवेश उसकी परिपक्वता को कम कर सकता है। संभव है कि उसे अभी भी अपनी पापी आदतों पर विजय पाने की ज़रूरत हो। कई बार हम रात भर में ही चीज़ों के बदल जाने की अपेक्षा करते हैं और दया, करूणा व धीरज को दिखाने के विपरीत हम जल्द ही कोई भी फैसला ले लेते हैं। अधिक परिपक्व विश्वासियों में भी निर्बलता के क्षेत्र पाए जाते हैं। कई लोगों को अपने संघर्षों पर

विजयी होने के लिए कई वर्ष लग जाते हैं। जल्द ही फैसला करने के विपरीत, हमें एक दूसरे को प्रेम में प्रोत्साहित करना चाहिए। न्याय या फैसला करना और दोष लगाना किसी भी चीज़ को पूरा नहीं करता है। यह विषय को केवल बुरा ही बनाता है। परमेश्वर उसी तरह से हमें एक दूसरे की निर्बलताओं को सहन करने के लिए बुलाता है जिस तरह से वह हमारी निर्बलताओं को सहता है।

"सहना" शब्द का यूनानी भाषा में अर्थ "समर्थन करना, वहन करना या किसी चीज़ को लेना है।" प्रमुख विचार यह है कि हमें दूसरों को असफल होने का स्थान देना चाहिए। हमें यह जानना चाहिए कि कोई भी मसीही सिद्ध नहीं है, और जबकि हम सिद्धता को प्राप्त करना चाहते हैं तो हमें अपनी असफलताओं में एक दूसरे को स्वीकार करना है। प्रायः हम सिद्धता की खोज में रहते हैं जबकि हमें लोगों को वैसे ही ग्रहण करने की ज़रूरत है जैसे वे हैं और इसके साथ-साथ हमें उनके विकास में उन्हें प्रोत्साहित करना है।

हो सकता है कि आप ऐसी कलीसियाओं में गए हों जहां असिद्धता को सहन नहीं किया जाता। ये कलीसियाएं न्याय करने में तीव्र रहती हैं, विश्वास और विधियों को लेकर उनकी कठोर मार्गदर्शिकाएं होती हैं, और वे उस समय अनुशासन करने में शीघ्रता करती हैं जब उन्हें लगता है कि चीज़ें वैसी नहीं हैं जैसा उन्हें होना चाहिए। इतने अधिक न्यायी प्रोत्साहन न बनें कि सहन करना बहुत जटिल हो जाए। इसका परिणाम विश्वासियों की निराश देह के रूप में मिलता है। यही चीज़ हमारे परिवारों में भी सत्य है। यदि हम अपनी पत्नी या बच्चों में सदा गलती ढूंढते रहते हैं, तो हम जल्द ही उनकी आत्मा को तोड़कर उन्हें निराश कर देंगे। हो सकता है कि वे प्रयास करना भी छोड़ दें क्यांकि वे कभी भी सिद्धता के उस मानदण्ड तक नहीं पहुंच सकते जिसकी प्राप्ति की ओर हम उन्हें धकेल रहे होते हैं। उनकी अपूर्णता अथवा असिद्धता की आलोचना करने के बजाय, पौलुस हमें बताता है कि हमें धीरज रखकर उन्हें सहना है।

हमें यह समझने की ज़रुरत है कि पद 1 में पौलुस जिसे ''दुर्बलता'' और ''गिरावट'' के बारे में बोलता है वह विद्रोह और अनाज्ञाकारिता के समान नहीं हैं। हम सभी परमेश्वर द्वारा हमारे लिए निर्धारित किसे मानदण्ड से गिर गए हैं। हम सभी के जीवन में ऐसे समय आते हैं। जब हम असफल होते और गिर जाते हैं। ऐसा करने पर, हम उठ खड़े होते अपने पाप का अंगीकार करते और विजयी होने के लिए प्रभु की सामर्थ को खोजते हैं। तथापि, बहुत से ऐसे भी हैं जो अपने पाप से प्रेम करते और जो अपने जीवन में पाई जानेवाली कमज़ोरियों से निपटने को तैयार नहीं होते हैं। वे अपनी कमज़ोरी को स्वीकार करते हैं लेकिन वे उस पर विजय पाने को तैयार नहीं होते। यह स्वेच्छापूर्ण की जाने वाली अनाज्ञाकारिता और विद्रोह है।

हठीली अनाज्ञाकारिता और उस असफलता के बीच पहचान करना सदा सरल नहीं होता जिसके वर्णन पौलुस यहां कर रहा है। तथापि, भिन्नता को एक व्यक्ति के व्यवहार में देखा जाता है। क्या एक व्यक्ति यह जानने पर कि वह जल्द ही क्रोधित हो जाता है सच्चे पश्चात्ताप को प्रगट करता है? क्या वह व्यक्ति यह दिखाने के लिए कि ऐसा फिर से नहीं होगा कुछ आवश्यक बदलाव प्रगट करता है? हमारा लक्ष्य दोष लगाने का नहीं बल्कि पाप पर विजय और मसीह में परिपक्वता को देखने का है। यदि हम देह में एकता का अनुभव करना चाहते हैं तो हमें यह समझने की ज़रूरत होगी कि अपनी दुर्बलताओं में हमें एक दूसरे के साथ धीरज रखना होगा।

स्वयं को प्रसन्न करने का प्रयास करना छोड़ दें (पद 1-5)

पौलुस पद 1 में एक दूसरे सिद्धान्त को हमारे सामने लेकर आता है। यहां वह हमें बताता है कि यदि हम मसीह की देह में एकता का अनुभव करना चाहते हैं तो हमें स्वयं को प्रसन्न करने का प्रयास करना बन्द करना होगा। इसके विपरीत, हमें स्वयं को एक दूसरे को प्रसन्न करने हेतु समर्पित करना होगा। मन में केवल अपनी रुचियों के साथ रहना, केवल स्वयं के बारे में सोचना कितना आसान है। हमारा मानना है कि हमारी सैद्धान्तिक स्थिति सही स्थिति है और हम प्रत्येक से इससे सहमत होने की अपेक्षा करते हैं। हमारा मानना है कि लोग उसी तरह से जीयें जैसा हम चाहते हैं तथा चीज़ों को हमारे तरीके से देखें।

पौलुस हमें प्रभु यीशु के उदाहरण का अनुसरण करने और अपने सह-विश्वासियों की रूचियों पर अपनी रुचियों का सहर्ष बलिदान करने को कहता है। पौलुस पद 3 में हमें दिखाता है कि यीशु स्वयं को प्रसन्न करने के लिये नहीं आया। उसने अपने आराम और अपने सपनों की परवाह किये बिना अपना जीवन अपने आस-पास के लोगों की सेवा करने में बिताया। वह पिता के प्रति आज्ञाकारिता में रहा। वह दूसरों के लिये जीया। उसने हमारे और हमारी आवश्यकताओं के लिए स्वयं का इंकार किया। वह कई बार सोया नहीं, उसके पास न कोई घर, न एकान्तता, न धन, न मित्र और न ही आराम था। सेवकाई करने और दूसरों को आशीष देने के लिए उसे जो कुछ दिया था उसने उसका प्रयोग किया।

यीशु ने अनुसरण करने के लिए हमें एक सेवकाई- उदाहरण दिया। उसने अपमान और दुखों को सहा जिससे हम उसके उदाहरण को देखते हुए उसका अनुसरण करें। दूसरों को प्रसन्न करने के लिए जीना आसान नहीं है। स्वयं का इंकार करना भी सरल नहीं है, परन्तु पौलुस हमें अटल बने रहने के लिए कहता है क्योंकि मसीह ने यही हमारे लिये किया था।

दूसरों के लिए त्यागपूर्ण जीवन बिताना सरल नहीं होगा। पौलुस हमें स्मरण

कराता है कि हमारे पास पवित्रशास्त्र और उन स्त्रियों पुरुषों के उदाहरण है जो हमसे पहले इस मार्ग से होकर गए थे।

परमेश्वर तुम्हें धीरज और शान्ति देगा (पद 5)

यदि हम स्वयं को प्रसन्न करना छोड़ दें तो हमारी आवश्यकताओं की चिन्ता कौन करेगा? यदि हम अपना सारा समय त्यागपूर्ण रुप में दे देंगे तो हमारी चिन्ता कौन करेगा? हम उत्तेजित हुए बिना इस जीवन-प्रणाली में कैसे बने रह सकते हैं? पौलुस इस प्रश्न का जवाब पद 5 में देता है। वह हमें बताता है कि परमेश्वर हमें धीरज और शान्ति देता है। जब आगे बढ़ने के लिए आपको शक्ति की आवश्यकता होगी तो वह आपकी सहायता करेगा। दूसरों के लिए त्याग करने पर जब आपको सांत्वना पाने के लिए किसी की आवश्यकता होगी, तब परमेश्वर आपको आवश्यक प्रोत्साहन देगा। चूंकि परमेश्वर हमारी चिन्ता करता है अतः हम दूसरों पर ध्यान केन्द्रित कर सकते हैं।

यदि हम मसीह की देह में एकता को चाहते हैं, तो हमें न केवल धीरज के साथ अपनी दुर्बलता में एक दूसरे को सहना चाहिए बल्कि हमें अपना जीवन दूसरो को प्रसन्न करनेवाला बनाना चाहिए। हमें अपने से अधिक दूसरों की आवश्यकताओं को महत्व देना है। यदि हम परमेश्वर पर भरोसा करें तो वह हमें आगे बढ़ने के लिए आवश्यक बल और प्रोत्साहन देता है। कल्पना करें कि आज मसीह की कलीसिया में यह शिक्षा क्या अन्तर उत्पन्न करेगी? ये साधारण से सिद्धान्त एक कलीसिया, एक विवाह और एक देश को भी बदल सकते हैं।

परमेश्वर की बड़ाई करो (पद 6)

अन्त में, मसीह की देह का लक्ष्य प्रभु यीशु की स्तुति और महिमा करने के लिए एक मन होना है (पद 6)। यदि हम एक दूसरे को सहन करने के विपरीत एक दूसरे का न्याय और आलोचना करने में व्यस्त हैं तो एक देह के रूप में हम परमेश्वर की स्तुति कैसे कर सकते हैं? मसीह की देह में एक दूसरे के साथ संबन्ध और देह द्वारा प्रभु यीशु को महिमा दिलाने के बीच एक प्रत्यक्ष संयोजन है। देह जो एकता में नहीं होती, वह प्रभु यीशु के नाम को महिमा नहीं देती है।

एक दूसरे को ग्रहण करो (पद 7)

आखिर में, पौलुस एक शक्तिशाली कथन के द्वारा इस विभाग का निष्कर्ष निकालता है:“जैसा मसीह ने भी परमेश्वर की महिमा के लिये तुम्हें ग्रहण किया है; वैसे ही तुम भी एक दूसरे को ग्रहण करो” (पद 7)। परमेश्वर को स्तुति देने और एक दूसरे को ग्रहण करने के बीच के संयोजन पर ध्यान दें। हमें एक दूसरे को ग्रहण करने के लिए इसलिए बुलाया गया है ताकि परमेश्वर की बड़ाई हो सके। जब हम मसीह में अपने भाई बहनों से प्रेम करते हैं, तो इससे हम परमेश्वर

को बड़ाई करते हैं। ध्यान दें कि हमें उसी तरह से एक दूसरे को ग्रहण करना है जिस तरह से प्रभु यीशु हमें ग्रहण करता है। जब हम पाप में थे, उसने हमें ग्रहण किया (रोमि. 5:8)। उसने हमारे लिये अपने जीवन को दे दिया। प्रभु यीशु ने हम से इस तरह से व्यवहार किया। उसने हमें हमारी अपूर्णता और असफलताओं के साथ ग्रहण किया। किस तरह से हम– जिन्हें, इस तरह से ग्रहण किया गया है मसीह में अपने भाई को ग्रहण करने से इंकार कर सकते हैं?

विचार करने के लिये:

- सहर्ष पाप करने और पाप में गिरने के बीच का अन्तर क्या हमारी देह की निर्बलता है? इन दोनों पापों के बीच की पहचान हम कैसे कर सकते हैं?
- क्या आपने कभी मसीह में अपने भाई व बहन के साथ स्वयं को बेचैन पाया है? धीरज के साथ एक भाई को सहने और उसका न्याय करने के बीच क्या अन्तर है?
- एक भाई की निर्बलता को आप किन तरीकों से सह सकते हैं? क्या एक भाई को सहने का अर्थ उसके पाप की अनदेखी करना है?
- आप किस सीमा तक स्वयं के लिये जीये हैं? आप दूसरों की अधिक सेवकाई कैसे कर सकते हैं?
- जो लोग दूसरों की सेवा करने में दृढ़ बने रहते हैं उनके लिए परमेश्वर की क्या प्रतिज्ञाएं हैं (पद 5)? ये प्रतिज्ञाएं त्यागपूर्ण सेवकाई करने के लिए हमें कैसे स्वतन्त्र करती हैं?
- प्रभु यीशु ने आपको कैसे ग्रहण किया? यह हमें एक दूसरे को ग्रहण करने की आवश्यकता के बारे में क्या सिखाता है?

प्रार्थना के लिये:

- मसीह में अपने भाई और बहनों के साथ धीरज सहित रहने के लिए परमेश्वर से कहें।
- प्रभु को धन्यवाद दें कि उसने हमारे साथ जीवन बिताया।
- जब हम त्यागपूर्ण होकर उसके साथ रहते हैं तब प्रभु को प्रोत्साहन देने और समर्थ करनेवाली प्रतिज्ञा को देने के लिए धन्यवाद दें।
- परमेश्वर को आप पर यह प्रगट करने को कहें कि क्या कुछ ऐसा है जिसे आप आज नहीं सह रहे हैं? उन्हें उनकी निर्बलता के साथ सहने और उन्हें आशीष देने के लिए परमेश्वर से बल मांगें।
- परमेश्वर से उन समयों के लिए आपको क्षमा करने को कहें जब आप उन क्षेत्रों में असफल रहे जिनका वर्णन इस अध्याय में किया गया है।

अन्यजातियों के लिये पौलुस की सेवकाई 40

पढ़ें *रोमियों 15:8-21*

रोमियों की पुस्तक के इस भाग में, पौलुस सेवकाई के विशिष्ट दर्शन के बारे में बताता है। यह बहुत ही व्यक्तिगत परिच्छेद है। इस में वह अन्यजातियों के लिए अपने बोझ और बुलाहट के बारे में भी बताता है। यह चीज़ पौलुस के यहूदी संसार के साथ द्वन्द्व का कारण बनी और यही उसके दुखों का कारण भी थी।

पौलुस की बड़ी शक्ति और प्रेरणा का उद्‌भव मसीह में हुआ था। वह हमें स्मरण कराता है कि प्रभु यीशु भविष्यद्वक्ताओं द्वारा दी गई परमेश्वर की प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए यहूदियों का सेवक बना। तौभी, पद 9 में ध्यान दें कि यीशु यहूदियों में से आया जिससे अन्यजाति भी परमेश्वर की बड़ाई करें। पौलुस ने यह स्वीकार कराया कि यीशु न केवल यहूदियों के लिए आया बल्कि अन्यजातियों के लिये भी। वह दोनों ही जातियों का उद्धारकर्त्ता है। वह इसलिये आया ताकि पृथ्वी के सारे देश परमेश्वर के सत्य को जानें और बचाए जा सकें।

यह केवल पौलुस का विचार हीं नही था, क्योंकि वह इस विचार को यहूदी पवित्रशास्त्र से पक्का करता है। वह पुराने नियम से 2 शमूएल 22 से उद्‌धृत करता है जहां दाऊद, अपने शत्रुओं से स्वतन्त्र होने के पश्चात् लिखता है, "इस कारण, हे यहोवा, मैं जाति-जाति के सामने तेरा धन्यवाद करूंगा, और तेरे नाम का भजन गाऊंगा" दाऊद पवित्र आत्मा की प्रेरणा में अन्यजातियों के बीच परमेश्वर की बड़ाई करने को बाध्य क्यों हुआ? वह ऐसा इसलिए करता है क्योंकि वह जानता था कि अन्यजाति भी इस्राएल के प्रभु परमेश्वर के अद्‌भुत अनुग्रह के बारे में सुनेंगे। वह परमेश्वर के अद्‌भुत अनुग्रह के बारे में सुनेंगे। यह परमेश्वर के मन में था कि अन्यजाति परमेश्वर के अनुग्रह और करूणा को समझने के लिये आएं।

पौलुस व्यवस्थाविवरण 32:43 से भी उद्‌धृत करता है: "हे अन्यजातियों, उसकी प्रजा के साथ आनन्द मनाओ।" पुन:, परमेश्वर के आत्मा द्वारा प्रेरित किये जाने पर, पुराने नियम के इस परिच्छेद का लेखक अन्यजाति राष्ट्रों को यहूदियों के साथ मिलकर परमेश्वर के पास आने और उसकी बड़ाई करने को आमंत्रित करता है। यह स्पष्ट है कि परमेश्वर अपने अनुग्रह और करूणा को यहूदी जाति तक ही सीमित न करके उसे अन्यजातियों तक विस्तृत करना चाहता था। पौलुस अपने विचार का लगातार समर्थन करते हुए कहता है कि परमेश्वर पुराने नियम

में उद्धृत करते हुए भी अन्यजातियों तक पहुँचना चाहता था। पद 11 में वह भजनसंहिता 117:1 से उद्धृत करता है: "हे जाति जाति के सब लोगों; प्रभु की स्तुति करो; और हे राज्य राज्य के सब लोगों; उसे सराहो।" पद 12 में, वह यशायाह 11:10 से उद्धृत करता है,"यिशै की एक जड़ प्रगट होगी, और अन्यजातियों का हाकिम होने के लिये एक उठेगा, उस पर अन्यजातियां आशा रखेंगी।"

इस अन्तिम पद की कुछ व्याख्या किये जाने की ज़रूरत है। यशायाह इसे स्पष्ट करता है कि "यिशै की एक जड़" उठेगी और जातियों पर राज्य करेगी। यिशै दाऊद का पिता था जो– परमेश्वर का चुना हुआ राजा और मसीहा– यीशु, का पूर्वज था। यहूदी शताब्दियों से मसीह के आगमन की बाट जो रहे थे। तौभी, विशिष्ट रूप से उस पर ध्यान दें जो यशायाह यहां मसीहा के बारे में बताता है। वह हमें बताता है कि मसीहा न केवल इस्राएल पर राज्य करेगा बल्कि पूरे संसार पर। विशिष्ट रूप में, पौलुस हमें बताता है कि अन्यजातियों को उसमें आशा होगी। यह अन्यजातियों के लिए परमेश्वर के मन का एक अद्भुत उदाहरण है। परमेश्वर उद्धार को समस्त संसार तक विस्तृत करना चाहता था। उसकी इच्छा थी कि यहूदी व अन्यजाति दोनों ही उसके पास आएं और बचाए जाएं।

इससे यह स्पष्ट होता है कि परमेश्वर ने पौलुस को जो सेवकाई दी थी उसके संबन्ध में उसने पवित्रशास्त्र से खोज की थी। वह जानता था कि यह सेवकाई परमेश्वर की ओर से थी और वह यह भी जानता था कि परमेश्वर के मन में अन्यजातियों तक पहुंचने की इच्छा थी। अपनी सेवकाई के लिए उसे पवित्रशास्त्र का समर्थन भी प्राप्त था। वह निर्भीकता और भरोसे के साथ अपनी बुलाहट में आगे कदम बढ़ा सका।

पद 13 में हम अपने पाठकों के लिए पौलुस की प्रार्थना को पाते हैं कि आशा का परमेश्वर विश्वास करने में उन्हें आनंद और शांति से भरे। वह चाहता था कि वे उसी तरह से उमड़ते रहें जिस तरह से वह अन्यजातियों के उद्धार की आशा से उमड़ता रहता है। ध्यान दें कि पौलुस की यह प्रार्थना है कि उसके पाठक उमड़ते रहें। एक व्यक्ति उमड़ने से परिपूर्ण होने पर ही सफलतापूर्वक सेवकाई कर सकता है। अपने जीवन के अधिकांश समय में मैंने इस परिपूर्णता के साथ सेवकाई नहीं की थी। मैंने स्वयं को खण्डित व शून्य अनुभव किया। मेरे पास जो था मैंने उसे दिया और उसके बाद सब समाप्त हो गया। मेरे पास इसलिए सब कुछ समाप्त हो गया था क्योंकि मैं अपने जीवन में लगातार परमेश्वर द्वारा भरे जाने की खोज नहीं कर रहा था। जब हम उसके पवित्र आत्मा,

उसके प्रेम, उसकी शक्ति और उसके द्वारा दी जाने वाली आशा से परिपूर्ण होते हैं, केवल तब ही हम सामर्थ के साथ सेवकाई कर सकते हैं। अपने पाठकों के लिये यह पौलुस की प्रार्थना है। वह प्रार्थना कर रहा है कि वे न केवल पवित्र–आत्मा की सामर्थ से आशा से भरे जाएं बल्कि यह कि उनमें आशा की परिपूर्णता हो। परिपूर्णता होने पर ही वे दूसरों की सेवा करने में समर्थ हो सकेंगे।

पद 14 में हम इस पर ध्यान देते हैं कि पौलुस यह स्वीकार करता है कि उसके पाठक भलाई से भरे और ज्ञान से इतने भरपूर थे कि एक दूसरे को निर्देश दे सकें। मसीह के सुसमाचार की प्रभावी सेवा करने को उनमें कोई कमी नहीं थी। इस पत्र में पौलुस उनसे बड़ी निर्भीकता के साथ कई विषयों पर बोलता है। उसने व्यवस्था से अलग उन्हें उनके उद्धार का स्मरण कराया। उसने उन्हें उनके वरदानों का प्रयोग करने की चुनौती दी। उसने उन्हें देह की एकता को बनाए रखने की चुनौती दीं। उसने उन्हें सिखाया कि उद्धार केवल यहूदियों के लिये ही नहीं बल्कि अन्यजातियों के लिये भी है। अब वह उन्हें मसीह के नाम में सेवा करने के कारण मसीह की सामर्थ से परिपूर्ण होने की आज्ञा देता है।

पद 16 में पौलुस ने रोमियों को बताया कि उसने स्वयं को अन्यजातियों के प्रति बंधा हुआ अनुभव किया। उसे उनका प्रेरित होने के लिए परमेश्वर की ओर से बुलाया गया था। उसका मन अन्यजातियों को परमेश्वर के लिए एक स्वीकार्य भेंट के रूप में देखने को था जिसे पवित्र आत्मा के द्वारा शुद्ध किया गया हो। पौलुस इस बुलाहट के लिए परमेश्वर का आभारी था (पद 17)। यद्यपि इस विचार का विरोध बलपूर्वक यहूदियों द्वारा किया गया कि उद्धार अन्यजातियों के लिये था, तौभी पौलुस उससे नहीं लजाता था जिसके लिये उसे बुलाया गया था। उसने अन्यजातियों से प्रेम किया और वह उनके लिए अपना जीवन बलिदान करने को भी तैयार था। वह पद 18 में परमेश्वर की बड़ाई अन्यजातियों के प्रति उसकी सेवकाई में उसके द्वारा किये जानेवाले कार्य के लिये करता है। इस पर ध्यान दें कि अपनी सेवकाई की सफलता का श्रेय वह स्वयं को नहीं देता। अन्यजाति संसार में सेवा करने के लिए उसका नेतृत्व परमेश्वर द्वारा किया गया था। उस सेवकाई को पूरा करने के लिए उसे आत्मा से भरा गया था। परमेश्वर ने महान् चिन्हों और चमत्कारों के द्वारा अपनी सामर्थ को प्रगट किया था (पद 19)। परमेश्वर ने उसे मज़बूत करने के साथ–साथ आवश्यक स्त्रोतों को दिया था जिससे वह यरूशलेम, इल्लुरिकुम और उन बहुत से स्थानों की यात्रा कर सका जहां अन्यजाति लोग रहते थे। परमेश्वर ने उसे सुसमाचार को उन नये क्षेत्रों में ले जाने दिया जिन्होंने उसे कभी सुना नहीं था (पद 21)। परमेश्वर उसे सफलता देने के कारण खुश था। सारी बड़ाई के योग्य परमेश्वर ही था।

अपने जीवनों के लिए परमेश्वर की बुलाहट को जानना कुछ अद्भुत है। जबकि पौलुस को उसकी बुलाहट में कठिनाई और संघर्ष रहा था, तौभी उसका हृदय इसमें परमेश्वर की बड़ाई हेतु भरा हुआ था। अपने जन्म के कारण, पौलुस को इस विशिष्ट सेवकाई में प्रतिभा और वरदान प्राप्त था। कई वर्षों तक उसने परमेश्वर का विरोध किया था। अब वह आज्ञाकारिता, शांति और आनंद से भरे हृदय में रह रहा था। संकट बढ़ते गए और उसका जीवन प्राय: खतरे में रहा, लेकिन वह उस स्थान पर था जहां परमेश्वर उसे रखना चाहता था और वह इससे संतुष्ट था। क्या आप उस स्थान पर हैं जहां परमेश्वर आपको रखना चाहता है? क्या आप आपके लिए परमेश्वर की बुलाहट के स्थान में इस अद्भुत शांति और आनंद की सेवा के बारे में जानते हैं?

इस परिच्छेद में, हम समस्त संसार के लिये परमेश्वर के मन को देखते हैं। वह केवल यहूदियों का ही परमेश्वर नहीं था, बल्कि सभी जातियों और लोगों का परमेश्वर था। हम पौलुस के मन में अपनी उस सेवकाई के प्रति भी दृढ़ धारणा को देखते हैं जिसके लिये परमेश्वर ने उसे बुलाया। वह अपनी बुलाहट को जानता है। वह परमेश्वर के आत्मा की परिपूर्णता से भरपूर था और उसने इसे उस प्रत्येक व्यक्ति तक प्रवाहित किया, जिसे परमेश्वर ने उसके मार्ग में भेजा था। उसकी सेवकाई की सराहना सदैव नहीं की गई थी, लेकिन उसने कभी भी आशा नहीं छोड़ी थी। उसने निर्भीकता के साथ कदम बढ़ाते हुए परमेश्वर के आत्मा को सामर्थ के साथ कार्य करते देखा था। अपने जीवन और सेवकाई पर चिन्तन करने पर पौलुस इससे अचम्भित हो गया था कि परमेश्वर ने उसके द्वारा कितने बड़े-बड़े कार्य किये थे। उसका मन इस आनन्द से भरा हुआ था कि परमेश्वर ने उसे अपना सेवक बनाया था।

उत्तेजनापूर्ण सच्चाई यह है कि हम भी ऐसे उपकरण हैं जिनके द्वारा परमेश्वर का आत्मा कार्य करता है। जब हम आज्ञाकारी होकर उस बुलाहट में आगे बढ़ते हैं जिसे परमेश्वर ने हमारे जीवनों में रखा है तब हम परमेश्वर के आत्मा को हमारे द्वारा गति करने की अपेक्षा कर सकते हैं। अपनी बुलाहट को जानने और निर्भीकता के साथ इसमें कदम बढ़ाने का प्रयास करते रहें। उनके द्वारा निरूत्साहित न हों जो आपकी सेवकाई को स्वीकार नहीं करते। परमेश्वर के आत्मा को अपने में से उमड़ने दें। विस्मय से पीछे खड़े रहकर पवित्र आत्मा को आपका प्रयोग करने दें। एक उपकरण होने को संतुष्ट रहें। जो वह करता है उसे देखें और इसके लिए उसकी बड़ाई करें।

विचार करने के लिये:

- आपके जीवन के लिये परमेश्वर की क्या बुलाहट है?
- क्या आपने कभी स्वयं को परमेश्वर की बुलाहट के प्रति संदेह करते पाया है? अपनी बुलाहट पर आप किन कारणों से संदेह करते हैं?
- क्या आपने कभी स्वयं को अपनी मानव सामर्थ से बाहर कार्य करते पाया है? हम यहां इस बारे में क्या सीखते हैं कि पौलुस ने कैसे सेवा की?
- जब परमेश्वर आशीष देता है तब बड़ाई करने की परीक्षा कितनी वास्तविक है? इस परिच्छेद में हम पौलुस से क्या सीखते हैं?
- आप इस समय जो काम कर रहे हैं क्या उसको लेकर आपके हृदय में शांति है? क्या यह वह स्थान है जहां परमेश्वर आपको रखना चाहता है?

प्रार्थना के लिये:

- अपनी बुलाहट के लिए आपको एक गहन आश्वासन देने हेतु परमेश्वर से कहें।
- उन समयों के लिए परमेश्वर से आपको क्षमा करने के लिए कहें जब आपने अपनी बुलाहट पर संदेह कर विश्वास में होकर कदम नहीं बढ़ाया था।
- परमेश्वर को धन्यवाद दें कि आपके जीवन में उसके कार्य करने के द्वारा आप सेवकाई में बहुत सी चीज़ों को पूरा कर पाए।
- परमेश्वर से आपको अपनी परिपूर्णता से भरने को कहें जिससे आप उन लोगों की सेवा कर सकें जिन्हें उसने आपके मार्ग में रखा है?

मेरे लिये प्रार्थना करो

41

पढ़ें *रोमियों 15:23-33*

अपनी पत्री के अन्त में पहुंचने पर वह भविष्य के लिए अपनी योजनाओं के विषय बताता है। वह ऐसा इसलिए करता है ताकि रोम के विश्वासी अपने लिए उसके प्रेम और उनके पास उसके आने की योजनाओं को जान सकें, जब तक कि परमेश्वर ने द्वार को खोल रखा है। वह उनसे अपने लिए प्रार्थना करने को कहता है जबकि वह यात्रा में होता है।

पौलुस पद 23 में अपने पाठकों को बताता है कि उसने उन क्षेत्रों में कार्य को पूरा कर लिया था जहां वह कार्य कर रहा था। जबकि इन क्षेत्रों में अभी कार्य करने को बहुत कुछ होगा, परमेश्वर पौलुस को दूसरी चीज़ों की ओर लेकर जा रहा था। हम पद 20 में देखते हैं वहां से पौलुस के जाने की इच्छा उन लोगों में प्रचार करने की थी जिन्होंने अभी तक मसीह को नहीं जाना था।

पौलुस एक क्षेत्र में सुसमाचार का प्रचार करता और उसके बाद सुसमाचार को फैलाने का कार्य उन पर छोड़ देता था जिन्होंने उसकी सेवकाई के अन्तर्गत परमेश्वर को जाना था। उसने विश्वासियों के एक प्रमुख समूह की स्थापना की और उसके बाद सुसमाचार के कार्य को जारी रखने के लिए उन्हें उत्साहित किया। यह उसका सेवकाई दर्शन था। वह वहां प्रचार करता जहां कोई मसीह को नहीं जानता था, विश्वासियों से एक छोटे समुदाय की स्थापना करता और उसके बाद उन पर कार्य को जारी रखने का उत्तरदायित्व छोड़ आगे बढ़ जाता था। पौलुस अपनी बुलाहट को जानता था और वह इसके प्रति विश्वासयोग्य भी था। पौलुस अपने स्थान से ही वहां के नये विश्वासियों के लिये सेवकाई कर सकता था परन्तु परमेश्वर ने उसे इसे करने के लिए नहीं बुलाया था।

परमेश्वर ने जो उसे करने के लिए बुलाया था उसे पूरा होते देख पौलुस ने अब आगे बढ़ने का निर्णय ले लिया था। उसकी इच्छा कई वर्षों से रोम जाने की थी (पद 23), लेकिन उसे कभी अवसर नहीं मिल पाया था। अब, तथापि, यह अवसर उसके सामने था। इसपानिया जाने पर उसने उनके पास जाने की योजना बनाई। उसकी इच्छा यह थी कि वे उसकी यात्रा में उसके साथ रहें। हमें उस सहायता या साथ रहने के बारे में बताया नहीं गया है जो पौलुस रोमियों से चाहता था। तौभी, इस पर ध्यान दें कि पौलुस की इच्छा उनके साथ समय बिताने और उनकी संगति में आनन्द मनाने की थी। परमेश्वर ने जो सेवकाई मुझे सौंपी है उसमें यात्रा करने पर मैं उन कई विश्वासियों से आशीषित हुआ हूँ जिनसे मैं

अपनी यात्रा पर मिला था। भिन्न देशों के ये विश्वासी मेरे लिए प्रोत्साहन और आशीष का स्त्रोत रहे हैं। मुझे निश्चय है कि पौलुस ने उन आशीषों की ओर देखा था जिन्हें उसने रोमी विश्वासियों से प्राप्त किया था।

जबकि प्रेरित रोम की कलीसिया में जाना चाहता था, तौभी उसकी तात्कालिक योजना यरूशलेम जाने की थी। उसका कार्य उस शहर के धर्मी जनों को सहयोग देने का था। हम इस दान के बारे में प्रेरितों के काम 24:17 में पढ़ते हैं। मकिदुनिया और अखया के धर्मी जनों ने यरूशलेम के कंगाल धर्मी जनों के लिए कुछ धन दिया था। पौलुस को मकिदुनिया और अखया के विश्वासियों की ओर से इस दान को कंगालों तक पहुंचाने का सौभाग्य मिला था। यह देखना कितना अद्‌भुत है कि इस क्षेत्र के निवासियों को जितनी चिन्ता अपनी आवश्यकताओं की रहती थी उतनी ही उन विश्वासियों की आवश्यकता के लिए भी थी जिनसे वे कभी नहीं मिले थे। यह परिपक्वता और धर्मपरायण्ता का एक चिन्ह है और यह हमारे लिए भी एक उदाहरण के रूप में होना चाहिए।

पौलुस पद 27 में हमें बताता है कि जिस धन को वह यरूशलेम लेकर आया था जबकि उसे शुद्ध हृदय के साथ दिया गया था, अन्यजातियों ने यरूशलेम के यहूदियों से इसे ऋण लिया था। इन अन्यजाति विश्वासियों ने यरूशलेम के मसीहियों से बड़े लाभ को प्राप्त किया था। उन्हीं के द्वारा उन्होंने सुसमाचार के संदेश को ग्रहण किया था। अब उनकी आवश्यकता के समय में, अन्यजाति उनकी शारीरिक आवश्यकताओं को पूरा करते हुए उनकी सेवा कर सकते थे। पौलुस इस बात से निश्चिंत होकर रोम के विश्वासियों के पास जाना चाहता था कि यरूशलेम के विश्वासियों ने इस भेंट को ग्रहण कर लिया है (पद 28)।

हम उस भेंट की केवल कल्पना कर सकते हैं जिसके बारे में यरूशलेम के यहूदी विश्वासियों से कहा गया था। उनकी सेवकाई करने का निर्देश अन्यजाति विश्वासियों को दिया था। इन अन्यजातियों ने उनसे प्रेम किया। मसीह में अन्यजाति और यहूदी के बीच के विभाजन को तोड़ दिया गया था।

पौलुस ने रोमी विश्वासियों को बताया कि जब वह उनके पास आएगा तब वह “मसीह की पूरी आशीष” के साथ आएगा (पद 29)। हमें यहां यह समझने की आवश्यकता है कि पौलुस के मन में कई वर्षों से रोम के विश्वासियों से मिलने की इच्छा थी, लेकिन उसके लिए द्वार अभी तक खुला नहीं था। पौलुस आश्वस्त था, यद्यपि, वह दिन आ रहा था जब परमेश्वर उसके लिए द्वार को पूरी तरह से खोलकर उसकी यात्रा में उसे अपनी आशीष को देनेवाला था ताकि रोम के विश्वासी उसे देखें। पौलुस जिस बात को नहीं जान पाया था वह यह थी कि परमेश्वर जबकि अपनी आशीष को निश्चय ही उसे देता तो उसे यह उस तरह

से प्राप्त नहीं होती जैसा कि उसने सोचा था। पौलुस रोम में एक कैदी के रूप में जाता। रोम में पौलुस को बहुत से रोमी अधिकारियों के साथ सुसमाचार को बांटने का अवसर मिलता। उसे बहुत सी कलीसियाओं को पत्र लिखने का अवसर मिलता, वे पत्र जो अन्ततः बाइबल में शामिल होते जिन्हें आज हम पढ़ते हैं। अनगिनत आत्माओं को पौलुस के रोम की जेल से लिखे पत्रों ने स्पर्श किया था। यद्यपि जैसी उसने अपेक्षा की थी यह वैसा नहीं था, तौभी इसे निश्चय ही मसीह की आशीष में किया गया था।

पौलुस ने विश्वासियों को रोम में अपने साथ प्रार्थना में शामिल होने के लिये कहा था। वह उनसे यह प्रार्थना करने के लिए कहता है कि वह यहूदिया के अविश्वासियों से बचा रहे। परमेश्वर पहले से ही पौलुस को उन चीज़ों को दिखा रहा था जो उसके लिए अच्छी साबित नहीं होने वाली थीं, क्योंकि ऐसे लोग भी थे जो उसकी सेवकाई को मान्यता नहीं देते थे। पौलुस ने रोमियों को यह प्रार्थना करने के लिये कहा कि वह इस समय में सुरक्षित रहे। उसने यह भी कहा कि वे यह प्रार्थना भी करें कि यरूशलेम में उसकी सेवकाई विश्वासियों के लिये आशीष का कारण बने।

इस विभाग में, पौलुस का अन्तिम निवेदन यह था कि रोमी इस तरह से प्रार्थना करें कि वह परमेश्वर की इच्छानुसार उनके पास आने के योग्य हो सके और यह कि यह विश्राम करने का सही समय हो। विशिष्ट रूप से ध्यान दें कि वह परमेश्वर की इच्छा में होकर उनके पास जाना चाहता था। इस पर भी ध्यान दें कि पौलुस को अपनी सेवकाई में दूसरों के द्वारा विश्राम पाने की ज़रूरत थी। भिन्न क्षेत्रों के विश्वासी उसके पीछे खड़े थे, उन्होंने उसके लिए प्रार्थना की, उसको सुना, उसे प्रोत्साहित किया, और उसकी सेवकाई में उसे मज़बूत किया। हम, जोकि सेवकाई में है हमें अपने लिए दूसरों से प्रार्थना कराने की आवश्यकता को ही नहीं जानना है बल्कि हमारी ज़रूरत के समय में हमें विश्राम देने की आवश्यकता को भी। हमें केवल सेवा करने के लिये ही नहीं बनाया गया है। हमें विश्राम पाने के लिये सेवकाई में लोगों की आवश्यकता को जानने की ज़रूरत है।

हमने इस परिच्छेद से पौलुस के बारे में बहुत सी चीज़ों को सीखा है। वह अपने जीवन के लिए परमेश्वर की बुलाहट को जानता था और उसने इससे अलग होने से इन्कार कर दिया था। वह सेवा करने के लिए रोम जाना भी चाहता था लेकिन परमेश्वर की पूर्ण आशीषों को पाने के लिये उसने वर्षों तक प्रतीक्षा की। उसने अपने समय से पहले द्वार को नहीं खोला था। उसने प्रार्थना के लिये अपनी आवश्यकता को जाना था। वह अपने अनुभव और वरदानों पर आश्रित नहीं हुआ लेकिन उसने अपनी प्रार्थनाओं को अपने प्रार्थना–सहयोगियों के बीच

बांटा। उसकी सेवकाई की सफलता का कारण उसका अनुभव नहीं था परन्तु यह कि यह प्रार्थना से भरपूर थी। पौलुस ने योजनाएं बनाईं लेकिन उसने उन्हें परमेश्वर को सौंपा। चीज़ें सदैव उसकी इच्छा के अनुसार नहीं हुईं। वह रोम में कैदी के रूप में गया न कि एक सफल प्रचारक के रूप में। उसने परमेश्वर पर यह जानते हुए भरोसा किया कि उसके मार्ग सिद्ध हैं। अन्त में, पौलुस विश्राम पाने के लिए उन लोगों के पास गया जो सेवकाई में उसके साथ खड़े थे। पौलुस आरम्भिक कलीसिया का एक महत्वपूर्ण व्यक्ति था लेकिन उसने कभी भी इस दृष्टिकोण को नहीं खोया था कि उसे दूसरों की कितनी अधिक ज़रूरत है।

काश परमेश्वर हमें इस बारे में अन्तर्दृष्टि दे कि हमें अपने जीवनों और सेवकाई में इन सिद्धान्तों को कैसे लागू करना है।

विचार करने के लिये:

- आपके जीवन के लिए परमेश्वर की विशिष्ट बुलाहट क्या है? क्या आप इस बुलाहट से दूर हुए हैं?
- आपने अपनी सेवकाई और मसीही चलन में दूसरों के द्वारा विश्राम को कैसे पाया है? आपके जीवन में ऐसा कौन है कि आप विश्राम पाने और प्रोत्साहन के लिये जा सकते हैं?
- क्या आपकी सेवकाई और आत्मिक चलन के लिए प्रार्थना करने को आपके पीछे लोग खड़े हैं? वे कौन हैं?
- हम इस परिच्छेद में इस बारे में क्या सीखते हैं कि कई बार परमेश्वर का उद्देश्य हमारे उद्देश्य से भिन्न होता है?
- परमेश्वर के समय की प्रतीक्षा करना कितना सरल है? यह महत्वपूर्ण क्यों है?

प्रार्थना के लिये:

- सेवकाई में जिस तरह से वह हमें प्रयोग करना चाहता है उसके लिए परमेश्वर को धन्यवाद दें।
- आपके आत्मिक चलन और सेवकाई में जिन लोगों ने आपको विश्राम दिया है उनके लिये परमेश्वर को धन्यवाद दें।
- परमेश्वर के उद्देश्य पर ध्यान केन्द्रित करने में सहायता करने के लिए उससे कहें। परमेश्वर से कहें कि वह आपको ध्यान भंग करने से दूर रखे।
- दूसरों की सेवकाई में उन्हें प्रोत्साहित करने और विश्राम देने में आपको समर्थ करने हेतु परमेश्वर से कहें। परमेश्वर से आपको उसे दिखाने को कहें जो आप इस सप्ताह प्रोत्साहित होने के लिए कर सकते हैं।

अन्तिम अभिवादन

42

पढ़ें *रोमियों 16:1–27*

रोमियों की पुस्तक के इस अन्तिम विभाग में पौलुस अपनी व्यक्तिगत शुभकामनाओं को उन भिन्न व्यक्तियों तक पहुंचाने में समय लेता है जिन्हें वह कलीसिया में जानता था। इसे करने में पौलुस न केवल कलीसिया के प्रति अपने प्रेम और चिन्ता को प्रगट करता है बल्कि ऐसा वह सभी विश्वासियों के लिये भी।

वह किंख्रिया की कलीसिया की फीबे की सराहना करते हुए आरम्भ करता है। किंख्रिया कुरिन्थ के पूर्वी क्षेत्र में स्थित था। पौलुस ने कुछ समय कुरिन्थ में सेवकाई की थी और संभवत: अपनी सेवकाई को वहां करने के समय से ही वह उसे जानता था। पौलुस किंख्रिया की कलीसिया की सेविका या डीकन थी। ऐसा लगता है कि वह रोम जाना चाहती थी। पौलुस उसे महत्व देते हुए बोलता है और कलीसिया से उसे प्रभु की सेविका के रूप में ग्रहण करने को कहता है। परमेश्वर ने जिस कार्य को करने के लिये उसे बुलाया था उसमें उसकी आवश्यकता को पूरा करने के लिए वह उनसे कहता है। यह मानों ऐसा है कि पौलुस रोम की कलीसिया को उसकी देख-रेख करने को कह रहा है क्योंकि उसने व्यक्तिगत रूप से पौलुस की भी सहायता की थी (पद 2)। वह चाहता था कि वह (फीबे) बदले में रोम की कलीसिया के लिए आशीष बने।

तत्पश्चात् पौलुस अपनी शुभकामनाएं प्रिस्का और अक्विला को भेजता है जो प्रभु में उसके सहकर्मी थे। हमने इस पति पत्नी के बारे में प्रेरितों के काम 18:18 में पहले भी पढ़ा था। पौलुस विशिष्ट रूप से उनके प्रति इसलिए आभारी था क्योंकि उन्होंने उसके लिए अपने जीवनों को खतरे में डाला था। प्रिस्का और अक्विला अब रोम में सेवकाई कर रहे थे और कलीसिया उनके घर में लगती थी (पद 5)। पौलुस उन अन्य बहुत से विश्वासियों को अपनी शुभकामनाएं भेजता है जो उसकी सेवकाई के समय में उसके संपर्क में आए थे। वह इपेनेतुस का भी अभिवादन करता है जोकि ऐशिया क्षेत्र में प्रभु यीशु का सबसे पहला परिवर्तित था। वह मरियम का अभिवादन करता है जो रोमी कलीसिया के लिए कठिन श्रम कर रही थी। वह अन्द्रनीकुस और यूनियास को अपनी शुभकामनाएं भेजता है जो न केवल उसके संबन्धी थे बल्कि उसके साथ कारावास में भी रहे थे। पौलुस के अनुसार अन्द्रुनीकुस और यूनियास सभी प्रेरितों की दृष्टि में अद्वितीय थे। उन्होंने पौलुस से भी पहले प्रभु को ग्रहण किया था (पद 7)। अम्पलियातुस के लिये भी शुभकामनाएं हैं जिसे पौलुस ने प्रभु में प्रेम किया और

उरबानुस को जो कि पौलुस का सहकर्मी था। पौलुस इस्तखुस को भी स्मरण करता है जो एक प्रिय मित्र था (पद 9) और अप्पिलेस को, जोकि पौलुस के अनुसार मसीह में खरा था। पौलुस कलीसिया को अस्तुबुलुस के घराने को भी शुभकामनाएं देने के लिये कहता है उसी के साथ-साथ हेरोदियोन को भी जोकि पौलुस के संबन्धी थे । शुभकामनाएं नरकिस्सुस, त्रूफैना और त्रूफोसा और पिरसुस के लिये भी हैं जो प्रभु में कठिन श्रम करनेवाली स्त्रियां थी। पौलुस रूफुस और उसकी माता को भी शुभकामनाएं देता है जिसे वह अपनी माँ के रूप में भी देखता था। अन्यों को पद 14 और 15 में शुभकामनाएं दी गई हैं, और इन सब व्यक्तियों के नाम सूचीगत किये गए हैं। पौलुस की अपने संगियों के प्रति दिखाई दी जानेवाली चिन्ता पत्र की व्यक्तिगत विशिष्टता को दिखाती है।

पौलुस रोम के विश्वासियों को एक दूसरे को पवित्र चुम्बन के द्वारा प्रोत्साहित करने को कहता है। जब मैं भारतीय सागर के रियूनियन द्वीप में रहता था, वहां एक विदेशी या अजनबी से हाथ मिलाकर स्वागत करने की परंपरा थी। दूसरी ओर, परिवार के सदस्य या किसी घनिष्ठ मित्र का अभिवादन करने के लिए उनके दोनों गालों पर चुंबन करने की प्रथा थी। मसीहियों ने गालों के दोनों ओर चुंबन करने की प्रथा को ले लिया क्योंकि वे भी उसी आत्मिक परिवार से हैं। अभिवादन उन्हें मसीह में उनके आनन्द का स्मरण कराता था। पौलुस यहां इस तरह के अभिवादन के बारे में बता रहा है। इसने परमेश्वर के परिवार में उनकी एकता को प्रस्तुत किया था।

पद 16 में, पौलुस मसीह की सभी कलीसियाओं की ओर से शुभकामनाएं देता है। वह उनके बारे में बोलने के साथ-साथ रोम की कलीसिया के लिये उनके प्रेम के बारे में भी बताता है। यद्यपि वे कभी मिले नहीं थे, तौभी मसीह का प्रेम उन्हें एक दूसरे के निकट ले आया था। हो सकता है कि आपने भी उन विश्वासियों के साथ इस एकता का अनुभव किया हो जिनसे आप पहले कभी नहीं मिले थे। प्रायः ऐसे समय भी होते हैं जब एक विश्वासी से मिलने के पश्चात् तत्काल ही मुझे एक संबन्ध का अनुभव होता है, जो मसीह में हमारे अनुबन्ध से आता है।

पद 17 में पौलुस कलीसिया को उन लोगों से सतर्क रहने को कहता है जो उनके बीच विभाजन का कारण हो सकते हैं। शत्रु मसीह की देह में एकता की सामर्थ को जानता है। वह उस एकता का नाश करने को किसी प्रयास को बचाकर नहीं रखता क्योंकि एक विभाजित कलीसिया वह कलीसिया है जो सेवकाई करने में समर्थ नहीं होती। ये विभाजन व्यक्तिगत द्वन्द्व, सैद्धान्तिक भिन्नता और आराधना वरीयता के रूप में आता है। पौलुस रोम के विश्वासियों

का उन लोगों से दूर रहने को कहता है जो देह में इस तरह के विभाजन कर सकते हैं। ये व्यक्ति न केवल देह की एकता का नाश करते हैं परन्तु कलीसिया को उसकी सभी आवश्यकताओं को पूरा करने में समर्थ होने से भी रोकते हैं।

पौलुस हमें सिखाता है कि फूट डालने वाले लोग उस सब के प्रति खुले नहीं होते हैं जो परमेश्वर कर रहा होता है। वे चीज़ों को अपने तरीके से करना चाहते हैं। वे अपने दृष्टिकोण को एकमात्र तरीके से रूप में प्रस्तुत करते हैं। यीशु ने लोगों को भिन्न तरह से चंगाई दी थी। वह चाहता है कि हम उस पर भरोसा करें न कि विधियों और परम्पराओं पर। दूसरी ओर फूट डालने वाले लोग, केवल अपनी ही इच्छाओं की पूर्ति करते है। वे परमेश्वर के नेतृत्व और मसीह की देह की एकता के विपरीत अपनी परम्पराओं के प्रति चिन्तित रहते हैं। पौलुस ने रोम की कलीसिया को इस तरह के लोगों से सावधान रहने की चुनौती दी।

पौलुस रोम की कलीसिया के बारे में कही गई अच्छी चीज़ों को जानता था (पद 19)। जबकि कलीसिया सत्य के प्रति आज्ञाकारी थी, पौलुस चाहता था कि वे भलाई के लिये बुद्धिमान बनें। अच्छी चीज़ों में भले बने बिना आज्ञाकारी रहना निश्चय ही संभव है, लेकिन उन दोनों के बीच पहचान करना प्राय: कठिन होता है। प्रेरितों के समक्ष अक्सर उन सेवकाइयों में शामिल होने की परीक्षा आती थी जिनके लिये उन्हें बुलाया गया नहीं था। हमारे सभी अवसर परमेश्वर की इच्छा में नहीं हैं इसलिये हमें विशिष्ट उद्देश्य और प्रत्येक दिन के लिये हमारे जीवनों में परमेश्वर की इच्छा की पहचान करने के लिए बुद्धि का प्रयोग करना चाहिए।

पौलुस रोम के विश्वासियों को बुराई के लिए भोले बने रहने की चुनौती देता है। अन्य शब्दों में, पाप के आने पर उन्हें प्रभु और उसके मार्गों की खोज करती है। उन्हें बुराई के सभी रुपों से भागना था।

पौलुस ने रोमियों को बताया कि शांति का परमेश्वर शैतान को उनके पांवों तले कुचलेगा। व्याख्या करने हेतु यह एक कठिन परिच्छेद है परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि ये विश्वासी रोम में रहने वाले थे। रोम एक साम्राज्य के लिए प्रशासन और धार्मिक गतिविधि का केन्द्र था जिसने मसीहियत को खुले रूप में कार्य करने की अनुमति नहीं दी थी। शैतान की शक्ति ने विश्वासियों को निर्दयता पूर्वक सताने के साथ-साथ उनका दमन भी किया था। पौलुस यह भविष्यद्वाणी करता है कि एक दिन इस शत्रु को कुचला जाएगा (पद 20)।

पौलुस तीमुथियुस की ओर से शुभकामनाएं भेजता है, जोकि उसका एक सहकर्मी था। वह लूकियुस, यासोन और सोसिपत्रुस के लिए भी शुभकामनाएं भेजता है।

पद 22 में हमें पता चलता है कि पौलुस ने इस पत्र को अपने हाथ से नहीं लिखा था। तिरतियुस ने पौलुस के निर्देश पर इस पत्र को लिखा था। तिरतियुस

पद 22 में अपनी व्यक्तिगत शुभकामनाएं कलीसिया को देता है। अगली शुभकामनाएं पद 23 में गयुस की ओर से आती हैं जिसकी पहुनाई का आनन्द पौलुस ले रहा था। इरास्तुस जो कि नगर का भण्डारी है और क्वारतुस नामक एक भाई भी रोमी कलीसिया को शुभकामनाएं देते हैं।

पौलुस एक अन्तिम आशीष के साथ अपने पत्र का निष्कर्ष निकालता है। वह कलीसिया को प्रभु यीशु के प्रति समर्पित करता है जो विश्वास में उन्हें बनाए रखने के साथ-साथ उसमें उनका निर्माण कर सकता है। इस पर भी ध्यान दें कि उनका विश्वास में निर्माण उस सुसमाचार के द्वारा होगा जिसे कई वर्षों से छिपाकर रखा गया था, अब उसे उन पर प्रगट किया गया है। पौलुस रोम की कलीसिया का निर्माण इस सुसमाचार में होकर करना चाहता था। वह चाहता था कि वे इसके सत्य की वास्तविकता को समझते हुए उसमें जीवन बिताएं जिससे उनका प्रकाश परमेश्वर की बड़ाई के लिये चमकने पाए। वह चाहता था कि वे सुसमाचार के सत्य में दृढ़ बने रहें जिससे वे न्याय के दिन पवित्र लोगों के रूप में परमेश्वर के सामने खड़े हों। वह चाहता था कि वे संसार के सभी देशों के साथ सुसमाचार को बांटें जिससे अधिक से अधिक लोग मसीह को जान सकें। यह चुनौती आज भी हमारे लिये सत्य है।

विचार करने के लिये:

- विश्वासियों के लिए यह अध्याय हम पर पौलुस के मन को कैसे प्रगट करता है?
- पौलुस ने दूसरों के साथ किस तरह से सेवकाई की, उस बारे में हम क्या सीखते हैं? यह अकेले सेवकाई करने का प्रयास करने के बारे में हमें क्या सिखाता है?
- यह परिच्छेद हमें मसीह की देह में एकता के महत्व के बारे में क्या सिखाता है?

प्रार्थना के लिये:

- क्या कुछ ऐसे लोग हैं जिनसे मसीह की देह में प्रेम करने में आपको कठिनाई होती है? परमेश्वर से उनके प्रति आपके मन को खोलने के लिये कहें।
- कुछ समय उनके लिये प्रार्थना करने को निकालें जिनकी प्रवृत्ति मसीह की देह में फूट डालने की होती है। प्रार्थना करें कि परमेश्वर उन्हें भाइयों और बहनों के लिये मन दे।
- सुसमाचार के सत्य में अधिक से अधिक जीवन बिताने के लिए परमेश्वर से सहायता करने को कहें। अपने आस-पास के लोगों को इस बारे में एक सुअवसर देने को उससे कहें।